अभिनव गीतमंजरी

१



श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर

संगीत कलानिधि

गुरूवर्य पंडित विष्णु नारायण भातखंडे

बी. ए., एल्. एल्.बी.

(चतुर पंडित)



सादर समर्पण

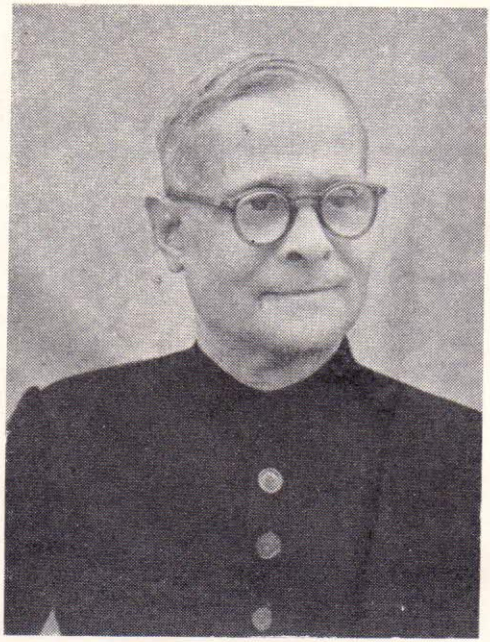
गजाननो बुद्धिमतां वरेण्यः गुरूः प्रसन्नो रसिकोऽपि विष्णुः।
यदंघ्रिपद्मेऽभिनवा विनम्रं समर्पिता गीतकमंजरीयम्॥ १॥
दारिद्र्य दुर्विलासादधोनिपतिता सखी सरस्वत्याः।
संगीतसुंदरी सौभाग्यमिव प्रापिता येन॥
कल्याणमस्त्विति गुरूं प्रणम्य गांधर्व वेदविज्ञं तं।
गीतमंजरिमभिनवां समर्पयाम्यद्य तच्चरणे॥

— श्री. ना. रातंजनकर, 'सुजान'

पद्मभूषण

आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर 'सुजान'

बी.ए., संगीताचार्य



जन्म : ३१ दिसम्बर १९०० निधन : १४ फरवरी १९७४

(लेखक)

श्री

- मंगलाचरण -

ब्रह्मविष्णुमहादेवान् स्वररागलयास्पदान् ।
प्रणम्याभिनवां गीतमंजरीमारभे श्रियै ॥

- प्रस्तावना -

हिंदुस्तानी संगीत के गायक- वादकोंमें नई चीजें बनानेवालों की संख्या बहुत कम है इसका कारण रचनाकौशल्य का अभाव बहुतों में होता है ऐसा नहीं है, बल्कि बहुतसे गायक- वादकोंको अपनी रचना के सम्बन्ध में श्रोतागण तथा संगीत के ग्याताओं से पुरस्कार मिलने का विश्वास नहीं होता । कुछ अंश में यह अविश्वास सकारण है क्यों कि साधारणतया देखा जाता है कि हमारे यहाँ विद्यमान कलाकारोंकी अपेक्षा भूतपूर्व कलाकारों को अधिक माना जाता है । संगीत संसार में तो यह परिस्थिति अब भी कायम है । अतएव किसी व्यक्ति को अपनी नई रचना स्पष्ट रूप से श्रोताओं के सामने रखने में डर लगता है । यदि कोई व्यक्ति नई रचना करके, वह स्वयं अपनी नहीं, किसी गुजरे हुवे बडे आचार्य के नाम से लोगों के आगे रख दें तो बहुत से लोग उसको मानने को तय्यार होंगे, जबकि वह अपने ही नाम से उसको प्रसिध्द करने का धाष्ट्र्य करें तो चाहे जैसी सुन्दर रचना हो वह अगर दुतकार न दी गई तो उसका सन्मान होना असम्भवसा होता है ।

हमारे देश में पूर्वाचार, पूर्वपरंपरा का महत्व सभी बातों में माना जाता है । यह परिस्थिति समझते हुवे भी मैं आज इसी धाष्ट्र्य का अवलंबन कर रहा हूँ । मुझे नई चीजें बांधने का शौक आज कोई १५-२० वर्ष से है । मेरे परमपूज्य गुरूवर्य पण्डित भातखण्डेजी ने अेक आध समय पर अपने शिष्यों को इसके बाबत उत्तेजन दिया हुवा मेरे स्मरण में है । पर नई चीजें बांधने के बाबत विशेष आग्रह मेरे एक आदरणीय गुरूबंधु स्व. शंकरराव कारनाड की तरफ से हुवा जब से मैनें नई रचनाएँ करने में विशेष ध्यान लगाया जिसके फलरूप मैं कुछ अपनी बनाई हुई चीजें प्रसिध्द कर रहा हूँ। इन चीजों के गुणावगुणों का विचार पाठकों के ऊपर ही सौंपता हूँ। मैने इनमें से बहुतसी चीजें जलसों में तथा रेडिओ प्रोग्राम में गाकर सुनाई हैं और अब भी सुना रहा हूँ ।

रागदारी चीजों के सम्बन्ध में यह बता देना आवश्यक होगा कि, इन की भाषाशैली, हिन्दी साहित्य में एक स्वतंत्र भाग समझना होगा । हिन्दी कविताओं की भाषा रागदारी गायन के लिए क्लिष्ट हो जाती है । बहुत से शब्दों का मृदु रूपांतर करना पडता है । कभी कभी बृजभाषा, मारवाडी, उर्दू, पंजाबी इन सब के महावरे चीजों में एक साथ आये हुये दिखाई पडते हैं । कारण यह है कि चीजें बांधनेवाले गायक- वादक न कवि थे न भाषा पण्डित । अपने काम में वह अनुपम थे इस में कोई संदेह नहीं। रागदारी के लिए अगर भाषाशुध्दि की तरफ दुर्लक्ष करके इन्होंने

शब्दों का रूपांतर करके व्याकरण के नियमोंका उल्लघन किया तो वह क्षम्य समझकर वैसा ही प्रचार रूढ हो गया । यहाँ तक कि सांगीतिक चीजों की भाषाशैली ही निराली हो गई है ।

इस पुस्तक में की कुछ चीजें क्रमिक पुस्तक मालिका में छप चुकी हैं । इन चीजों को स्व. गु. भातखण्डेजी के सम्मति से ही क्रमिक पुस्तक मालिका में स्थान मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुवा था। और दो गीतों की ("जशोदा हरि पालने झुलावै" और "वन्दे मातरम्") शब्द रचना पुराने विव्दानों की है परन्तु मैनें उनका स्वर निरूपण करने का प्रयत्न किया है । इस पुस्तक के सिर्फ आखिरी चार रागों के स्वरविस्तार तथा रागरूप इत्यादि दिये हैं। बाकी रागों के स्वरविस्तार इत्यादि क्रमिक पुस्तक मालिकाओं में पहले ही आ चुके हैं इस लिए उनको दुहराने की कोई आवश्यकता न मालुम हुई ।

बंबई,
ता. ४ जून १९४४

श्री ना. रातंजनकर

प्रस्तावना - आवृत्ति २ री

अभिनवगीतमंजरी की यह दूसरी आवृत्ति संगीत प्रेमिओं की सेवा में प्रविष्ट की जाती है । इस आवृत्ति में प्रथम आवृत्ति में आये हुवे गीतों के अतिरिक्त लगभग एक सौ नये गीत प्रसिध्द किये जाते हैं ।

नये गीतों में कुछ गीत "वर्णम्" नाम के भी हैं। ये "वर्णम्" दाक्षिणात्य संगीत के कुछ "वर्णम्" के मूल तेलगु शब्दोंके स्थान पर संस्कृत शब्द रचकर दिये गये है । "वर्णम्" के पांच धातु (विभाग, चरण अथवा तुक) होते हैं । इनको क्रमशः (१) पल्लवी, (२) अनुपल्लवी, (३) मुक्तायंपु, (४) चरणम्, एवं (५) चिट्टस्वरम् कहते हैं । "पल्लवी" स्थायी के एवं "अनुपल्लवी" अंशतः अन्तरे के समान होती है। "अनुपल्लवी " के पश्चात "मुक्तायंपू" नामक विभाग होता है जिस में स्वरों की उलट फेर विशेष कठिनता के साथ होती है व यह विभाग "अनुपल्लवी" के साथ गाया जाता है । चौथा विभाग "चरणम् " फिर शब्दों के साथ होता है और उसी को जोडे हुवे कुछ स्वरालाप लयकारी के साथ एक एक ऐसे चार पांच होते हैं जिनको "चिट्टस्वरम्" कहते हैं । यह पांचवा विभाग होता है । इस पुस्तक में (१) यमन (दाक्षिणात्य कल्याणी), (२) हंसध्वनि, (३) भूपाली (दाक्षिणात्य मोहनम्) तथा (४) केदारगौळ, जो एक दाक्षिणात्य संगीत पध्दति का राग है और जो हिन्दुस्तानी संगीत पध्दति के लगभग 'देस' राग के समान है - 'देस' में लगाया जाता हुवा शुध्द निषाद 'केदारगौळ' में नहीं आता, शेष सब 'देस' के समान है - ये चार मूलतः दाक्षिणात्य "वर्णम्" हैं जिनके तेलगु शब्दों के स्थान पर संस्कृत शब्द रचे गये हैं । इन "वर्णो" के अतिरिक्त दो और हैं जो मैनें स्वयम् दाक्षिणात्य वर्णों के आदर्श पर रचे हैं । ये दो वर्णम् (१) भैरव एवं, (२) मियाँकी तोडी में हैं । प्रत्येक वर्णम् का चरणम् गाकर फिर उसको क्रमशः एक एक चिट्टस्वरम् जोड देना होता है । प्रत्येक चिट्टस्वरम् गाकर उसको फिर चरणम् जोड

देना है ।वर्णम् हमारी पध्दति में भी दाखल करने योग्य हैं और इन्हें अपनाना चाहिये ऐसा मेरा विचार है । इनसे विद्यार्थियों को स्वर तथा लय दोनों का ज्ञान सुलभ होगा ।

इस आवृत्ति में आये हुवे नये गीतों में कुछ देशभक्ति के, कुछ मनुष्य धर्म के आदर्शपर, एक गीत श्री. महात्मा गांधीजी के जीवनी पर एवं एक संस्कृत कविता जन्मभूमि के चरणों पर महात्माजी की अंतिम आहुति पर ऐसे हैं।

ध्रुपद, ख्याल, चलती चीजें, सरगमै, तराने, लक्षणगीत, पद, भजन इत्यादि विविध प्रकार के गीतों का यह संग्रह संगीत प्रेमिओं की प्रसन्नता प्राप्त करें यह प्रार्थना ईश्वर चरणों पर है ।

अंतमें मेरे प्रिय बन्धु श्री. गजाननराव एवं प्रिय शिष्य श्री. कृष्णराव गुंडोपंत गिंडे को, जिन्होंनें पुस्तक की लिखित प्रति बनाने में एवं प्रूफ की जांच में परिश्रम किये, शतशः धन्यवाद देकर यह प्रस्तावना समाप्त करता हूं ।

बम्बई, श्री दत्त जयंती
दिनांक, ५-१२-१९४९

श्री. ना. रातंजनकर

प्रस्तावना - तृतीय संस्करण

लगभग ४० वर्षों के पश्चात् 'अभिनवगीतमंजरी' का प्रथम भाग, पुनर्गठित रूप में , पुनश्च संगीत प्रेमिओं की सेवा में सादर करते हुए हमें अत्यंत समाधान हो रहा है।

इस कालावधि में स्वयम् लेखक ने कई एक बंदिशों को 'अभिनवगीतमंजरी' भाग दूसरा (पूर्वार्ध तथा उत्तरार्ध) व्दारा ईसवी सन् १९६१-६२ में प्रकाशित करवाया था, जिन्हें संगीत प्रेमिओंने अत्यंत चाव से अपनाया, जिससे इन पुस्तकों की प्रतियाँ भी लगभग बिक चुकी हैं। इनके अतिरिक्त, लेखक ने अपने जीवनकाल तक और भी अनेक बंदिशों की रचना की है, जो कि अबतक अप्रकाशित रूप में उनके शिष्यों के पास सुरक्षित रही हैं। कुछ अपरिहार्य कारणों से इन बंदिशों को स्वयम् लेखक प्रकाशित न कर सके । दुर्दैव से दि. १४ फरवरी १९७४ को गुरूवर्य आचार्य रातंजनकरजी का देहावसान हुवा और यह कार्य आगे कार्यान्वित न हो सका ।

भविष्य में, गुरूवर्य के इस कार्य को स्थायीरूप से कार्यान्वित रखने हेतु, उनके निकटतम शिष्यगण तथा कुछ शुभचिंतकों के प्रयत्नों से फरवरी १९८५ में गुरूवर्य की पुण्यस्मृति में "आचार्य एस्. एन्. रातंजनकर फाऊण्डेशन", एक पंजीकृत प्रतिष्ठान के रूप में, अस्तित्व में आयी । इस 'फाऊण्डेशन' व्दारा निर्धारित उद्देशों की मनोमन सराहना करते हुवे, गुरूवर्य रातंजनकरजी के सभी उत्तराधिकारिओं ने सहर्ष उनके समस्त पुस्तकों तथा संगीत सम्बन्धी लेखन सामुग्री के 'प्रकाशन - अधिकार' उक्त 'फाऊण्डेशन'को सौंप दिये जिससे गुरूवर्य के समस्त पुस्तकों का पुनर्मुद्रण एवम् संगीत - सम्बन्धी अन्य लेखन का प्रकाशन कर उसे संगीत प्रेमी जनता की सेवा में प्रस्तुत करने की सुविधा हो गई है ।

इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप ईसवी सन् १९८६ में 'फाऊण्डेशन' ने 'अभिनव - संगीत-शिक्षा'- प्रथम भाग का तृतीय संस्करण प्रकाशित कर, इस नियमित पाठ्यपुस्तक के अभाव की पूर्ति करने में सफलता प्राप्त की । इस वर्ष, 'अभिनवगीतमंजरी' के प्रथम भाग का तृतीय संस्करण संगीत प्रेमिओं के प्रति सादर करने में हम अपने आप को धन्य मानते हैं । गुरूवर्य रातंजनकरजी के देहावसान के कारण अब नई रचनाओंकी निर्मिति का प्रश्न ही नहीं उठता । साथ साथ, उनकी प्रकाशित पुस्तकें भी अब लगभग बिक चुकी हैं। अतएव, अब तक रची हुई समस्त प्रकाशित तथा अप्रकाशित बंदिशों का पुनर्गठन कर पुनश्च तीन भागों में ही प्रकाशन करने का हमने निर्णय लिया है। इस पुनर्गठन प्रक्रिया का तात्पर्य केवल इतना ही है कि एक राग की समस्त बंदिशों का अवलोकन एक साथ करने में तथा इन बंदिशों का समग्ररूप से अभ्यास करने में सुलभता हो सके ।

पुनर्गठित इस प्रथम भाग में हमने कल्याण, बिलावल, खमाज तथा भैरव इन चार थाटोंके लगभग ७४ रागों में २३१ बंदिशों का संकलन किया है। शीघ्र ही इस मालिका के शेष दो भाग इसी स्वरूप में प्रकाशन करने का हमने निश्चय किया है। हमें पूर्ण आशा है कि समस्त संगीतप्रेमी इनकी प्रतीक्षा में रहेंगे ।

इस पुस्तक मालिका के मुखपृष्ठ की निर्मिति हमारे हितैषी श्री. शरद साठे ने आत्मीयता से की है, जिसके लिये हमारी ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाओं सहित धन्यवाद ।उसी प्रकार, इस पुस्तक के प्रकाशन में यथायोग्य आर्थिक सहायता प्रदान करनेवाले श्री. करसनदास विसनजी ट्रस्ट के सभी वि श्वस्त मण्डल के सदस्यों को जितने भी धन्यवाद दिये जाय, कम होंगे । इस अमूल्य सहायता के कारण ही इस पुस्तक को उचित मूल्य में प्रकाशित करने में हम सफल हो सके, जिससे सर्वसाधारण संगीतप्रेमी भी लाभान्वित हो सके ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि एक दीर्घ कालावधि के पश्चात् क्यों न हो, इस पुस्तक मालिका को पुनः प्रकाशित कर, अपने पूज्य गुरूवर्य की अभिलाषा की अंशतः पूर्ति करने में हम सफल हो सके ।आशा है कि समस्त संगीतप्रेमी पूर्ववत् इस पुस्तक मालिका को अपनाने में अपना सक्रिय सहयोग हमें प्रदान करेंगे, यही पूज्य गुरूवर्य के चरणों में हमारी विनम्र प्रार्थना है ।

भवदीय

बम्बई, वसंत पंचमी
दि. ३१ जनवरी १९९०
बम्बई - ४०० ०१४.

वि श्वस्त मण्डल,
आचार्य एस्. एन्. रातंजनकर फाऊण्डेशन

अनुक्रमणिका

क्रमांक	राग	गीत के शब्द	पृष्ठ
१.	अल्हैया बिलावल	ग्वार बार सब संग लिये	६५
२.	" "	निरगुण निराकार	६७
३.	अहीर भैरव	गोकुल की अहीरनियाँ	२५४
४.	" "	देखो देखो री न माने कन्हैया	२५५
५.	" "	अरे निर्दयी नजरे तू	२५६
६.	आनंद भैरव	बिन दरस मन तरसत	२५०
७.	" "	कौन गुन कीजे	२५१
८.	" "	शुभ घरी शुभ दिन	२५२
९.	कल्याणी- (वर्णम्)	गणेशं हेरंबं वन्दे	१४
१०.	कामोद	दिर दिर दिर दिर तान्न	४४
११.	"	कजरा कपोल	४५
१२	कुकुभ- (स्तोत्र)	नमो नमो श्री सरस्वती	८०
१३.	कुकुभ बिलावल	जस रहे नाम	७७
१४.	" "	सुजन सुन साची सीख	७८
१५.	" "	बनरा बनी आयो	७९
१६.	केदार- (सरगम)	सासा रेसासा मम पप	३५
१७.	" - (लक्षणगीत)	दोऊ मध्यम और सब शुचि सुर	३५
१८.	"	पतित पावन जगदम्ब भवानी	३६
१९.	"	चन्द्र लज्यो मुख देखि	३७
२०.	"	जगत उध्दार हे किरतार	३८
२१.	"	गजगति चाल चलत	३९
२२.	"	ब्रिज में रास रच्यो है	३९
२३.	" (स्तोत्र)	अंसालंबित वाम कुण्डल धरं	४१
२४.	"	तत बितत घन शिखर	४२
२५.	केदारगौळ - (वर्णम्)	वन्दे देवीं श्री	१५३
२६.	केदारनाट	जय जगत उध्दारन दीनानाथ	१११
२७.	खमाज- (सरगम)	साग मपध मग मगरेसा	१३२
२८.	" - (लक्ष्मणगीत)	सुजन अब राग खमाज सुनो	१३२
२९.	"	सखि साँवरो गिरिधर गोपाल	१३४
३०.	"	जय विष्णु जय हो	१३५
३१.	"	कदम्ब की छैया ठाडे कन्हैया	१३९
३२.	"	नहीं माँगत हूँ	१४०
३३.	"	न खेलूंगी मैं तोसे होरी	१४१
३४.	"	जमुना के नीर तीर	१४२

३५.	**खंबावती**	लाज शरम तोको नाहीं आवे	१८३
३६.	" - (लक्षणगीत)	नाद नगर बसायो आज	१८४
३७.	**गारा**	बैरन भई रैन अँधेरी सखि	१७७
३८.	"	मैं गई जमुना नीर भरन	१७८
३९.	"	बिन रागनि बाँसुरिया	१७९
४०.	"	श्याम कौन गली गयो	१८०
४१.	"	दिर दिर तन तनन तदारे दानि	१८१
४२.	"	कह ना गयो कछु बातें	१८२
४३.	**गुणक्री**- (लक्षणगीत)	रूप अनुपम आज गायो	२३६
४४.	"	आज आयो सुदिन	२३७
४५.	**गोरख कल्याण**	नित उठ तुम्हारे ढंग	१९७
४६.	" "	नित उठ जप रे राम नाम	१९८
४७.	" "	बनरा बनी आयो	१९९
४८.	**गौडमल्हार**- (सरगम)	गरे मगरे सानिसा	२००
४९.	" - (लक्षणगीत)	नाम गौड मल्हार	२००
५०.	"	कारी घटा छाई नभ मण्डल	२०१
५१.	"	उमंड घन गगन आयो री	२०३
५२.	"	बिन मोल नाहीं पीत	२०४
५३.	"	हों इक नई बात सुनि आई	२०५
५४.	" - (सिंघली गीत)	सकल भुवन अभिनंदन	२०७
५५.	"	विप्र दिगम्बर घर जनम लिये	२०९
५६.	" (ग वर्जित प्रकार)	ग्यान गुन दोऊ लिये	२११
५७.	" (" " ")	मान मतवारे	२१२
५८.	" (को. ग. युक्त प्रकार)	गरवा डारूँ हार	२१५
५९.	" (" " ")	जा दिनतें सखि दरस भयो	२१६
६०.	" (" " ")	सखि बेग बुलावो	२१६
६१.	" (" " ")	या अल्ला साँई	२१८
६२.	"	सत्य बचन नेक चाल	२१३
६३.	**गौरी** (भैरव थाट)	कीरत तुम्हारी तिहू लोक मों।	२४३
६४.	" (" ")	जी न जैयो मथुरा	२४५
६५.	**गौळ**- (लक्षणगीत)	मेल भैरव तामें धग बरज	२४२
६६.	**छायातिलक**	दिन नाहीं चैन	११७
६७.	**छायानट**	मन लाग्यो मोहन सों	४६
६८.	"	घारियाँ गिनत मोहे	४७
६९.	" (स्तोत्र)	नमो नमो जय श्री सरस्वती	४८
७०.	**जैजैवंती**	आओ सहेलियाँ	१६४

७१.	जैजवंती	अतही सुन्दर पालना	१६५
७२.	"	झूलो पालने ब्रिजराज	१६६
७३.	"	दिर दिर तनोम् तदरे	१६८
७४.	" (केवल तीव्र गंधार युक्त)	इन दृगन पें वारी जाऊँ	१६९
७५.	" (" " ")	तज दे री अब माननी	१७०
७६.	जैतकल्याण	आयो सावन मास	२९
७७.	"	मन को निग्रहीत	३०
७८.	"	बल बल जाऊँ	३०
७९.	जोग- रागवर्णन, स्वरविस्तार		२२०
८०.	"	बनरा बनी आयो	२२२
८१.	" (लक्षणगीत)	जुगल निस्वाद गंधार मिलाये	२२३
८२.	"	तन मन वार दई	२२४
८३.	जोगिया	खेवटिया पार उतारो आज	२३७
८४.	"	एरी मैंना जानूँ उनके मनकी	२३९
८५.	झिंझोटी	बन्सीबट जमुना तट	१८५
८६.	"	मेरो मन सखि हर लीनो	१८८
८७.	"	लकुटी जो हती अब बैन भई	१८९
८८.	"	साँवरो मन भायो	१९०
८९.	तिलक कामोद - (सरगम)	पनिसारेगसा रेमपध मपसां	१५४
९०.	" - (लक्षणगीत)	मेल खमाज सुंदर सुर लिये	१५५
९१.	"	शरद रात उजियारी	१५६
९२.	"	धन धन भाग जसोदा रानी	१५७
९३.	"	जय जय सरस्वती शारदा	१५८
९४.	"	कल ना परे एरी कासे कहूँ	१५९
९५.	"	कैसे करूँ कहो अब न माने जिया	१६०
९६.	"	पपीहा पीहु पीहु जी न बोलो	१६१
९७.	"	प्रल्हाद हनुमत	१६२
९८.	तिलंग	मोहन मन मोह लियो आली	१७१
९९.	"	जियो जियो जियो कुँवर राज	१७२
१००.	दीपक (बिलावल थाट)	दीपन की ज्योत तारन को चन्दा	११९
१०१.	" (" " ")	चौंक पुराओ री आली	१२०
१०२.	दुर्गा (बिलावल थाट)- (सरगम)	धम रे सारे प धमप	९६
१०३.	" (" ") - (लक्षणगीत)	अगनि औडव दुर्गा	९६
१०४.	"	निरत करत अत धूमधाम सों	९७
१०५.	"	घर ऑगना कछु ना सुहावे	९९
१०६.	" "	दुर्गे महारानी पातक निवारिनी	१००

१०७.	दुर्गा (खमाज थाट)	कैसी अनोखी रीत पीत की	१७३
१०८.	देवगिरी बिलावल	धन्य आज महाराज	७१
१०९.	" "	माने जरा अब माननी	७३
११०.	" "	नेकहु लाज ना आवे तोरे	७४
१११.	" "	दिर दिर तनन दिर तनन दीम्	७५
११२.	" "	ये दिन हमरे दौरे चले जाये	७६
११३.	देवरंजनी	जिया की बिथा कैसे कहूँ	२४०
११४.	"	ऐसी को गुन खानी	२४१
११५.	देस - (सरगम)	निसारेम गरे मपनि	१४४
११६.	" - (लक्षणगीत)	मेल खमाज जनित राग देस	१४५
११७.	"	एरी बाँसुरी कौन कियो टोना	१४६
११८.	"	कहो कहलों करूँ बिनति तोरी	१४७
११९.	"	खेलत श्याम सखा लिये संग	१४८
१२०.	"	होरी खेलन को चले कन्हैया	१४९
१२१.	"	उपजत अंग स्वाभाव	१५१
१२२.	नटनारायण - (लक्षणगीत)	सुन रे आज सुजान	११३
१२३.	" "	दैया री न जाने रीत पीत की	११४
१२४.	नट बिहाग	रैन दिना नहीं चैन	१०८
१२५.	" "	विद्याधर गणेश	१०९
१२६.	" "	कौन मंत्र पढ दीनो	११०
१२७.	नट मल्हार	शुभ सगुन देहो विचार	११४
१२८.	" "	मनवा मोरा न माने	११५
१२९.	नंद - राग वर्णन, स्वर विस्तार		५५
१३०.	"	पायल मोरी बाजे	५६
१३१.	"	सीस सेरा बनरा	५७
१३२.	नाट	गुरू मुखतें जो पायी सीख	१११
१३३.	नारायणी	सहेलरियाँ गावो री आज	१९१
१३४.	"	बमना रे बिचार	१९२
१३५.	पट बिहाग	बित गये, गये बीत री	१०६
१३६.	" "	मन मोहन, मोहन मन	१०७
१३७.	प्रभात भैरव	हर हर हर गंगाधर	२४८
१३८.	" "	अब तो जागो मनवा	२४९
१३९.	बंगाल भैरव	ननंदी चवाव करे	२४७
१४०	बिलहरी	सैंया मैंतो जागी	११८
१४१.	बिलावल - (सरगम)	मगरेग पानिधनिसां	६३
१४२.	" - (लक्षणगीत)	शुचि सुर मण्डित	६३

१४३.	**बिलावल**	**मुरली बजावे मोहना**	६४
१४४.	"	**शीत शीत मंद मंद**	६७
१४५.	**बिहाग** - (सरगम)	पमगसा गमपनी	८३
१४६.	" (लक्षणगीत)	रिध तजत अनुलोम	८३
१४७.	"	मुकुट माथे गरे बैजयंती	८४
१४८.	"	नमो नमो श्री चतुर चरण	८५
१४९.	"	शरद की ज्याँदनी	८६
१५०.	**बिहाग**	यान यों अयान छायो	८८
१५१.	" - (टप्पा)	दिलदा प्यारा शोणा	८९
१५२.	"	नाचत ब्रिजराज	९०
१५३.	**बिहागडा**	नित करत रार तुम	११६
१५४.	**बैरागी भैरव**	पचरंगी चुनरिया मोरी	२५७
१५५.	" "	औलिया निजामुद्दीन	२५९
१५६.	" "	मों मनकी का कोऊ जाने	२६०
१५७.	" "	होरी खेलत ब्रिजराज	२६१
१५८.	" "	गिरी कैलास पीठ पर	२६२
१५९.	**भूपाली**- (सरगम)	गगरे गगरे सारे पग	१६
१६०.	" " - (लक्षणगीत)	तजत मनि सुर	१६
१६१.	" "	मुरली मन मोहत मोहन	१७
१६२.	" "	लाख तीरथ किये काम नहीं	१८
१६३.	" "	गूँज उठी है दिव्य गान की	१९
१६४.	" "	जाग उठो नव- युवक	२१
१६५.	" "	आद नमन सत्य को	२४
१६६.	**भैरव**- (सरगम)	पमगरेसा गSम धSपS	२२५
१६७.	" " - (लक्षणगीत)	रागनमों राग प्रथम	२२५
१६८.	" "	कन्हैया तोरी बाँसुरी	२२६
१६९.	" "	चंद्रमा ललाट सोहे	२२८
१७०.	" " - (वर्णम्)	देहिमां सुस्वरम्	२३०
१७१.	**मार्ग बिहाग**- रागवर्णन, स्वरविस्तार		६१
१७२.	" "	सरस्वती माता	६१
१७३.	" "	मान तज देरी प्यारी	६२
१७४.	**मारू बिहाग**- राग वर्णन, स्वरविस्तार		५८
१७५.	" "	ब्रिज जुवति संग	५९
१७६.	" "	मैंतो बिरहा की माती	६०
१७७.	**मालश्री**	जय जय हरे	५२
१७८.	**मांड** - (सरगम)	सासा रेमम पधनि पध	१००

१७९.	**मांड** - (लक्षणगीत)	सुध सप्त सुर	१०१
१८०.	"	सुनियो साँई अर्ज हमारी	१०२
१८१.	"	यही रूप रहे यही रंग रहे	१०३
१८२.	"	महिमा बरनी न जाय	१०४
१८३.	**मिश्रखमाज**	जावो ना मथुरा न जावो	१३६
१८४.	**मिश्र पहाडी**	जसोदा हरि पालने झुलावै	१२१
१८५.	**मेघरंजनी**	दानव दलन धीर	२३५
१८६.	**मोहन** (वर्णम्)	गोविंदम् वन्दे गोपीनाथं	२६
१८७.	**यमन**- (सरगम)	निधपम गरेसासा	१
१८८.	" " (सरगम)	गरेसानि सारे गरे ग	१
१८९.	" (लक्षणगीत)	सब सुर तीवर मेल मिलयो	२
१९०.	"	झाँझ मृदंग ढप बाजे	३
१९१.	"	गगनमय थाल, रवि चंद्र दीपक	४
१९२.	"	करीम करतार गरीब नवाज	५
१९३.	"	जय जय भारत देश हमारा	६
१९४.	" - (टप्पख्याल)	तुम तो अप्रंपार पालनहार	१०
१९५.	"	आद नाद ब्रह्म नाद	१०
१९६.	"	होरी खेलत नंदलाल	१२
१९७.	**यमन कल्याण**	रंग रंगीले फूल खिले	७
१९८.	**यमनी बिलावल**	दिर दिर तदारे तन	६९
१९९.	" "	जुग जुग जीवो रे	७०
२००.	**रागेश्री**	सरस्वती मात विद्याधरी	१७४
२०१.	"	दृगन की चमकसों	१७५
२०२.	"	अचानक चौंक परी	१७६
२०३.	**रामकली** - (लक्षणगीत)	गावो री बजावो	२३२
२०४.	"	पचरंग चुनरी मोरी	२३३
२०५.	"	ना दिर दिर तुं दिर दिर	२३४
२०६.	**ललित पंचम**	बिघ्न हर्ता एकदंत	२४३
२०७.	**सावनीनाट**	सुनो हो गुनीदास	११२
२०८.	**सोरठ**	गूँध लावो री मालनिया	१९३
२०९.	"	गुन को मोल तौल ना किजियो	१९४
२१०.	"	आज नंद घर जाये	१९५
२११.	"	ये हो कैसी रीत	१९६
२१२.	**शंकरा**	दुर्गे महिषासुर मर्दिनी	९१
२१३.	"	न करो अब मोंसे रार	९२
२१४.	"	कहाँलो कीजो बखान	९३

२१५.	"	नमो नमो नमो नाद	९५
२१६.	शंकराकरण- रागवर्णन्, स्वरविस्तार		५३
२१७.	"	जारे जारे जारे पतंगवा	५४
२१८.	"	काहू को रिझावन	५४
२१९.	श्यामकल्याण- (लक्षणगीत)	बरनत भेद कल्याण	३१
२२०.	"	उजट भयो संसार सुरन को	३१
२२१.	शिवमत भैरव- (लक्षणगीत)	सुन सुन सुजान	२४६
२२२.	" "	प्रथम ओंकार धुन	२४६
२२३.	शुक्ल बिलावल	जय जय मंगल गाऊँ	७६
२२४.	शुध्द कल्याण	दिर दिर तान्न द्रे	२७
२२५.	"	साधे सुर साधे	२८
२२६.	शुध्द मल्हार	धूम धूम धूम आये	२१९
२२७.	हमीर	मन मोहन ब्रिजराज	३३
२२८.	" - (टप्पख्याल)	जाग रहे सगरी रतिया	३४
२२९.	हिंडोल	गूँज उठी है दिव्यगान की	५१
२३०.	हेमनाट- रागवर्णन, स्वरविस्तार		१२८
२३१.	"	निरतत कान्ह	१२९
२३२.	"	पार न पायो कोऊ	१३०
२३३.	"	सरस रंग होरी खेले	१३१
२३४.	हंसध्वनि	हे रिध सिध दायक	१२३
२३५.	"	दैया री मनाय	१२४
२३६.	"	होरी नाचत श्री शंभो	१२५
२३७.	" - (वर्णम्)	वन्दे श्री विश्वेशं	१२६

इस पुस्तक में आये हुवे अप्रसिद्ध ठेके

रूपक – विलंबित लय (मात्रा ७)

मात्राः	१	२	३	४	५	६	७
ठेकाः	तिं	ऽता	तिरकिट	धीं	तिरकिट	धीं	धाधा
तालः	⊗			२		३	

सूल फाक्ता ताल (मात्रा १०)

(तबले पर बजनेवाला ठेका)

मात्राः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
ठेकाः	धिं	त्रक	धी	ना	त्रक	धी	ना	धी	धी	ना
तालः	X		०		२		३		०	

मणिताल (मात्रा ११)

मात्राः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
ठेकाः	धिं	ऽ	त्रक	धी	ना	तिं	ऽ	ना	धिं	धिं	ना
तालः	X			२		०			३		

विक्रमताल (मात्रा १२)

(तबले पर बजनेवाला ठेका)

मात्राः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ठेकाः	धिं	ऽ	धा	गे	ना	तिं	त्रक	धी	ना	धी	धी	ना
तालः	X		२			०			३			

(मृदंग पर बजनेवाला ठेका)

मात्राः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ठेकाः	धा	ऽ	धि	त्ता	ऽ	क	ऽ	त्ता	तिट	कत	गदि	गन
तालः	X		२			०			३			

सवारी ताल (मात्रा १५)

मात्राः	१	२	३	४	५	६	७	८
ठेकाः	धिं	धा,	तत्	धीना	धीना	तीऽऽक्ड	तना	तिरकिड,
तालः	X				0			

मात्राः	तना	किडनक	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ठेकाः			कत्ता	धीधी	ना,धी	धीना	धिंऽऽ,धा	ऽक्ड,धिंऽ	ऽ,धाऽक्ड
तालः			२				३		

सुजन शिखर ताल (मात्रा १७)

मात्राः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ठेकाः	धिं	धिं	ना	धिं	धिं	ना	क	ऽत्ता	त्रक	धी	ना	धिं	ऽ	धागे	ना,धा	त्रक	
तालः	X		२				0		३			४			५		

पंचानन ताल (मात्रा १९

(तबले पर बजनेवाला ठेका)

मात्राः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
ठेकाः	धिं	ऽ	धा	गे	ना	तिं	ऽ	त्रक	धी	धी	ना	धी	धी	ना
तालः	X		२			0			३		४			

मात्राः	१५	१६	१७	१८	१९
ठेकाः	कत्	ऽ	तिं	ना	त्रक
तालः	५			0	

(मृदंग पर बजनेवाला ठेका)

मात्राः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
ठेकाः	धा	ऽ	धित्ता	ऽ		क	ऽ	त्ता	धि	ट	धा	ऽ	ति	ट
तालः	X		२			0			३		४			

मात्राः	१५	१६	१७	१८	१९
ठेकाः	धा	तिट	कत	गदि	गन
तालः	५			0	

॥श्री॥

अभिनव-गीत-मंजरी

भाग १ ला

राग यमन-सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

नि ध प म́ | ग रे सा सा, | ग – ग रे | ग म́ प ध,
० ३ × २
प म́ ग रे | ग म́ प म́ | ग रे सा –, | ध़ नि़ रे ग
० ३ × २
म́ प, ग म́ | प ध नि सां, | म́ प ध नि | रें सां नि ध,
० ३ × २

अंतरा

प म́ ग प | –, प नि ध | सां – – –, | सां रें सां –,
० ३ × २
नि रें गं रें | सां –, ध नि | सां – –, रें | सां नि ध प,
० ३ × २
म́ प ध नि | सां –, नि ध | प म́ ग रे | ग म́ प ध,
० ३ × २

राग यमन-सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

ग रे सा नि़ | सा रे ग रे | ग –, ग रे | ग म́ प म́,
० ३ × २
ग म́ प ध | नि ध प म́ | –, ध नि रें | सां नि ध प,
० ३ × २
म́ प ध नि | सां – –, नि | – –, ध – | –, प – म́
० ३ × २

अंतरा

नि ध प रे | –, सा नि़ रे | ग म́ प ध, | नि ध नि रें
× २ ० ३
सां – – –, | नि रें गं रें | सां – – –, | नि सां रें, ध
× २ ० ३
नि़ सां, प ध | नि, म́ प ध, | ग म́ प, रे | ग म́, नि़ रे
× २ ० ३
ग, नि़ सा रे, | ध़ नि़ सा रे | ग म́ प ध | नि सां –, नि
× २ ० ३
– –, ध – | –, प – म́ | ग रे सा नि़ | सा रे ग रे
× २ ० ३

राग यमन-लक्षणगीत-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: सब सुर तीवर मेल मिलायो,
तामें अंश गंधार नि सहचर,
परि सुर-संगत अंग मनोहर।

अंतरा: प्रथम प्रहर निस गाये गुनीवर,
होवे कल्याण ऐमन 'सुजान',
रागनमों राग एक आश्रय सम्पूरन,
अत गम्भीर मधुर ॥

स्थायी

प नि ध प म	ग री सा सा	ग - ग री	म ग मग प म प
स ब सु र	ती ऽ व र	मे ऽ ल मि	ला ऽऽ यो ऽ
०	३	×	२
म प म ग री	सा - सा सा	नि ध़ नि़ सा	नि़ ध़ प़ प़
ता ऽ में ऽ	अं ऽ श गं	धा ऽ र नि	स ह च र
०	३	×	२
सा नि़ नि़ री री	म ग मग प म प	म प री ग री	सा नि़ री सा सा
प रि सु र	सं ऽऽ ग त	अं ऽ ग म	नी ऽ ह र
०	३	×	२

अंतरा

म प प म ग	प प नि ध	सां - सां सां	सां रीं सां सां
प्र थ म प्र	ह र नि स	गा ऽ ये गु	नी ऽ व र
०	३	×	२
सां नि - नि नि़ध	सां - - सां	सां रीं गं रीं	सां नि ध प
हो ऽ वे कऽ	ल्या ऽ ऽ न	ऐ ऽ म न	सु जा ऽ न
०	३	×	२
म प - म ग	प - नि -	ध सां - सां	सां रीं सां नि
रा ऽ ग न	मों ऽ रा ऽ	ग ए ऽ क	आ ऽ श्र य
०	३	×	२
ध प म ग	री सा, नि़ री	म ग मग प म प	प ध प प
स ऽ म्प ऽ	र न, अ त	ग ऽऽ भी ऽ	र म धु र
०	३	×	२

राग यमन – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः झाँझ मृदंग ढप बाजे पैंजनी,
उठत नाद मधुर मुरलीतें सखि,
सुनि सुनि मेरो मन लागि रहत नित।

अंतराः रास होत अत धूम-धाम सों,
नीर तीर जमुना के जब,
कान्ह कुँवर राधा सुकुँवारी,
सोहत मोहत नरनारी जन ॥

स्थायी

मप नि ध नि	पम प मग	गप पमप	– मं ग –
झाँ ऽ झन्नि	दं ग ढ प	बा ऽ जे पैं	ऽ ज नी ऽ
०	३	×	२
मग ग गरीग	– गग धप	मं गरी ग री	सा नि़ री सा सा
उ ठ त ना	ऽ द म धु	र मु र लि	तें ऽ स खि
०	३	×	२
नि़सा सा री री	मग ग मं गं मं	प – पसां	नि धनि धं मं प
सु नि सु नि	मे रो म न	ला ऽ गि र	ह त नि त
०	३	×	२

अंतरा

गप ग गमप	– पनि ध	निसां – सांनिसां	– रींसां –
रा ऽ स हो	ऽ तअत	धू ऽ म धा	ऽ म सीं ऽ
०	३	×	२
सांनि ध धनि सां	– सां सांसां	निसां रींगंरीं	सांनि ध प
नी ऽ र ती	ऽ र जमु	ना ऽ ऽ ऽ	के ऽ ज ब
०	३	×	२
मप – पमप	धं मं मं ग –	प री गरी	सा नि़ री सा –
का ऽ न्ह कुँ	व र रा ऽ	धा ऽ सु कुँ	वा ऽ री ऽ
०	३	×	२
नि़सा री ग मं	प धं निसां	सांनि निधं पंमं	मं गरी सा सा
सो ऽ ह त	मो ऽ ह त	न र ना ऽ	री ऽ ज न
०	३	×	२

राग यमन-झपताल (मध्यलय)

स्थायीः गगनमय थाल, रवि-चंद्र दीपक बने,
तारिका मण्डला जनक मोती।
अंतरा-१ः धूप मलि आनलो, पवन चँवरो करे,
सकल बनराय फूलंत ज्योती ॥
अंतरा-२ः ऐसी आरती होय, भव खण्डना तेरी,
आरती अनहदा शब्द बाजत भेरि ॥

स्थायी

नि ध	प म ग	प (प)	म ग रे	ग –	रे गम प	रे नि	रे सा –
ग ग	न म य	था ऽ	ल र वि	चं ऽ	द्र दी ऽ ऽ	प क	ब ने ऽ
×	२	०	३	×	२	०	३
नि –	ध नि रे	ग मग	प प –	म ध	निध नि(सां)	नि ध	प मग म
ता ऽ	रि का ऽ	मं ऽऽ	ड ला ऽ	ज न	कऽ मो ऽ	ती ऽ	ऽ ऽऽ ऽ
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा-१

प म	ग प निध	नि सां	सां सां –	नि नि	निध निरें	सां निध	नि ध प
धू ऽ	प म लिऽ	आ ऽ	न लो ऽ	प व	नऽ चँव	रो ऽऽ	क रे ऽ
×	२	०	३	×	२	०	३
रे ग	म ध नि	रेंगं मप	रेंसां –	म ध	निध नि(सां)	नि ध	प मग म
स क	ल ब न	राऽ ऽऽ	य फू ऽ	लं ऽ	तऽ ज्यो ऽ	ती ऽ	ऽ ऽऽ ऽ
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा-२

नि –	निनिध	नि सां	सां – सां	ध नि	रें गं रें	सां –	नि ध प
ऐ ऽ	सी आ ऽ	र ति	हो ऽ य	भ व	खं ऽ ऽ	ना ऽ	ते ऽ री
×	२	०	३	×	२	०	३
मे –	धनिरें	गं रें	सां निध	प –	रें गं म	प री	नि री सा
आ ऽ	र ती ऽ	अ न	ह दा ऽ	श ऽ	द्ध बा ऽ	ज त	भे ऽ रि
×	२	०	३	×	२	०	३

टीपः इस गीत के शब्द 'राग रत्नाकर' ग्रंथ से लिये गये हैं, जिसका स्वरकरण लेखक ने किया है।

राग यमन - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: करीम करतार ग़रीब नवाज़,
सुनो अरज़ मोरी, आज काज सँवार।
अंतरा: दाता दोऊ जग के हो, मुश्किलात मोरी
दूर करो, तूं ही ख़लक के एक आधार॥

स्थायी

पमं गरी सानि धनि	सा प मंग ग पध	(प) - मं गरी	सानि रीसा, सा नि
रीऽ मऽ कऽ रऽ	ता ऽऽ र गऽ	री ऽ ब न	वाऽ ऽज़, सु
३	×	२	०
गरी मं ग धं मं धं	सां नि रीं गं रीं	सां, गंरीं सांनि धप	मंग रीसा सा, निध
नो अ र ज़	मो री आ ऽ	ज़, काऽ जऽ सँऽ	ऽवा ऽऽ र, कऽ
३	×	२	०
पमं गरी			
रीऽ मऽ .... इत्यादि			
३			

अंतरा

निसां - - -नि	धप मंग रीसा, सा नि	गरी मं ग धं मं धं	गं निरीं -, सं नि
दा ऽ ऽ ऽऽ	ताऽ ऽऽ ऽऽ, दो	ऊ ज ग के	हो ऽ ऽ, मु
×	२	०	३
रीं गंमं पं गंरीं	सां सां, गरी ग	प गरी सा, नि	गरी मं ग धं मं धं
श्कि लाऽ ऽ त	मो री, दू ऽ	र क रो, तूं	ही ख़ ल क
×	२	०	३
सांनि रीं -, गंरीं	निरीं गंरीं सांनि धप	मंग रीसा नि सा, निध	पमं गरी सानि धनि
के ऽ ऽ, पऽऽ	ऽऽ ऽऽ कऽ आऽ	ऽधा ऽऽ र, कऽ	रीऽ मऽ कऽ रऽ
×	२	०	३

सा प मंग ग
ता ऽऽ र ---- इत्यादि स्थायी के अनुसार
×

राग यमन-त्रिताल (मध्यलय)

(हमारा भारत देश)

स्थायीः जय जय भारत देश हमारा,
नमन प्रथम करि मंगल गावैं,
दस दिस कीरत जस उजियारा,
जग में न्यारा देश हमारा।

अंतरा-१: विपुल धान्य फल-मूल परिप्लुत,
कुसुम सुगंधित उपवन शोभित,
अग-नग सागर सरित् सरोवर,
रक्षित पोषित कोटि-कोटि जन,
अतही प्यारा देश हमारा ॥

अंतरा-२: ललित-कला अरु ग्यान ध्यान बल,
सभ्य सुसंकृत नर नारी जन,
युद्ध-कुशल रणवीर धुरंधर,
शासन-कार्य प्रगल्भ मंत्रियुत,
जगमों न्यारा देश हमारा ॥

स्थायी

म प म ग री	सा नि रि री सा सा	सा ग – ग ग री	म ग मग प म प
जै ऽ जै ऽ	भा ऽ र त	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२
प म ध नि ध	प म ध प म	ग री ग री	सा नि रि री सा –
न म न प्र	थ म क रि	मं ऽ ग ल	गा ऽ वैं ऽ
०	३	×	२
नि सा री म ग म	प ध सां नि रीं	सां नि ध पे	म ग म प म प
द स दि स	की ऽ र त	ज स उजि	या ऽ रा ऽ
०	३	×	२
म प ध प म	ग री – सा –	सा ग – ग ग री	म ग मग प म प
ज ग मों ऽ	न्या ऽ रा ऽ	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२

अंतरा-१

म प म ग म प	– प प नि ध	नि सां – सां सां	सां रीं सां सां
वि पु ल धा	ऽ न्य फ ल	मू ऽ ल प	री ऽ प्लु त
०	३	×	२

सां नि नि नि ध | नि सां – सां सां | सां रीं सां निध | नि ध प प
कु सु म सु | गं ऽ धि त | उ प व नऽ | शो ऽ भि त
० ३ × २
प नि ध म प ध | प म ग री | ग प – ग री | सा नि़ री सा सा
अ ग न ग | सा ऽ ग र | स रि ऽत्स | रो ऽ व र
० ३ × २
सा नि़ – री री | म ग मग म म | प – प नि ध | नि ध प पम
र ऽ क्षि त | पो ऽऽ षि त | को ऽ टि को | ऽ टि ज नऽ
० ३ × २
म ग ध प म | ग री – सा – | सा ग – ग री | म ग मग प म प
अ त ही ऽ | प्या ऽ रा ऽ | दे ऽ श ह | मा ऽऽ रा ऽ
० ३ × २

अंतरा- 2

म प प म ग | प – नि ध | नि सां – सां सां | – रीं सां सां
ल लि त क | ला ऽ अ रु | ग्या ऽ नध्या | ऽ न ब ल
० ३ × २
सां नि – नि ध | सां नि सां सां सां | सां नि रीं सां निध | नि ध प प
स ऽ भ्य सु | सं ऽ कृ त | न र ना ऽऽ | री ऽ ज न
० ३ × २
म प म ग म प | प प म प प | नि ध नि ध म प | ग री – सा सा
यु ऽ द्ध कु | श ल र ण | वी ऽ र धु | रं ऽ ध र
० ३ × २
सा नि़ – री री | म ग मग म प म | प – प नि ध | नि ध प प
शा ऽ स न | का ऽऽ र्य प्र | ग ऽ भ्म मं | ऽ त्रि यु त
० ३ × २
म ग ध प – म | ग री – सा – | सा ग – ग री | म ग मग प म प
ज ग मों ऽ | न्या ऽ रा ऽ | दे ऽ श ह | मा ऽऽ रा ऽ
० ३ × २

राग यमनकल्याण – कहरवा (मध्यलय)

(मेरा बाग़)

स्थायी : रंग रंगीले फूल खिले मेरे बाग़ में
देख सखी आजा, आजा, आजा ।

अंतरा-१ : कली कली रस ले, मदमात भँवर
गुँजारव सुनि आजा, आजा, आजा ॥

अंतरा-२: नैन मनोहर रंग-रूप युत
उड़ रही न्यारी तितलियाँ प्यारी,
मानो अपने मन की बातें
फूलों से मिल कहतीं सारी,
भली लगत हैं जैसी कुँवारी,
देख देख सखिरी आजा,आजा, आजा ॥

अंतरा-३: चल गूँधे पुहुपन को हार,
रचें सुगंधित सुंदर सिंगार,
गावें गीत मधुर चितहार,
कोयल कूकत अरि आजा,आजा,आजा ॥

स्थायी

सा ग – री सा	सा नि सा री	ग – ग री	ग म प ध
रं ऽ ग रं	गी ऽ ले ऽ	फू ऽ ल खि	ले ऽ मे रे
×	०	×	०
म प म प म	ग री ग री	सा – नि ध	नि री – –
बा ऽ ग में	दे ऽ ख स	खी ऽ आ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०
– –, गरी नि	रे गि – –	– –, पम ग	पम प – –;
ऽ ऽ,आ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ,आ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ;
×	०	×	०

अंतरा-१

रे ग ग – री	सा – सा नि री	सा –, म प ध	प – प, सां नि
क ली ऽ क	ली ऽ र स	ले ऽ, म द	मा ऽ त, भँ
×	०	×	०
नि ध सां निरीं	सां नि ध प	सा नि री म ग म	प – – –
व र गुँ ऽ	जा ऽ र व	सु नि आ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०
– –, पम ग	पम ध – –	– –, म ध प प	म ग – –;
ऽ ऽ,आ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ,आ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ;
×	०	×	०

अंतरा-२

प नि ध नि ध	पम ध प प,	प नि – ध सां नि	– रीं सां सां
नै ऽ न म	नो ऽ ह र,	रं ऽ ग रू	ऽ प यु त
×	०	×	०

सां नि नि गं रीं गं | (सां) – सां नि || सां नि ध सां नि (सां) | नि ध प –
उ ड़ र ही | न्या ऽ रि ति || त लि याँ ऽ | प्या ऽ री ऽ
× ० | × ०

प ग म ग री | सा ऩि री सा – || री ऩि री ग सं ग | प म प प –
मा ऽ नो ऽ | अ प ने ऽ || म न की ज्ञ | बा ऽ तें ऽ
× ० | × ०

प म – नि ध नि | ध नि – नि ध || सां नि रीं (सां) – | नि ध प –
फू ऽ लों ऽ | से ऽ मिल || क ह तीं ऽ | सा ऽ री ऽ
× ० | × ०

म प प – नि ध | नि ध प – || प म – ग री | ग म प म प –
भ ली ऽ ल | ग त हैं ऽ || जै ऽ सी कुँ | वा ऽ री ऽ
× ० | × ०

प नि – ध म प | म ध म प प || सा ऩि री म ग म | प – – –
दे ऽ ख दे | ऽ ख स खि || री ऽ आ ऽ | जा ऽ ऽ ऽ
× ० | × ०

– –, प म ग | प म नि – – || – ध, सां नि रीं | सां – – –;
ऽ ऽ, आ ऽ | जा ऽ ऽ ऽ || ऽ ऽ, आ ऽ | जा ऽ ऽ ऽ;
× ० | × ०

अंतरा- ३

म प प म प – | म प – म प प || नि ध नि (प) – | म ग – ग
च ल गूँ ऽ | धें ऽ पु हु || प न को ऽ | हा ऽ ऽ रे
× ० | × ०

प ग ग – ग ध | प म ग री || री ऩि री म ग म | प – – प
र चें ऽ सु | गं ऽ धि त || सु न्द र सिं | गा ऽ ऽ रे
× ० | × ०

प नि – नि – | सां नि – नि नि || सां नि ध सां नि रीं | सां (सां) – सां
गा ऽ वैं ऽ | गी ऽ त म || धु र चि त | हा ऽ ऽ रे
× ० | × ०

म प – ग री री | री ऩि री सा सा || सां नि ध सां नि रीं | गं रीं गं – –
को ऽ य ल | कू ऽ क त || अ रि आ ऽ | जा ऽ ऽ ऽ
× ० | × ०

– –, सां नि ध | सां नि सां – – || – –, प म ग | प म प – –;
ऽ ऽ, आ ऽ | जा ऽ ऽ ऽ || ऽ ऽ, आ ऽ | जा ऽ ऽ ऽ,
× ० | × ०

राग यमन - त्रिताल (विलंबित)

स्थायी: तुम तो अप्रंपार, पालनहार,
ख़लक के एक आधार ।
अंतरा: दीन दुनी के दुःखहार, ग़रीब नवाज़,
शरण गये की लाज सम्हार ॥

स्थायी

नि गरीसानिधनि	सा प मे ग	मे गमप-	पे मपध-	पमगरी--
तुऽमऽऽऽ	तो ऽ	अऽऽऽ	पऽऽऽ	रंऽऽऽऽऽ
	×			२

मे गमप--मे	गरीसानिनि-	सा रीगमपधनिसां-	--,निंधनि (प)	निधं, सांनि गंरींगं
पाऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽ	ऽ,लन् हा	र,ख लक	के पुऽऽऽऽऽकऽ
		०		३

रीं गंरींनिरींगंरींसांनि	धपपगरीसासा-	--;निगरीसानिधनि	सा प मे ग	
रींऽऽऽऽऽऽऽऽ	आऽऽधाऽऽरऽ	ऽऽ;तुऽमऽऽऽ	तो ऽ	--- इत्यादि
			×	

अंतरा

नि सां--नि	मे धपपगरीसा--	सा नि--ध	सां--निरीं	सां नि,ध प-मे गरी
दीऽऽऽ	नऽऽदुऽनीऽऽ	केऽऽऽ	ऽ,दुःख	हा र,ग रीऽबन
×				२

नि सा--सा	नि रीं गमं धनि	रीं गंरींनिरींगंरींसांनि	धपपगरीसासा-	--;निगरीसानिधनि
वाऽऽऽज़	शर नग येऽ	कीं लाऽऽऽऽऽजऽ	सऽऽऽम्हाऽरऽऽ	ऽऽ;तुऽमऽऽऽ
०		३		

सा प मे ग
तो ऽ ---- इत्यादि स्थायी के अनुसार
×

राग यमन - ध्रुवपद - चौताल (विलंबित)

स्थायी : आद नाद ब्रह्मनाद, अनहत ओंकार प्रणव,
जाको जोगी ध्यान करत, पावत सत् चिदानंद ।
अंतरा : हरि मुखतें आहत, निकस्यो मधुर मुरली नाद,
यातें अखिल चराचर, पायो परम सुख आनन्द ॥
संचारी : उदात्त अरु अनुदात्त, स्वरित लिये तीन भेद,
जामें पठत वेद मंत्र, मार्ग रीत आहत नाद ॥
आभोग : ताहिसों सप्त सूर, देशी रीतमों प्रमाण,
प्रकट नाम रूप सों, खरज रिखब गांधार, मध्यम पंचम धैवत
निखाद शुचि विकृत भेद ॥

स्थायी

नि़ ग	– री	सा नि़	री सा	सा ग –	ग री	म ग	म प
आ	ऽ द०	ना	ऽ द	ब्र ऽ	ह्म	ना	ऽ द
	×		२	०		३	४
म प	ध प	म	ग री	प ग	प री	सा नि़	री सा
अ	न ह०	त	ओं ऽ	का ऽ	र	प्र	ण ब
	×		२	०		३	४
सा नि़	– ध़	सा नि़	री री	म ग	मग म	प	प प
जा	ऽ को०	जो	ऽ गी	ध्या	ऽऽ न	क	र त
	×		२	०		३	४
प मं	– नि़ध		प री	ग री	–	सा नि़	री सा
पा	ऽ व०	त	स त	चि दा	ऽ न		ऽ न्द
	×		२	०		३	४

अंतरा

म प	मग	म प	प	प नि	ध सां	–	– सां	– सां
ह	रिऽ	मु	ख	तें ऽ	आ ऽ		ऽ ह	ऽ त
	×	०		२	०		३	४
सां नि	नि	ध सां नि		रीं रीं	सां सां	नि ध	नि	ध प
नि	क	स्यो	म	धु र	मु र	ली	ना	ऽ द
	×	०		२	०		३	४
प गं	–	रीं सां नि		रीं सां	सां नि	नि ध	नि	ध प
या	ऽ	तें०	अ	खि ल	च रा		ऽ च	ऽ र
	×			२	०		३	४
प मं	ग	प नि ध		ध प	म प	रि	ग री	– सा
पा	ऽ	यो०	पऽ	र म	सु	ख	आ न	ऽ न्द
	×			२			३	४

संचारी

म प	म	– ग	प म	म	प प	–	प	ध प
उ	दा	ऽ त्त	अ	रु	अ	नु	ऽ दा	ऽ त्त
	×	०	२		०		३	४
प मं	म	नि़ध ध	नि	–	सां	–	नि़ध	नि ध प
स्व	रि	त लि	ये	ऽ	ती	ऽ	नऽ	भे ऽ द
	×	०	२		०		३	४
प मं	नि	ध म	प ध	प	ग री	ग	प	री – सा
जा	ऽ	में०	प	ठ त	वे	ऽ	द	मं ऽ त्र
	×		२		०		३	४

सा नि़ – | रे ग | म ग | प प | प प | ध प
मा ऽ | र्ग रे | ऽ त | आ ह | त ना | ऽ द
× | ० | २ | ० | ३ | ४

आभोग

सां नि – | नि नि | – ध | सां – | सां सां | – सां
ता ऽ | हि सों | ऽ ऽ | स ऽ | प्त सू | ऽ र
× | ० | २ | ० | ३ | ४

सां नि – | रीं गं | रीं सां | सां निध | नि ध | – प
दे ऽ | सी री | ऽ त | मों ऽऽ | प्र मा | ऽ न
× | ० | २ | ० | ३ | ४

प गं रीं | सां नि | ध प | ग री ग | री सा | – –
प्र क | ट ना | ऽ म | रू ऽ | प सों | ऽ ऽ
× | ० | २ | ० | ३ | ४

नि़ सा सा | सा ग | री री | री ग | – – | री ग | – ग
ख र | ज रि | ख ब | गां ऽ | ऽ धा | ऽ र
× | ० | २ | ० | ३ | ४

प म – | म म | म प | – प | प म | ध – | ध ध
म ऽ | ध्य म | पं ऽ | च म | धै ऽ | व त
× | ० | २ | ० | ३ | ४

सां नि नि | – नि | नि सां | सां नि | नि ध | ध प | प म | ग री | री सा
नि खा | ऽ द | शु चि | वि कृ | त भे | ऽ द
× | ० | २ | ० | ३ | ४

राग यमन - धमार

स्थायी : होरी खेलत नंदलाल, ब्रिज-बारन संग सोहे राधा प्यारी।
अंतरा : मृदंग ढप धुन बाँसुरी की धूम मची है,
गावत नाचत सबै दै दै तारी ॥
संचारी : अबीर गुलाल के बादर छाये चहूँ ओर,
रंग की भरी है पिचकारी अत भारी ॥
आभोग : सब सखियन में राजत बिराजत,
संग साँवरे राधा गोरी ॥

स्थायी

सा ग रे – | सा नि़ ध़ | सा नि़ रे | ग – रे | ग म | प रे
हो री ऽ | खे ऽ ल त | नं ऽ द ला ऽ | ऽ ल
० | ३ | × | ३ | २

रे ग रि - | सां नि ध सां नि रि | ग - रि ग मं | नि ध
हो रि स | खे स ल त | नं स द ला स | स ल
० ३ × २

मं प मं ग रि | ग रि सा सा | सां नि - ध सां नि सा | - निध
ब्रि ज स | बा स र न | सं स स ग स | स सो
० ३ × २

नि ध प | रे नि ग रि ग मं ग | मं ध प रि ग रि | सा -
हे स स | रा स धा ऽऽ | प्या स स स स | री स
० ३ × २

अंतरा

प मं ग - प - | प नि ध | नि सां सां - | नि सां रीं सां सां
मृ दं स ग स | ढ प | धु न स | बाँ स सु री
× २ ० ३

सां नि - ध सां नि रीं | सां नि सां | सां नि - ध | नि ध प -
की स स धू स | म म | ची स स | है स स स
× २ ० ३

ग रि ग प ग रि - | सा सा | सां गं रीं - | नि सां निध नि ध
गा व त ना स | च त | स बै स | दै ऽऽ दै स
× २ ० ३

मं प - ग रि ग रि | सा -; | सा ग रि - | सा नि ध सा नि रि
ता स स स स | री स; | हो रि स | खे स ल त
× २ ० ३

संचारी

मं प मं ग मं प प | मं प - | प मं प - | मं प ध प प
अ बी स र गु | ला स | ल के स | बा स द र
× २ ० ३

पं मं ध मं नि ध नि | - रीं | सां - निध | नि ध प प
छा स स ये स | स च | हूँ स ऽऽ | ओ स स र
× २ ० ३

ग रि ग - पं मं ध | नि ध | मं प मं ग | ग प - मं ग प
रं ग स की स | स भ | री स स | है स पि च
× २ ० ३

ग रि - - सा - | सा नि ध | सा नि रे सां | पं मं ध प -
का स स री स | अ त | भा स स | स स री स
× २ ० ३

आभोग

म प	प	–	प सां	–	सां	–	नि सां	सां	–	सां नि	रीं	सां	–
स	ब	ऽ	स	ऽ	स्वी	ऽ	य	न	ऽ	ऽ	ऽ	मों	ऽ
×					२		०			३			
सां नि	रीं	गं	रीं सां	सां	–	रीं	सां	–	निध	नि	ध	प	–
रा	ऽ	ऽ	ज	त	ऽ	बि	रा	ऽ	ऽऽ	ज	ऽ	त	ऽ
×					२		०			३			
प गं	रीं	–	नि सां	–	–	रीं	सां	–	–	ग री	म	प म	नि ध
सं	ग	ऽ	साँ	ऽ	ऽ	व	रे	ऽ	ऽ	रा	ऽ	धा	ऽ
×					२		०			३			
ध नि	नि ध	ध प	प म	म ग	ग री	–;	री ग	री	–	सा नि़	ध़	सा नि़	री
गो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ;	हो	री	ऽ	खे	ऽ	ल	त
×					२		०			३			

राग कल्याणी - वर्णम् - आदिताल

पल्लवीः गणेशं हेरंबं वन्दे साष्टांगंहि
गौरी पुत्रं विघ्नेशं चाऽद्य ।
अनुपल्लवीः विधाधारं सिद्धिदातारं तम्
सर्व कल्याणार्थं तं स्तौमि ।
चरणम्ः श्रीऽशं ज्ञानेशं स्तुत्यं स्तौमि ।

पल्लवी

सांसां-सां	निध,रींसां	निनि,धध	पम,गम	पधनि,ध	–,रींसांनि	धपम,ग	मपधनि
गणेऽशं	ऽऽ,हेऽ	ऽरं,ऽऽ	ऽऽ,बंऽ	वंऽऽ,दे	ऽ,साऽऽ	ष्टांऽऽ,गं	ऽऽऽहि
×				२		३	
सांरींगंरीं	सां,निसांरीं	सांनि,रींसां	नि,धनिध	नि---	--,सांनि	धपम,ग	मपधनि
गौऽऽऽ	ऽ,रीऽऽ	ऽऽ,पुऽ	ऽ,त्रंऽऽ	विऽऽऽ	ऽऽ,घ्नेऽ	शुंऽऽ,चा	ऽऽऽध
×				२		३	

अनुपल्लवी

प-मग	निध-,ग	धप-मं	गरीसानि,	सारीग,मं	–,गमं	प,ग-मं	निधनिप,
विऽऽऽ	ऽधाऽ,धा	ऽरंऽऽ	सिऽद्धिऽ,	दाऽऽ,ता	ऽऽ,रंऽ	ऽ,तंऽऽ	ऽऽऽऽ,
×				२		३	
धनिसांरीं	–,सांरींगं,	सांरींगंरीं	सांनिधनि,	धगंरींसां	निध,पनि	धपम,ग	मपधनि
सऽऽर्व	ऽ,कऽऽऽ,	ल्याऽऽऽ	णाऽऽऽ,	र्थंऽऽऽ	ऽऽ,तंऽ	ऽऽऽ,स्तौ	ऽऽऽमि
×				२		३	

मुक्तायंपू

सांरें-,नि सांनि,धनि -,सांनिध पमंगरे, | सारेसा,प -मं,ध- | प,निध,रें सांनिधनि,‖
धगंरें,नि -रें,नि- सां,ध-नि, पधनिसां | गंरेंसां-, निधप-, | मंगरे,ग मंपधनि ‖

चरणम्

नि---, --,सांध सांनि,धप मं,गमं- | प---, --,मंप | धनिप,ध निधरींसां,‖
श्रीऽऽऽ, ऽऽ,शंऽ ऽऽ,ज्ञाऽ ऽ,नेऽऽ | शंऽऽऽ ऽऽ,स्तुऽ | त्यंऽऽ,स्तौ ऽऽऽमि,‖

चिट्टस्वरम्

प---,मं-ग- रे-,ध- मं-ग- | रे-,नि- सा-रे- | ग-मं- प-ध- ‖१‖
प-,धप -,मंगमं प-,मंग -रेसानि | सा-,रेनि -सा,धनि | सा-,रेग -,मंपध ‖२‖
नि---, --,सांरें निसांनि,ध निध,पमं | प--,ध निध,पध | पमंपमं गमंपध,‖
निसांनिगं रेंगंसारें निसां-रें सांरेंनिसां | धनि-,सां निधपमं | गमंपध निनिगंरें ‖३‖
रें---, --,धगं रेंसांनिप धनिसांरें | सां---, --,सांनि | धपमं,ग -मंपध‖
मं-,पध निप-,ध निसांरें-, सांनिधनि, | सांनि-ध पमं,गमं | पधपनि ध---,‖
धनिसांरें रेंगंगमं गरेंसांनि, रेंसांसांनि, | धसांनिध, पनिधप, | मंग-,मं -,प-,ध ‖४‖

टीपः इस 'वर्णम्' का स्वरकरण प्रसिद्ध तेलगू वर्णम् 'वनजाक्षीरो' का ही है, जिसमें तेलगू शब्दों के स्थान पर लेखक ने संस्कृत शब्दों की रचना की है। 'कल्याणी' को हिं.सं. पद्धति में 'यमन' कहते हैं।

राग भूपाली-सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

ग॒ ग रे, ग	ग रे सा रे	प – ग –,	ध॒ प ग –,
०	३	×	२
ग प ध सां	–, ध प ग	रे –, ग प	ध॒ रें सां –,
०	३	×	२
प ध सां रें	गं –, ध रें	–, ध सां –,	प ध सां –,
०	३	×	२
ध प ग, ध	प ग रे ग,	सा रे ग रे,	सा ध॒ सा रे;
०	३	×	२

अंतरा

ध प ग रे	सा –, सां ध	सां – – –,	रें ध सां –,
०	३	×	२
ध सां रें गं	–, ध रें –,	ध सां –, प	सां –, ध प
०	३	×	२
ग रे सा ध॒,	प॒ ध॒ सा रे	ग –, प ध	सां –, ध प
०	३	×	२
ग॒, ध प ग	रे, सा रे ग,	सा रे ग रे,	सा ध॒ सा रे;
०	३	×	२

राग भूपाली-लक्षणगीत-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : तजत मनि सुर मेल कल्याण सों,
अंश गंधार संवदत धैवत,
निशि प्रथम प्रहर रीझत सब जन ।

अंतरा : औडव जाति सुलच्छन सुन्दर,
भोपाली कहे रूप मनोहर,
भूप नाम कलियाण कहे कोऊ,
गायक गुनि प्रिय अत मन मोहन ॥

स्थायी

प सां ध प	ग री सा री	रे प ग ग॒ री	प ग प सां ध सां
, त ज त	म नि सु र	मे ऽ ल क	ल्या ऽ न सों
०	३	×	२
ध॒, प ग ग॒ री	प ग प सां ध, सां	ध सां ध प	ग री सा सा,
ऽ, अं श गं	धा ऽ र, सं	ऽ व दत	धै ऽ व त,
०	३	×	२

ध सां रीं गं रीं | सां रीं सां ध प | ध सां – ध प | ग री सा सा
नि शि प्र थ | म प्र ह र | री ऽ झ त | सु ब ज न
० ३ × २

अंतरा

प ग – ग ग | प – सां ध | सां – सां सां | ध सां रीं सां सां
ओ ऽ ड व | जा ऽ ति सु | ल ऽ च्छ न | सु ऽ न्द र
० ३ × २

ध सां – ध – | सां – रीं रीं | ध सां रीं गं रीं | ध सां रीं सां ध
भो ऽ पा ऽ | ली ऽ क हे | रू ऽ प म | नो ऽ ह र
० ३ × २

प ग – प सां | ध सां ध प | प ग – ध प | ग री सा सा
भू ऽ प ना | ऽ म कलि | या ऽ न क | हे ऽ को ऊ
० ३ × २

प सां – गं रीं | ध सां सां प ध | ध सां सां ध प | ग री सा सा
गा ऽ य क | गु नि प्रिय | अ त मन | मो ऽ ह न
० ३ × २

राग भूपाली – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : मुरली मन मोहत मोहन तुम्हरी
मुरली बजाये सुनाये जावो,
गोविन्द गोपाल गोपी-वल्लभ।

अंतरा : या बाँसुरी में मगन भये सुर,
भये मुग्ध मुनि लीन भये नर,
बिसरि सबै कछु सुध-बुध तनकी,
मनकी लगन लगी हरि के चरन ॥

स्थायी

सा – –, सां रीं | ध़ ध सा सा री | ग ग ग रीं ग | ध प, ग री
ली ऽ ऽ, म | न मो ह त | मो ह न तु | म्ह री, मु र
० ३ × २

सा – –, सां | सां ध प प ग, ग ध | ध प प ग रीं, प ग | प सां ध सां, ध प
ली ऽ ऽ, ब | जा ऽ ये, सु | ना ऽ ये, जा | ऽ वो ऽ, गो
० ३ × २

धसां रींगं रीं, सां | पध सांरीं सां, सांध | पगप धसां - ग | ध प; ग री
विंड ऽऽ द, गो | पाऽ ऽऽ ल, गो | पीऽ ऽऽ ऽव | ल्लभ; मु र
० ३ × २

अंतरा

गप - पग - | प प पसां ध | धसां सां सांसां | धसां रीं सां सां
या ऽ बाँ ऽ | सु रि मों ऽ | म ग न भ | ये ऽ सु र
० ३ × २
धसां सां ध धसां | - सां रीं रीं | धसां रीं गं रीं | धसां रीं सां ध
भ ये ऽ मु | ऽ ग्ध मु नि | ली ऽ न भ | ये ऽ न र
० ३ × २
गरी ग प सांध | धसां - सांध प | पग गधप | ग री सा -
बि स रि स | बै ऽ क छु | सु ध बु ध | त न की ऽ
० ३ × २
धसा री ग पग | री ग प ध | पग प धसां | धप; ग री
म न की ल | ग न ल गी | ह रि के च | र न; मु र
० ३ × २

राग भूपाली-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: लाख तीरथ किये काम नहीं, मन,
जबलगि अंतर राम जग्यो नहीं,
माया जाल सुलझायो नहीं, मन ।

अंतरा: जा दिन जागि उठे अंतर हरि,
ग्यान-ज्योति निरद्वंद जगे,
फिर काहे को काशी गंगा भटकनो,
हिय ही चारो धाम तीरथ 'सुजन' ॥

स्थायी

सागरीग री सा | रीरीध़ सा री | पगगगरी | ग -, धसा री
ला ऽ ख ती | र थ किये | काऽ म न | हीं ऽ, म न
० ३ × २
पग प सांध सां | ध पगरी | पग पसांध सां | पधसांरीं गंरीं सां
ज ब ल गि | अं ऽ त र | रा ऽ म ज | ग्योऽऽऽ ऽ न हीं
० ३ × २
पधसां ध प | गरीपग ध | प -गरी ग | रीरीध़ सा सा;
माऽ ऽ या जा | ऽ ल सु ल | झा ऽ यो न | हीं ऽ म न;
० ३ × २

अंतरा

ग प ग ग री	प ग – प प	प सां ध सां –	नि सां रीं सां सां
जा ऽ दि न	जा ऽ गि उ	ठे ऽ अं ऽ	त र ह रि
०	३	×	२
ध सां ध ध सां	– सां रीं रीं	रींगंरींगं रींसां	सां ध प, प ग प
श्या ऽ न ज्यो	ऽ ति नि र	द्वंऽऽऽ ऽ द ज	गे ऽ, फि र
०	३	×	२
सां ध सां ध प	प ग – ग री	प गध प – ग री	ग री सा –
का ऽ हे को	का ऽ शी ऽ	गुंऽ गा ऽ भ	ट क नो ऽ
०	३	×	२
सां गं रीं गं –	रीं सां सां ध़ध	सां धप प ग री	सा, रीं ध़ सा;
हि य ही ऽ	चा ऽ रो धाऽ	ऽ मऽ ती र	थ, सु ज न;
०	३	×	२

राग भूपाली – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: गूँज उठी है दिव्य गान की,
दसहूँ दिस फैयाज़ नाम की,
राग ताल रस रूप रंग की,
सुनो चौमुखी गीत रीत की।

अंतरा-१: का कहिये कहालों बखाने,
कण्ठ माधुरी गीत-चातुरी,
मुग्ध भयो संसार अखिलहु,
धन्य धन्य संगीत-सूरज की॥

अंतरा-२: सिर नवाये तुम्हरे चरनपे,
प्रेमपिया फैयाज़ हुसेन,
पावै गुन अपार नाद-वेद,
जय जय हो जय गुरु-चरननकी॥

स्थायी

प सां – सां ध ध प	प ग ग री री सा री	प ग ग प	– सां ध सां प ध
गूँ ऽ ज उ	ठी ऽ है ऽ	दि ऽ व्य गा	ऽ न की ऽ
०	३	×	२
ध सां सां ध ध प	प ग ग री ग –	प ग ध प ग री	ग री सा –
द स हूँ ऽ	दि स फै ऽ	या ऽ ज़ ना	ऽ म की ऽ
०	३	×	२

ध़सा रीं ध़ सा	- री ध ग ग	प - प सां	ध सां सां -
रा स ग ता	स ल र स	रू स प रं	स ग की स
०	३	×	२
धसां गंरीं गं रीं	- सां सां प ध	सांध सां धध प	ग गरी री सा -;
सु नो स चौ	स मु खी स	गी स त री	स त की स;
०	३	×	२

अंतरा-१

गप ग ग ग	प - पसां ध	धसां - - सां	धसां रीं सां -
का स क हि	ये स क हा	लों स स ब	खा स ने स
०	३	×	२
धसां ध धसां	- सां सां -	धसां रीं गं धसां	रीं सां धप
क स ष्ठ मा	स धु री स	गी स त चा	स तु री स
०	३	×	२
पग - ग गरी	पगप धसां (प) -	पग - गध प	री गरी सा -
मु स ग्ध भ	यो ऽऽ सं स	सा स र अ	खि ल हु स
०	३	×	२
सांगं - रीं धसां	- सां सांप ध	सांध सां धप	ग गरी री सा -;
ध स न्य ध	स न्य सं स	गी स त स्	र ज की स;
०	३	×	२

अंतरा-२

धसां सां सांध सां	- सां धसां सां	सां - - सां	धसां रीं सां -
सि र न वा	स ये तु म्ह	रे स स च	र न पे स
०	३	×	२
धसां - ध धसां	सां - निसां -	धसां रीं गं रीं	धसां - ध प
प्रे स म पि	या स फै स	या स ज़ हु	सै स स न
०	३	×	२
पग प सांध सां	सांध प पग गरी	ग ध गप री	ग री सा सा
पा स वै स	गु न अ पा	स र ना स	द वे स द
०	३	×	२
सांगं - रीं -	सां - सांप ध	धसां सां धध प	पग गरी री सा -;
जै स जै स	हो स जै स	गु रु च र	न न की स;
०	३	×	२

टीप: अपने गुरुवर्य 'आफ़्ताब-ए-मौसीक़ी' उस्ताद फ़ैयाज़ हुसैन ख़ाँ साहेब के प्रति आदरांजलि के रूप में लेखक ने इस गीत की रचना की है। प्रातःकाल की सभा में यदि इस गीत का उपयोग करना हो, तो हिंडोल राग के अंतर्गत इसी गीत का स्वरकरण देखिये।

राग भूपाली- कहरवा (मध्यलय)

(वीर-गीत)

स्थायी: जाग उठो नव-युवक वीर तुम
जाग उठो नव-युवक धीरवर
जाग उठो अब जागो जागो जागो ।

अंतरा-१: जन्मभूमि की सेवा में, अब करो
समर्पण निज तन मन धन, युवक धीरवर
जाग उठो अब जागो जागो जागो ॥

अंतरा-२: आत्मबल देहबल भी बढ़ाओ
बनाओ प्रतिष्ठा ललित-कला अरु विधा की,
पुनि सुसभ्यता की, बढ़े धीरज औं' नाम बढ़े,
भारत का अनुपम तेज बढ़े, जय हिंद कहो,
जय हिंद कहो, जय हिंद धीरवर, जाग उठो
तुम जागो जागो जागो ॥

अंतरा-३: देश-बांधवों का अभिमान धरो तुम प्यारे,
दीन दुखी की करो सहायता, पाप-ताप
दुख-दंद मिटाओ, करो काज कछु,
सार्थकता हो तेरे जीवन की, युवक धीरवर
जाग उठो अब जागो जागो जागो ॥

स्थायी

सा रीगरी	सा –,सारी	ध़ सासासा	–री,गप
× जा ऽ ग उ	० ठो ऽ,न व	× यु व क वी	० ऽ र,तु म
ग – री सा	सा –,सारी	ध़ सासारी	–गपध
× जा ऽ ग उ	० ठो ऽ,न व	× यु व क धी	० ऽ र व र
री – ग प	ग री,सासा	सांधसां –	– – – –,
× जा ऽ ग उ	० ठो ऽ,अ ब	× जा ऽ गों ऽ	० ऽ ऽ ऽ ऽ,
ध़पधध –	– – – –,	री़सारीग –	– – – –;
× जा ऽ गो ऽ	० ऽ ऽ ऽ ऽ,	× जा ऽ गो ऽ	० ऽ ऽ ऽ ऽ;

अंतरा-१

ध - ध प | - प ग री || री ग री - | सा -, सा री
ज स न्म भू | मि की स || से स वा स | में स, अ ब

ध़ सा - सा | ध प ध ध, || सा सा री री | ग ग प प,
क रो स स | म र्प ण, || नि ज त न | म न ध न,

ध़ सा सा सां | - रीं सां ध, || प - ध प | ग री सा सा
यु व क धी | र र व र, || जा स ग उ | ठो स अ ब

सां ध सां - | - - - -, || प ध ध - | - - - -,
जा स गो स | स स स स, || जा स गो स | स स स स,

सा री ग - | - - - -; ||
जा स गो स | स स स स; ||

अंतरा-२

रीं - रीं रीं | रीं, सां - रीं || गं रीं सां ध | प - प, ध
आ त्म ब | ल, दे स ह || ब ल भी ब | ढ़ा स ओ, ब

री - ग प | ग री सा -, || सा सा री ध़ | सा -, सा सा
ना स ओ प्र | ति स ष्ठा स, || ल लि त क | ला स, अ रु

ध प ध - | प -, ध सां || ध सां - रीं | सां ध प -,
वि स धा स | की स, पु नि || सु स - भ्य | ता स की स,

सा सा - री | री री ग ग || प - प प | प -, ध सां
ब ढ़े स धी | र ज औ र || ना स म ब | ढ़े स, भा स

रीं गं (सां) - | प प ध प || री - ग प | सा -, गं रीं
र त का स | अ नु प म || ते स ज ब | ढ़े स, जै स

गं - रीं सां | सां -, ध सां || ध - प ग | री -, सा री
हिं स द क | हो स जै स || हिं स द क | हो स, जै स

ग - ग ध | - ध प प, || री - ग प | ग री सा सा
हिं स द धी | र र व र, || जा स ग उ | ठो स तु म

सां ध सां – | – – – –, ||ध प ध ध – | – – – –,
जा ऽ गो ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ, ||जा ऽ गो ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ,
× ० × ०

रे रे सा री रे रे ग – | – – – –; ||
जा ऽ गो ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ; ||
× ०

अंतरा-३

री – री री | – प ग री ||सा –, सारी | ध़ सा सो, सा
दे ऽ श बा | ऽ ध वों ऽ ||का ऽ, अभि | मा ऽ न, ध
× ० × ०

सां ध ध ध | सां ध सां – ||– – – – | – – – –,
रो ऽ तु म | प्या ऽ रे ऽ || ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ,
× ० × ०

गं – गं रीं | सां – ध – ||रीं रीं – सां | ध ध प –,
दी ऽ न दु | खी ऽ की ऽ ||क रो ऽ स | हा य ता ऽ,
× ० × ०

ध – ध प | – प ध सां ||रीं – रीं गं | गं रीं रीं –
पा ऽ प ता | ऽ प दु ख ||दं ऽ द मि | टा ऽ ओ ऽ
× ० × ०

– – – – | – – – –, ||प प – ध | – ध प प
ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ, ||क रो ऽ का | ऽ ज क छु
× ० × ०

प ध प ग | री – री – ||ग ग – री | सा – सा सा –,
सा ऽ र्थ क | ता ऽ हो ऽ ||ते रे ऽ जी | व ऽनु की ऽ,
× ० × ०

सा ध़ सा सा | – ध प ध ||री – ग प | ग री सा सा
यु व क धी | ऽ र व र ||जा ऽ ग उ | ठो ऽ अ ब
× ० × ०

सां ध सां – | – – – –, ||ध प ध ध – | – – – –,
जा ऽ गो ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ, ||जा ऽ गो ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ,
× ० × ०

रे रे सा री रे रे ग – | – – – –; ||
जा ऽ गो ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ; ||
× ०

राग भूपाली- ध्रुवपद- चौताल (विलंबित)

स्थायीः आद नमन सत्य को, भूत दया दूजो नमन,
तापर जन्मभूमि पद, नमन कीजो 'सुजान' ।
अंतराः विश्व प्रेम को नमन, दीन दुखीयन सकल,
दुःख हरन व्रत को, नमो नमो सदा चरण ॥
संचारीः स्वार्थार्पण को, बार बार वन्दन,
जासों होवे इक छिन मों, पाप मूल खंडन ॥
आभोगः दीन धरम को अधार, मनुज धरम को सार,
पालन किये होत, दुःख-द्वंद भंजन ॥

स्थायी

सा ग	–	री ध सा	सा री	री ग	–	ग री ग	– री
आ	ऽ	द न	म न	स ऽ		त्य को	ऽ ऽ
×		०	२	०		३	४
री ग	–	ग ग ध	प	–	प ग री	ग री	सा सा
भू	ऽ	त द	या	ऽ	दू ऽ	जो न	म न
×		०	२		०	३	४
सा ग	–	प ग री	प ग प	सां ध	ध सां	– सां	ध सां सां
ता	ऽ	प र	ज ऽ	न्म	भू	ऽ मि	प द
×		०	२		०	३	४
ध सां	रीं	गं रीं	सां सां ध	ध सां	सां ध	ध प	प ग ग री री सा;
न	म	न की	ऽ जो	सु	जा	ऽ	ऽ ऽ न;
×		०	२		०	३	४

अंतरा

ग प	ग	ग ग प	सां ध	ध सां	–	– ध सां	सां सां
वि	ऽ	श्व प्रे	ऽ म	को	ऽ	ऽ न	म न
×		०	२	०		३	४
ध सां	ध	ध ध सां	सां रीं	गं रीं	सां रीं	सां	सां ध
दी	ऽ	न दु	खी	ऽ	य न	ऽ	स क ल
×		०	२	०		३	४
ध सां	–	गं रीं	सां सां	रीं सां		– सां ध	ध प प ग
दुः	ऽ	ख ह	र न	व्र त		ऽ को	ऽ ऽ
×		०	२	०		३	४
ग री	ग	प सां ध	सां –	ध सां	सां ध	ध प	प ग री सा;
न	मो	ऽ न	मो	ऽ	स दा	ऽ	च र न;
×		०	२	०		३	४

संचारी

ग प	ग	ग	प	–	प	प ध	ध	–	प	–	गे				
खा	ऽ	र	था	ऽ	र	पु	न	ऽ	को	ऽ	ऽ				
×		०		२		०		३		४					
प ग	–	प	सां ध	सां	सां	ध सां	ध	–	प	ग	ग				
बा	ऽ	र	बा	ऽ	र	व	ऽ	ऽ	न्द	ऽ	न				
×		०		२		०		३		४					
प ग	–	ग	प ग	ध	प	प ग	री	ध सा	री	सा	–				
जा	ऽ	सों	हो	ऽ	वे	इ	क	छि	न	मों	ऽ				
×		०		२		०		३		४					
ध सा	–	री	प ग	प	सां ध	रीं	सां	–	सां ध	प	प ग				
पा	ऽ	पु	मू	ऽ	ल	ख	ऽ	ऽ	ष्ड	ऽ	न				
×		०		२		०		३		४					

आभोग

ग प	ग	ग	प	प सां	सां ध	सां	–	सां	ध सां	–	सां				
दी	ऽ	न	ध	र	म	को	ऽ	अ	धा	ऽ	र				
×		०		२		०		३		४					
ध सां	सां	सां ध	ध सां	रीं	रीं	ध सां	रीं	सां	सां ध	प	ग				
म	नु	ज	ध	र	म	को	ऽ	ऽ	सा	ऽ	र				
×		०		२		०		३		४					
ध सां	गं	रीं	रीं गं	–	रीं	ध सां	रीं	रीं ध	ध सां	–	सां				
पा	ऽ	ऽ	ल	ऽ	न	कि	ये	ऽ	हो	ऽ	त				
×		०		२		०		३		४					
सां प	सां ध	रीं	ध सां	प	ध	ध सां	सां ध	ध प	प ग	ग री	री सा;				
दु	ख	ऽ	द्वं	ऽ	द	भं	ऽ	ऽ	ज	ऽ	न;				
×		०		२		०		३		४					

राग मोहन-वर्णम्-आदिताल

पल्लवीः गोविन्दम् वन्दे गोपीनाथम्
श्रीकृष्णम् मेघश्यामं तम् ।
अनुपल्लवीः कालिंदी नीर तीरे क्रीडंतम् गोपालम्
नादानन्दम् श्री विष्णुम् ॥
चरणम्ः नृत्यंतम् गायंतम् श्रीऽशम् ॥

पल्लवी

ग-ग- री---, सासारीरी गगरीरी,	सारीगरी सारीसाध,	सारीगप गरीसारी ‖
गोऽविऽ न्दंऽऽऽ,व ऽ ऽ ऽ न्देऽऽऽ,	गो ऽ ऽ ऽ पीऽऽऽ,	नाऽऽऽ थंऽऽऽ ‖
×	२	३
गपगग रीसा,रीग रीरीसाध,सारीगरी,	गपग,प धप,धसां	ध-प,ग धपगरी ‖
श्रीऽऽऽ ऽऽ,कृऽ ऽऽऽऽ,ष्णंऽऽऽ,	मेऽऽ,च ऽऽ,श्याऽ	ऽऽऽ,मं ऽऽतंऽ ‖
×	२	३

अनुपल्लवी

ग-ग- प---, गगपप धधप-	धसां,धध पग,धप	ध,गधप गरीसारी ‖
काऽलिंऽ दीऽऽऽ, नीऽऽर तीऽऽऽ	रेऽ,क्रीऽ डंऽ,तंऽ	ऽ,गोऽऽ पाऽऽऽ ‖
×	२	३
गगपप धप,धसां ध,सांरींसां, गंरीं-,सां	धसां,रींसां -,धपध,	सांध-प गरीसारी ‖
लंऽऽऽ ऽऽ,नाऽ ऽ,दाऽऽ,नंऽऽ,दं	ऽऽ,श्रीऽ ऽ,ऽऽऽ,	विऽऽऽ ष्णुंऽऽऽ ‖
×	२	३

मुक्तायंपू

ग-रीग रीसारी-, सारीसाग,रीगसारी,	साध़सारी गरी,गप,	गपध- प---, ‖
×	२	३
गपधप, धसांरींगं रीं-गं,सां -रीं,ध-	सां,प-ध, सांरींगंसां	-,धप-, गरीसारी ‖
×	२	३

चरणम्

ग-ग- ग---, रीगपग प-प-,	गगधप ध-,गध	धप,गप गरीसारी ‖
नृऽत्यंऽ तंऽऽऽ, गाऽऽऽ ऽऽयंऽ,	तंऽऽऽ ऽऽ,ऽऽ	ऽऽ,श्रीऽ ऽऽशंऽ ‖
×	२	३

चिट्टस्वरम्

ग---, री-सा- री---, ध़---,	री-ध़- सा---,	री---, ग-री- ॥१॥
×	२	३
ग-ग,री गरीसारी, ग-ग,प, धध़सारी,	ग-ग,ग धपगरी,	ग-ग,सां धपगरी॥२॥
×	२	३
प-धध़ प-गरी, सा-रीग, री-,सारी,	सा-,रीग प-ध-	सांसां-ध़ प-गरी ॥३॥
×	२	३

सां-रींगं रींसां,रींसां धसांधप गरीसारी | सा--- ---सासा |रीरीगग पपधध‖
× 2 3
सांरींगंरीं गंरीं,धसां रींसांरींसां,पधसांध | सांध,गप धपधप, | रींसांधप गरीसारी‖४‖
× 2 3

टीप: इस वर्णम् का स्वरकरण भी प्राचीन तेलगू वर्णम् का है, जिस पर लेखकने उपरोक्त संस्कृत शब्दों की रचना की है। हिं.सं.प. में इस राग को भूपाली कहते हैं।

राग शुद्धकल्याण-तराना-एकताल(मध्यलय)

स्थायी: दिर दिर तान्न द्रे, तान्न द्रे, तान्न दिर दिर दिर दिर, ध्रितोम् दीम् तनोम्, तनोम् तदीम् तनोम्, द्रियानारे नितरे दानी, तान्न दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर।

अंतरा: (संस्कृत में) विधि लिखितमविचलितं त्वन्यथा, किं भविष्यति ऽत्र नरहरि चरण युगमेव खलु, शरणं ते शरणं ते शरणं ते ॥

स्थायी

							नि़सा
							दिर
नि़ध़	ध़सा	सारी	सानि़	ध़(प़)	–	–, प़प	मग़ गपरी –
दिर	ता	ऽ	न्न	द्रे	ऽ	ऽ, ता	ऽऽ न्न द्रे ऽ
3		4		×		0	2 0
रीसा,	गरी	ग	री	ध़सा	सानि़	नि़ध़	ध़प़, म़प़ सा	नि़ध़, ध़सा
ऽ,	ता	ऽ	न्न	दिर	दिर	दिर	दिर,	द्रि तों	ऽ, दीं
3		4		×		0		2	0
–	री	सा	–,	गरी	ग	री	पग	गप	पध	पम़ गरी
ऽ	त	नों	ऽ,	त	नों	ऽ	त	दीं	ऽ	त नों
3		4		×		0		2		0
–,	पनि	ध	प	म़प,	गरी	ग	गप	गरी	–	सा –,
ऽ,	द्रि	या	ना	रे,	नि	त	रे	दा	ऽ	नी ऽ,
3		4		×		0		2		0
सांगं	रींगं	रीं,	धसां	सांनि	निध	म़प	पम़	म़ग	गरी	रीसा;	नि़सा
ता	ऽ	न्न,	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर; दिर
3		4		×		0		2		0	

अंतरा

ध़सा सा	गरी ग	री सा	गरी ग	प सां	निध सां		
वि धि	लि खि	त म	वि च	लि तं	ऽ त्व		
४ ×	०	२	०	३			
– रीं	सां –	– –,	धसां रीं	सां गप	पध प		
ऽ न्य	था ऽ	ऽ ऽ,	किं ऽ	भ्र वि	ऽ ष्य		
४ ×	०	२	०	३			
गरी ग	री, निसा	सा सा	पगे प	प प	पसां निध		
ति ऽ	य, न	र ह	रि च	र ण	यु ग		
४ ×	०	२	०	३			
धसां –	रीं निसां	सां, सांगं	रीं धसां	रीं सां	–, सांनि		
मे ऽ	व ख	लु, श	र णं	ऽ ते	ऽ, श		
४ ×	०	२	०	३			
ध मप	ध प	मग, गध	पम पग	प गरी	साध़; ध़सा		
र णं	ऽ ते	ऽऽ, श	रऽ णं	ऽ ते	ऽऽ; ता		
४ ×	०	२	०	३			
सारी सा निध़प़							
ऽ न्न	द्रे	---- इत्यादि स्थायी के अनुसार					
४ ×							

राग शुद्धकल्याण–एकताल (विलंबित)

स्थायी: साधे सुर साधे रिझावे सोही गावे,
गुनियन में गुनी कहावे ।
अंतरा: साचे गुरुनकी संगतसों, सुरन की
रोही-अवरोही करके फिरावे तान,
जब गावे रस पावे ॥

स्थायी

निसा निध़ धसा,रीसा निध़	ध़प़गरी रीग पगप	गरी सा,	निसा निध़ ध़प़		
सा धे ऽ,सुर	सा ऽऽ धे ,रिऽ	झा वे,	सो ही		
४ ×	०	२	०		
पसारी सारीग रीग	ग –,	पगग पगग	पग गरी	गधप मग,गप	
गाऽ ऽऽ	वे ऽ,	गुनि यन	में ऽ	गुनी ऽ,क	
३	४	×	०	२	
गरी –	धसारी सा‖				
हा ऽ	ऽऽ वे‖				
०	३				

अंतरा

नि सां धं धं | सां नि सां सां रीं सां | सां नि सां सां रीं सां | रीं गं - रीं सां | ध सां सां रीं सां |
सा, ss | चे, गुरुन | की, संगत | सोंsss | s, सुरन |
४ | × | ० |

सां सां नि नि ध | सां नि सां नि ध | ध नि ध प | म प म ग म प | म प नि ध नि सां रीं सां |
की रो, ss | ही, अ, वs | रो s ही | क, रs के, फि | रा, ss ss, वे |
२ | ० | ३ | ४ | × |

नि सां नि ध प म ग रीं सा | नि प सा ग | प, सां रीं सां, नि सां रीं | गं, रीं सां नि | (प), प गप |
ता ssssssssn | , जब | गा, ss वे, रस | पा, ss | s, ss |
० | २ | ० |

ग री ध सा रीं सा - ; | नि ध सा सा, रीं सा ||
s ss वेs ; | साधे s, सुर ||
३ | ४ | --- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग जैतकल्याण - झपताल (मध्यलय)

स्थायीः आयो सावन मास, जायो नन्दगोपाल।
अंतराः गावो मंगलगान, सब सखि मिल आज,
पायो अत उल्हास॥

स्थायी

म प ग | ग प म ध प | ग री री | सा - सा ||
आ s | यो s सा | व न | मा s स ||
× | २ | ० | ३ ||

नि सा - | प ग प म प | म प म प | म प ध ग प |
जा s | यो s नं | द गो | पा ss ल |
× | २ | ० | ३ |

अंतरा

म प - | प सां - नि सां | सां सां | नि सां - सां | नि सां सां | नि सां - रीं | नि सां सां | सां प ग ग |
गा s | वो s मं | ग ल | गा s न | स ब | स s खि | मि ल | आ s ज |
× | २ | ० | ३ | × | २ | ० | ३ |

प ग प | सां ध सां नि सां | म प प | म प ध ग प ||
पा s | यो s अ | त उ | ल्हा ss स ||
× | २ | ० | ३ ||

राग जैतकल्याण – लक्षणगीत- झपताल (मध्यलय)

स्थायीः मन को निग्रहीत, जैते होवे कल्याण।
अंतराः पाँचो किये सुध, पस-वाद-संवाद,
प्रथम प्रहर रात, गावै मधुर तान॥

स्थायी

मं पं गं	पं मं धं पं	गं री री	निं सा – सा	निं सा –	पं गं पं मं	मं पं मं	पं धं गं पं
म न	को ऽ नि	ग र	ह ऽ त	जै ऽ	ते ऽ हो	वे क	ल्या ऽऽ ण
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा

मं प –	पं सां – निं सां	सां –	निं सां – सां	पं सां सां	निं सां – रीं	निं सां –	सां पं ग गं
पाँ ऽ	चो ऽ कि	ये ऽ	सु ऽ ध	प स	वा ऽ द	सं ऽ	वा ऽ द
×	२	०	३	×	२	०	३
निं सा सा	पं गं पं मं	मं पं मं	मं पं धं गं पं	पं सां –	(पं) – गं	पं धं पं	गं री ऽ सा
प्र थ	म ऽ प्र	ह र	रा ऽऽ त	गा ऽ	वै ऽ म	धु ऽ र	ता ऽ न
×	२	०	३	×	२	०	३

राग जैतकल्याण - तिलवाडा (विलंबित)

स्थायीः बल बल जाऊँ तोरी छब पर,
अजहूँ मनमोहन श्यामसुंदर।
अंतराः दृग तारन पर तन मन वारूँ,
बलि जाऊँ याहूँ मुरली अधर पर॥

स्थायी

मं पं मं पं गं,पं गंपं पं गंपधपं	गं री – सा निं सा	सां पं ग पं –	मं पं मं पं धंगं				
ब ल ऽ,बऽ ऽऽऽल	जा ऽ ऊँ ,तो	री ऽ ऽ ऽ	छ ब प,ऽ र				
३	×	२	०				
पं ग पं सां –	सां सां निं सां रीं	सां पं गंपधसां –	पं मं पं मं धंगं;				
अ ज हूँ ऽ	म न मो ऽ	ह न ख्याऽऽऽ ऽ	म ,सुं द ऽ र;				
३	×	२	०				

अंतरा

मं पं मं पं सां –	निं सां सां निं रीं सां	निं सां सां धं ,सांसां	(पं) गंपं पं गंरीं सा				
दृ ग ता ऽ	र न प र	त न ऽ ,मन	वा ऽऽ ऽऽ ऽऽ रूँ				
३	×	२	०				
निं सा सा गं पं	मं पं सां निं सां रीं सां गं रीं	सां रीं सां पं	पं मं पं मं धं – गं;				
ब लि जा ऽ ऊँ	या ऽऽऽ ऽ हूँ ,मुर	ली ऽ अ ध र	पं ऽऽ ऽऽ ऽ र;				
३	×	२	०				

राग श्यामकल्याण - लक्षणगीत - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः बरनत भेद कल्याण चतुर गुनी
सुन रे 'सुजान' नाम श्याम अत सुंदर
बिलसत दोऊ मध्यम नित ।

अंतराः सप संवाद प्रबल तीवर मनि
कुमुद कल्याण मेल करि गावत
प्रथम प्रहर निस सोहत मोहत ॥

स्थायी

ग म ग रे सा नि सा	म रे म प सां नि	सां निध प ध	ध। म प म ग
ब र न न त	भे ऽ द क	ल्या ऽऽ ण च	तु र गु नि
०	३	×	२
ग म री सा सा री	सा नि ध़ प़	प। म़ प़ प़ सा नि	सा सा, म री। म
सु न रे सु	जा ऽ ऽ न	ना ऽ म स्था	ऽ म, अ त
०	३	×	२
पनि सांरीं सां नि	ध प प। म प	ग म ग मं ग	प ध ध। म प;
सुं ऽऽ द र	बि ल स त	दो ऊ म ऽ	ध्य म नि त;
०	३	×	२

अंतरा

म प प सां सां	नि सां - सां, म प	सां नि नि सांरीं	सां नि ध प। म प
स प स म	वा ऽ द, प्र	ब ल ती ऽ	व र म नि
०	३	×	२
प। म प। म पं म (प)	सग रीग रीसा नि सा	म री प। म। म	प - प प
कु मु द क	ल्याऽ ऽऽ ण मे	ऽ ल क रि	गा ऽ व त
०	३	×	२
गं मं रीं सां सांरीं	सां नि ध प	म - प नि ध	प। म प म ग;
प्र थ म प्र	ह र नि स	सो ऽ ह त	मो ऽ ह त;
०	३	×	२

राग श्यामकल्याण - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः उजट भयो संसार सुरन को, राग-रीत-रवि अस्त भयो है,
छायो है घनघोर सियारो, दस दिस गीत-गगन अँधियारो।

अंतराः कौन रीत सहिये दुःख ये अब, कहाँ पावै वह राग-सिंगार,
छेड़े कौन हिया के तार, हुस्न फैज़ फिर कैसे आवे,
सूझत नहीं कछु बूझत हूँ, नित आँसू बहावे 'सुजन' लाचारो ॥

स्थायी

प॑म प ध॑ मे	मरी - (सा)-	मरी - प॑ म॑	प प धुम॑ प
उ॰ ज ट भ	यो ऽ सं ऽ	सा ऽ र सु	३ र न कोऽ ऽ
मग॑ म रीं सा	- रीं सा सा	सां नि॑ पं॑ नि॑ सां नि॑	सा - मरी -
रा ऽ ग रीं	ऽ त र वि	अ ऽ स्त भ	३ यो ऽ है ऽ
प॑म प सां॑ निसां॑ रीं	सां - नि॑ ध प	ध प॑ म प (प)	म - री -
छा ऽ यो॑ ऽ	है ऽ घ न	घो ऽ र सि	या ऽ रो ऽ
सां नि॑ पं॑ सां नि॑ नि॑	सा - म मरी	प॑ म॑ प॑ म प प	प नि॑ ध॑ नि (प) ग
द स दि स	गी ऽ त ग	ग न अँ धि	३ या ऽ रो ऽ
मग॑ म॑ ग प म	मरी -		
उ॰ ज ट भ	यो ऽ --- इत्यादि		

अंतरा

म॑प - प सां॑	- सां॑ सां॑ सां	नि॑ सां - सां सां	नि॑ सां रीं सां सां
को ऽ न री	ऽ त स हि	ये ऽ दुः ख	३ ये ऽ अ ब
नि॑ सां सां॑ नि॑ सां रीं	सां नि ध प	प॑ म प ध ध	म - री री
क हाँ पा ऽ	वे ऽ व ह	रा ऽ ग सिं	३ गा ऽ ऽ र
प॑ मप॑ ध प॑ म प	ग म - री सा	नि॑ सा - (सा) -	नि॑ ध॑ प॑ प॑
छोऽ ऽ ड़े ऽ	को ऽ न हि	या ऽ के ऽ	३ ता ऽ ऽ र
म॑ प॑ - प॑ सां॑ नि॑	सा सा मरी री	रीं म॑ पनि॑ (प) -	म॑ प (प) म री
हु ऽ स्न फै	ऽ ज़ फि र	कैऽ ऽऽ से ऽ	३ आ ऽ वे ऽ
सां॑ नि॑ - सा सा	मरी री प॑ म॑	प - सां॑ नि नि	सां - नि॑ सां सां
सू ऽ झ त	न हिं क छु	बू ऽ झ त	३ हूँ ऽ नि त
सां॑ निसां॑ मं रीं सां	नि॑ ध - प म॑ प	प॑ म प ध प	म॑ प (प) म ग
आँऽ ऽ सु ब	हा ऽ वे सु	ज न ला ऽ	३ चा ऽ रो ऽ
मग॑ म॑ ग प म	मरी -		
उ॰ ज ट भ	यो ऽ --- इत्यादि स्थायी के अनुसार		

टीपः गुरुवर्य उस्ताद फैयाज़ हुसैन खाँ साहेब का निधन समाचार सुनकर निकले हुवे उद्‌गारों को इस रचना द्वारा लेखक ने व्यक्त किया है।

राग हमीर-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : मनमोहन ब्रिजराज दुलारो
हँस हँस करके रस बतियाँ
हमसों नेहा लगाय गयो री आली।

अंतरा : कल ना परत सखि घरि पल छिन दिन
दरस बिना नित जियरा तरसे
ऐसी लगी लगन री आली ॥

स्थायी

,पमपध	मपमग	प-परीं	सांनिधप
,मनमो	हनब्रिज	राऽज,दु	लाऽरोऽ
	३	×	२
-,निधनिधमपमग	पमपरीं	सांनिध,पमपध	
ऽ,मनमो	हनब्रिज	राऽज,दु	लाऽरो,हँसहँस
०	३	×	२
पधपमपगमरीगम	धधप-	सारीसा-	
सहँसक	रऽकेरस	बतियाँऽ	हृम्सोंऽ
०	३	×	२
-,सामगप	मपधनिसांरींसांनि	धपमपधनिसांनि	धप,मपधपगम
ऽ,नेहाल	गाऽऽऽयऽ	गऽयोऽऽऽ	रीऽ,आऽऽऽ
०	३	×	२
रीसा,धपध	मप		
लीऽ,मनमो	हन --- इत्यादि		
०	३		

अंतरा

गमगपपपनिध	सांसांसांसां	सांरींसांसां	
कलनाप	रतसखि	घरिपल	छिनदिन
०	३	×	२
निसांनिधनिसां	सां-सांसां	सांरींसांनि-	धधप-
दरसबि	नाऽनित	जियराऽ	तृरसेऽ
०	३	×	२
-,सासामग	पमपधप	मपधनिसांरींगंमं	-रींसांनिधपगमम
ऽ,ऐसील	गीलगन	रीऽऽऽऽऽ	ऽआऽऽऽऽ
०	३	×	२
रीसा,धपध	मप		
लीऽ,मनमो	हन --- इत्यादि स्थायी के अनुसार		
०	३		

राग हमीर – टप्पख्याल – तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी : जाग रहे सगरी रतिया,
तुम्हरे दरस की प्यासी, तरपत जिया मोरा |
अंतरा : राह तकत हूँ निसदिन तुम्हरी,
बिरम रह्यो परदेसवा, ना जानूँ कौन तिरिया
मोहि लियो मन तोरा ॥

स्थायी

प॑ मपधनिसांरींसांसां, धप | प धंम – गं, मपप | सां, निसां मं निध, प, रीप |
जाऽऽऽऽऽऽऽ, गर, हेऽऽऽ, सग | री, ऽऽ, रति, या, ऽऽ |
× |

प, ग, मरी सारीसा – , पधप | प॑ मपधनिसांरीं – – | सांसांरींगंमंपं – – , गंमंरींसां –
ऽ, ऽऽ, तुम्हरेऽ, ऽ, दरस, कीऽऽऽऽऽऽ | प्याऽऽऽऽऽऽ, ऽऽसीऽ
२ ०

प रींरींरींरीं, मं परीं | सांसांरींगंमंरींसांनि, धपपंमंगंमरीसा – ;
तरपत, जिया | मोऽऽऽऽऽराऽ, ऽऽऽऽऽऽऽ,
३

प॑ मपधनिसांरींसांसां, धप | प धंम – गं, मपप |
जाऽऽऽऽऽऽऽ, गर, हेऽऽऽ, सग ‖ इत्यादि

अंतरा

मं प – – प, निसांसांसां | रींसां नि धनिसांरीं नि सांसांसंधप नि धनि(प), मं प |
राऽऽऽह, ऽ, तकत | हूँ ऽ निसदिन तुम्हरीऽ बिरम, र |
×

प धंमंप –, गं मं ग, पप, प॑ मपधनिसांरीं नि सांसांरींगंमंरींसांसां, धपगमरीसा – – , |
ह्योऽऽऽ, पर, देस, वाऽऽऽऽऽ, नाऽऽऽऽजाऽऽ, ऽऽनूँऽऽऽऽऽ, |
२

नि सासा गं मंग, पं, मंप | नि धनिसांनि धपगम | नि ध – पप, | पंपंमंरींसांनिध
कौन तिरि या, ऽऽ, मोऽऽऽ हिडलिऽ, योऽमन, | तोऽऽऽऽराऽऽ,
० ३

पंपगमरीसा – – ; प॑ मपधनिसांरींसांसां, धप | प धंम – गं, मपप | सां
ऽऽऽऽऽऽऽऽ; जाऽऽऽऽऽऽऽ, गर, हेऽऽऽ, सग | री – – – इत्यादि
×

राग केदार - सरगम - झपताल (मध्यलय)

स्थायी

नि सा सा | रे सा नि सा, | सा म मं ग | प - प, ‖ प म प मं | ध - प, | ध - प | मं - ग म
× | 2 | 0 | 3 | × | 2 | 0 | 3

ग म मं | प - म प, | नि सां रें | सां नि ध, ‖ प म प | सां - प म | प मं ग | प - म प;
× | 2 | 0 | 3 | × | 2 | 0 | 3

अंतरा

प ध प | मं ग पं म प | प सां - | सां रें सां, ‖ सां नि ध | सां - रें | सां नि | ध प मं
× | 2 | 0 | 3 | × | 2 | 0 | 3

गं म मं गं | रें सां -, | सां रें सां | नि ध प, ‖ प म पं | ध मं प | ग म मं | प - म प;
× | 2 | 0 | 3 | × | 2 | 0 | 3

राग केदार - लक्षणगीत - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : दोऊ मध्यम और सब शुचि सुर युत
वक्र किये निग अनुलोम बिलुम
मध्यम वादी संवादी खरज।

अंतरा : राग किदार पहर पहले निस
गाये बजाये रिझाये 'सुजन' मन
मृदु निखाद बेवादी बिलुम सज ॥

स्थायी

मं प पं ध - | म मं ग प प | नि सां रीं सां नि | ध प म म
0 दो ऊ ड म स | ध्य म औ र | स ब शु चि | सु र यु त
3 × 2

ग म - म मग | प - पं म प | मं ध ध मं - | री सा री सा सा
0 व स क्र किड | ये स नि ग | अ नु लो स | म बि लु म
3 × 2

नि सा - सा म मग | प - प - | पं मप ध ध - | ध प प म मं ;
0 म स ध्य मड | वा स दी स | संड स वा स | दि ख र ज ;
3 × 2

अंतरा

मं प - प सां सां | नि सां - सां नि सां | सां सां नि सां सां | नि सां रीं सां सां
0 रा स ग कि | दा स र प | ह र प ह | ले स नि स
3 × 2

सां नि ध ध सां | नि सां - सांनि रीं | नि सां प प मग | प पे पं म प
0 गा स ये ब | जा स येड रि | झा स ये मुड | ज न म न
3 × 2

ध॒ध॒नि॒ ध॒म॑प॑	प॑म॑ प धपमप॑ ध॑	प॑ध॑ - म॑ग॑ध॑प॑	म॑ग॑ री सा सा;
मृ दु नि खा	० ३ स द बेSSSS S	× वा S दि बि	२ लु म स ज;

राग केदार - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : पतित पावन जगदम्ब भवानी
दुर्गे महादेवि नमो नमो बलवती
अबल बलदानी।

अंतरा : अस्तुत गात गंधर्व गुनी सुर मुनि
जपत नित नाम तिहारो, कीजो कृपा दृष्टि
शरन चरन 'सुजन' आयो आज, मात दयानी ॥

स्थायी

ग॑म म ग॑मग॒ प	प प प॑म॑ प	ध - प प	म॑प॑(प) - मे
प॒ ति तऽ पा	० ३ व न ज ग	× द S म्ब भ	२ वा S S नि
ग॑म ध॑प॑म॑ प	- ग॑मग॒ पे (प)	ग॑म सा री सा	सा॑ प॒ सा॑ - रि॑ री
दु र गे S	S मऽ हा S	× दे S S वि	२ न मो S न
नि॑सां मगे म॑प॑ प	म॑प॑ धि॑नि॑ सां॑म॑प॑	प॑म॑ प ध ध	ग॑म - ग॒ री सा;
मो SS ब ल	० ३ व तीऽ S अ	× ब ल ब ल	२ दा SS S नि;

अंतरा

सां॑नि॑ ध प म॑ग॑	- मगे म॑प॑ -	प॑सां॑ - सां सां	नि॑सां॑ रीं, नि॑सां॑ सां
अस्तु त गा	० ३ सऽ तऽ ग S	× न्ध S र्व गु	२ नी S, सु र
नि॑सां॑नि॑ ध नि॑सां॑	सां सां सां सां	नि॑सां॑ रीं सां॑ नि॑ध	म॑प॑(प) मे -
मु नि S ज	० ३ प त नि त	× ना S म ति	२ हा S रो S
ग॑म - ग॑म मगे	म॑प॑ प - प॑सां॑	- सां॑ मं॑ मं॑ ग॑	रीं नि॑सां॑ रीं सां
की S जो SS	० ३ कृ पा S द	× ष्टि श र	२ न च र न
म॑प॑ म॑ध ध॑ग॑म॑	- मग म॑प॑ -	प प॑सां॑ - प	ध॑प॑ म॑ग॑ री सा;
सु ज न आ	० ३ S योऽ आ S	× ज मा S त	२ द या S नि;

राग केदार-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : चन्द्र लज्यो मुख देखि दृगन द्युति
निहरि लज्यो भान घन नील बरन
नभ लज्यो देखि नटवरकै।

अंतरा : मुखविलास मुसकान देखि पुनि
लक्ष्मी लजी ब्रिज-गोपी लजी सब
मुरली नाद सुनि साम लज्यो
भयो लीन 'सुजन' हरि-चरन-कँवलकै॥

स्थायी

प मप ध धं ध	म - ग म मग	प - प म प	प म प सं ध रीं
चं ऽ द्र ल	ज्यो ऽ मु ख ऽ	दे ऽ खि द	ग न द्यु ति
०	३	×	२
सां नि ध प	म - ग म पम	ध मं नि सा री	सा - सा सा म
नि ह रि ल	ज्यो ऽ ऽ भा ऽ	ऽ न घ न	नी ऽ ल ब
०	३	×	२
ग म मग प प	म प नि ध नि प	प ध प ग म मग	नि सा री सा - ;
र नऽ न भ	ल ज्यो ऽ दे	ऽ खि न टऽ	व र कै ऽ ;
०	३	×	२

अंतरा

म प पं म ध प ध	मे मग म प प	प सां - सां नि सां	- सां नि सां सां
मु ख वि ला	ऽ सऽ मु स	का ऽ न दे	ऽ खि पु नि
०	३	×	२
नि सां नि ध सां	नि सां - सां नि सां	नि सां रीं सां नि ध	म प - म म
ल छ मी ल	जी ऽ ब्रि ज	गो ऽ पि ल	जी ऽ स ब
०	३	×	२
नि सांनि रीं नि सां म	- मग म प प	प सां - म ग म	मग पे, म प प
मु ऽ र लि ना	ऽ द्ऽ सु नि	सा ऽ म ल	ज्यो ऽ, भ यो
०	३	×	२
ग मं गं रीं नि सां	नि ध प म प पं म	ध ध प मं ग	नि सा री सा - ;
ली ऽऽ न सु	ज न ह रि	च र न कँ	व ल कै ऽ ;
०	३	×	२

राग केदार- रूपक(मध्यलय)

स्थायी : जगत उद्धार हे किरतार
भव भयहार सब सुखकार
तुम हो अपार अघनिस्तार ।
अंतरा : जपतहु नाम पावन सहज
आनन्द पावे चितमों 'सुजान'
अप्रंपार,सब संसार को तूं अधार ॥

स्थायी

प सां नि ध	प मे ग मग	प – म प	प सां ध	नि सां नि रीं	सांनि ध प		
ज ग	त उऽ	धा ऽ र	हे ऽ	कि र	ताऽ ऽ र		
२	३	⊗	२	३	⊗		
ग म म	ग म मग	पमं ध ध	प ध प	ग म मं ग	म सां री सा		
भ व	भ यऽ	हाऽ ऽ र	स ब	सु ख	का ऽ र		
२	३	⊗	२	३	⊗		
नि सा सा	ग म मग	प – म प	प नि ध	नि सां नि रीं	सांनि ध प;		
तु म	हो अऽ	पा ऽ र	अ घ	नि स	ताऽ ऽ र;		
२	३	⊗	२	३	⊗		

अंतरा

ग म ग मग	प म प	प सां – सां	नि सां –	नि सां सांनि	रीं सां सां		
ज पऽ	त हु	ना ऽ म	पा ऽ	व नऽ	स ह ज		
२	३	⊗	२	३	⊗		
सां नि ध	नि सां नि रीं	सां नि ध	प म प	नि धनि ध	मे – ग म		
आ ऽ	न न्द	पा ऽ वे	चि त	मोंऽ सु	जा ऽ न		
२	३	⊗	२	३	⊗		
ग म ग मग	पमं धप	ग मसा री सा	नि सा सा	ख म मग	प – म प		
अ पऽ	रंऽ ऽऽ	पाऽ ऽ र	स ब	सं ऽऽ	सा ऽ र		
२	३	⊗	२	३	⊗		
प नि ध	नि सां नि रीं	सांनि ध प;					
को ऽ	तूं अ	धाऽ ऽ र;					
२	३	⊗					

राग केदार-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: गजगति चाल चलत ब्रिजनारी
देखो सखि चित हारी हारी हारी ।
अंतरा: सजी सोलेहु सिंगार किये
पिया को लुभावन प्यारी प्यारी
चली जात चित चोरी चोरी चोरी ॥

स्थायी

मं पं धं प | मं -गं सा रीं	सा सा सां मं मगं | पं -मं प -		
ग ज ग ति | चा ऽऽ ल च | ल त ब्रिज ऽ | ना ऽ री ऽ			
२	०	३	×
मं पं धंनिं सांरीं | सां नि ध प | मं - प सां | - नि ध प;			
दे ऽ खोऽ ऽऽ | स खि चि त | हा ऽ रि हा | ऽ रि हा रि;			
२	०	३	×

अंतरा

मं पं धं - पं मं | गं मगं पं - | पं सां - सां सां | निं सां -, सां निं ध			
स जी ऽ सो | ले हुऽ सिं ऽ | गा ऽ र कि | ये ऽ, पि या			
०	३	×	२
निं सां निं रीं सां नि | ध प मं गं री | सो नि़ ध़ प़, | निं सां मं गं रें पं			
को लु भा ऽ | व न प्या ऽ | रि प्या ऽ रि, | च ली ऽऽ जा			
०	३	×	२
- प निं ध नि | पं मं - प सां | - नि ध प; | पं मं पं ध प			
ऽ त चि त | चो ऽ रि चो | ऽ रि चो रि; | ग ज ग ति			
०	३	×	२

राग केदार-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: ब्रिरज में रास रच्यो है आज
धूम मची है जमुना तटपर
निरतत कान्ह ब्रिज-गोपीयन संग ।
अंतरा: एक गावत एक म्रिदंग बजावत
एक नाचत अत आनन्द सों
सोहत सखियन बिच मोहन राधे
ऐसो सजो है अनुपम रस रंग ॥

स्थायी

मे ग मग प –	प सां – सां नि रीं	सां नि ध प	प म पम प, ग म
र जऽ में ऽ	रा ऽ स र	च्यो ऽ है ऽ	आ ऽऽ ज, ध्
३	×	२	०
मग प (प) म ग	नि सा रि री सा, नि सा	नि ध ध सा रि री सा	सां नि ध प, नि सा नि
ऽऽ म ऽ म	ची ऽ है, ज	मु ना ऽ त	ट प र, नि
३	×	२	०
री सा सा म ग	ग प – म प, प रीं	रीं सां नि ध ध प	पम प म ध, प ध
र त त ऽऽ	का ऽ न्ह, ब्रि	ज गो पि य	नऽ सं ग, बि
३	×	२	०
मे ग मग प –			
र जऽ में ऽ	इत्यादि ---		
३			

अंतरा

ध ग मग प म प	प सां – सां सां	नि सां – सां सां	नि सां रीं सां नि सां, प म प
क गाऽ व त	ए ऽ क म्रि	दं ऽ ग ब	जाऽ व त, ए
३	×	२	०
ध ग मग प म प	प सां – सां सां	नि सां – सां सां	नि सां रीं सां सां
क गाऽ व त	ए ऽ क म्रि	दं ऽ ग ब	जा ऽ व त
३	×	२	०
नि सां ध ध सां नि रीं	सां सां नि ध ध प	प म प म ध ध	मे – – ग, मग
ए क ना ऽ	च त अ त	आ ऽ न न्द	सों ऽ ऽ, सोऽ
३	×	२	०
प म ध प ग म मग	नि सा नि री सा सा	नि सा – सा म मग	प – म ध, प म
ह त स खिऽ	य न बि च	मो ऽ ह नऽ	रा ऽऽ धे, ऐ
३	×	२	०
प नि धनि सां नि सां	सां ध – प, प रीं	रीं सां सां नि ध ध प	पम प म ध, ध
ऽ सोऽ ऽ स	जो ऽ है, अ	नु प म र	सऽ रं ग, बि
३	×	२	०
मे ग मग प –			
र जऽ में ऽ	--- इत्यादि स्थायी के अनुसार		
३			

राग केदार-त्रिताल (मध्यलय)

- श्लोक -

स्थायी : अंसालंबित वामकुंडलधरं मन्दोन्नतभ्रूलतम्।
किंचित् कुंचितकोमलाधरपुटं साचिप्रसारिक्षणम् ॥

अंतरा : आलोलांगुलिपल्लवैर्मुरलिकामापूरयन्तंमुदा।
मूले कल्पतरोस्त्रिभंगललितं ध्याये जगन्मोहनम् ॥

स्थायी

सा प (प) म ग	नि सां नि रीं सा सा	सा म ग म ग	प प मं ध
अं ऽ सा ऽ	लं ऽ बि त	वा ऽ म कु	ऽ ष्ड ल ध
०	३	×	२
प ं ं ं	प मं प ध नि सां	नि ध प ध प मं प	ध ध प मं
रं ऽ ऽ ऽ	म ऽ न्दो ऽ ऽ	न्न त ऽ भ्रु ऽ	ऽ ल त म्
०	३	×	२
ग म ग ं प (प)	ग म ग रीं सां नि	रीं ं रीं सां	नि ध प ग म ग
किं ऽ चि त्	कुं ऽ चि त	को ऽ म ला	ऽ ध र पु
०	३	×	२
प ं प सा ं	ग म ग प ं	म प मं प ध नि सां नि ध	पं ध प म ं
टं ऽ ऽ ऽ	सा ऽ चि ऽ	प्र साऽऽ ऽऽ रे	ऽ क्ष ण म्
०	३	×	२

अंतरा

प मं प ध नि ध प	म ग प मं प	प सां नि रीं सां	नि मं प सां सां नि
आ ऽ लो ऽ	लां ऽ गु लि	प ऽ ल्ल वै	ऽ र्मु र लि
३	३	×	२
रीं ं सां ं	नि सां नि ध नि	ध मं प मं प	ध ध प मं
का ऽ ऽ ऽ	मा ऽ पू ऽ	र य ऽ न्तं	ऽ मु दा ऽ
०	३	×	२
ग म ग प ं	प सां नि ध प	प म प नि ध	ं प मं प ध प
मू ऽ ले ऽ	क ऽ ल्प त	रो ऽ स्त्रि भं	ऽ ग ल लि
०	३	×	२
म ं ं ं	ग म ग प सां ं	नि सां नि प (प) ग म	ं रीं सा ं
तं ऽ ऽ ऽ	ध्या ऽ ये ऽ	ज ग ऽ न्मो	ऽ ह न म्
०	३	×	२

टीप : उपरोक्त श्लोक 'राग रत्नाकर' से लिया गया है। लेखकने इसका स्वरकरण किया है।

राग केदार – ध्रुवपद – चौताल (विलंबित)

स्थायी : तत बितत घन शिखर वाद्य भेद चार कहत,
सुर लय रस राग ताल याहूँतें प्रकट होत ।
अंतरा : तने तार उपजे सुर तत ताहि प्रथम भेद,
विविध भाँति बीना गत सूक्ष्म नाद श्रुति स्वर युत ॥
संचारी : धात काठ मृद्‌भांड तन्यो तापे छाग छाल,
अवनद्ध लसत वाद्य ताल मार्ग परखावत ॥
आभोग : ताडन किये गरजत घन धात काष्ठ मृतिखंड,
धात काष्ठ नलिकान्तर फूत्कार शिखर बजत ॥

स्थायी

प म प म	– म	ग म मग	प प	– प म	प म प		
त त	ऽ बि	त तऽ	घ न	ऽ शि	ख र		
×	०	२	०	३	४		
प म प म	प म ध	– प	म ध	–	म ग म ग	म ग	म
वा ऽ	ध भे	ऽ द	चा	ऽ	र क	ह	त
×	०	२	०		३	४	
ग म मग	प म प	नि सां नि रीं	सां नि	ध प	म	म	
सु रऽ	ल य	र स	रा	ऽ	ग ता	ऽ	ल
×	०	२	०		३	४	
ग म –	ग मग प	ध म	ग म ग	म	ग नि सा नि	री	सा
या ऽ	हुँऽ तें	ऽ ऽ	प्र क		ट हो	ऽ	त
×	०	२	०		३	४	

अंतरा

प सां प	मग प म	– प	सां सां	सां नि	सां सां		
त ने	ऽऽ ता	ऽ र	उ प	जे	ऽ सु	र	
×	०	२	०	३	४		
नि सां नि	ध ध सां नि	रीं	सां नि	ध प	म	म	
त त	ऽ ता	ऽ हि	प्र थ	म	भे	ऽ	द
×	०	२	०	३	४		
ग म म	मग प म	– प	नि सां नि रीं	सां ध	प	म	
वि वि	धऽ भाँ	ऽ ति	बी	ऽ	ना ऽ	ग	त
×	०	२	०	३	४		
ग म ग म	ध नि ध	– प	ग म	म ग	नि सा नि री	सा	सा
सू छ	म ना	ऽ द	श्रु	ति	ख र	यु	त
×	०	२	०	३	४		

संचारी

नि सा	प	प	म प	–	प	म	मग	प	म –	प
धा	ऽ	त	का	ऽ	ठ	मृ	ऽ	ऽऽ	द्वां	ऽ	ड
×		०		२		०		३		४	
प म	प म	प	ध नि	ध		म प	म	ध प	ग म	ग	म
त	न्यो	ऽ	ता	ऽ	पे	छा	ऽ	ग	छा	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	
ग म	म	ग	म प	म	ध	ग म	ग म	ग म	नि सा	नि	री सा
अ	व	ऽऽ	न	ऽऽ	द्ध	ल	स	त	वा	ऽ	ध
×		०		२		०		३		४	
नि सा	ध	ध	म प	–	म प	ग म	मग	प	म –	प	प
ता	ऽ	ल	मा	ऽ	र्ग	प	रऽ	स्वा	ऽ	व	त
×		०		२		०		३		४	

आभोग

म प	–	प सां	सां	नि सां	सां	नि सां	सां	सां	सां	नि सां	सां
ता	ऽ	ड	न	कि	ये	ग	र	ज	त	घ	न
×		०		२		०		३		४	
नि सां	ध	ध	ध सां	–	सां	नि सां	नि रीं	सां	नि	ध	प
धा	ऽ	त	का	ऽ	ष्ठ	मृ	ऽ	त्ति	खं	ऽ	ड
×		०		२		०		३		४	
ग म	–	मग	म प	–	प	नि सां	सां नि	रीं	–	सां	सां
धा	ऽ	तऽ	का	ऽ	ष्ठ	न	लि	का	ऽ	न्त	र
×		०		२		०		३		४	
ग म ग	प	–	सां ध	सां	प	ध प	प	म	नि सा	नि	री सा
फू	ऽ	ऽ	त्का	ऽ	र	शि	ख	र	ब	ज	त
×		०		२		०		३		४	

राग कामोद-तराना-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : दिर दिर दिर दिर तान्न द्रेन्ना द्रेन्ना द्रेन्ना,
उदानि दानि तदानि दानि तोम्तन, द्रियानोरे
तारेदानि दीम तदीम्, तननननन तदियानोरे
तदरेदान्नि दीम् दीम्तदीम्, धेतेलाना तिटकत
गदिगिन धा।

अंतरा : श्रुतिप्रशस्ते स्वरगंगे सखि लय लीने
(संस्कृत में) स्वागतम् ते भवति कोऽत्र भरतायते
श्रुणुवत्से प्रियकर्ता मे चतुरो मुनि ॥

स्थायी

; मं प ध	धं मं रीं सा	मं रीं रीं पं	- मं धं -
; दिर दिर दिर	दिर ता ऽ न्न	द्रे ऽ न्ना द्रे	ऽ न्ना द्रे ऽ
पे -, मं प	ध मं प, ध	पं मं प गं मं	मं ध - प प,
न्ना ऽ, उ दा	नि दा नि, त	दा नि दा नि	तो म्त न,
पं गं मं पं गं	मं, रीं - सा	सां ध़ ऩि पे़ सां	- ऩि रीं सा -,
द्रि या ना रे	ऽ, ता ऽ रे	दा ऽ नि दी	म् त दी म्,
सां मं रीं पं मं	मं धं पं, सां धं	सां पं मं धं, गं	मं गं पं गं मं
त न न न	न न, त दि	या ना रे, त	द रे दा ऽ
रीं सा -, सां	- रीं सां -,	ऩि सा सा मं रीं	रीं पं मं धं पं
नि दी म्, दी	म् त दी म्,	धे ते ला ना	तिट कत गदि गिन
धं; मं प ध	धं गं मं रीं सा		
धा; दिर दिर दिर	दिर ता ऽ न्न		

--- इत्यादि

अंतरा

मं प प - सां	सां - ऩि सां -	ऩि सां सां ऩि सां रीं	सां ऩि - ध प
श्रु ति ऽ प्र	श ऽ स्ते ऽ	स्व र गं ऽ	गे ऽ स स्वि
पं गं मं पं मं	रीं सा, सां मं रीं	रीं पं मं धं	पं ऩि सां रीं सां
ल य ली ऽ	ने ऽ, स्वा ऽ	ग त म् ते	ऽ भ व ति

सां मं रीं रीं पं | पं पं गं मं रीं | सां – – –, | नि सा सा नि री –
को ऽ त्र भ | र् ता ऽ य | ते ऽ ऽ ऽ, | श्रु णु व ऽ
× | २ | ० | ३
सा –, म प प | ध – प – | प सां –, सां मं रीं | सां – नि धे प
से ऽ, प्रि य | क् ऽ र्ती ऽ | मे ऽ, च तु | रो ऽ मु नि
× | २ | ० | ३
–; प म प म ध | ध ग म री सा |
ऽ; दिर दिर दिर | दिर ता ऽ न | ...इत्यादि स्थायी के अनुसार
× | २

राग कामोद- तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी : कजरा कपोल अधर पर अंजन,
पगिया पेंच उलझ उलझ रहे,
डगमग चाल चले मतवारो।

अंतरा : ना जानूँ कौन सखी बड़ भागनी,
बस कीनो जिन पीतम प्यारे,
सुध न रही काहूँ तन मन की,
मगन भये ब्रिजराज दुलारो ॥

स्थायी

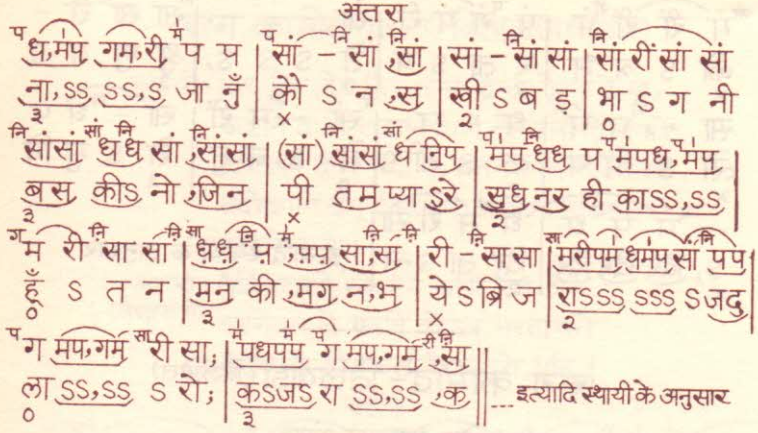
म पधपप प ग मप,गम रीसा | री – सा नि सा | ग म(म) री ,मरी म पप |
कऽजऽ रा ऽऽ,ऽऽ क | पो ऽ ल ,अ | धर ऽ ,ऽऽ पर |
× | २

म पधप,मपध –ध प ,मप | म प परीं सां ,निसां | सां ध – नि प ,मप |
अंऽऽ,ऽऽऽ ऽज न ,ऽऽ | प गि या ,ऽऽ | पें ऽ च ,ऽऽ |
० | ३ | ×

म प ध प ग | ग म री सा नि सा | सा ध़ नि़प़, प़प़ सासा | नि री –सा नि सा |
उ ल झ ऽ | उ ल झ र | हे ऽऽ,डग मग | चा ऽल ,च |
२ | ० | ३ | ×

सा मरी,पमे धमप़ सां नि पेप | प ग मप,गम रीसा; ‖ कजरा ---- इत्यादि
लेऽ,ऽऽ ऽऽऽ ऽ मत | वा ऽऽ,ऽऽ ऽ रो; ‖
२ | ०

अंतरा

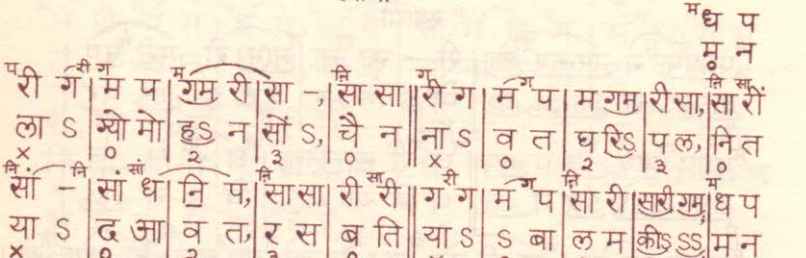


...इत्यादि स्थायी के अनुसार

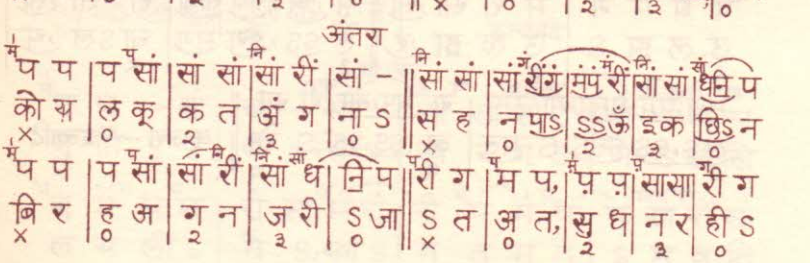
राग छायानट-सूलफाक्ता (मध्यलय)

स्थायी: मन लाग्यो मोहन सों, चैन नावत घरि पल,
नित याद आवत रस बतियाँ बालम की।
अंतरा: कोयल कूकत अंगना, सह न पाऊँ इक छिन,
बिरह अगन जरी जात, अत सुध न रही अब तन मन की॥

स्थायी



अंतरा



नि सा सा, सा सां | सां ध नि प | प रीग मध, | नि ध प ||
अ ब, | त न | म न | की ऽ ऽऽ; | म न ||
× | ० | २ | ३ | ० |

लाग्यो... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग छायानट-एकताल (विलंबित)

स्थायी : घरिया गिनत मोहे बीती जात रैन,
नैना ना आवत निंदिया ।
अंतरा : तरपत हूँ दिन रैन मीन जैसे जल बिन,
कोऊ जाय कहो पियुसों ये बिथा,
अब न मोने जिया ॥

स्थायी

नि सासा
घरि

सा नि़सारीगमप रीरी | सा(सा)ध नि़ मप़ | सा,नि़सा सारी | सा,नि़सा -सा |
या ऽऽऽऽऽ ऽगि | न,त ऽ ऽमोहे | बी,ऽऽ ,तीऽ | जा,ऽऽ ऽत |
३ | ४ | × | ० |

ग रीग री गम | नि़ध प,मप | प(प) री | ग रीग मप | प मग ग परी | सा,ध़ नि़प़ |
रै ऽ ऽऽ | ऽ ऽ न,ऽऽ | नै ऽ ऽ | ना ऽ ऽऽ | ना ऽ आऽ | ऽ व ऽत |
२ | ० | ३ | ४ | × | ० |

म पप़ प सानि़ रीसा | नि सासा ||
निंदि याऽ | ऽ ऽ ,घरि ||
२ | ० |

--- इत्यादि

अंतरा

म पप प सांसां | नि सां ,सांसां | नि रीं सां,निसां | नि सां -ध | नि सारीं सांध | ध नि प ||
तर पत | हूँ ,दिन | रै न,ऽऽ | मी ऽन | जैसे जल | बि न ||
३ | ४ | × | ० | २ | ० |

म पप सां निसारींगंमं | नि रीं,सां (सां) | सां ध,निप मप | म पप मपमपमपनिसां | रीं रीं |
कोऊ जाऽऽऽऽ | यु,क हो | ऽ,ऽऽ ऽऽ | पियु सोंऽऽऽऽऽऽ | ऽ ये |
३ | ४ | × | ० | २ |

ग गं मप ||| म ग मरी | सा, प सा(सा) | सा ध़ नि़प़, | म पप़ प सासा | ग रीगमधप मग |
ऽऽ ऽबि | थाऽ ऽऽ | ऽ, ऽ ऽ | ऽ ऽऽ, | अब नमा | ने ऽऽऽ,जि याऽ |
० | ३ | ४ | × | ० | २ |

मरी सा; नि सासा ||
ऽऽ ऽ; घरि ||
० |

सा नि़सारीगमप
या ऽऽऽऽऽ --- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग छायानट - सरस्वती वंदना

(वृन्दगान के योग्य)

स्थायी: नमो नमो जय श्री सरस्वती दयानी,
विधादानी कृपा-करनी दुःख-हरनी,
पतित-उद्धरनी, जय भवानी जय शिवानी,
जय जय जय देवि ।

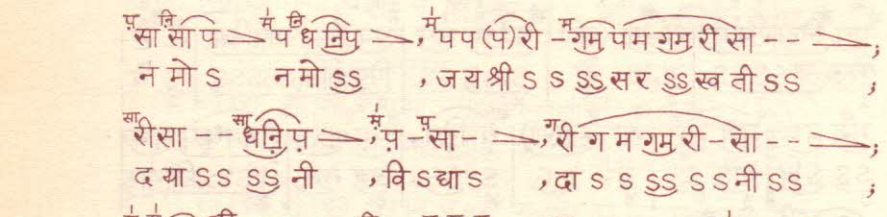
अंतरा-१: नाद निनादत गाये बजाये नाम तिहारो,
नृत्य किये अति भक्तिभाव सों, राग ताल
रस रंग रसीले, श्रवण नेत्र पुनि चित्त मिलाये,
तव चरननतें ध्यान लगाये, जय भवानी जय शिवानी,
जय जय जय देवि ॥

अंतरा-२: भरतमुनि निःशंक अहोबल तानसेन अति चतुर गुनी,
ग्यान ध्यान गुन मान बली, सब सेवक गण यातेहुँ
फल पाये-चित्त शुद्धि बुद्धि मुक्ति जीवन में,
जय भवानी जय शिवानी, जय जय जय देवि ॥

अंतरा-३: भरत भूमि संगीत सुंदरी, गीत वाद्य अरु नृत्य सजे,
सिंगार किये उपहार लिये तव द्वार खड़ी,
प्रसीद प्रसीद प्रसीद मात, यही बिनति करत
कर जोर जोर, सुनि लैहो सुनि लैहो सुनि लैहो,
जय भवानी जय शिवानी, जय जय जय देवि ॥

टीप: इस गीत के स्वरकरण में जहाँ पर '⟶' ऐसा चिन्ह दर्शाया गया है, वहाँ आवाज़ को मुलायम करना चाहिये।

स्थायी



नि सां नि रीं रीं सां -, गं रीं गं मं रीं सां - नि सां, सां रीं - नि सां सां ध नि प, प मं प सां ध - नि प -,
उद्द र नी ऽ, जै ऽ ऽ भ वा ऽ नी, जै ऽ शि वा ऽ नी, जै ऽ ऽ जै ऽ जै ऽ,

ग री ग मं प प म - प ग - म री - - - सा - - - ⟩
दे ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ वी ऽ ऽ ऽ

अंतरा-१

प रीं - रीं, गं रीं गं रीं - रीं रीं, गं रीं गं मं रीं नि सां ध - नि प -, ग री ग म प - री नि सा ग री ग
ना ऽ द, नि ना ऽ द त, गा ऽ ऽ ये ब जा ऽ ये ऽ, ना ऽ ऽ ऽ ऽ म ति हा ऽ

म प प सां - ⟩; मं प़ - प़ सा नि सां नि री - सा सा ग री - ग म - ग प मं प -, नि ध - ध
ऽ ऽ रे ऽ ऽ ; नृ ऽ त्य कि ये ऽ अ ति भ ऽ क्ति भा ऽ व सों ऽ, रा ऽ ग

नि ध नि प मं प प सां - सां नि रीं ध - नि प - ⟩; प गं गं गं मं रीं सां सां नि सां - नि रीं
ता ऽ ल र स रं ऽ ग र सी ऽ ले ऽ ; श्र व ण ने ऽ त्र पु नि चि ऽ त्त

रीं रीं ध - नि प - ⟩; मं प प सां सां ध प प री -, ग री ग म प नि सा री सा - ⟩;
मि ला ऽ ये ऽ ; त व च र न न तें ऽ ऽ, ध्या ऽ न ल गा ऽ ये ऽ

गं रीं गं मं रीं सां - नि सां, सां रीं - नि सां सां ध नि प, मं प सां सां ध - नि प -, ग री ग म प प म - प ग -
जै ऽ ऽ भ वा ऽ नी, जै ऽ शि वा ऽ नी, जै ऽ ऽ जै ऽ जै ऽ, दे ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

म री - - - सा - - - ⟩
ऽ ऽ ऽ ऽ वी ऽ ऽ ऽ

अंतरा-२

नि सा सा सा नि सां पे -, प मं प नि ध - ध, नि ध - प प, मं प प सां नि रीं सां, सां ध प
भ र त मु नि ऽ, नि ः ऽ शं ऽ क, अ हो ऽ ब ल, ता ऽ न से ऽ न, अ ति

प रीं रीं गरी गं मं प मं प - ⟩; मं प - रीं, नि सां - सां सां ध प मं प प सां ध - नि प -
च तु र ऽ गु नी ऽ ऽ ; ध्या ऽ न, ध्या ऽ न गु ण मा ऽ न ब ली ऽ ऽ ऽ

⟩; मं प प प री - ग ग प म म गं मं प - सां नि रीं -, गं मं रीं - सां - ⟩;
; स ब से ऽ व क ग ण या ऽ ते हैं ऽ, फ ल पा ऽ ये ऽ

प सां - सां नि रीं - रीं, रीं ध नि प, प री - री, ग - प म प सां - ⟩; गं रीं गं मं रीं सां - नि सां,
चि ऽ त्त, शु ऽ द्धि, बु ऽ द्धि, मु ऽ क्ति, जी ऽ व न में ऽ ; जै ऽ ऽ भ वा ऽ नी,

सांरीं -निसांध-निप, पमपसांध-निप-, गरीगमपपमपगमरी-सा-
जैऽशिवाऽनी, जैऽऽ जैऽजैऽ, दे ऽऽऽऽऽऽऽऽऽवीऽ

अंतरा-३

मंपपरीनिसा-सा, सानिसागरीगरीगम-गपंमप-, निसा-सांधनिपप,
भरतभूऽमि, संऽगीऽऽतसुंऽदरीऽ, गीऽतवाऽद्य अरु,
पंम-पंमधपरी, गरी-गरीगमगपंमप-, मंपपसां-सांनिसांरीं-सांसांधंनिप
नृऽत्य सजेऽ, सिंऽगाऽर कियेऽ, उपहाऽर लियेऽ तव द्वाऽर
मंपपसां-; सांधनिप, मंपधप, धपमगमरी, निसा-सानिसागरीगरीग
खड़ीऽ ; प्रसीऽद, प्रसीऽद, प्रसीऽऽद, माऽत यही बिनति
मगममगपपसांनिरींसां-सां, सांधपमंपपसां-; मंपपसांनिरीं-;
करत कर जोऽर जोऽर, सुनि लैऽहोऽ ; सुनि लैऽहोऽ ;
मंगंमरींसां-; गंरींगंमरींसांनिसां, सांरींनिसांधनिप, पंमपसांधनिप-,
सुनि लैऽहोऽ , जैऽऽभवाऽनी, जैऽशिवाऽनी, जैऽऽ जैऽ जैऽ,
गरीगमपपमगमरी-सा-
दे ऽऽ ऽऽऽऽऽऽऽऽवीऽ

टीपः इस रचना का मूल स्वरूप लेखक ने 'राग कुकुभ' में किया है, जो कि एक प्रातर्गेय राग है। सायंगेय 'छायानट' राग में इस रचना का रूपान्तर लेखक ने ही किया है, जिससे यह गीत सायंकालीन सभाओं में गाया जा सके।

राग हिंडोल - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

ध सां ध ध सां | सां ध ध म म ग ग सा | ध सा ध ध सा | – सा ग़म ध सां
गूँ ऽ ज उ | ठी ऽ है ऽ | दि ऽ व्य गा | ऽ न की ऽ ऽऽ
० ३ × २

ध सां सां सां ध सां | सां ध – ध म – | म ग – ग ग म | ग ग सा –
द्र स दि स | ह् ऽ फै ऽ | या ऽ ज़ ना | ऽ म की ऽ
० ३ × २

नि सा ध ध ध सा | नि म़ ध सा सा | म ग – ग ध म | – म नि ध –
रा ऽ ग ता | ऽ ल र स | रू ऽ प रं | ऽ ग की ऽ
० ३ × २

ध सां नि सां मं गं | सां सां नि सां मध | सां – ध ध म | ग सा ग़म ध सां
सु नो ऽ चौ | ऽ मु खी ऽऽ | गी ऽ त री | ऽ त की ऽ ऽऽ
० ३ × २

अंतरा-१

ध म – सां नि ध | सां – नि सां ध | सां – – नि सां | गं सां सां –
का ऽ क हि | ये ऽ क हा | लों ऽ ऽ ब | खा ऽ ने ऽ
० ३ × २

ध सां ध ध सां | – सां सां – | सां गं – सां सां | ध ध सां ध
क ऽ ष्ठ मा | ऽ धु री ऽ | गी ऽ त चा | ऽ तु री ऽ
० ३ × २

सां म – गं गं म | गं – सां – | नि सां ध ध सां | सां ध ध म ग –
मु ऽ ग्ध भ | यो ऽ सं ऽ | सा ऽ र स | क ल ह् ऽ
० ३ × २

ग म ग ग नि सा | – सा म ग – | ध म – सां ध नि ध | सां सां ध सां ध
ध ऽ न्य ध | ऽ न्य सं ऽ | गी ऽ त सू | र ज की ऽ
० ३ × २

अंतरा-२

ध सां सां सां ध सां | – सां नि म नि ध | सां – – नि सां | गं गं सां –
सि र न वा | ऽ ये तु म्ह | रे ऽ ऽ च | र न पै ऽ
० ३ × २

सां ध नि ध सां सां म | गं – सां – | नि ध सां ध म | ग सा – सा
प्रे ऽ म पि | या ऽ फै ऽ | याऽ ऽ ज़ हु | सै ऽ ऽ न
० ३ × २

ध सां ध़ सो – | सा ग ग ग म | – म सां ध – | ध ध सां म ध
पा ऽ वे ऽ | गु न अ पा | ऽ र ना ऽ | द्र बे ऽ द्र
० ३ × २

नि सां – सां गं – | सां – नि सां मंधु | ध सां सां ध ध मं | मं ग सा गमं धसां
जै ऽ जै ऽ | हो ऽ जै ऽऽ | गु रु च र | न न कीऽ ऽऽ
० ३ × २

टिप्पणीः यह बन्दिश पृष्ठ १९ पर सायंगेय राग भूपाली के अंतर्गत दी जा चुकी है। केवल प्रातःकालीन सभाओं में गाने के हेतु लेखक ने इस राग का रूपान्तर हिंडोल में किया है।

राग मालश्री- त्रिताल (मध्यलय)

(संस्कृत में)

स्थायीः जय जय हरे प्रणतजनशरणचरणं अभिवन्दे।
स्वान्तशान्तये भ्रान्तमतिः अहं इहनतशिरः॥
अंतराः कमलपुटवेष्टितो भ्रमर इव हतचेतनः अहं।
मोचय आशु मां अतिजटिल भवविकटजालात्॥

स्थायी

नि सा
ज
सा प ग प प | सां – –, नि सां | प प प ग प | ग ग सा सा, सा प़
य ज य ह | रे ऽ ऽ, प्र | ण त ज न | श र ण, च
३ × २ ०
प़ सा ग ग | प – प निसां गं | – नि सां – प | प ग – प ग
र ण म भि | व ऽ न्दे ऽ ऽ | ऽ स्वा ऽ न्त | शा ऽ न्त ये
३ × २ ०
ग सा नि सा प़ प़ | सा सा ग ग | प प प ग | प ग सासा; नि सा
ऽ भ्रा ऽ न्त | म ति र ह | मि ह न त | शि रा ऽ ह; ज
३ × २ ०

अंतरा

मं प प प सां | सां नि सां – सां | सां – – नि सां | सां सां सां सां
क म ल पु | ट वे ऽ ष्टि | तो ऽ ऽ भ्र | म र इ व
३ × २ ०
मं प प प सां | सां प गं पं गं | सां –, नि सां प | सां सां सां, नि सां
क म ल पु | ट वे ऽ ष्टि | तो ऽ, भ्र म | र इ व, ह
३ × २ ०
प प गं प ग | सा – प़ – | नि सा – सा ग | – ग प –
त चे ऽ त | नो ऽ हं ऽ | मो ऽ च या | ऽ शु मा ऽ
३ × २ ०

– सां	सां गं	सां सां	प प	मं प	प ग	प ग	– सा	– सा ; नि सा
ऽ	म ति	ज टि	ल भ	व वि	क ट	जा	ऽ ला	ऽ त ; ज
३		×		२			०	
सा प	ग प	प	सां –					
य	ज य	ह रे	ऽ	--- इत्यादि स्थायी के अनुसार				
३		×						

राग शंकराकरण

यह एक कल्याण थाट में से उत्पन्न होनेवाला शंकरा प्रकार है। इसमें रिखब बहुत दुर्बल है। इस राग का वादी स्वर पंचम तथा संवादी षड्ज है। गाने का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। अवरोह में मध्यम दुर्बल है। 'निप' तथा 'गप' संगति रागवाचक है। विद्वानों के मतानुसार शंकरा के साथ हिंडोल एवम् कल्याण अंगों के संमिश्रण से इस राग का मंडन होता है।

आरोहावरोह

सा, प गप, गं मध, प, गं मध सां | सां, निधनिप, गपधप, प गप, रे ग–सा ||

पकड

प धप रे ग–सा, सा गं मध, निधनिप, प गप, रे ग–सा |

स्वरविस्तार

सा प ग, प धप रे ग–सा, सा प ग, मं धप, गं मध, मं धसां नि (प), नि–ध प, गे, गप, गपधप, रे ग–सा |

सा, रे ग–सा, प रे ग–सा, नि मं धसा, प–ग, प रे ग–सा, सा गं मध, निधनिप, गप, निधसां, निधनिप, गप, गं मधसां, निधनिप, गप, निधपे, गपधप, प गप, रे ग–सा |

प, ग प, सा गप, मं धसा, प ग प, गप, निधपे, मं धमं, निधप, सां, नि–ध प, प गपसां, निधप, मं ध मं, धनि–ध प, गप, गं मधप, गप, गपधप, रे ग–सा |

सा, ग–सा, नि धपे, मं धसा, प–ग, सा ग, मं धप, गप, रे ग–सा, सा प ग, प ग प, गप, गं मध, मं धनिध, मं धप, गपसां, निधप, प–ग, पसां, निधप, गपनिसां, गं रे सां, निधप, प, गं मध, मं धसां, गं रे सां, निधपे, निसां गं, पं गंपं, रे गं रे सां, मं धसां, निधसांनि ध प, गप, प निं नि पगे, प मं पगपगसा, गं मध, (प) ग, प रे ग रे सा |

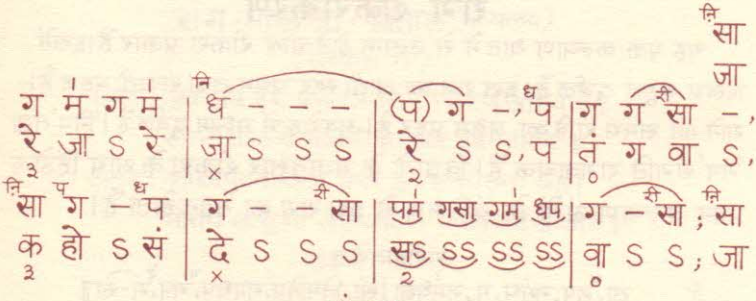
प, निधपे, गप, सां, नि सां गं, गंपं, रे गं रे सां, गं–सां, निध, गं मधसां–(प), गप, निधपे, गं मधप, प मं गसा, गं मध, प–ग, सा गं मध, प धनि (प) –ग, सा गं मध, प, प गप, रे ग–सा |

राग शंकराकरण - त्रिताल (मध्यलय)

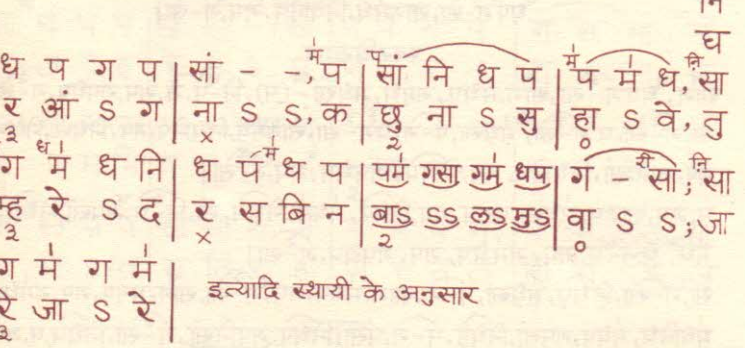
स्थायीः जारे जारे जारे पतंगवा,
कहो संदेसवा।

अंतराः घर आंगना कछु ना सुहावे,
तुम्हरे दरस बिन बालमुवा॥

स्थायी



अंतरा



इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग शंकराकरण - रूपक (विलंबित)

स्थायीः काहू को रिझावन हो, अलबेली नार,
एरी बनठन चली।

अंतराः निहरे सुजनवा, बावरो भयो तिहारे छलबलसों,
एरी बनठन चली॥

स्थायी

,पधप	ग -सा,सा	गप -ग मध	-,मध सां	(प) ,धगपे	निध पं मंग		
,काऽह	को ऽऽ,रि	झाऽ ऽऽ ऽऽ	ऽ,वऽ न	हो ,ऽऽऽ	अल बे ऽऽ		
⊗	३	⊗	२	३	⊗		
गप,गमध -प	ग सासा	मंध सा निसा	पं गंग	पमगसा,गमध- (प)ग			
ऽऽ,ऽऽऽ ऽली	ना ऽर	पुऽ री ऽऽ	ब ऽन	ठऽऽऽ,ऽऽऽऽ नऽ			
२	३	⊗	२	३			
पग सा;सागं गमं	मध ,पधप	ग -सा,सा					
चली ऽ;पऽ ऽऽ	ऽऽ ,काऽह	को ऽऽ,रि	इत्यादि				
⊗	२	३					

अंतरा

,निध	पं मंगपं	सांसां सांनिं निसां	सांगं सांगंपं-	गंपं,गं सां			
,निह	रे ऽऽऽ	सुज नवा ऽऽ	बाऽ ऽऽऽऽ	ऽऽ,वऽरो			
	३	⊗	२	३			
निध पं गंपं धंसां,सां	निध,पं-मंग पं गपं,गमंध--प	ग सा	मंध सा निसा				
भयो तिहा ऽऽ,रे	छल,बऽऽऽ ऽऽ,ऽऽऽऽऽल	सों ऽऽ	पुऽ री ऽऽ				
२		३	⊗				
पं गंग	पमगसा,गमंध- (प)ग	पं गंग सां;सागं गमं	मंध ,पधप	ग -सां,सा			
ब ऽन	ठऽऽऽ,ऽऽऽऽ नऽ	चली ऽ;पऽ ऽऽ	ऽऽ ,काऽह	को ऽऽ,रि			
२	३	⊗	२	३			
पगंप -ग मंध							
झाऽ ऽऽ ऽऽ	इत्यादि स्थायी के अनुसार						
⊗							

राग नंद

गत ७०-७५ वर्षों से राग नंद का प्रचलन हुआ है। संगीत-ग्रंथों में इस राग का उल्लेख नहीं मिलता। कुछ लोग इसे आनंदी के नाम से सम्बोधित करते हैं। इस मधुर राग की संकल्पना, बिहाग एवम् गौड़सारंग के संमिश्रण से हुई है, ऐसा कुछ विद्वानों का कथन है। आरोह में बिहाग तथा अवरोह में गौड़सारंग और साथ साथ "सा ग, मधप, गंरे, सा" ऐसे एक विशेष रागवाचक स्वरसमुदाय का प्रयोग करते हुवे इस राग का मंडन होता है।

इस राग का थाट कल्याण है। दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। षड्ज वादी एवम् पंचम संवादी है। यह रात्रिगेय राग है। इसका चलन वक्र है।

उठाव

सागं, मधपं, गंरे, सा, गम, गंमंगपं, गमपधनिं, पंधं, पंमपं, गं, मं गमपं, गंरे, सा।

स्वर विस्तार

सा, सा नि सा ग, सा ग, प म ग, म ग प, म प, ध म प ग, सा ग, म ध प, ग रे, सा।

सा, रे नि – सा, प नि – सा, प नि सा रे नि, सा ग, रे – सा, रे नि, सा ग, सा ग म, ग म ग प, गमपधनि, धनि – प, प – ध, प ध – प म, प म प – ग, सा ग, म ध प, ग रे, सा।

नि सा प – ग, म गमप, ग रे, सा, नि सा गमप, गमधप, ग रे, सा, प नि सा ग, म ग प, ग म ध प, ग रे, सा, रे सा नि सा ग, मग सा गमप, गमपधनि – प, गमपनि, धनि – ध प, गमपनिसां, रेंनि, धनि – ध प, म पधरेंनि, धनि – ध प, पधनि, पध, म प – ग, नि सा गमप, सां – पे, ध म प – ग, म गमधप, ग रे, सा।

नि सा ग, नि सा ग, प नि सा रे नि, सा ग, म पसा, रे नि, सा ग, नि सा म – ग, नि सा म ग प – ग, सा ग, म ध म प – ग, म गमध प म प – ग, गमपनि – ध पध – म प – ग, म गमपध पधनि – प पधमप – ग, म गमपनिसां, रेंनिसां, नि धनि, म पध, प म प – ग, म गमपध सांरेंगं – सां, रेंनि, सांपु, ध म प – ग, सा ग, म ध प, ग रे, सा।

सा, म ग प, म गमगप, नि सा, म ग प, म गमपधनि – प, म गमपनि, सां, रेंनि – प, म पधनि पधरेंनि – प, म पनिसांगं – सां, रेंनि – प, म पनिसांगं मंपं ग रें, सां, रेंनि – प, म पधरेंनि – प, धनि, पध, म प – ग, म गमधप – ग रे, सा।

प, गमपनि, सां, पधपप सां, पनि, सांरेंसां, पनिसांगं – सां, पनिसांरेंनि, सांगं – सां, निसांगं, सां म – गं, म गंमपं – ग रें, सां, निसांगंमपं ग रें, सां, गंसां, रेंनि, सांध, निप, धम, पग, सागमपधनि, पधपध – पम, म पमपम – ग, साग, सागमधप, ग रे, सा।

राग नंद – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: पायल मोरी बाजे झनन झनन,
अत डर पावे जिया।
अंतरा: कैसे कर आऊँ बालमवा पास मैं तेहारे,
घर की लुगेंया जाग रही, अत डर पावे जिया॥

स्थायी

														नि सा	
														पा	
ग	म	ध	प	ग री	–	सा	–	म ग	ग	म	म ग	प म	प	–	म ग
यल	मो	ऽ	री	बा	ऽ	जे	ऽ	झ	न	न	झऽ	न	न	ऽ	अ
३				×				२				०			
म	प	–	ध	नि	–	ध प	–	प	ध	–	प म	–	म	प	ग – ; नि सा
त	ड	ऽ	र	पा	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	वे	ऽ		जि	या ऽ ; पा
३				×					२					०	

अंतरा

प सां नि – नि	सां – – सां	– – नि सां –	नि सां रीं सां, नि सां
से क स र	आ स स ऊँ	स स बा स	ल म वा, पा
३	×	२	०
सां नि सां रीं सां	सां नि – ध प –	प ध – प। म –	म प ध ग –, ग
स् मैं स ति	हा स स स	स स स स	स रे स, घ
३	×	२	०
म ग गम ध प	ग री – सा –	ग़ नि़ सा म मग	प – –, ग
र कीड़ स लु	गैं स या स	जा स ग रु	ही स स, अ
३	×	२	०
म प – ध	ध नि – ध प –	प ध – प। म –	म प ध ग –; म प
त ड स र	पा स स स	स स वे स	जि या स; पा
३	×	२	०
ग नि सागम धम प	ग री – सा –		
यल मोड़ ऽऽ री	बा स जे स	इत्यादि स्थायी के अनुसार	
३	×		

राग नंद–एकताल (विलंबित)

स्थायी: सीस सेरा बनरा अत सोहे।

अंतरा: सरस सुगंध गरे हरवा, हाथ कंगना बनरी के सोहे॥

स्थायी

म ग,मध–प	ग रीसा, नि़सा,गग	म प म,मग	प ,गम	नि प,धनि,धपं	प ध ,पम
सी,ऽऽऽस	सेरा, ऽऽ,बन	रा ऽ,ऽऽ	ऽ ,अत	सो,ऽऽ,ऽऽ	हेऽ ,ऽऽ
	४	×	०	२	०

प। मप,ग ;	ग़ री गगरीसा,गमधपं	ग रीसा, नि़सा,गग	म	
ऽऽ,ऽ ;	सीऽऽऽ,ऽऽऽस	सेरा, ऽऽ,बन	रा	---इत्यादि
३		४	×	

अंतरा

प गम सां प नि	सां –	सां नि सां सां	म पनि ,सांरीं	सां नि	सां नि ध प। म ग	म ग –म,धप
सर स ऽऽ	गं ऽ	,ऽऽ ध	गरे ,हर	वा ऽ	ऽऽ ऽऽ	हा ऽथ,कंग
४	×	०	२	०	३	४

ग़ री सा नि सागम प मप	ध नि ,धप	ध पध ,पम	प। मप,ग ;	सागग,सागमधपं	ग़ रीसा
ना ऽ बन री के	सो ,ऽऽ	हेऽ ,ऽऽ	ऽऽ,ऽ ;	सीऽऽ,ऽऽऽऽस	सेरा --इत्यादि
× ०	२	०	३		४

स्थायी के अनुसार

मारू-बिहाग

यह एक राग-स्वरूप गत ६० वर्षों से संगीतज्ञों में प्रचलित हुवा तथा आजकल यह एक लोकप्रिय राग माना जाता है। प्राचीन ग्रंथों में अथवा किसी प्राकृत, उर्दू या हिंदी के पुराने ग्रंथों में इस राग-नाम का उल्लेख नहीं मिलता है। यह नाम भी विचित्र है। ग्रंथों में "मारुव" नाम अवश्य मिलता है, किन्तु उसका सम्बन्ध "मारवा" राग से जाना जाता है। 'मारू-बिहाग' में तो दोनों मध्यम एवम् शेष सब स्वर शुद्ध लगते हैं। अर्थात् 'मारवा' से कोई संबंध नहीं है। बिहाग यह उपनाम भी इस राग-स्वरूप को कैसे प्राप्त हुआ, यह भी एक प्रश्न है। किम्बहुना आरोह में ऋषभ तथा धैवत वर्ज्य अथवा दुर्बल होने के कारण बिहाग कहलाता होगा। परन्तु अवरोह में इन्हीं दो स्वरों पर तथा मध्यम पर अनेक बार न्यास किये जाने के कारण बिहाग की छटा नष्ट हो जाती है। वादी स्वर पंचम एवम् संवादी षड्ज जान पड़ते हैं। गान-समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इसका विशेष रागवाचक स्वरसमुदाय इस प्रकार है—"सा म, प म, पग, सागमपमप, प, प, म, मग, मग, गरे, सा, रे, सानि, सा म-ग, सागमपमप।"

उठाव

सारे, सानि, सामे, प म, प मग, मग गरे, सा, निसाग, सागमपमप, पध-पमे, प-मग, प म, ग, रे, सा, रे-सानि, साग, सागमपमप।

स्वरविस्तार

सामे, प म प ग, रे, सा, साग, सागमपमप, मपध, पम, प-ग, सामे, गमप-ग, रे, सा, रे-सानि, साग, सागमपमप।

मग, रेसा, निसारे, सानि, सागम, मग, गरे, रेसा, रे-सानि, साग, मधप, धमप, म-गप, मग, रे, रे सा, रे-सानि, सागमपमप।

सागमप, गमगप, साग मधप, धनि धप, मपध गप, मध, मप, गम, गमप, गम, ग, रे, सा, रे-सानि, साग, सागमपमप।

ग-रेसा, मग, रेसा, रे-सानि, साग, सागम, गम-ग, रेसा, सागमप, गमपनि-धप, मपध-पमे, प-मग, म-ग, पग, रेसा, रे-सानि, साग, सागमपमप।

मपसां, पध, मप, गमप, मपनिसारें-सांनि, ध-पे, पध-पमप, गम, गमप, पगे, रेसा, रे-सानि, सा म, प-ग, सागमपमप।

पपसां, सारें-सां, निसांग, रेसां, सामे, प-ग, रेसां, पनिसांग, सांगमंग, मंगरेसां, नि, सांरेसां, निधि-पे, पध-पमे, प-मग, सामे-ग, सागमप, मग, म, ग, रे, सा, सारे, सानि, पनिसांग, सागमपमप।

राग मारू-बिहाग–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : ब्रिज-जुवति संग रच्यो रंग-रास है,
अत उमंग सों, ठाड़ि त्रिभंगी अनंगसी मूरत।

अंतरा : इतहि राधा उत कन्हाई, ग्वाल-बाल बीच
सोहत दोऊ अत, रसिक जन-मन मोद बढ़ावत॥

स्थायी

,नि सा मं ग	री सा (सा) सा	नि़, नि़ सा ग	सा गमं पं मं
, ब्रि ज जु	व ति ऽ सं	ग, र च्यो रं	ग राऽ ऽ स
०	२	०	३
प, सा मं ग	री सा (सा) सा	नि़, नि़ सा ग	सा गमं प मं
है, ब्रि ज जु	व ति ऽ सं	ग, र च्यो रं	ग राऽ ऽ स
×	२	०	३
प – – –	मंप, गं मं प	ध प मंप मं	गमं गं रीं सा
है ऽ ऽ ऽ	ऽऽ, अ त उ	मं ग सोंऽ ऽ	ऽऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
नि़, सा मं मं	मंमं मंगं, सा	गमं पं मं गं	मं गं रीं सा
ऽ, ठा ड़ि त्रि	भंऽ ऽऽ गी, अ	नंऽ ऽ ग सी	ऽ मू र त
×	२	०	३
नि़, सा मं ग	री सा (सा)		
ऽ, ब्रि ज जु	व ति ऽ ---	इत्यादि	
×	२		

अंतरा

,पं ग मं प	सां – सां –	–, सां गं मं	गंमं गं रीं सां
, इ त हि	रा ऽ धा ऽ	ऽ, उ त क	हाऽ ऽ ऽ ई
०	३	×	२
पंगमं पंनि़ धं पं	– ध प मं	मंपध पंमं पंमं पंग	मं ग री सा
ग्वाऽ ऽऽ ल बा	ऽ ल बि च	सोंऽ हऽ तऽ दो	ऽ ऊ अ त
०	३	×	२
–, सां मं ग	पं मं प सां नि	ध प मं पमं	पंगमं गं रीं सा
ऽ, र सि क	ज न म न	मो ऽ द बऽ	ढ़ाऽ ऽ व त
०	३	×	२
–, नि़ सा ग	सा गमं पं मं	प; सां सां मं ग	री सा
ऽ, र च्यो रं	ग राऽ ऽ स	है; ब्रि ज जु	व ति --- इत्यादि
०	३	×	२

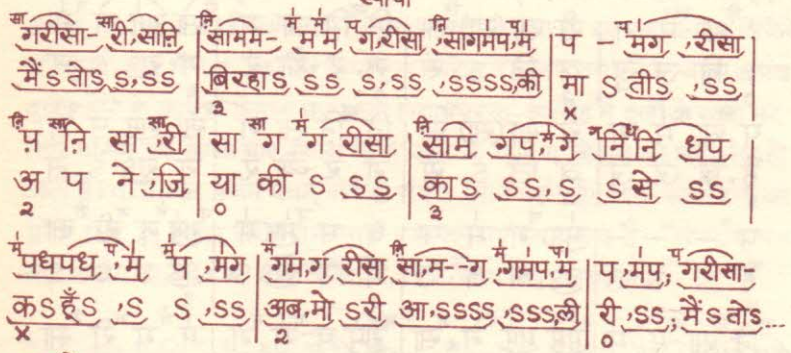
स्थायी के अनुसार

राग मारू-बिहाग–तिलवाडा (विलंबित)

स्थायीः मैंतो बिरहा की माती, अपने जिया की कासे कहूँ,
अब मोरी आली री।

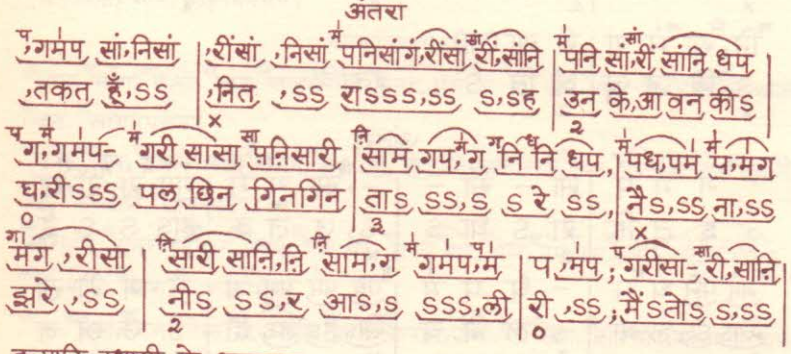
अंतराः तकत हूँ नित राह उनके आवन की, घरि पल छिन
गिन गिन तारे, नैना झरे नीर, आली री॥

स्थायी



इत्यादि

अंतरा



इत्यादि स्थायी के अनुसार

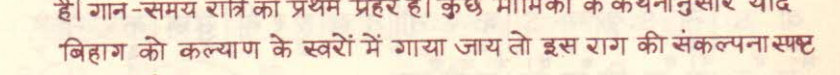
राग मार्ग-बिहाग

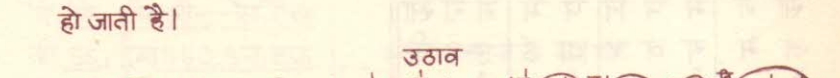
कल्याण ठाठ से उत्पन्न होने वाला यह एक मनोरंजक राग है। आरोह में ऋषभ-धैवत वर्जित तथा अवरोह सम्पूर्ण है। अतएव इस राग की जाति औडुव-सम्पूर्ण माननी होगी। इस राग में वादी गंधार व संवादी निषाद है। गान-समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। कुछ मार्मिकों के कथनानुसार यदि बिहाग को कल्याण के स्वरों में गाया जाय तो इस राग की संकल्पना स्पष्ट हो जाती है।

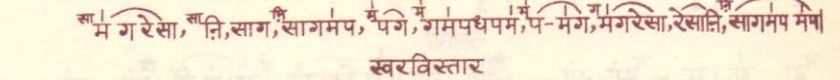
उठाव

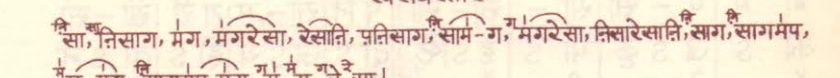


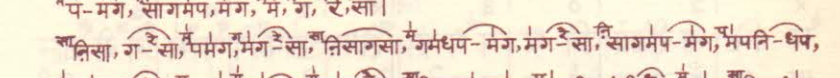
स्वरविस्तार

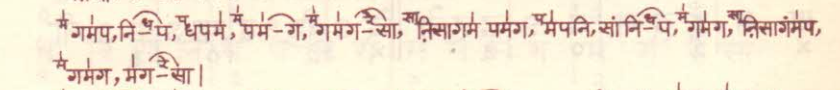




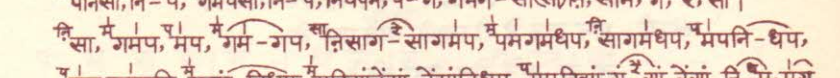


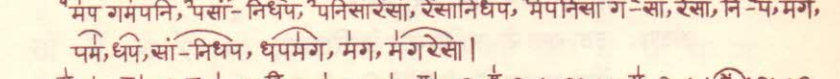


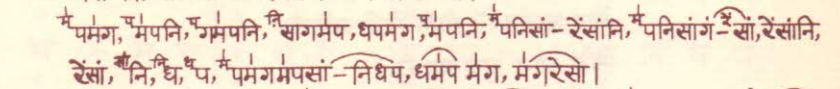


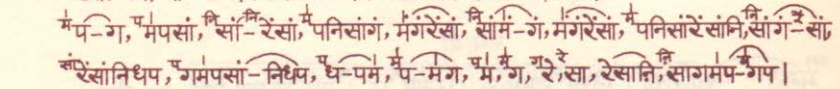


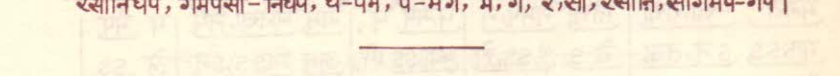




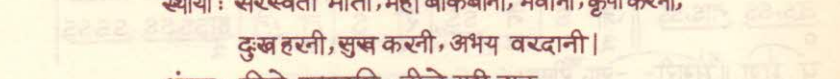


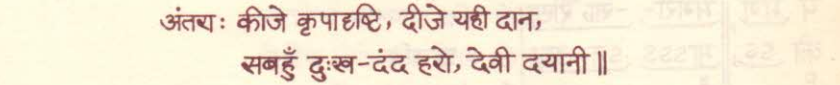












राग मार्ग-बिहाग – झपताल (मध्यलय)

स्थायी : सरस्वती माता, महा वाकबानी, भवानी, कृपा करनी,
दुःख हरनी, सुख करनी, अभय वरदानी।

अंतरा : कीजे कृपादृष्टि, दीजे यही दान,
सबहुँ दुःख-दंद हरो, देवी दयानी ॥

स्थायी

सा मं ग | रे सा – | नि़ सा | प गं मं पं ग, प | सां – | नि ध प | ध प | मं ग, मं
स र | ख ती ऽ | मा ऽ | ताऽऽऽ, म | हा ऽ | बा ऽ क | बा ऽ | नी ऽ, भ
× | 2 | 0 | 3 | × | 2 | 0 | 3
मं ग रे | सा –, प़ | नि़ सा | रे नि़ सा | ग मं | प नि सां | रें सां | प ध प
वा ऽ | नी ऽ, कृ | पा ऽ | क र नी | दु ख | हु र नी | सु ख | क र नी
× | 2 | 0 | 3 | × | 2 | 0 | 3
नि़ सा | ग | मं ध प नि | प मं | गं रें सा
अ भ | य व र | दा ऽ | ऽ ऽ नी
× | 2 | 0 | 3

अंतरा

प ग मं | प – सां | सां – | नि़ सां – सां | मं प नि | सां –, मं | गं रें | नि़ सां – सां
की ऽ | जे ऽ कृ | पा ऽ | दृ ऽ ष्टि | दी ऽ | जे ऽ, य | ही ऽ | दा ऽ न
× | 2 | 0 | 3 | × | 2 | 0 | 3
मं प नि | सां रें सां | नि ध | पं ध प | नि़ सा | गं प, नि | प मं | गं रें सा
स ब | हुँ दु ख | दं ऽ | द ह रो | दे ऽ | वीऽ ऽ, द | या ऽ | ऽ ऽ नी
× | 2 | 0 | 3 | × | 2 | 0 | 3

राग मार्ग-बिहाग–एकताल (विलंबित)

स्थायी: मान तज दे री प्यारी, अब मान ले,
तू ना जाने रीत नेहा की।

अंतरा: उठ चल री सखि, कर ले सिंगार,
और आनंद सों मीठी मीठी बतियाँ,
तोहे आन सुजनवा की ॥

स्थायी

सा मं गरी- | -सा, रीसा | नि़सा मं गंमंपं, ग | पं, मंपं प, | गं मं पनिसां, निध | प मंप |
मा ऽऽऽ | ऽ न, तज | दे ऽ | ऽऽऽ, हो | प्या, ऽऽ री, | अब | मा ऽऽ, ऽ न | ले ऽऽ |
3 | | 4 | | × | | 0 | | 2 | |
मं पधं, पमं | मंप, मंग | ग री | सा नि़सा, | सा़ नि़ | सां, रीं | नि़सागमंप | गंमंध- |
तू ऽ, ऽऽ | नाऽ, ऽऽ | जा ऽ | ने ऽऽ, | री ऽ | तू, ने | हाऽऽऽऽ | ऽऽऽऽ |
0 | | 3 | | 4 | | × | | 0 | | 2 | |
प मंग, | सा़ मंगरी- | -सा, रीसा |
की ऽऽ, | मा ऽऽऽ | ऽ न, तज | --- इत्यादि
0 | | 3 |

अंतरा

प गम, पसां	सां सांसां	मपनि सां,में	गरीं सोंसां,	ग मग रीसा	नि सांगंम प,मप		
उठ चल	री सखि	कर ले,सिं	गाऽ ऽर,	औऽ ऽर	आऽनंद सों,ऽऽ		
४	×	०	२	०	३		
प गम,प नि सांरीं,सांनि	(प),गम गरीसा-	ग पनि सा,री	नि सासा,गमप-	म गमध-,			
मीठी,मी ठीऽऽ,बति	याँ,ऽऽ तोऽहेऽ	आऽ न,सु	जन,वाऽऽऽ	ऽऽऽऽ			
४	×	०	२				
म पमग;	ग मगरी- -सा,रीसा						
की ऽऽ;	सा ऽऽऽ ऽन,तज						
०	२						

... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग बिलावल–सरगम–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

म ग रे ग	प नि ध नि	सां - - रें	सां नि ध प				
०	३	×	२				
ध नि सां नि	ध प म ग	म प म ग	म ग रे सा				
०	३	×	२				
गं रें सां नि	ध नि सां रें	सां नि ध प	म ग रे सा;				
०	३	×	२				

अंतरा

प म ग रे	ग प ध नि	सां - ध नि	सां - - -				
०	३	×	२				
सां रें गं रें	सां नि ध नि	रें - सां नि	ध प म ग				
०	३	×	२				
प - म ग	रे सा,ध -	ध नि - नि	सां नि ध प;				
०	३	×	२				

राग बिलावल-लक्षणगीत-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: शुचि सुर मण्डित सम्पूरन जब होत बिलावल
शुद्ध कहावत, अंश गहत धैवत, गंधार सहायक,
राग-रूप अति सुन्दर।

अंतरा: उत्तर अंग प्रबल करि सुस्वर,
प्रातगेय कल्याण कहे कोऊ,
विविध बिलावल भेदन को पुनि
आश्रय होत 'सुजान' मनोहर ॥

स्थायी

म ग म ग री | सां नि़ री सा सा | सां ग री ग॑ म॑ ग॑ | प म ग ग
शु चि सु र | म ऽ ष्टि त | स ऽ म्मू ऽ | र न ज ब
० ३ × २

म॑ ध – ध प | नि॑ ध निध॑ नि सां | सां॑ नि॑ ध प | म ग म री
हो ऽ त बि | ला ऽऽ व ल | शु ऽ द्ध क | हा ऽ व त
० ३ × २

म॑ ग म प म | ग री रि॑ सा – | ग री प॑ ग प | नि ध नि,रीं
अं ऽ श ग | ह त धै ऽ | व त गं ऽ | धा ऽ र,स
० ३ × २

सां नि ध प | धनि॑ सां ध म॑ प | म ग ग॑ म री | सा॑ री सा सा;
हा ऽ य क | राऽ ऽ ग रू | ऽ प अ ति | सु ऽ न्द र;
० ३ × २

अंतरा

ग॑ प – ध॑ नि | सां – सां, नि॑ सां | सां सां सां सां | सां॑ रीं सां सां
उ ऽ त्त र | अं ऽ ग, प्र | ब ल क रि | सु ऽ ख र
० ३ × २

नि॑ सां रीं गं रीं | – सां ध॑ नि | सां – नि॑ ध प | ग॑ म॑ ग प म ग
प्रा ऽ त गे | ऽ य क लि | या ऽ ण क | हे ऽ को ऊ
० ३ × २

म॑ ग म ध ध | ध॑ नि प प | प॑ नि ध नि॑ रीं | सां नि ध प
वि वि ध बि | ला ऽ व ल | भे ऽ द न | को ऽ पु नि
० ३ × २

प॑ सां नि ध प | म ग म,ग॑ री | ग॑ म प,म | ग री सा सा;
आ ऽ श्र य | हो ऽ त,सु | जा ऽ न,म | नो ऽ ह र;
० ३ × २

राग बिलावल - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: मुरली बजावे मोहना,
भूल गई सब सुध-बुध मो-मन।
अंतरा: बाँसुरी की धुन संग नाचत सब,
छोम् छननननन पायल बाजे मोहना,
भूल गई सब सुध-बुध मो-मन॥

स्थायी

नि सा री म ग म | ग री प ग प | – नि ध – नि | सां – – –			
मु र ली ब | जा ऽ वे ऽ | ऽ मो ऽ ह | ना ऽ ऽ ऽ			
२ | ० | ३ | ×			
प सां – नि ध प | प ध – (म) ग | ग री ग म ग प | म ग री सा;			
भू ऽ ल ग | ई ऽ स ब | सु ध बु ध | मो ऽ म न;			
२ | ० | ३ | ×			

अंतरा

ग प – प प | नि ध – नि नि | सां सां नि सां – | नि सां रीं सां सां			
बाँ ऽ सु री | की ऽ धु न | सं ग ना ऽ | च त स ब			
३ | × | २ | ०			
नि ध नि सां रीं | सां नि ध प | प ध – म ग | ग म री ग प			
छो म् छ न | न न न न | पा ऽ य ल | बा ऽ जे ऽ			
३ | × | २ | ०			
–, नि ध – नि | सां – – –, | प सां – नि ध प | प ध – (म) ग			
ऽ, मो ऽ ह | ना ऽ ऽ ऽ, | भू ऽ ल ग | ई ऽ स ब			
३ | × | २ | ०			

--- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग अल्हैयाबिलावल – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः ग्वार बार सब संग लिये हरि, चले चोरी चोरी ब्रिज-ग्वारन घर,
दूध दही गोरस माखन मिस, पाप ताप दुःख दंद हरावन।

अंतरा-१: ऊँचि लटकी दधि माखन मटकी, गोप काँधे चढ़ि हटकी झटकी,
खायो खवायो सबनके गोरस, हरि के मुख लिपट्यो दधि माखन ॥

अंतरा-२: लौटि आयी ब्रिज-ग्वारनि आंगन, निरखे हरि मुख चकित भई मन,
वारि गई न्योछावर कीन्हे, तन-मन-धन हु हरि चरन शरन ॥

स्थायी

म ग म री प ग | प प नि ध नि | सां – सां नि सां | सां ध नि ध प			
ग्वा ऽ र बा | ऽ र स ब | सं ऽ ग लि | ये ऽ ह रि			
० | ३ | × | २			
ग म ग री म ग | म ग री सा | नि सा सा ग री ग | री सा नि ध़ प़			
च ले ऽ चो | री चो ऽ रि | ब्रि ज ग्वा ऽ | र न घ र			
० | ३ | × | २			

प़ – ध़ नि़ ध़ | नि़ सा सां सा – | ग री ग प | ध नि़ ध प
दू ऽ ध द | ही ऽ गो ऽ | र स मा ऽ | ख न मि स
० ३ × २

नि सां रीं गं रीं | सों सां धं प | धनि सांरीं सां सां | धं नि़ ध प ;
पा ऽ प ता | ऽ प दु ख | दंऽ ऽऽ द ह | रा ऽ व न ;
० ३ × २

पं धं गंमं रीं ग | प प नि धं नि |
भ्वा ऽऽ र बा | ऽ र स ब | ... इत्यादि
० ३

अंतरा-१

सां नि – नि सां नि | नि सां धं नि | सां – सां सां | नि सां रीं सां –
ऊँ ऽ चि ल | ट कि द धि | मा ऽ ख न | म ट की ऽ
० ३ × २

नि सां – सां रींगं | मं गंरीं सां सां | नि धं निसांरीं गंरीं | सां सां धं प
गो ऽ प कौंऽ | ऽ धेऽ च ढ़ि | ह ट कीऽ ऽऽ | झ ट की ऽ
० ३ × २

मं ग म धं ध | धं नि़ प प | नि धं नि सां नि | ध प म ग
खा ऽ यो ख | वा ऽ यो स | ब न के ऽ | गो ऽ र स
० ३ × २

पं ग प धनि सांरीं | सां सां नि धं प | धनि सां नि धं प | पं ध – म ग ;
ह रि के ऽ ऽऽ | मु ख लि प | ट्योऽ ऽ द धि | मा ऽ ख न ;
० ३ × २

अंतरा-२

गं प – प धं नि | ध धं सांनि नि | सां – सां सां | नि सां रीं सां सां
लौ ऽ टि आ | ऽ यी ब्रि ज | भ्वा ऽ र नि | आं ऽ ग न
० ३ × २

नि सां सां नि ध | सां नि सां सां सां | सां रीं गं रीं | सां नि ध प
नि र खे ऽ | ह रि म ख | च कि त भ | ई ऽ म न
० ३ × २

मं गं मं पं मं | गं रीं नि सां – | नि प – नि धं नि | सांरीं गं सां –
वा ऽ रि ग | ई ऽ न्यो ऽ | छा ऽ व र | कीऽ ऽ न्हे ऽ
० ३ × २

नि सां रीं गं रीं | सां नि ध प | नि धं नि सां नि | धं गं प ध ग ;
त न म न | ध न हु ऽ | ह रि च र | न श र न ;
० ३ × २

मं ग म री पं ग | प प नि धं नि |
भ्वा ऽ र बा | ऽ र स ब | ... इत्यादि स्थायी के अनुसार
० ३

राग अल्हैयाबिलावल-झपताल(मध्यलय)

स्थायीः निर्गुण निराकार होत साकार परब्रह्म परमात्म,
भक्त-जन हित करन।
अंतराः पाथर पूजन नित्य नाम जश कीर्तन किये
ताही में प्रकट होत हरि रूप गुण॥

स्थायी

सां सां | धप,धं | मरीग | पनिधंनि | सां – | सां,धंनि | धप | म,गरीग
नि र | गुण,नि | रा S | का S र | हो S | त,सा S | का S | र,प र
×	2	0	3	×	2	0	3
मं प | म गरीसा | पं गप | धं निं सांसां | सां – | रीं गं रीं | सांसां | गं पं धं;
ब्र S | ह्म पड़ र | मा S | S त म | भ S | क्त ज न | हि त | क र न;
×	2	0	3	×	2	0	3

अंतरा

गं प – | निंधं नि,सां | सांसां | सां – सां | सां – | रीं गं रीं | सां – | धं निं प
पा S | शुड़ र,पू | ज न | नि S त्य | ना S | म ज श | की S | र त न
×	2	0	3	×	2	0	3
पं ग री | ग प म | ग री | गंरी निं रीसा | मं ग म | री पं गप | निंधं सां | सां निं धं नि;
कि ये | ता S हि | मों S | प्र क ट | हो S | त हरि | रूड़ S | प गु ण;
×	2	0	3	×	2	0	3

राग बिलावल-ध्रुवपद-चौताल(विलंबित)

स्थायीः शीत शीत मंद मंद प्रात समे बहे समीर,
उपवन की शोभा न्यारी निरखि निरखि हुलसत मन।
अंतराः कोमल रवि-किरननसों पूरब प्रकाश भयो,
अखिल जगत जागि उठ्यो गावत जय जय शुभ दिन॥
संचारीः निकसि आये कोटरतें मधुर शब्द किये विहग,
द्रुम जेलि झूम रहे दिन-मणि की जय जय करि॥
आभोगः सरसनमें खिले कमल चहूँ ओर भयो विकास,
सजि सिंगार सृष्टि भई मानो जैसी नई दुलहन॥

स्थायी

म ग	म	री	प ग	प	ध नि	ध	नि सां	- सां
शी	ऽ	त०	शी	ऽ	त	मं	ऽ	द मं	ऽ द
×				२		०		३	४
नि सां	-	सां	सां	ध	प	ध	मे	म ग	म री	सा
प्रा	ऽ	त०	स	मे	ऽ	ब०	हे	स ३	मी	ऽ र
×				२						४
नि सा	री	म ग	म	ग	री	ग	प	प	नि	ध	नि
उ	प	व०	न	की	ऽ	शो०	ऽ	भा ३	न्या	ऽ	रि
×				२						४
नि सां	रीं गं	रीं	सां	रीं	नि सां	नि	ध	प	ध	मे;
नि	र	स्रि०	नि	र	स्रि	हु०	ल	स ३	त	म ४	न;
×				२						

अंतरा

प	-	नि ध	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां -
को	ऽ	म० ल	र	वि	कि०	र	न ३	न	सों ४ ऽ
×		२							
नि सां	-	रीं गं	सां	सां	सां	नि	ध	प	म	ग
पू	ऽ	र० ब	प	र	का०	ऽ	श ३	भ	यो ४	ऽ
×		२							
म	ग	री सा	री	सा	ग	प	ध	नि	सां	-
अ	स्रि	ल० ज	ग	त	जा०	ऽ	गि ३	उ	ड्यो ४	ऽ
×		२							
नि सां	-	रीं रीं	गं	रीं	सां	नि	ध	प	ध	मे;
गा	ऽ	व० त	जै	ऽ	जै०	ऽ	शु ३	भ	दि ४	न;
×		२							

संचारी

सा	सा	सा	ध	-	ध	ध	-	ध	नि	प	-
नि	क	सि०	आ	ऽ	ये	को०	ऽ	ट ३	र	तें ४	ऽ
×				२							
प	प	प	नि	ध	नि	सां	ध	प	म	ग	ग
म	धु	र०	श	ऽ	द्ध	कि०	ये	ऽ	वि	ह	ग
×				२				३		४	
म	ग	री	ग	म	प	म	ग	म	री	सा	-
द्रु	म	ऽ०	बे	ऽ	लि	झू०	ऽ	म ३	र	हे ४	ऽ
×				२							

सा सा	प प	निध नि	सां नि	ध प	म ग		
दि न	म णि	की S	जै S	जै S	क रि		
×	०	२	०	३	४		

आभोग

प प	नि ध	नि –	सां सां	– सां	सां सां		
स र	स न	मों S	खि ले	S क	म ल		
×	०	२	०	३	४		
सां रीं	गं रीं	– सां	सां नि	ध प	म ग		
च हूँ	S ओ	S र	भ यो	वि का	S स		
×	०	२	०	३	४		
म ग	री सा	री सा	ग प	ध नि	सां –		
स ज	सिं गा	S र	सृ S	ष्टि भ	ई S		
×	०	२	०	३	४		
सां –	रीं गं	रीं सां	सां नि	ध प	ध मे;		
मा S	नो जै	S सि	न ई	दु ल	हि न,		
×	०	२	०	३	४		

राग यमनीबिलावल - तराना - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: दिर् दिर् तदोरे तन तदोरे दीम् तदोरे दानि
दीम् दीम् तनोम् द्रियानोरे नादिर् दिर् तन
तुम् दिर् दिर् तोम् तारे दानी ।

अंतरा: दिर् दिर् तान्न द्रे तान्न द्रे तान्न द्रे दीम् तदीम् दीम् तदीम्,
धा किटतक धुम किटतक किडनग धित्ता,
तक्डान् धा तक्डान् धा तक्डान् धा, तारे दानी ॥

स्थायी

						नि सा	
						दिर् दिर्	
रीं ग री सा	नि, सा सा री	ग – –, ग	गं ग री ग ग,				
त दा रे त	न, त दा रे	दीम् S S, त	दा रे दा नि,				
×	३	×	२				
गं म ध, प	पं प म ग,	गं म ग री सा,	नि सा रीं ग				
दी S म् दी	म् त नो म्,	द्रि या ना रे,	ना दिर् दिर् त				
०	३	×	२				

प म प ध नि	सां – – –	सांरीं सांनि धप मग	रीसा निसा ; नि सा
न तुं दिर दिर	तोम् ऽ ऽ ऽ	ताऽ ऽऽ रेऽ दाऽ	नीऽ ऽऽ ; दिर दिर
०	३	×	२
री ग री सा	नि		
त दा रे त	न ... इत्यादि		
०	३		

अंतरा

			सां सां
			दिर दिर
नि ध नि सां	–, सां – रीं	सां –, निं सां	रीं गं रीं सां
ता ऽ न्न द्रे	ऽ, ता ऽ न्न	द्रे ऽ, ता ऽ	ऽ ऽ न्न द्रे
०	३	×	२
–, नि ध नि	सां नि धप	प म प, ग म	ग री ग री
ऽ, दी म् त	दी ऽ ऽऽ	ऽ म्, दी ऽ	ऽ ऽ म् त
०	३	×	२
सा –, सा म	ग, प निध नि,	सां सां रीं सां,	गं रीं सां, रीं
दी म्, धा किट	तक, धुम किट तक,	किऽ नग धित्ता,	त कऽान् धा, त
०	३	×	२
सां सां, ध नि	सां – – –,	सांरीं सांनि धप मग	रीसा निसा ; नि सा
कऽान् धा, त कऽान्	धा ऽ ऽ ऽ,	ताऽ ऽऽ रेऽ दाऽ	नीऽ ऽऽ ; दिर दिर
०	३	×	२
री ग री, सा	नि, सा सा री	ग	
त दा रे, त	न, त दा रे	दीम् ... इत्यादि स्थायी के अनुसार	
०	३	×	

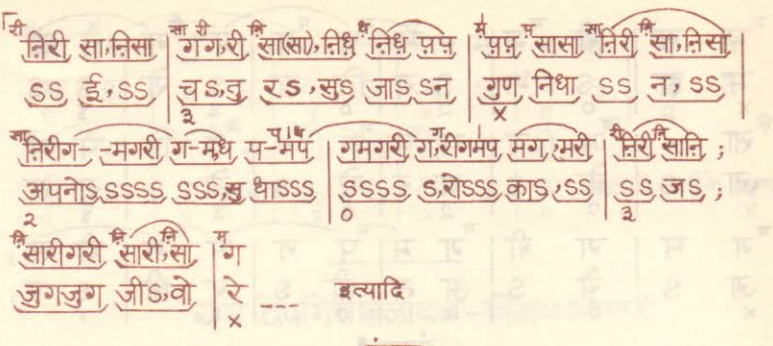
राग यमनीबिलावल – तिलवाडा (विलंबित)

स्थायीः जुग जुग जीवो रे मोरे गुरुराई,
चतुर सुजान गुण निधान, अपनो सुधारो काज।

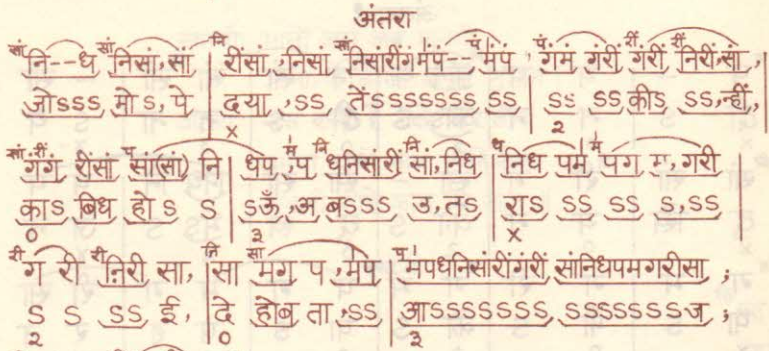
अंतराः जो मोपे दया तें कीन्हीं, का बिध होऊँ अब उतराई,
देहो बता आज ॥

स्थायी

सारीगरी	सारी,सा	ग--म	ग,गमपध	प,मपं	गम गरीं	गं,पप	मग मरी
जुगजुग	जीऽ,वो	रेऽऽऽ	ऽ,मोऽऽऽ	रे,ऽऽ	ऽऽ ऽऽ	ऽ,गुरु	राऽ ऽऽ
		×			२		०



अंतरा



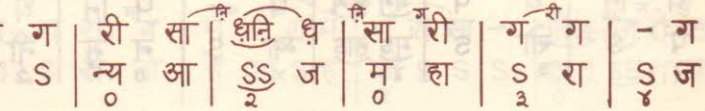
राग देवगिरी बिलावल - एकताल (मध्यलय)

स्थायी : धन्य आज महाराज, महाभाग तिहारो,
जाके घर ऐसो सुत जाये अत वीर धीर।

अंतरा-१ : दीनन को दीन-नाथ, दुखियन को दुःख-भंजन,
पापी को पाप हरन, देवन में देव एक,
देवता मनाये ॥

अंतरा-२ : जाके तप त्रिभुवन में ग्यान-ज्योत झलक उठी,
ऐसो महाग्यान-गुनी, महामुनि, जाये अत वीर धीर ॥

स्थायी



ग म ग | री ग | - म | ग प | प ग | म री | ग री | सो
म हा | ऽ भा | ऽ ग | ति हा | ऽ रो | ऽ ऽ
× ० २ ३ ४
नि सा - | सा म | ग प | प प | ग - | ध नि | प प
जा ऽ | के ऽ | घ र | ऐ ऽ | सो ऽ | सु त
× ० २ ३ ४
प ग म | ग री | ग म | ग प | म ग | री ग | री सा ;
जा ऽ | ये ऽ | अ त | वी ऽ | र धी | ऽ र ;
× ० २ ३ ४

अंतरा-१

ग प - | प प | धनि ध | नि सां | सां सां | - सां
दी ऽ | न न | कोऽ ऽ | दी ऽ | न ना | ऽ थ
× ० २ ३ ४
नि सां सां | रीं गं | सां - | सां सां | निध नि | प प
दु खि | य न | को ऽ | दु ख | भुंऽ ऽ | ज न
× ० २ ३ ४
ग म ग | री ग | म ग | प ग | म ग | री सा
पा ऽ | पी ऽ | को ऽ | पा ऽ | प ह | र न
× ० २ ३ ४
नि सा - | म ग | प - | नि ध | नि प | - प
दे ऽ | व न | में ऽ | दे ऽ | व ए | ऽ क
× ० २ ३ ४
प ग - | री ग | - प | रीं - | - सा | - - ;
दे ऽ | व ता | ऽ म | ना ऽ | ऽ ये | ऽ ऽ ;
× ० २ ३ ४

अंतरा-२

ग प - | प - | ध नि ध | नि सां | सां सां | सां -
जा ऽ | के ऽ | त प | त्रि भु | व न | में ऽ
० २ ४ × २
नि सां - | सां रीं | - गं | सां सां | निध नि | ध प -
म्या ऽ | न ज्यो | ऽ त | झ ल | कुऽ उ | ठी ऽ
० ३ ४ × ० २
मं ध नि | ध प | मग रीग | ग प - | प नि | ध नि
दे ० ऽ | सो ऽ | मऽ हाऽ | म्या ऽ | न गु | नी ऽ
३ ४ × ० २

सां	धं	नि ध	प –	पं ग म	ग री	मं ग	मं
म हा	ऽ मु	नी ऽ	जा ऽ	ये ऽ	अ	त	
०	३	४	×	०	२		
गं प	पं ग	मं री	ग री सा;	गं री	ग री		
वी ऽ	र धी	ऽ र;	ध ऽ	न्य			
०	३	४	×	०			

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग देवगिरीबिलावल – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: मानो ज़रा अब माननी
मानो, न कीजो इतनो गुमान।
अंतरा: रास रच्यो है नीको नीर तीर
जमुना चलो अब छाँड़ि रीस
अनारी, तोहे कान्ह की आन ॥

स्थायी

							सां
							मा
निं धनि-धं सां	– रीं	ग	– –, मं ग	मं प ग मं	ग रीं सां,	सां	
ऽऽऽऽ नो ऽ ज़	रा ऽ ऽ, अ	ब मा ऽ न	नी ऽ ऽ, मा				
३		×		२		०	
सांं नि ध –, प	गं मं ग ग, म	मं प पं ग – मं	गं रीं सां; सां				
ऽ नो ऽ, न	कीऽ ऽजो, इ	त नो ऽ गु	मा ऽ न; मा				
३	×	२	०				

अंतरा

							गं प
							रा
– धं नि धं नि	सां – सां, सां	रीं सां – निंधं	नि धंपं पं, गं प				
ऽ स ऽ र	च्यो ऽ है, नी	को नी ऽ रऽ	ती ऽऽ र, ज				
३	×	२	०				
प पं ग – म	ग रीं सां सां,	सां म ग प	– पंनिं धं नि, पं				
मु ना ऽ च	लो ऽ अ ब,	छाँ ऽ ड़ि री	ऽ सऽ ऽ, अ				
३	×	२	०				
म ग रीं, मं ग	मं प पं ग मं	गं रीं सां –,	निंसां रींगं रीं, सां				
ना ऽ री, तो	हे का ऽन्ह	की ऽ ऽ ऽ,	आऽ ऽऽ न, मा				
३	×	२	०				

राग देवगिरी बिलावल-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : नेकहु लाज ना आवे तोरे,
ऐसो ढीट लंगराई कन्हाई।
अंतरा : निडर निडर निडराई कान्हरो,
बर्जो नहिं मानत, बार-बार बार-बार,
नित करै ठठोरी का कहियो जाय॥

स्थायी

ग रे रे ग रे सा –,	सां नि ध ध नि प	–, प गं रीं गं	नि सांसां धप मग, म गं
S क हु S,	ला S ज ना	S, आ S वे	तोS SS रेS, ने
ग रे रे ग रे सा –,	नि ध ध नि प	–, प गं रीं गं	सांसां धप मग रीग,
S क हु S,	ला S ज ना	S, आ S वे	तोS SS SS रेS,
ग म ग री, म ग	– म, म प म	ग री ग, ग म	री ग री सा ; सा ग
ऐ S सो, ढी	S ट, लं ग	रा S ई, क	न्हा S ई ; ने

अंतरा

ग म ग प, ग प	ध नि ध, सां नि नि	सां – सां, सां नि	– रीं सां –
नि ड र, नि	ड र, नि ड	रा S ई, का	S न्ह रो S
नि सां रीं गं रीं	नि सां – सां सां,	सां ध नि ध, सां नि	– रीं, सां नि
ब र्जो न हिं	मा S न त,	बा S र, बा	S र, बा S
ध, प म ग,	नि सा सा ग री ग	–, ग म ग गे,	सां गं रीं सांनि ध
र, बा S र,	नि त क रै	S, ठ ठो री,	का S कS हि
प म ग ; म ग	ग री रे ग रे सा –		
यो जा य् ; ने	S क हु S	---इत्यादि स्थायी के अनुसार	

राग देवगिरी बिलावल - तराना-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: दिर् दिर् तनन, दिर् तनन दीम् दीम् दीम् तदीम्,
तनन दिर् दिर् तोम्, दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दानि,
तार्दानि तोम् तननन।

अंतरा: यलालि यलालि यलि यला याल्लल ल, थित्लांग तक
दिर् दिर्, थित्लांग तक दिर् दिर्, धा किटतक पुनकिटतक
किडनग थित्ता, वडान् तक धा, वडान् तक धा॥

स्थायी

नि सा सा ग रीं ग	रीं, नि सा ग रीं ग	रीं, नि सा – ध़ नि	ध़ नि सा – ग रीं
दिर् दिर् त न	न्, दिर् त न	न्, दी म् दी	म् दी म् त
×	२	०	३
ग, नि सा ग रीं ग	रीं, नि सा ग रीं ग	रीं, नि सा – ध़ नि	ध़ नि सा – ग रीं
दीम्, दिर् त न	न्, दिर् त न	न्, दी म् दी	म् दी म् त
×	२	०	३
ग – –, म	ग रीं, ग म	ग प –, ग म	ग रीं नि सा रीं
दी ऽ म्, त	न न, दिर् दिर्	तो म्, दिर् दिर्	दिर् दिर् दिर् दिर्
×	२	०	३
नि सा सा, नि ध़ नि	ध़ नि सा सा,	सा प ग –, ग प	ग रीं सा सा;
दा नि, ता ऽ	ऽ दी ऽ नि,	तो ऽ म्, त	न न न न,
×	२	०	३

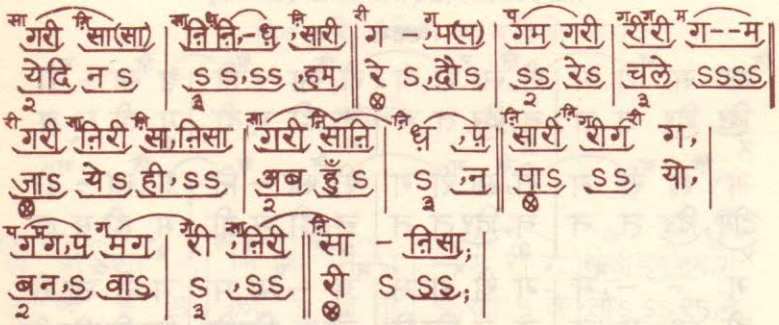
अंतरा

सा म ग म ग, प	प प, नि ध	नि सां सां –, सां	– रीं सां सां,
य ल लि, य	ल लि, य लि	य ला ऽ, या	ऽ ल्ल ल ल,
×	२	०	३
गं रीं गं – रीं	नि सां सां, नि ध प	म ग रीं सा,	नि सा म ग, ग प
धि त्लां ग् तक्	दिर् दिर्, धित्लां	ग् तक् दिर् दिर्,	धा किट तक्, धुम्
×	२	०	३
नि ध, सां नि	रीं सां –, गं रीं	गं रीं सां –	–, गं रीं ग रीं
किट तक्, किड नग	धि त्ता ऽ, वडा	न् तक् धा ऽ	ऽ, वडा न् तक्
×	२	०	३
नि सा; नि सा ग रीं ग	रीं, नि सा ग रीं ग	रीं	
धा; दिर् त न	न्, दिर् त न	न्	---इत्यादि स्थायी के अनुसार
×	२	०	

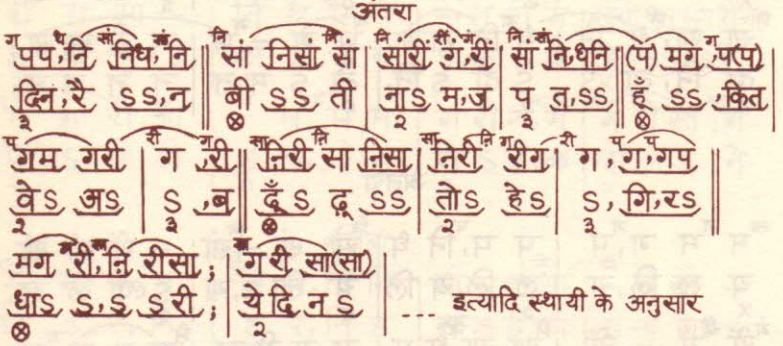
राग देवगिरी बिलावल - रूपक (विलंबित)

स्थायी: ये दिन हमरे दौरे चले जाये ही,
अबहुँ न पायो बनवारी।
अंतरा: दिन रैन बीती नाम जपत हूँ,
कितवे अब दूँदू तोहे गिरधारी॥

स्थायी



अंतरा



राग शुक्ल बिलावल - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: जय जय मंगल गाऊँ शुभ जस
दरसन लैहों अत सुख पाऊँ।
अंतरा: तुम्हरे शरन हरि शरन जाऊँ अब
सकल जगत को सार्थक पाऊँ॥

स्थायी

ग म ग री सा	सा – ग री ग	म – म –	म प म ग
ज य ज य	मं स ग ल	गा स ऊँ स	शु भ ज स
०	३	×	२
ग म री प म	प – नि म प	सां ध नि सां ध	नि ग म प मग;
द र स न	लै स हों स	अ त सु ख	ऽऽ पा स ऊँऽ;
०	३	×	२

अंतरा

ग प प नि ध नि	सां सां सां सां	सां गं रीं गं मं	गं रीं सां सां
तु म्ह रे च	र न ह रि	श रऽ न जा	स ऊँ अ ब
०	३	×	२
नि सां ध नि ध प	प म ग री सा	सा म ग प म प	नि ध नि ग म प मग;
स क ल ज	ग त को स	सा स र थ	कुऽ पा स ऊँऽ;
०	३	×	२

राग कुकुभ बिलावल - झपताल (मध्यलय)

स्थायी : जस रहे नाम, रहे राम ध्यान,
रहे या पृथ्वी में सतत गुणगान रहे।

अंतरा : तिहु लोक को प्राण, जग वन्दन जग जान,
पतित उद्धारन बिनती करे 'सुजान',
अब कृपा दृष्टि रहे॥

स्थायी

ग री	ग सा –	ग री ग	म –, म	म प	प – ध	म ग	म म म
ज स	र हे स	ना स	म स, र	हे स	रा स म	ध्या स	न र हे
×	२	०	३	×	२	०	३
म प	प सां सां	ध नि	प – –	नि ध	ध म म	ग री	ग सा सा;
या स	पृ स थि	वी स	में ऽऽ	स त	त गु न	गा स	न र हे;
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा

प प	नि – नि	सां –	सां – सां	सां सां	रीं सां सां	सां सां	ध नि प
ति हु	लो स क	को स	प्रा स ण	ज ग	व न्द न	ज ग	जा स न
×	२	०	३	×	२	०	३
नि ध	प – ध	म –	ग री ग म	म प	नि सां, गं	रीं गं	(सां) धनि प
प ति	त स उ	धा स	र स न	बि न	ती स, क	रे सु	जा ऽऽ न
×	२	०	३	×	२	०	३

सां ध	नि॒ प ध	मे -	गरी॒ ग म; ‖
अ ब	कु पा स	द्द स	ष्टि॒ऽ र हे; ‖
×	२	०	३

राग कुकुभ बिलावल - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः 'सुजन' सुन साची सीख गुरुनकी,
इक बिन करन कछु गुन नहीं आवे।
अंतराः अपंपार नाद-भेद अत कठिन साधन,
गुनियन की संगत नित किये सो
गावे ध्यावे गुन पावे॥

स्थायी

				ग॒म
				सु
ग॒रीग॒नि॒सा सा	साग॒रीग॒ म॒,म॒	- प॒,नि॒ ध	प॒ म॒रीग॒,म॒	
ज न सु न	सा स चि,सी	स ख, गु रु	न की स,इ	
३	×	२	०	
प॒ नि॒ ध प	म॒ ग॒रीसा सा,	सा नि॒ सा ग॒री ग	प॒ म॒ प ध॒; ग॒म	
क बि न क	र न क छु,	गु न न हीं	आ स वे; सु	
३	×	२	०	

अंतरा

				प॒नि॒
				अ
ध प - प	नि॒ ध॒ नि॒ सां	- रीं, नि॒ सां सां	ध॒ प ध॒ म॒,ग॒	
प्रं पा स र	ना स द मै	स द, अ त	क ठि न,सा	
३	×	२	०	
ग॒री ग॒रीसा सा,	नि॒ सा सा ग॒री ग॒	म - -, सा	नि॒ ग॒री ग म प	
स स ध न,	गु नि य न	की स स, सं	ग त नि त	
३	×	२	०	
प॒ नि॒ ध प सां॒ नि॒	ध॒, नि॒ सां (सां) सां॒ ध॒	नि॒ ध॒, प म	ग॒री ग॒ म॒; ग॒म॒	
कि ये स सों	स, गा वे ध्या	स वे, गु न	पा स वे; सु	
३	×	२	०	
ग॒री ग॒नि॒सा सा				
ज न सु न	--- इत्यादि स्थायी के अनुसार			
३				

राग कुकुभ बिलावल - एकताल (विलंबित)

स्थायी : बनरा बनी आयो बनरी को ब्याहन,
मन-भावन अत ही प्यारा रसमाता ।
अंतरा : गावो रिझावो सबै मिल मंगल आज
शुभ दिन शुभ घरी शुभ महूरत,
न्यारो रसमाता ॥

स्थायी

ग पम / बन	गरी, ग सो / रा ऽ, ऽ ऽ	निसा, गरी ग / ऽ ऽ, बनी	म, ग री ग, म ग मे / आ, ऽ ऽ, ऽ यो
ग, म, प मप / ऽ ऽ, ब, न ऽ, / ऽ, को	नि धप / री ऽ,	ध पध(मे) - , ग री ग / ब्या ऽ, ऽ,	ऽ, ऽ ऽ
म ग म, गम / ह न, ऽ ऽ	ग म, मग प / म, न ऽ, भा	ग पपधनिसां - , सां ध - , नि प / ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, ध ऽ, ऽ, न	
प निध प, - ध / अत ही, ऽ ऽ	(म) ग री ग / प्या , ऽ ऽ	म सा निसा / रा , रस	रीग प, म / माऽ, ता
ग प, ग पम / ऽ , बन	रा.. इत्यादि		

अंतरा

नि सांरींगं (सां), नि सां / गा ऽ ऽ वो, रि	नि ध निसां, नि रीं / झा ऽ वो, स	सां नि, सांसां / बै , मिल	नि सांरींगंमे, गंरीं गं (सां), निसां / मं ऽ ऽ ऽ, गऽ ऽ ल, ऽ ऽ
नि सांरीं सां, निसां, / आऽ ज, ऽ ऽ,	प निधपम, - म गरीग / शुभदिन ऽ, शुभ घ	(सा) नि, सा / री , शु	म प गमपनि धपम - / भ, महूर त ऽ ऽ ऽ
रीं गंग, म , गम / ऽ ऽ, ऽ , ऽ ऽ	ग पपधनिसांरीं - - नि सांसांधपमगंगम / न्याऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, रोऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	- सा, निसा ग रीगमप / ऽ, रस, माऽ ताऽ	
धमे , गंग / ऽ ऽ , ऽ ऽ	म ग, पम / ऽ , बन	गरी, ग सो, निसा, गरी ग / राऽ, ऽ ऽ, ऽ ऽ, बनी	... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग कुकुभ-स्तोत्र

(सरस्वती-वन्दना)

टीप: राग छायानट के अंतर्गत पृष्ठ ४८ पर यह रचना आ चुकी है। अतएव इस रचना के शब्दों को पुनः दोहराया नहीं है। केवल राग-स्वरूपानुसार इसके स्वरकरण में अंतर पाया जायेगा। जिस स्थान पर '⌒' यह चिन्ह है, वहाँ पर आवाज़ को मुलायम करना चाहिये।

नि़ सा नि़ सा पे प | ध प ध नि़ ध | प म ग री | – – – –,
न मो ऽ न | मो ऽ ऽ ऽ | ज य श्री ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ,

रे प म ग री | सा – –, सा री | सा नि़ ध़ प़ | – – – –,
स र ऽ स्व | ती ऽ ऽ, द | या ऽ नी ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ,

ध़ प़ – सा ध़ सा | – – – –, ग री ग म ग | री – – –
वि ऽ द्या ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ, | दा ऽ ऽ ऽ | नी ऽ ऽ ऽ

– – – –, सा प़ सा ध़ सा सा | ग री रीपु म ग | री सा सा नि़ सा
ऽ ऽ ऽ ऽ, | कृ पा ऽ क | र नीऽ दु ख | ह र नी ऽ

ग री ग म प | – – – –, नि़ ध नि़ ध प | सां ध सां सां –
ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ, | प ति त उ | द्ध र नी ऽ

– – – –, नि़ सांरीं गं रीं सां नि़ | रीं सां, सां ध नि़ | ध प – प,
ऽ ऽ ऽ ऽ, | जैऽ ऽ भ वा | ऽ नि, जै ऽ | शि वा ऽ नि,

म ग म ग री | सा – ग री – | – – सा – | – – – –;
जै ऽ जै ऽ | जे ऽ दे ऽ | ऽ ऽ वी ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ;

-2-

प रीं – रीं,रीं | गं रीं – गं रीं गं, | गं रीं सां सां,सां | नि़ ध प –,
ना ऽ द,नि | ना ऽ द त, | गा ऽ ये,ब | जा ऽ ये ऽ,

ग री ग म प | नि़ ध नि़ ध,प | सां ध सां सां – | – – – –,
ना ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ म,ति | हा ऽ रो ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ,

नि़ सा – री री | ग री ग री ग | प म – प म प | – प पे –,
नृ ऽ त्य कि | ये ऽ अति | भ ऽ क्ति भा | ऽ व सो ऽ,

सा ध – ध नि ध | – ध ध ध | पुध निसां सां,नि सां | सां ध नि ध प,
रा ऽ ग ता | ऽ ल र स | रंऽ ऽऽ ग,र | सी ऽ ले ऽ,

प गं गं गं,रीं गं | – मं गं रीं, | नि सां – रीं,रीं | सां नि ध प,
श्र व न,ने | ऽ त्र पु नि, | चि ऽ त्त,मि | ला ऽ ये ऽ,

नि ध नि ध प | म ग री –, | म ग प प,प | नि ध नि ध नि सां
त व च र | न न तें ऽ, | ध्या ऽ न,ल | गा ऽ ये ऽ

– – – –, | नि सांरीं गं रीं सां | – सां, सां ध नि | ध प – प,
ऽ ऽ ऽ ऽ, | जैऽ ऽ भ वा | ऽ नि, जै ऽ | शि वा ऽ नि,

म ग म ग री | नि सा – ग री – | – – सां – | – – – – ;
जै ऽ जै ऽ | जै ऽ दे ऽ | ऽ ऽ वी ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ;

-२-

सा प प प प | प –,म प – | पुध नि ध प | म ग री री,
भ र त मु | नि ऽ,निः ऽ | शंऽ क अ | हो ऽ ब ल,

ग री प प म | ग री, नि सा सा | ग री ग री, म ग | प म प – –,
ता ऽ न से | ऽ न, अ ति | च तु र, गु | नी ऽ ऽ ऽ,

सां ध – रीं सां | नि ध प प | ध प ध प म | ग री – –,
श्या ऽ न ध्या | ऽ न गु न | मा ऽ न ब | ली ऽ ऽ ऽ,

ग म ग री सा | ग री ग म प | ध प – सं ध सां | सां – गं रीं गं
स ब से ऽ | व क ग न | या ऽ ते ऽ | हु ऽ फ ल

रीं सां सां – | – – –, नि सां | – रीं, नि सां नि | ध, म प – ध,
पा ऽ वे ऽ | ऽ ऽ ऽ, चि | ऽ त्त, शु ऽ | द्धि, बु ऽ द्धि,

म प म ग, ग री | प ग प सां ध सां | – – – –, | नि सांरीं गं रीं नि सां
मु ऽ क्ति, जी | व न में ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ, | जैऽ ऽ भ वा

रीं सां, सां ध नि | ध प ध प, | म ग म ग री | नि सा – ग री –
ऽ नि, जै ऽ | शि वा ऽ नि, | जै ऽ जै ऽ | जै ऽ दे ऽ

– – सा – | – – – – ;
ऽ ऽ वी ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ ;

-४-

सा नि़ नि़ नि़, सा नि़ | – नि़, सा नि़ – | सा – सा, नि़ सा | – सा सा –,
भ र त, भू | ऽ मि, सं ऽ | गी ऽ त, सु | ऽन्द री ऽ,

नि़ सा प प, म | ग री नि़ सा सा, | सा – री री | री –, ग री –
गी ऽ त, वा | ऽ द्य अ रु, | नृ ऽ त्य स | जे ऽ, सिं ऽ

ग री ग म प | प –, ग प प | नि़ ध नि सां रीं | रीं –, सां सां
गा ऽ र कि | ये ऽ, उ प | हा ऽ र लि | ये ऽ, त व

सां ध नि़ ध, प | सां ध सां – – | – – –, नि़ सां | सां नि ध, म प
द्वा ऽ र, ख | ड़ी ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ, प्र | सी ऽ द, प्र

नि़ ध नि़ ध, म प | म ग री, नि़ सा | – सा, सा नि़ सा | ग री ग म प
सी ऽ द, प्र | सी ऽ द, मा | ऽ त, य ही | बि न ति क

नि़ ध नि़, ध प | सां ध रीं रीं, नि़ सां | – सां, सां ध प | सां ध सां सां –
र त, क र | जो ऽ र, जो | ऽ र, सु नि | लै ऽ हो ऽ

– – – – | – –, सां ध प | सां ध गं गं – | – – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ, सु नि | लै ऽ हो ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

– –, सां ध प | नि ध नि सां – | – – – –, नि़ सारीं गं रीं नि़ सां
ऽ ऽ, सु नि | लै ऽ हो ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ, जै ऽ ऽ भ वा

रीं सां, सां ध नि़ | ध प ध प, | ग म ग री | सा सा, ग री –
ऽ नि, जै ऽ | शि वा ऽ नि, | जै ऽ जै ऽ | जै ऽ, दे ऽ

– – सा – | – – – – ||
ऽ ऽ वी ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ ||

राग बिहाग - सरगम - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

प म ग (सा) | – , ग म प | नि – , सां नि | प ग – मे
0 | 3 | × | 2

ग –, ग म | नि ध प ग | –, म प ध | म ग रे सा,
0 | 3 | × | 2

प़ नि़ सा ग | –, गं – रें | सां नि ध प | म ग रे सा;
0 | 3 | × | 2

अंतरा

प ग म प | नि सां रें सां | नि – –, नि | सां – – –,
0 | 3 | × | 2

प नि सां गं | – रें सां नि | प म ग – म | ग –, नि़ सा
0 | 3 | × | 2

ग म प नि | सां गं –, ग | –, म प ध | म ग रे सा;
0 | 3 | × | 2

राग बिहाग - लक्षणगीत - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः रि-ध तजत अनुलोम बिराजत
विलुम सम्पूरन कर गावत
शुद्ध सुरन को मेल मिलावत।

अंतराः राग-नाम बिहग अति सुन्दर
ग-नि संवाद प्रथम निस राजत
तान-अलाप-मींड़ नीकी लागत
कबहुँ तीवर मध्यम दिखलावत ॥

स्थायी

; सां नि ध | प म ग म | प – ग, (म) | ग – री सा सा
; रि ध त | ज त अ नु | लो ऽ म, बि | रा ऽऽ ज त
0 | 3 | × | 2

–, प़ नि़ नि़ | सा – सा – | प प ग म | ग – री सा सा
ऽ, वि लु म | स ऽ म्पू ऽ | र न क र | गा ऽऽ व त
0 | 3 | × | 2

नि़ सा – ग म | प प नि – | सां गंगं सां नि | (प) – म री ग
शु ऽ द्ध सु | र न को ऽ | मे ऽऽ ल मि | ला ऽ व त
0 | 3 | × | 2

अंतरा

; म प – प | सां नि – नि, सां | सां सां सां सां | नि सां रीं सां सां
; रा ऽ ग | ना ऽ म, बि | ह ग अ ति | सु ऽ न्द र
0 3 x 2

नि सां सां मं गं मं | गं -रीं सां, सां | नि ध प, सां नि सां | नि -ध प पे
ग नि सं ऽ | वा ऽऽ द, प्र | थ म, नि स | रा ऽऽ ज त
0 3 x 2

म गम पनि सां, नि | ध पे म ग म, प नि | -ध प, प ग म | ग -री सा सा
ला ऽऽ न, अ | ला ऽ प, मीं | ऽऽ ड़, नी को | ला ऽऽ ग त
0 3 x 2

नि़ प़ प़ सा नि़ सा, नि़ | सा सा, म ग म | ग प प़मु ग म | ग -री सा सा
क ब हुँ, ती | व र, म ऽ | ध्य मु दि ख | ला ऽऽ व त
0 3 x 2

राग बिहाग – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: मुकुट माथे गरे बैजयंती
करन कुण्डल मकराकृत सोहे
कट सोहे पीताम्बर नीको।

अंतरा: नैन विशाल रसीले लोने
बरन घन नील, ठाड़ो त्रिभंगी
मुरली अधर धरि, मोहनी मूरत पै
वारि गयो मन ब्रिज-ग्वारनी को॥

स्थायी

म
मु
प ग म प सां | नि -ध प, ग | म ग प म ग म | ग -री सा, सा नि़
कु ट मा ऽ | थे ऽऽ ऽ, ग | रे बै ऽ ज | यं ऽऽ ति, क
३ x २ ०

नि़ ध प़ सा नि़ सा | सा सा, म ग म | ग प – म ग म | ग -री सा, म ग
र न कु ऽ | ण्ड ल, म क | रा ऽ कृ त | सो ऽऽ हे, क
३ x २ ०

म प नि नि | सां गं रीं सां नि | ध प़मु ग म | ग -री सा; म प
ट सो ऽ हे | पी ऽ ता ऽ | ऽ ऽऽम्ब र | नी ऽऽ को; मु
३ x २ ०

अंतरा

म प
नै
प नि
– सां – सां | नि सां – सां, सां | सां – सां, नि सां | रीं सां – , नि सां
स न स वि | शा स ल, र | सी स ले, लो | स ने स, ब
३ × २ ०
मं रीं
गं मं गं सां | नि धप प, निसां | रीं सां – नि | प ग म, प
र न घ न | नी ऽऽ ल, ठाऽ | स ड़ो स त्रि | भं स गी, मु
३ × २ ०
प ग री नि सां
ध गे –, मं | ग ग सा नि़ | नि प़ प़ नि़, नि़ | सा म ग री ग,
र ली स, अ | ध र ध रि | मो ह नी, मू | र त पै स,
३ × २ ०
सां सां नि
म ग म प नि | सां रीं सां, नि | ध पमं ग म | ग –री सा; म प
वा स रि ग | यो म न, ब्रि | ज खाऽ स र | नी ऽऽ को; मु
३ × २ ०
प
ग म प सां | नि –ध प
कु ट मा स | थै ऽऽ स --- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३ ×

राग बिहाग - त्रिताल (मध्यलय)

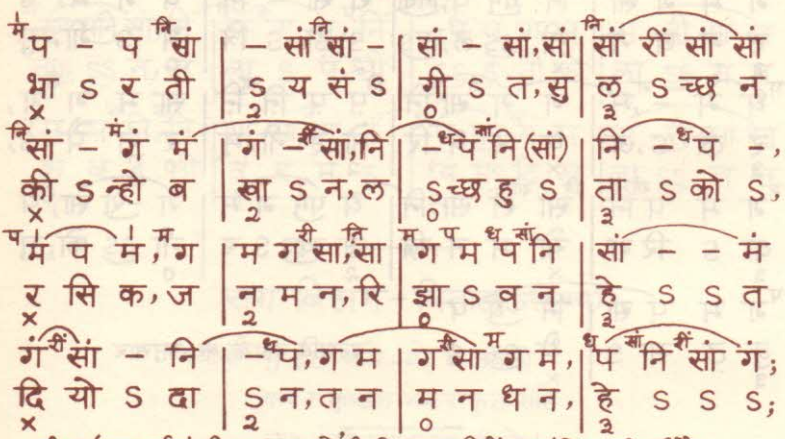
स्थायीः नमो नमो श्री चतुर चरण नित
भरतखण्ड विप्र-वंश उज्वल कीन्हो
नारायणांश विष्णु सु-नाम, धन्य धन्य धन्य है।
अंतराः भारतीय संगीत सुलच्छन, कीन्हो बखान लच्छहु ताको
रसिक जन-मन रिझावन हेत, दियो दान तन-मन-धन है॥

स्थायी

नि सां नि ध प, ग म | ग – री सो –, | सा नि़ ध प़ नि़ नि़ सा | म ग म प नि
न मो स, न | मो स श्री स, | च तु र च | र ण नि त
× २ ० ३
प
मं प मं गं | म ग, म ग – | म प म ग म | ग – री सा सा
भ र त ख | ऽ ण्ड, वि स | प्र वं स श | उ ऽज्व ल
× २ ० ३



अंतरा



टीपः 'गुरुवर्य पं. बि. ना. भातखण्डे' जी की पुण्यस्मृति में यह बंदिश रची गई है।

राग बिहाग – झपताल (मध्यलय)

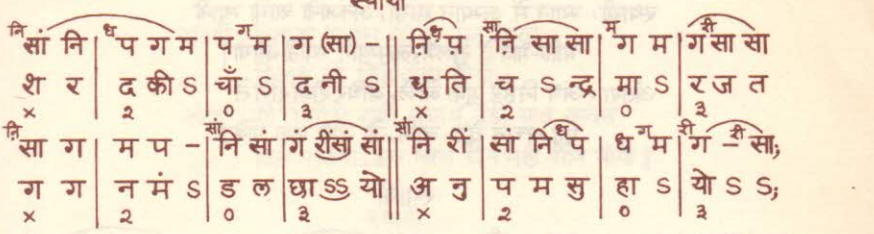
स्थायीः शरद की चाँदनी द्युति चन्द्रमा रजत
गगन-मण्डल छायो अनुपम सुहायो।

अंतराः मंद शीत समीर बहत अत सुखदायी
रैन रानी सुगंध अति ही मन हरखायो॥

संचारीः मकरंद रस पान पुहूपन की ओट
करत मधुकर परम सुख-चैन पायो॥

आभोगः देखि लीला सुंदर सृष्टि-देवी चरन
लीन भयो, 'सुजन' जियरा हुलसायो॥

स्थायी



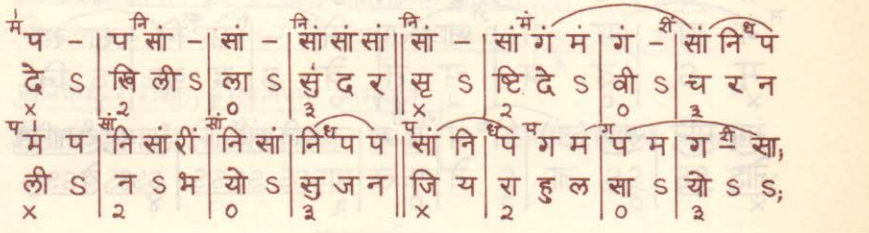
अंतरा



संचारी



आभोग



राग बिहाग - एकताल (मध्यलय)

स्थायी : ग्यान में अग्यान छायो, अनजानो साचो ग्यानी
भक्ति-भाव तें सुलभ, ब्रह्मग्यान ग्यानी खोयो।
अंतरा : अंध निहरे मूक बोले, बधिर रीझे राग तें
मूढ़ बचन वेद-बानि, जो जाने फल पावे॥

स्थायी

ग नि ध नि	(प) ग म	री ग म ग	पमु धुगे	(म) ग	रीसा सा		
ग्या S	न में	S अ	ग्याऽ SS	न छा	SS यो		
×	०	२	०	३	४		
सा नि़ ध प़	सा नि़ सा	सा –	सा प मुगे	(म) ग	रीसा सा		
अ न	जा S	नो S	सा SS	चो ग्या	SS नि		
×	०	२	०	३	४		
सा नि़ सा	ग म	प प	सां नि सां	– निसां	सां सां		
भ ग	ति भा	S व	तें S	S सु	ल भ		
×	०	२	०	३	४		
सां नि रींसां	नि (प)	मग म	पनि सांरीं	सांनि धप	मग रीसा;		
ब्र SS	ह्म ग्या	SS न	ग्याऽ SS	निऽ खोऽ	SS योऽ;		
×	०	२	०	३	४		

अंतरा

म प –	प सां	सां सां	नि सां –	सां नि सां	रीं सां		
अं S	ध नि	ह रे	मू S	क बो	S ले		
×	०	२	०	३	४		
नि सां मं गं	मं गं	(सां) –	म प सां	नि ध प	ग म री ग		
ब्र धि	र री	झे S	रा S	ग तें	S S		
×	०	२	०	३	४		
म ग प	म ग	री सा सा	नि़ –	ध प़ सा नि़	सा सा		
मू S	ढ़ ब	च न	वे S	द बा	S नि		
×	०	२	०	३	४		
गम पनि	सांगं (सां)	नि ध पे	ग म री ग	गमपनि सांरींसांनि	धपमग रीसानिसा		
जोऽ SS	S S जा	S ने	फ ल	पाSSS SSSS	SSSS वेSSS		
×	०	२	०	३	४		

राग बिहाग-टप्पा-पंजाबी(विलंबित)

स्थायी: दिलदा प्यारा शोणाँ मन भांदा
मिलबे को चित-चाँदा मीयाँ।
अंतरा: मीठी मीठी गलाँ बालम,तेंड़ी याद आवत
दिन रतियाँ, इक छिन चैन नहीं आवे मीयाँ॥

स्थायी

म पप,धपम, गमपनि | निसांरींरींसांनिनि-,(प),मपध, मग-,पम,गरीसानिप,निसा |
दिल,दाऽऽ, ऽऽऽऽ | प्या ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, रा,ऽऽऽ, ऽऽऽशोऽ,ऽऽऽऽऽ,ऽऽ |
× ग

गम,ग-, म गम,पनिसांनि,निसां, रींरींसांनिनि,(प), मगंगं | मंगंरींसांनिधपप,
णाँऽ,ऽऽ, मन,भांऽऽऽऽ,ऽऽ, ऽऽऽऽऽ,दा, मिल, | बेऽकोऽऽऽऽऽ,
2 0

गमगग, गमपपमगरीसा, गमपनि | सांगं---,रींसांनि, धपमगरीसा--;
चितचाँऽ, दाऽऽऽऽऽऽऽ, मीऽऽऽ, | ऽऽऽऽऽयाँऽऽ, ऽऽऽऽऽऽऽ,
3

म पप,धपम, गमपनि |
दिल,दाऽऽ, ऽऽऽऽ, | --- इत्यादि

अंतरा

, म ,पप, निसांरींरींसांनिनिसां, ,निसांगंमंपं,मं | गंरींसां, पनिसांगंरींनिसां-, ,निनि
, ,मीठी, मीऽऽऽऽऽऽ, ,ठीऽऽऽऽ,ग | लाँऽ, बाऽऽऽऽऽऽ, ,लम्
× ग

3 (प) मे ग, ग मपम, | गरीसा, सा निधपसा,सा, गग,मग, म गम,म गमपपमगग- | म गमपनि
तें ऽ,ऽऽऽ, | ड़ीऽ, याऽद,आ, वत,दिन, रति,याँऽऽऽऽऽऽ, | इक छिन
2 0

निसांरींरींसांनिनि-, -नि,सांसां, ,निसा,गमपनिसांगं | मंपं---, मंगंरीं
चैऽऽऽऽऽऽ, ऽन,नहीं, ,आऽ,वेऽऽऽऽ, | ऽऽऽऽ, मीऽऽ,
3

सांनिधपमगरीसा; म ,पप,धपम, गमपनि |
याँऽऽऽऽऽऽ; ,दिल,दाऽऽ, ऽऽऽऽ, | --- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग बिहाग- होरी- धमार

स्थायी : नाचत ब्रिजराज किशोर
अतही धूमधाम सों होरी, होरी सखि।
अंतरा : झाँझ मृदंग संग बाँसुरी धुन बजै
सजै, साँवरे कृष्ण राधा गोरी सखि॥

स्थायी

					मग	मपनिसां	
					ना	चतब्रिज	
						३	
नि	–	–प	–	–ध	गम	गगसा	–
रा	ऽ	ऽज	ऽ	ऽकि	शो	ऽर	अतही
×				२	०		३
सानि़	–	प़,नि़	सा	–सा	मग	–म	पनिसांगं
धू	ऽ	म,धा	ऽ	ऽम	सों	ऽऽ	होऽरीऽ
×				२	०		३
सांनि	–	–प	–	–ध	गम	–;ग	मपनिसां
हो	ऽ	ऽरी	ऽ	ऽस	खी	ऽ;ना	चतब्रिज
×				२	०		३

अंतरा

मप	–	–पसां	–	–सां	निसां	–सां	निसांरींसां –
झाँ	ऽ	ऽझ	ऽ	ऽम्रि	दं	ऽग	सं ऽ ग ऽ
×				२	०		३
मंगं	–	मं गं	–	रींसां	निसां	सां सां	– निनिप –
बाँ	ऽ	सु री	ऽ	धु न	ब	जै ऽ	ऽ सजै ऽ
×				२	०		३
धग	–	म प नि		सां मं	गं	– रींसां	नि –प –
साँ	ऽ	व रे	ऽ	के ऽ	ष्ण	ऽऽ	रा ऽ धा ऽ
×				२	०		३
गनि	–	–प	–	–ध	गम	–;ग	मपनिसां
गो	ऽ	ऽरी	ऽ	ऽस	खी	ऽ;ना	चतब्रिज
×				२	०		३

राग शंकरा – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: दुर्गे! महिषासुर मर्दिनी, सिंघासिनी
जगदम्ब भवानी दयानी शिवानी
जोगिनी, जय जय जय।

अंतरा: अष्टहु भुजासों कीजो नष्ट पाप-ताप
सब भव दुःख-दंद हरो, चरन शरन
'सुजन' आयो, दीजो अभयदान, जय जय॥

स्थायी

			नि सांरीं सांनि
			मऽ हिऽ
गपप गरी सासा, पग	प नि ध सां	नि –, पग प	नि ध, निसांरीं सांनि
षाऽ ऽऽ ऽऽ, सु	र म र दि	नी ऽ, दु र	गे ऽ, मऽ हिऽ
०	३	×	२
गपप गरी सासा, पग	प नि ध सां	नि – –, निसां	गं (सां) – नि
षाऽ ऽऽ ऽऽ, सु	र म र दि	नी ऽ ऽ, सिं	ऽ घा ऽ सि
०	३	×	२
(प) – पग गप	रीग – रीसा, ग़प	ग़सा रीसा, गप	निसां रींसां, गंसां
नी ऽ ज ग	द ऽ म्ब, भ	वा ऽ नी, द	या ऽ नी, शि
०	३	×	२
(सां) नि (प), पग	प ग (सा) –,	पग प नि ध	निसां –; निसांरीं सांनि
वा ऽ नी, जो	ऽ गि नी ऽ,	जै ऽ जै ऽ	जै ऽ; मऽ हिऽ
०	३	×	२

अंतरा

			गप
			अ
पपसां – सां	निसां – सां –	निसां रीं सां –	निधप प, गप
ष्ट हु ऽ भु	जा ऽ सों ऽ	की ऽ जो ऽ	न ऽ ष्ट, अ
०	३	×	२
पपसां – सां	निसां – सां –	निसां गं (सां) –	– निधप प
ष्ट हु ऽ भु	जा ऽ सों ऽ	की ऽ जो ऽ	ऽ न ऽ ष्ट
०	३	×	२
पसां – सां (प)	– पग ग	पग गनि धप प	पग –री ग, गप
पा ऽ प ता	ऽ प स ब	भ व दु ख	दं ऽऽ द, ह
०	३	×	२

रीं सां
ग – रीं सो –, | सां प़ नि़ प़ नि़ सा, सा | प ग ग़ प प | सां प, नि सां सां
रो ऽ ऽ ऽ, | च र न, श | र न, सुज | न, आ ऽ त्यो
0 | 3 | × | 2
पं ग़ पं ग़ रींसां | नि ध़ सां नि | ध़ प प, नि ध़ | नि सां –; सांरींसांनि
दी ऽ जो ऽऽ | अ भि य दा | ऽ न, जै ऽ | जै ऽ, मऽ हिऽ
0 | 3 | × | 2
पंप गरी सांसा, प ग | प नि ध सां | नि
षाऽ ऽऽ ऽऽ, सु | र म र दि | नी ... इत्यादि स्थायी के अनुसार
0 | 3 | ×

राग शंकरा – त्रिताल (मध्यलय)

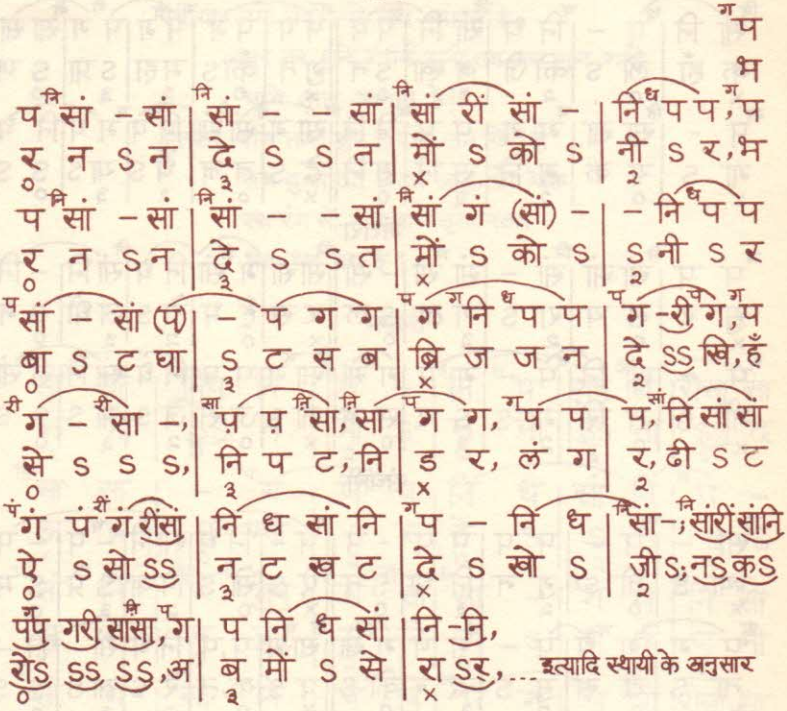
स्थायी: न करो अब मोंसे रार, झगरो,
कृष्ण कन्हाई कह देत, ठठोरी करो ना
ढिटाई साँवरे, देखो जी।

अंतरा: भरन न देत मोंको नीर, बाट-घाट
सब ब्रिज-जन देखि हँसे, निपट निडर
लंगर ढीट ऐसो नटखट, देखो जी॥

स्थायी

नि
सांरींसांनि
नऽ कऽ
ग प नि़ प
पंप गरी सांसा, ग | प नि ध सां | नि-नि़, ग प | नि ध़, नि सांरींसांनि
रोऽ ऽऽ ऽऽ, अ | ब मों ऽ से | रा ऽऱ, झ ग | रो ऽ, नऽ कऽ
0 | 3 | × | 2
ग प नि़ प
पंप गरी सांसा, ग | प नि ध सां | नि – नि़, सां | ग (सां) –, नि
रोऽ ऽऽ ऽऽ, अ | ब मों ऽ से | रा ऽ ऽऱ, के | ऽ ष्ण ऽ, क
0 | 3 | × | 2
रीं सां नि़ ग़ सां
(प) प, ग ग प | ग रीं सां, प़ | सां री सां, प | सां रीं सां, सां. ग
न्हा ई, क रु | दे ऽऽ त, ठ | ठो ऽ री, क | रो ऽ ना, ढि
0 | 3 | × | 2
नि
(सां) नि (प), ग | प ग (सा) –, | ग प नि ध | सां –; सांरींसांनि
टा ऽ ई, साँ | ऽ व रे ऽ, | दे ऽ खो ऽ | जी ऽ; नऽ कऽ
0 | 3 | × | 2
ग नि़
पंप गरी सांसा,
रोऽ ऽऽ ऽऽ, ... इत्यादि
0

अंतरा


र न ऽ न | दे ऽ ऽ त | मों ऽ को ऽ | नी ऽ र, भ
र न ऽ न | दे ऽ ऽ त | मों ऽ को ऽ | ऽ नी ऽ र
सां – सां (पं) | – प ग ग | ग नि प प | ग – री ग, प
बा ऽ ट घा | ऽ ट स ब | ब्रि ज ज न | दे ऽऽ खि, हँ
ग – सा –, | प़ प़ सा, सा | ग ग, प प | प, नि सां सां
से ऽ ऽ ऽ, | नि प ट, नि | ड र, लं ग | र, ढी ऽ ट
गं पं गं रींसां | नि ध सां नि | प – नि ध | सां –; सांरींसांनि
ऐ ऽ सो ऽऽ | न ट ख ट | दे ऽ खो ऽ | जी ऽ; नऽ कऽ
पंप गरी सासा, ग | प नि ध सां | नि-नि,
रोऽ ऽऽ ऽऽ, अ | ब मों ऽ से | रा ऽऽ, ... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग शंकरा – ध्रुवपद – सूलताल (मध्यलय)

स्थायी : कहाँलो कीजे बखान गुन को महा प्राण
गायक – गुनी सुनि सुनि देत बधैया |

अंतरा : सुर लय राग ताल रस हूँ भये अधीन
गीत सिंगार सब साज सजैया ||

संचारी : ग्यानी गुन निधान ऐसो पिया प्रेम
नाद – समुन्दर को एक तरैया ||

आभोग : चकित भयो 'सुजान' वन्दन किये चरन
गुरु फैयाज़ नाम राग रिझैया ||

स्थायी

नि सां नि ध प – | नि ध | सां नि ध प प | प प | प ग | ग प ग प | ग रें सां सा
क हाँ लो ऽ | की जे | ब खा ऽ न | गु न | को ऽ | म हा ऽ | प्रा ऽ ण
× | 0 | 2 | 3 | 0 | × | 0 | 2 | 3 | 0

नि प़ – | नि सा सा | प ग ग | प प | नि नि | नि सां गं सां सां | नि ध प | ग प | नि ध;
गा ऽ | य क | गु नि | सु नि | सु नि | दे ऽ | त ब | धै ऽ | या ऽ | ऽ ऽ;
× | 0 | 2 | 3 | 0 | × | 0 | 2 | 3 | 0

अंतरा

ग प प | नि सां सां | नि. सा – | सां नि. सां | – सां | नि. सां सां | ग रें सां | नि ध | नि. सां नि | – नि
सु र | ल य | रा ऽ | ग ता | ऽ ल | र स | हूँ भ | ये ऽ | अ धी | ऽ न
× | 0 | 2 | 3 | 0 | × | 0 | 2 | 3 | 0

ग प – | सां नि ध प – | ग प | ग रें सा | नि सा ग | प,प | नि ध | सां नि रें सां;
गी ऽ | त सिं | गा ऽ | ऽ र | स ब | सा ऽ | ज,स | जै ऽ | या ऽ | ऽ ऽ;
× | 0 | 2 | 3 | 0 | × | 0 | 2 | 3 | 0

संचारी

नि सा – | सा प – | प प | प प | – प | ग प – | नि ध | सां नि | ध प | – प
ग्या ऽ | नी ऽ | गु न | नि धा | ऽ न | ऐ ऽ | सो ऽ | पि या | ऽ प्रे | ऽ म
× | 0 | 2 | 3 | 0 | × | 0 | 2 | 3 | 0

ग प ग | ग ध प – | ग प | ग रें सा | नि सा ग | प,प | नि ध | सां – | नि –
ना ऽ | द स | मु ऽ | न्द र | को ऽ | ए ऽ | क,त | रै ऽ | या ऽ | ऽ ऽ
× | 0 | 2 | 3 | 0 | × | 0 | 2 | 3 | 0

आभोग

ग प प | नि सां सां | सां – | नि सां सां | – सां | नि सां – | ग गं | ग पं | ग पं | ग रें सां सां
च कि त | भ ये ऽ | सु जा ऽ | न | वं ऽ | द न | क्रि ये | ऽ च | र न
× | 0 | 2 | 3 | 0 | × | 0 | 2 | 3 | 0

प ग प | ग – रें सा – | ग प | नि नि | नि सां गं सां सां | नि ध प | ग प | नि ध;
गु रु | फै ऽ | या ऽ | ज़ ना | ऽ म | रा ऽ | ग रि | झै ऽ | या ऽ | ऽ ऽ;
× | 0 | 2 | 3 | 0 | × | 0 | 2 | 3 | 0

टीपः लेखक ने इस बंदिश की रचना अपने गुरुवर्य उस्ताद फैयाज़ हुसैन खाँ के पुण्यस्मरण में की है।

राग शंकरा- ध्रुवपद- चौताल (विलंबित)

स्थायीः नमो नमो नमो नाद अप्रंपार हे
सुर नर मुनि गंधर्व गुनी तव जस गुन गाये
पाये अत आनन्द हे|

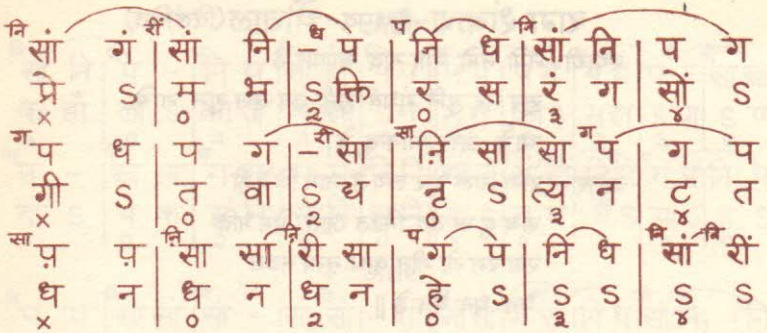
अंतराः राग ताल सुर लय तें नाम लिये ही
सब दुःख दंद मिटत जात, प्रेम भक्ति
रस रंग सों गीत वाध नृत्य नटत
धन धन धन हे ॥

स्थायी

नि	सां	सां	निध	नि	ध प	–	नि	ध प	गप	रे ग	रीसा	सा
×	न	मो	ऽऽ	न	मो	ऽ	न	मो	ऽऽ	ना	ऽऽ	द
	०			२			०		३		४	
नि	सा	सा	–	प ग	प	प	नि	ध	सां	नि	ध प	–
×	अ	प्र	ऽ	म्पा	ऽ	र	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	०			२			०		३		४	
प	सां	नि	ध प	गप	रे ग	रे सा	नि	सा	–	प ग	प	सां नि	सां
×	सु	र	न	रऽ	मु	नि	गं	ऽ	ध	वि	गु	नी
		०			२		०		३		४	
नि	सां	गं	सां	नि	प	प	ग	प	रे ग	रीसा	सा
×	त	व	ज	स	गु	न	गा	ऽ	ये	पा	ऽऽ	ये
	०			२			०		३		४	
सा	प़	प़	नि सा	नि सा	री	सा	प ग	पे	नि	ध	सां नि	रीं
×	अ	त	आ	न	ऽ	न्द	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	०			२			०		३		४	

अंतरा

ग	प	–	प	सां	–	सां	नि	सां	सां	नि	सां	रीं	सां	–
×	रा	ऽ	ग	ता	ऽ	ल	सु	र	ल	य	तें	ऽ
		०			२		०		३		४	
नि	सां	–	गं	रें सां	नि	ध प	नि	ध	सां	–	नि	नि
×	ना	ऽ	म	लि	ये	ऽ	ही	ऽ	ऽ	ऽ	स	ब
		०			२		०		३		४	
नि	सां	सां	–	पं गं	पं	पं	गं	पं	गं	पं	रें गं	–	रें सां
×	दु	ख	ऽ	दं	ऽ	द	मि	ट	त	जा	ऽ	त
		०			२		०		३		४	



राग दुर्गा-(बिलावल थाट)-सरगम-झपताल(मध्यलय)

स्थायी

ध म | रे सा रे | प – | ध म प ‖ ध सां | प ध म | रे सा | रे ध़ सा
× | २ | ० | ३ | × | २ | ० | ३
प़ ध़ | सा रे म | प ध | सां –,ध ‖ रें ध | सां प ध | म प | ध सां –
× | २ | ० | ३ | × | २ | ० | ३

अंतरा

प ध | सां ध म | प ध | सां – सां ‖ ध सां | रें मं रें | सां – | ध – ध
× | २ | ० | ३ | × | २ | ० | ३
रें मं | रें,सां रें | ध सां | प ध म ‖ रे म | प ध सां | ध म | रे – सा
× | २ | ० | ३ | × | २ | ० | ३

राग दुर्गा (बिलावल थाट)- लक्षणगीत-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः अगनि औडव दुर्गा सुध सुर
पंच सोहत मोहत मन लुभात
सम समवादी-वादी मत चतुर।

अंतराः निस प्रथम प्रहर गावत सुस्वर
सुध सावेरी नाम दखिनि रीत
अंग मल्हार संगत रिप बिलसत
अनुलोम बिलुम धम अति मधुर॥

स्थायी

म प
अ
प म ध प ध | म रे सा सा | रे प –, सां | ध सां रें, ध प
ग नि ओ ऽ | ड व दु र | गा ऽ ऽ, सु | ध सु र, पं
० ३ × २
ध म रे ध़ | सो सा, रे म | प ध, सां रें | सां ध म प
ऽ च सो ऽ | ह त, मो ऽ | ह त, म न | लु भा ऽ त
० ३ × २
सां ध सां, ध म | ध प ध ध, रे म | रे सा, रे ध़ | सा सा रे; प
स म, स म | वा ऽ दि, वा | ऽ दि, म त | च तु र; अ
० ३ × २

अंतरा

प म म ध प ध | म प ध ध | सां – सां सां | सां ध सां सां
नि स प्र थ | म प ह र | गा ऽ व त | सु ऽ ख र
० ३ × २
ध सां सां सां ध | सां – सां सां | रें रें, सां रें | सां ध – ध
सु ध सा ऽ | वे ऽ रि ना | ऽ म, द खि | नि री ऽ त
० ३ × २
रे म रे प म | प – पमु पधु | ध ध रे म रे | सा ध़ सा सा
अं ऽ ग म | ला ऽ रऽ संऽ | ग त री प | बि ल स त
० ३ × २
मं रें मं रें – | सां, ध म प, | प ध म रे सा | सा ध़ सा रे; प
अ नु लो ऽ | म, बि लु म, | ध म अ ति | मु धु र; अ
० ३ × २

राग दुर्गा– (बिलावल थाट)– त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : निरत करत अत धूमधाम सों गिरि कैलास पीठ पर महादेव शिव ताण्डव, नाद निनादत मृदंग भेरी डँवरू धुनि गरजत |

अंतरा : ब्रह्मा विष्णु गणेश शेष, सुर नर मुनि भये चकित भयभीत काँपत धरनीतल थर थर थर, पदाघात हर ता थेई थेई तत् आ थेई थेई तत्, थेई ता थेई ता थे, थेई थेई तत् तत् ता ॥

स्थायी

ध सां सां ध म | री सा ध़ सा | म री प प प | - प प म प
नि र त क | र त अ त | ध़ ऽ म धा | ऽ म सों ऽ
0 | 3 | × | 2

सां ध सां सां ध - | प म री सा सा सां | - ध सां सां | मं रीं रीं मं रीं
गि रि कै ऽ | ला ऽ स पी | ऽ ठ प र | म हा ऽ दे
0 | 3 | × | 2

- सां प म प | सां ध सां ध म | प - प, प म | ध प ध ध म
ऽ व शि व | ता ऽ ष्ड व | ना ऽ द, नि | ना ऽ द त
0 | 3 | × | 2

म री री सा म री | प प सां ध रीं | सां - रीं रीं ध | ध सां सां ध प ध;
मृ दं ग भे | ऽ रि डँ व | रू ऽ धु नि | ग र ज त;
0 | 3 | × | 2

अंतरा

प म - सां ध - | सां - सां सां | सां - सां ध सां | ध सां, ध सां सां
ब्र ऽ ह्मा ऽ | वि ऽ ष्णु ग | णे ऽ श शे | ऽ ष, सु र
0 | 3 | × | 2

मं रीं मं रीं सां | रीं सां - सां ध | सां ध प म म | ध प ध - ध,
न र मु नि | भ ये ऽ च | कि त भ य | भी ऽ ऽ त,
0 | 3 | × | 2

म री म री सा | री री ध़ सा - | म री प प | सां ध ध सां सां
काँ ऽ प त | ध र नी ऽ | त ल थ र | थ र थ र
0 | 3 | × | 2

सां ध सां - मं रीं | मं रीं सां सां, | सां रीं - सां सां | रीं ध सां सां,
प दा ऽ घा | ऽ त ह र, | ता ऽ थे ई | थे ई त त,
0 | 3 | × | 2

प ध - प प | ध म प प, | री म म री, प | प म ध ध,
आ ऽ थे ई | थे ई त त, | थे ई ता, थे | ई ता थे ई,
0 | 3 | × | 2

म प प सां ध | ध सां - मं रीं मं | रीं सां ध प | म री सा -;
थे ई थे ई | त ऽ त्त ऽ | त्ता ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ;
0 | 3 | × | 2

राग दुर्गा-(बिलावल थाट)-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः घर आंगना कछु ना सुहावे हरि के दरस बिन
तरसे जिया सखि, लगन लगी सुध बुध बिसराई।
अंतराः घरि पल छिन दिन रैन चैन नहीं आवत, ध्यावत
नित उठ श्यामसुंदर छबि, मन बसकीन्हो कन्हाई॥

स्थायी

ध सां
घ

सां ध ध सां रीं सां	ध – मे, प	प म ध प ध ध	म रि रि, ध सा
र आं ऽ ग	ना ऽ ऽ, क	छु ना ऽ सु	हा ऽ वे, ह
३ ×		२	०
सा म रि प प	प म प सां ध सां	ध ध प म म	म रि – सा सा
रि के ऽ द	र स बि न	त र से जि	या ऽ स खि
३ ×		२	०
सां ध सां मं रीं मं रीं	रीं –, सां सां	प म प सां ध सां	ध प ध; ध सां
ल ग न ल	गी ऽ, सु ध	बु ध बि स	रा ऽ ई; घ
३ ×		२	०

अंतरा

प ध म प ध	ध सां ध सां सां	सां ध सां रीं मं रीं, ध सां	प प ध (म) रि
घ रि प ल	छि न दि न	रै ऽ ऽऽ न, चै	ऽ न न हीं
३ ×		२	०
प मप ध सां ध ध,	म रि सा सा सा	रीं रीं ध़ सा सा	म रि प प प
आऽ ऽऽ व त,	ध्या ऽ व त	नि त उ ठ	ध्या ऽ म सु
३ ×		२	०
प म प सां ध सां	मं रीं मं रीं सां	रीं रीं ध म प	ध प ध; ध सां
न्द र छ बि	म न ब स	की न्हो ऽ क	न्हा ऽ ई; घ
३ ×		२	०
सां ध ध सां रीं सां	ध – मे		
र आं ऽ ग	ना ऽ ऽ	--- इत्यादि स्थायी के अनुसार	
३ ×			

राग दुर्गा-(बिलावल थाट)-झपताल(मध्यलय)

स्थायी: दुर्गे महारानी पातक निवारिनी
जगदम्ब जय देवि अष्टभुजा अम्बिके।
अंतरा: हरवल्लभे गौरी सति पार्वती मात
कीजे कृपा दृष्टि सकल विघ्नान्तिके॥

स्थायी

सां ध सां	ध - मे	म री -	रीधु सासा	ध सा -	म री म, प	म प -	ध म प
दु र	गे स म	हा स	राऽ सनी	पा स	त क,नि	वा स	रिनी स
×	२	०	३	×	२	०	३
प म प	सां ध सां सां	रीं रीं ध	सां प ध	प म प	सां ध सां -	सारी प म प	
ज ग	द स म्ब	ज य	दे स वि	अ ष्ट	भु जा स	अं ऽ	बिके स
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा

प म प	सां ध सां सां	सां सां ध	सां - सां	सां ध सां	मं रीं मं रीं	सां -	ध म प
ह र	व स ल्ल	भे स	गौ स रि	स ति	पा स र्वी	ती स	माऽ त
×	२	०	३	×	२	०	३
सां ध सां	ध म मे	म री -	सा - सा	मं रीं मं	रीं सांसां	सारी प म प	
की स	जे स कृ	पा स	ष्ट स ष्टि	स क	ल वि घ	ना स	न्तके स
×	२	०	३	×	२	०	३

राग मांड - सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

				सा सा
रे म म, प	ध नि,प ध	सां - -,नि	ध म ध प	
०	३	×	२	
-,म ग रे	ग सा -,रे	म प ध रें	सां - - नि	
०	३	×	२	
ध -,प ध	नि, प ध म	प ग म रे	ग -;सा सा	
०	३	×	२	

अंतरा

रें सां नि ध,	ध म प ध	सां -,सां रें	गं - सां -,
०	३	×	२
सां सां रें मं	गं रें सां -,	प ध सां रें	नि -,प ध
०	३	×	२
-, म ध प,	ध रें सां,प	ध म प,ग	रे ग;सा सा
०	३	×	२

राग मांड- लक्षणगीत - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: सुध सप्त सुर लगाय गाय अत मधुर धुन मांड
मेल बिलावल, गनि दुर्बल, अनुलोम वक्र, गति
विलुम, रसिक जन गुनि मनरंजन।
अंतरा: मध्यम वादी स्वरज समवादी, रात समय नित
सोहत सुखकर, सुगमगान सिंगार सजे अत,
चतुर बखानत सुन सुन रे 'सुजन'॥

स्थायी

ध ध प म	ग री सा, सा	री म मे प	- प, धरीं
सु ध स ऽ	प्त सु र, ल	गा ऽ य गा	ऽ य, अ त
×	२	०	३
सां नि ध म	म प - प,	री म प ध	नि - प प
म धु र धु	न मां ऽ ऽ,	मे ऽ ल बि	ला ऽ व ल
×	२	०	३
प ध सांरीं	गं सां, रीं नि	सां ध नि प	ध म, प ग
ग नि दु र	ब ल, अ नु	लो ऽ म व	ऽ क्र, ग ति
×	२	०	३
म रीग, सा	री री म म	प प ध ध	नि सां सां सां;
वि लु म, र	सि क ज न	गु नि म न	रं ऽ ज न;
×	२	०	३

अंतरा

म - प ध	सां - सां सां	सां सां रीं मं	गं रीं सां -
म ऽ ध्य म	वा ऽ दि स्व	र ज स म	वा ऽ दी ऽ
×	२	०	३
रीं - रीं गं	सां सां सां सां	सां - सां सां	नि ध प ध
रा ऽ त स	म य नि त	सो ऽ ह त	सु ख क र
×	२	०	३
म म मग म	- म रीम	प ध ध सां	नि ध ध ध
सु ग म गा	ऽ न सिं ऽ	गा ऽ र स	जे ऽ अ त
×	२	०	३
प ध सांरीं	गं - सां सां	री री म म	प धं सां सां;
च तु र ब	खा ऽ न त	सु न सु न	रे सु ज न;
×	२	०	३

राग मांड-भजन-दादरा(मध्यलय)

स्थायी : सुनियो साँई अर्ज़ हमारी,कीजियो दया दृष्टि आज,
नाव पुरानी मझधार परी,कीजियो पार।
अंतरा : दीन नाथ दीन बन्धु पतित पावन भक्त वत्सल
शरणागत को एक आसरो साहेब सत्तार॥

स्थायी

नि सां सां रें सां | नि ध ध || म प ग म | प – प
सु नि यो सा ँ ऽ ई || अ ज़ ह | मा ऽ री
× ०

सां नि नि सां नि | ध प – || प ग म ग री | रें सा – सा
की जि यो द्ध या ऽ || द्ध ऽ ष्टि | आ ऽ ज
× ०

ध प़ ध़ सा | म रे म ,म || प – प | – ,प प
ना ऽ ऽ | व ऽ ,प || रा ऽ नी | ऽ ,म झ
× ०

सां ध सां रें | गं रें सां –, || सां नि सां रें नि | ध – –,
धा ऽ र | प रे ऽ , || की ऽ जि | यो ऽ ऽ,
× ०

सारे मप धनि | पध नें नि धं प ध; ||
पाऽ ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽर;
× ०

अंतरा

नि सां – सां | नि धप ध || नि सां – सां | नि सां – सां
दी ऽ न | ना ऽऽ थ || दी ऽ न | ब ऽ न्धु
× ०

सां गं गं मं गं | रें सां सां || सां नि गं रें सां | नि ध ध
प ति त | पा व न || भ ऽ क्त | व त्स ल
× ०

नि ध रें सां | नि ध ध || ध प नि ध | प ग ग
श र णा | ऽ ग त || को ऽ ऽ | ए ऽ क
× ०

प म ध प म | ग रे सा || म रे म म | प –, नि ध
आ ऽ स | रो ऽ ऽ || सा ऽ हे | ब ऽ, स
× ०

सांनि धप धनि | पध नें नि धं प ध; ||
ताऽ ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽर;
× ०

राग मांड - भजन - कहरवा (मध्यलय)

स्थायी: यही रूप रहे यही रंग रहे, अनुराग रहे रस रास रहे,
ब्रिज-नन्दन के मेरे नैनन में सखि और नहीं कोऊ छंद रहे,
नित ध्यान रहे मन लगन रहे |

अंतरा: यही आँस रहे यही साँस रहे, यही बाँसुरि की धुनि पास रहे,
और काम रहे नहीं धाम रहे, घर आंगन में यही सुन्दर साँवरी
सूरत रहे मेरे नैनन में सखि और नहीं कोऊ पीत रहे,
हरि नाम रहे मुख हरि हरि हरि ||

स्थायी

नि सां सां
य ही

नि ध ध ध | प –, म ग म ‖ प – प प | प –, ग प प
रू ऽ प र | हे ऽ, य ही ‖ रं ऽ ग र | हे ऽ, अ नु
× ०

सां ध सां सां सां | नि सां –, सां नि रीं सां ‖ नि ध ध ध | प –, ग प प
रा ऽ ग र | हे ऽ, र स ‖ रा ऽ स र | हे ऽ, ब्रि ज
× ०

म ध – ध ध | पध निसां नि ध ‖ म प – म ग म | ग री –, नि सा सा
न ऽ न्द न | के ऽ ऽऽ मे रे ‖ नै ऽ न न | में ऽ, स खि
× ०

म री म म म | म –, म ग म ‖ प – प प | प –, म प प
औ ऽ र न | हीं ऽ, को ऊ ‖ छं ऽ द र | हे ऽ, नि त
× ०

सां धसां रींगं रीं सां | नि ध, म ग म ‖ प ध नि सां | नि ध प; नि सां सां
ध्या ऽ ऽऽ न र | हे ऽ, म न ‖ ल ग न र | हे ऽ; य ही
× ०

अंतरा

ध प ध
य ही

नि सां – सां सां | नि सां –, सां नि ध ‖ नि सां – सां सां | नि सां –, मं गं गं
आँ ऽ स र | हे ऽ, य ही ‖ साँ ऽ स र | हे ऽ, य ही
× ०

मं गं – गं मं गं | रीं सां सां सां ‖ नि ध धं सां | नि सां –, सां नि सां
बाँ ऽ सु री | की ऽ धु नि ‖ पा ऽ स र | हे ऽ, औ र
× ०

रीं – रीं रीं	रीं –, सां रीं रीं	सांरीं गं रीं सां	नि ध, म ग म
का ऽ म र	हे ऽ, न हीं	धाऽ ऽ म र	हे ऽ, घ र
×	०	×	०
प – प प	प –, ध प ध	सां नि सां नि ध	प – म ग म
आं ऽ ग न	मों ऽ, य ही	सु ऽ न्द र	साँ ऽ व रि
×	०	×	०
ग री री सा नि सा	म री म, प म म	प – प प	सां ध सां, नि सांसां
सू र त र	हे ऽ, मे रे	नै ऽ न न	में ऽ, सखि
×	०	×	०
रीं – रीं रीं	रीं –, सां रीं रीं	नि सांरीं गंमं गं रीं	सां –, सां गं रीं
औ ऽ र न	हीं ऽ, को ऊ	पीऽ ऽऽ त र	हे ऽ, ह रि
×	०	×	०
सां नि ध प	म ग, ग री सा	म री री प म म	प ध; नि सांसां
ना ऽ म र	हे ऽ, मु ख	ह रि ह रि	ह रि; य ही
×	०	×	०

राग मांड-भजन-कहरवा (मध्यलय)

स्थायीः महिमा बरनी न जाय हरि की ॥

अंतरा-१ः पाथर परसे उधरि अहिल्या।
उधरि दुलारी द्रुपद की ॥ महिमा ---

अंतरा-२ः गोवर्धन अंगुरी पर धरिकै,
गरब नसानो देवराय को।
टेक रखी शरणागत सबहूँ,
गोकुल ब्रिज-बासिन की ॥ महिमा ---

अंतरा-३ः ऐसो नटवर गिरिधर नागर,
पार न जाको कृपा-सिन्धु को।
चरण-कमल नित सेवत पावै,
सुख शांती तन मन की ॥ महिमा ---

अंतरा-४ः दश अवतार लिये जग तारन,
कष्ट निवारन पतित उद्धारन।
भक्त-वत्सल करुणाकर माधव,
अनगिन जश कीरत की ॥ महिमा ---

स्थायी

नि सां सां नि ध | प म म प मप ध | धप म ग री | नि सा सा म रीम पध
म हि मा स | × ब र नीऽ स | ० नुऽ जा स य | × ह रि कीऽ ऽऽ

अंतरा-१

ग म - म म | ग म म म - | म प प प म प | प प प -
× पा स थ र | ० प र से स | × उ ध रिअ | ० ह लि या स
म ध ध ध ध | पध निरीं सां नि | ध प म गम पध | नि सां सां नि ध
× उ ध रि दु | ० लाऽ ऽऽ रि द्र | × प दकीऽ ऽऽ | ० म हि मा स

अंतरा-२

म ध - ध ध | ध ध म ध ध | नि धनि सां निसां | नि ध नि (प) -
× गो स व र | ० ध न अं गु | × रीऽ स प र | ० ध रि कै स
सां ध सां रीं गं | गं रीं सां सां - | निध प प सां ध | सां सां नि सां -
× ग र ब न | ० सा स नो स | × दिऽ स व रा | ० स य को स
सां गं - रीं रीं गं | रीं सां - नि सां सां | नि धप प | म ग म प ध
× टे स क र | ० खी स श र | × णा स ग त | ० स ब हूँ स
नि सां नि ध प | प म म ग री | सा सा म रीम पध | नि सां सां नि ध
× गो स कु ल | ० ब्रि ज बा स | × सि न कीऽ ऽऽ | ० म हि मा स

अंतरा-३

सां रीं - रीं - | नि सां सां सां सां | सां नि नि धप | ध पध निसां सां सां
× ऐ स सो स | ० न ट व र | × गि रि धर | ० नाऽ ऽऽ ग र
म री - म म | प - प - | म ध ध - पध | नि नि ध प
× पा स र न | ० जा स को स | × कृ पा सिऽ | ० स्धु को स
ग म म म म | म म म म | पध नि ध प | म ग री सा
× च र ण क | ० म ल नि त | × सेऽ स व त | ० पा स वै स

नि सा सा म री - | म - प प | ध ध म गमु पधु | नि सां सां नि ध
× सु ख शां ऽ | ती ऽ त न | ० म न की ऽ ऽऽ | म हि मा ऽ

अंतरा-४

सां रीं रीं रीं - | रीं - रीं रीं | नि सांरीं गंमं मं गं मं | गं रीं गं (सां) सां
× द श औ ऽ | ० ता ऽ र लि | येऽ ऽऽ ज ग | ता ऽ र न
नि सां - सां रीं सां | नि ध ध ध | म प प प गम | प - प प
× क ऽष्ट नि | ० वा ऽ र न | प ति त उ | द्वा ऽ र न
म ध - ध ध | ध ध प ध ध | पध निरींसां नि सां | नि ध नि (प) प
× भ ऽक्त व | ० त्स ल क रु | णाऽ ऽऽऽ क र | मा ऽ ध व
ग म ग री सा | म री री म - | प प गमप धनिसां | नि सां सां नि ध
× अ न गि न | ० ज श की ऽ | र त कीऽऽ ऽऽऽ | म हि मा ऽ

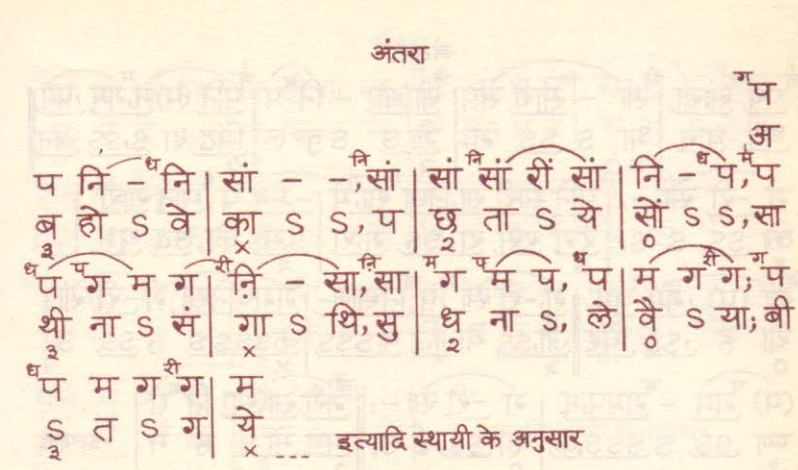
राग पटबिहाग - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : बीत गये, गये बीत री, नाम बिन
घरि-पल-दिन-रतियाँ।
अंतरा : अब होवे का पछताय सों
साथी ना संगाथी, सुध ना लेवैया ॥

स्थायी

सा प
बी
ध प म ग रीग | म - -, ग म | मग प - प | सां - -, म प
ऽ त ऽ ग | ३ ये ऽ ऽ, ग | × येऽ बी ऽ त | २ री ऽ ऽ, ना
ध म ग रीनि़ सा | सा नि़ ध प़ सा नि़ सा | म ग म ग प ध प | म ग रीग; म प
ऽ म बि न | ३ घ रि प ल | × दि न र ति | २ यौं ऽ ऽ; बी
ध प म ग रीग | म
ऽ त ऽ ग | ३ ये × --- इत्यादि

अंतरा



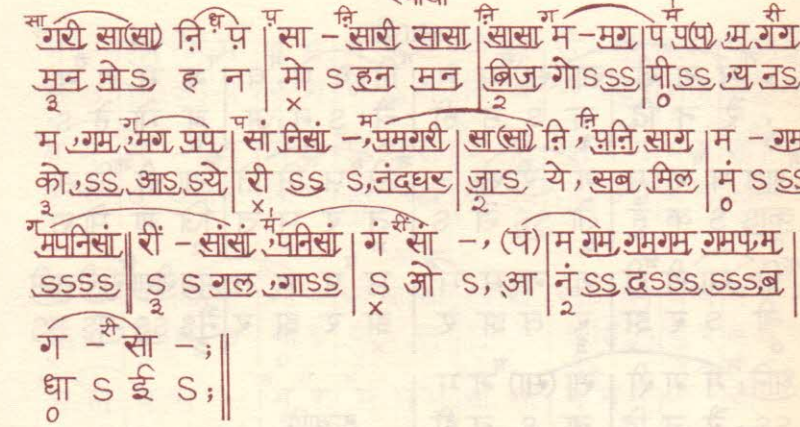
इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग पटबिहाग - तिलवाडा (विलंबित)

स्थायीः मन मोहन मोहन मन ब्रिज-गोपीयन को
आये री नंद घर जाये, सब मिल मंगल
गाओ आनंद बधाई।

अंतराः धन धन भाग गोकुल बिंद्राबन को,
रंग रस राग रास को उदय भयो है,
चिरजीवो जिवो कृष्ण कन्हाई ॥

स्थायी



अंतरा

म पप प सांसां | नि सां – नि सांरीं सां, | नि सां(सां) – नि ध प | म पनि (प) म, गम, पम ||
धन धन | भा × s ss ग, | गो २ s s कु ल | बिंद रा ० s,ss, बन |

ग –री सो –, | नि प़नि सारी सा,निसा नि सा,म | –,मग प म,पनि सांरीं |
को ३ ss s s, | रंग × रस रा,ss ग,रा | s,ss, को,उद यभ |

नि सां (प) ,गम म पम ‖ ग,–री सा नि,प़ सा नि़साग– | म गमपनिसां गं –रीं सां |
यो है ० ,ss चिर ‖ जी,ss वा ,जि वोsss | के ssss s ss s × |

(प) प गम – म गमप,म | ग –री सा –; ‖ सा गरी सा(सा) नि ध प़ |
ष्ण २ ss s sss,क | न्हा ० ss ई s; ‖ मन १ मो s ह न | ---इत्यादि

राग नटबिहाग त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: रैन दिना नहीं चैन अब मोहे
का कहूँ तोसे तरपत जिया मोरा
नीर झरत झर झर झर नैना।
अंतरा: परदेस बालम बिलम रहे
कहाँलो सहूँ मैं बिरह बिया ये
छतिया धरके धर धर धर पल छिना ‖

स्थायी

, ग म ग री | सा (सा) म ग म | म नि ध पे, प | प ग म ग री ग
, रै न दि | ना ३ s न हीं | चै × s न,अ | ब २ मो हे s

म गम प प ग म | ग –री सा – | सा नि ध प़ सा नि़ नि | नि सा री सा नि़ सा
काऽ ० s क हुँ | तो ३ ss से s | त × र प त | जि २ या मो रा

सा नि़ सा री ग री | ग ग म म ग | प ध प म ग | मग रीसा नि़ सारी सानि़
नी ० s र झ | र ३ त झ र | झ × र झ र | नैंऽ २ ss नाऽ ss

धनि़; ग म ग री | सा (सा) म ग म |
ss; रै न दि | ना ३ s न हीं | ---- इत्यादि

अंतरा

म ग म प नि	नि सां सां सां	नि सां गंरीं गं मं	गं -रीं सां, नि सांसां
प र दे स	स बा ल म	बि लड़ म र	हे ऽऽ ऽ, कहाँ
०	३	×	२
गं रींगं मंपं गं मं गं	(सां) - - प	प ग मं ग प म	ग -री सो -
लोड़ ऽऽ ऽ स	हूँ ऽ ऽ मैं	बि र ह बि	था ऽऽ ये ऽ
०	३	×	२
सा नि सा री ग री	ग ग म मं ग	प ध प म ग	ग मग रीसा नि सारी सानि
छु ति या ध	र के ध र	ध र ध र	पड़ लड़ छिड़ नाड़
०	३	×	२
धनि; ग म ग री	सा (सा) म ग म		
ऽऽ; रै न दि	ना ऽ न हीं	---- इत्यादि स्थायी के अनुसार	
०	३		

राग नटबिहाग-झपताल (मध्यलय)

स्थायी : विद्याधर गणेश विघ्नेश गजवदन
एकदंत रिधसिद्ध दाता चत्रभुजा।
अंतरा : गौरी-गंगाधर सुपुत्र सिंदुर बदन
शरण आयो चरण तुम्हरे आज
हमारी हरो बिपत हे चत्रभुजा ॥

स्थायी

सा प -	गम रीग मं	प म	ग रीसासा	नि सा	री - गरी	गम	प गमरीग
वि ऽ	घाड़ ऽऽ ध	र ग	णे ऽऽ श	वि घ	ने ऽ शड़	गज	वदड़ नड़
×	२	०	३	×	२	०	३
मं ग	सां - निध़	नि प़	नि सासा	गं गरी	गंम पं ग	म ग	सां नि़सा
प क	दं ऽ तऽ	रि ध	सि ऽ द्ध	दा ऽऽ	ताड़ ऽ च	त्र भु	जा ऽ ऽ
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा

मं प -	सां नि सां	सां -	सां सां, सां	सां रीं	सां निधप	प प	धं मं ग
गौ ऽ	रि गं ऽ	गा ऽ	ध र, सु	पु ऽ	त्र सिं ऽऽ	दु र	ब द न
×	२	०	३	×	२	०	३
गं मं नि़	ध प -	मं गं	मं प प	सां सां	गं गंमं	गं -	सां -, प
श र	ण आ ऽ	यो ऽ	च र ण	तु म्ह	रे ऽ ऽ	आ ऽ	ज ऽ, ह
×	२	०	३	×	२	०	३

ग म री ग | म ग री सा | नि ध प | सा सा सा || ग री | ग म प ध प, ग | म ग री | सा ध नि सा
मा ऽ | री ऽऽ ह | रो ऽ | बि प त || हे ऽऽ | ऽऽ ऽ ऽ, च | त्र भु | जा ऽ ऽ
× | २ | ० | ३ || × | | २ | | ० | ३

राग नटबिहाग–एकताल (विलंबित)

स्थायी : कौन मंत्र पढ़ दीन्हो ऐसो टोना कीन्हो
मेरो श्यामसुंदर बस कीन्हो।
अंतरा : छाँड़ी सब पीत जाय बसे मथुरा नगरिया
ऐसी कौन चतुर सुघर सुंदर नार
जिन अपनाये श्याम लीन्हो ॥

स्थायी

म ग म प ग-म | री ग रीसा नि सा(सा) | ध नि सां म | री ग-सा | सा नि सा री ग म प | ग री मग |
कौ ऽऽ ऽऽ न | मं ऽऽ त्र ऽ | ऽ प द | दी ऽ न्हो | ऐ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ | सो ऽ |
२ | ३ | ४ | × | ० | |

म नि ध प | म प मं ग म | री ग रीसा | सा प, नि सा री | री नि सा री, री | ग म, ग ध प प |
टो ऽ ना | की ऽ ऽ ऽ ऽ | ० | न्हो ऽ ऽ | ३ | मे रो ऽ ऽ | ४ | श्या ऽ म सुं | × | द र, ब स | ० |

म ग, म री | सा ; सा नि सा ग म प, ग-म | री ग रीसा नि सा(सा) |
की ऽ, ऽ ऽ | न्हो ; कौ ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ न | मं ऽऽ त्र ऽ | --- इत्यादि
२ | ० | ३

अंतरा

म प सां, नि सां सां | नि सां-सां | नि सां(सां), नि नि ध नि | (प) – | म प, प ध प म | म ग री, ग म प म |
छाँ ड़ी, सब | पी ऽ त | ० जा ऽ, य ब | से ऽ | २ | म थु ऽ ऽ ऽ | ० | रा ऽ, न गरि | ३ |
४ | × | | | | | | | |

ग रीसा | सा नि ध प | सा नि सा-सा | सा नि सा री, री सा | म ग म, ग प ध प | म ग म री, नि सा री |
या ऽऽ | ऐ सी | × | कौ ऽ, ऽ न | ० | च तु र, सु | २ | घर, सुंद, र ऽ, ऽऽ, ना ऽ | ० ३ |

सा, ग म प, नि सां रीं | सां प म ग री, म | नि, ध प ध | म ग म | म प, म ग री, ग |
र, जि न अ, प ऽ ऽ | ना ऽ ये ऽ, ऽ | ४ | श्या, ऽऽ ऽऽ | ० | ऽऽ, ऽ म ली | २ |
४ | × | | | | | |

री सा ; म ग म प, ग-म | री ग, री सा नि सा(सा) |
न्हो ; कौ ऽऽ, ऽ ऽ न | मं ऽऽ त्र ऽ | --- इत्यादि स्थायी के अनुसार
० | ३

राग केदारनाट - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : जय जगत उद्धारन दीननाथ
जय जगत वन्दन कृष्ण गोपाल |
अंतरा : नाम लेत दुःख दंद जात हर
जप जप मन कृष्ण गोपाल ||

स्थायी

नि सा सा
ज य
नि ध़ नि सा रीं | नि सां - नि ध़ प़ | प मं - प़ प़ रीं | - सां, नि सा सा
ज ग त उ | द्धा ऽ र न | दी ऽ न ना | ऽ थ, ज य
० ३ × २
नि ध़ नि सा रीं | नि सां - नि ध़ प़ | प मं - मं प़ प़ | प रीं रीं, नि सा सा
ज ग त उ | द्धा ऽ र न | दी ऽ न ना | ऽ थ, ज य
० ३ × २
सा नि सा ग रीं ग | म प, निधि प | मं ग रीं सा नि सारीं | गमेप ग मरीं, नि सा सा
ज ग त व | न्द न, कृ ऽ ष्ण | गो ऽ ऽ पाऽऽ | ऽऽऽ ऽल, ज य
० ३ × २

अंतरा

ग म - म मं | ग प प निधि प | मं ग रीं सा नि सारीं | गमेप ग मरीं नि सा सा
ना ऽ म ले | ऽ त दु ऽ ख | दं ऽ द जा ऽऽ | ऽऽऽ ऽत ह र
० ३ × २
सा नि सा ग रीं ग | म प, निधि प | मं ग रीं सा नि सारीं | गमेप ग मरीं, नि सा सा
ज प ज प | म न, कृ ऽ ष्ण | गो ऽ ऽ पाऽऽ | ऽऽऽ ऽल, ज य
० ३ × २

राग नट - झपताल (मध्यलय)

स्थायी : गुरु मुख तें पायी सीख सुर-ताल बँधी
वाह् को गाये बजाये हूबहूब, नायकी कहलायी |
अंतरा : उपजत अंग स्वभाव तें तान आलाप
किये राग सिंगार, गायकी कहलायी ||

स्थायी

ग म ग	री सा सा	ग री ग	म – म	म ग –	प म म	ग म ग	ग म म
गु रु	मु ख तें	जो ऽ	पा ऽ यी	सी ऽ	ख सु र	ता ऽ	ल बँ धि
×	२	०	३	×	२	०	३
ग म ग	प प –	प सां –	सां ध नि प	प री ग	री ग म प	नि सा री	नि सा – सा
वा ऽ	हु को ऽ	गा ऽ	ये ऽ ब	जा ऽ	ये ऽ ऽ	हू ब	हू ऽ ब
×	२	०	३	×	२	०	३
प सां –	सां सां ध प	ग म प	म ग रीसा				
ना ऽ	य की ऽ	क ह	ला ऽ यीऽ				
×	२	०	३				

अंतरा

ग प प	प सां सां सां	नि सां सां	नि सां – सां	नि सां रीं	मं गं मं रीं	नि सां –	सां ध नि प
उ प	ज त अं	ग ख	भा ऽ व	तें ऽ	ता ऽ न	आ ऽ	ला ऽ प
×	२	०	३	×	२	०	३
ग म गरी ग	म – म ग	प –	प सां – सां	नि सां –	सां ध प	ग म प	म ग रीसा
कि येऽ	रा ऽ ग	सिं ऽ	गा ऽ र	गा ऽ	य की ऽ	क ह	ला ऽ यीऽ
×	२	०	३	×	२	०	३

राग सावनीनाट – सुजन शिखर ताल (मध्यलय)

स्थायी : सुनो हो गुनिदास नीकी साची तान
रस रंग राग ताल संगत की।

अंतरा : अनगिनत नाद भेद गुनि गंधर्व
नयो सिंगार नयो राग रसहु नयो
रचि दिखावे, पार नहीं पावे 'सुजन' ताको
गहे शरन गुरुन की ॥

स्थायी

सा नि़ नि़	सा ग री री	ग –	मे, प ग म	ग रीसा सा	री री नि़ सा		
सु नो	हो गु नि	दा ऽ	स, नी ऽ की	सा ऽऽ चि	ता ऽ न		
४	५	×	२	०	३		
नि़ प़ प़	सा नि़ सा सा	ग री ग	री, ग म ध प	म ग म ग	री नि़ सा री		
र स	रं ऽ ग	रा ऽ	ग, ता ऽ ल	सं ग त	की ऽ ऽ		
४	५	×	२	०	३		

अंतरा

ग प प	नि नि नि	सां –	रीं नि सां सां	ग प सां नि	सां रीं रीं		
अ न	गि न त	ना स	द मे स द	गु नि ग	स न्ध र्वी		
४	५	×	२	०	३		
मं गं गं	मं गं रींसां	सां, पं	सां प ग री	मं ग म ग	री सा –		
न यो	सिं गा ऽऽ	र, न	यो रा स ग	र स हु	न यो स		
४	५	×	२	०	३		
नि सा सा	ग री ग –	प म प	म ग रीसा सा	नि प नि सां	ग री नि सा री	– री	
र चि	दि खा स	वे स	ऽ पा ऽऽ र	न हीं स	पा स वे		
४	५	×	२	०	३		
म ग ग	म प –	सां नि –	नि सां गं रीं सां	सां, ग प ग	री नि सा री		
सु ज	न ता स	को स	ग हे श र	न, गु रु	न की स		
४	५	×	२	०	३		

राग नटनारायण– रूपक (विलंबित)

स्थायी : सुन रे आज 'सुजान' चतुर करे बखान
अनुपम राग रूप शुद्ध सुर संस्थान।

अंतरा : नटनारायण नाम सुन्दर
अत गम्भीर नाद मध्यम प्रधान॥

स्थायी

							ग पम
							सुन
गरी सो	नि सा, नि सा, रीग ग	म – म	मम पप	मग रीरी	री ग री ग मेम		
रे ऽ ऽ	आ, ऽऽ जसु	जा ऽ न	चतु र क	रे ऽ ऽ ब	खा ऽ ऽ न		
२	३	⊗	२	३	⊗		
ग मम पप	सां निसांरीं– –सां	सां ध नि प	प सा री	म गम प	नि सा रीसा; ग पम		
अनु पम	रा ऽऽऽ ऽग	रू ऽ प	शु द्ध	सुर सं	स्था ऽन; सुन		
२	३	⊗	२	३	⊗		

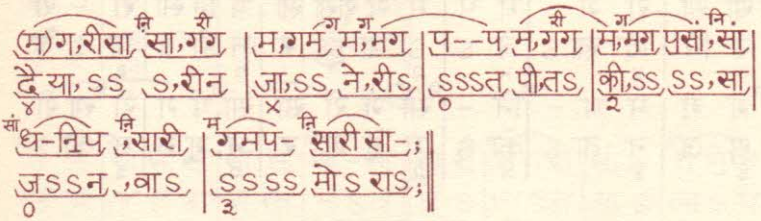
अंतरा

ग प प	प सां –	नि सां रीं सां	नि सां रीं	मं ग सं, पं	नि सां रीं सां		
न ट	ना ऽ	रा य ण	ना ऽ	म ऽ, सुं	द ऽ र		
२	३	⊗	२	३	⊗		
पनि सांरीं	– –सां	सां ध नि प	नि सा री	म गम प	नि सा रीसा; ग पम		
अत गंभी	ऽ ऽर	ना ऽ द	म ऽ	ध्यम प्र	धा ऽन; सुन		
२	३	⊗	२	३	⊗		

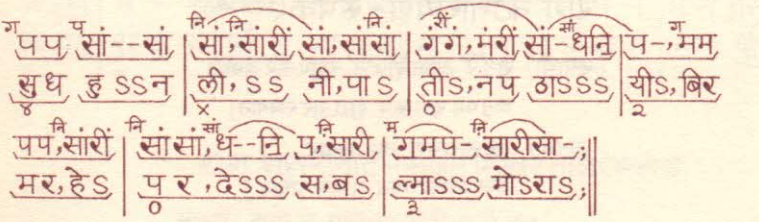
राग नटनारायण-पकताल (विलंबित)

स्थायी : दैयारी न जाने रीत पीत की
साजनवा मोरा |
अंतरा : सुधहु न लीनी पाती न पठायी
बिरम रहे परदेस बलमा मोरा ||

स्थायी



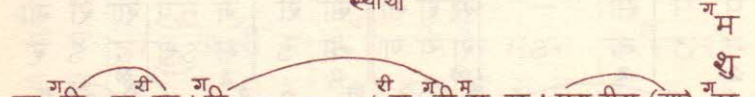
अंतरा



राग नटमल्हार-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : शुभ सगुन देहो बिचारि
मोरा बमना देहो बताये
कब आवेगो परदेसी पिया मोरा |
अंतरा : नींद ना रैन दिन ना चैन
सही न जाये बिरह बिथा
वाहे बिना न माने जिया मोरा ||

स्थायी



म ग री ग री सा | री - - - | री ग ग री म ग प | मग रीग री, ग म
भ स गु न | दे ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ हो बि | चाऽ ऽऽ रि, मो
३ × २ ०

री प प प | सां - - - | सांध नि पे म | मग म री, प म
रा ब म ना | दे ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ हो ब | ताऽ ऽ ये, क
३ × २ ०

प सां निसां रीं सां | सांध नि पे प | ग री गरी ग प | मगम री सा; ग म
ब आऽ ऽ वे | गो ऽ प र | दे ऽऽ सि पि | याऽऽ मो रा; शु
३ × २ ०

म ग री ग री सा
भ स गु न | --- इत्यादि
३

अंतरा

प म म प सां नि | सां सां नि सां सां | रीं रीं नि सां सां, | गं रीं गं मं गं रीं
नीं द ना रै | ऽ न दे न | ना चै ऽ न, | स ही न जा
० ३ × २

– सां, नि सां रीं | नि ध प, ग री | ग प म ग म | ग री ग (सा) प, सां
ऽ ये, बि र | ह बि था, वा | हे बि ना न | मा ऽ ने, जि
० ३ × २

प ध (म) गरी; ग म | म ग री ग री सा
या मो राऽ; शु | भ स गु न | --- इत्यादि स्थायी के अनुसार
० ३

राग नटमल्हार-एकताल (विलंबित)

स्थायीः मनवा मोरा न माने री सजनी
पिया बिन एक घरि पल छिन
मोहे चैन न आवे।

अंतराः राह तकत हूँ निसदिना आवनकी उनके
कहूँ कासे अपनी बिथा
को मनाये वाहे लावे ॥

स्थायी

नि सासा | ग रे गरीग- प मगमरी | नि सा रे नि सा | नि सा नि सा नि सासा |
मन | वा ssss मो राssन | मा ने ss | री ss ss सज |
म रेप मप | प सांसां सां धनि पप | प मप मग- मे | सा रीसा धनि प नि प |
नीऽ ss | पिया ss बिन | एक घरिऽ ऽ | पल ss छिन |
नि ग सारी ग सा | प सांपे ध पध | (मे) पगे | मरी सा नि | रीं नि सा नि सासा ||
मोहे ऽ ऽ | चैऽ नन | आ ss | ऽऽ वे | ऽ ऽ मन ||

अंतरा

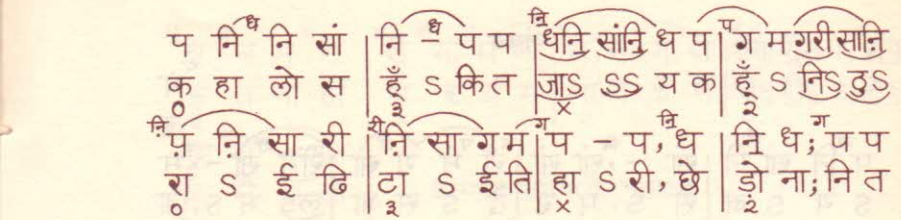
प सां म- पनि सां - निसांसां | नि सां निसां | नि सांसांसां | गं रींगंमं- रींसां | सां नि धं धनि प |
राssहऽ तकत | हूँ ss | निसदि | नाssऽ आऽ | वनऽ की |
प मप सां निसांरीं | सां नि धप- ग मरी | प मप सां निसांरींगंमं रीं | सां धं निप |
उन केऽ ऽ | कहूँऽऽ काऽ | से अप नीऽऽऽऽ बि | था कोऽ ऽ |
नि सारी ग रीगप | म गरीग सा रीं नि सा | नि सा नि सासा ||
मना ऽ ऽ ऽ | ये वाऽऽ हे | ला ऽऽ | वे ऽऽ मन ||

राग बिहागडा - त्रिताल (मध्यलय)

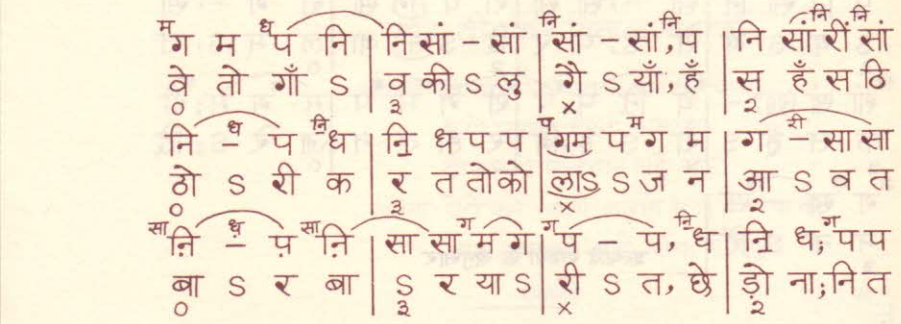
स्थायीः नित करत रार तुम हमसों लंगर
अब कहालो सहूँ कित जाय कहूँ
निठुराई ढिटाई तिहारी, छेड़ो ना |
अंतराः ये तो गाँव की लुगैयाँ हँस हँस ठठोरी करत
तोको लाज न आवत, बार बार या रीत छेड़ो ना ||

स्थायी

ग प प
नि त
म ग म ग (सा) | नि - रीं नि सा | म ग म प नि ध | निध प, म ग म |
करत रा | ऽ र तु म | ह म सों लं | गऽ र, अब |



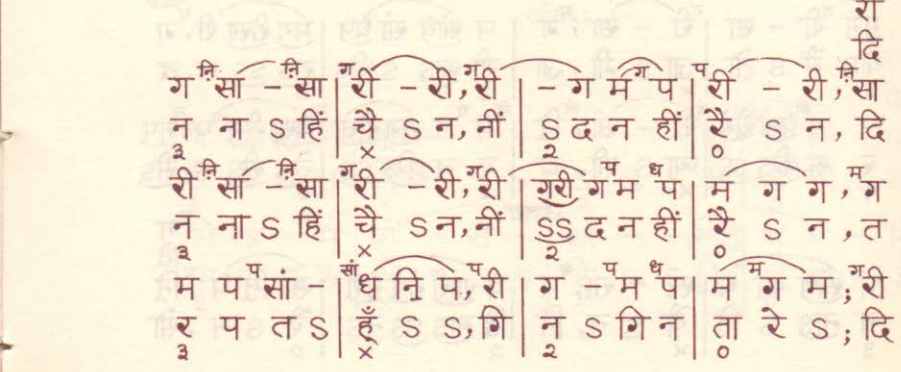
अंतरा



राग छायातिलक- त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः दिन नाहिं चैन नींद नहीं रैन
तरपत हूँ गिन गिन तारे।
अंतराः जाय बसे परदेस बालम
तकत हूँ राह बिरहा तन जारे॥

स्थायी



अंतरा

प सां नि सां नि	सां – ,नि सां सां	गं रीं पं मं गं रीं सां	गं रीं गं शीं सां – ,प म
ऽ य ऽ ब	से ऽ, प र	दे ऽ स बा	लु ऽ म ऽ, जा
३	×	२	०
प सां नि सां नि	सां – ,नि सां सां	गं रीं पं मं गं रीं सां	गं रीं गं शीं गं – ,शीं सां
ऽ य ऽ ब	से ऽ, प र	दे ऽ सऽ बा	ल म ऽ, त
३	×	२	०
नि सां सां (सां) –	सां ध नि प, म प	ध रीं ग म प	म म ग म; ग री
क त हूँ ऽ	रा ऽ ह, बि	र हा त न	जा रे ऽ; दि
३	×	२	०
री ग नि सां – नि सां			
न ना ऽ हिं			
३	--- इत्यादि स्थायी के अनुसार		

राग बिलहरी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: सैयाँ मेंतो जागी, जागी सारी रात
दरस की प्यासी चरन की चेरी।
अंतरा: दिन नाहीं चैन निंदिया न रैन
सोहत नाहीं घर अंगना, भई में बोरी॥

स्थायी

				म गप
				सैऽ
मग री – सा	री – सा, ग	प सांध सां धप	मग रीसा री, ग	
याँऽ मैं ऽ तो	जा ऽ गी, जा	गी साऽ ऽ रीऽ	राऽ ऽऽ त, द	
३	×	२	०	
प प धसां रींगं	रीं – सां, निं	ध प मग रीसा	धसा रीग प; गप	
र स कीऽ ऽऽ	प्या ऽ सी, च	र न कीऽ ऽऽ	चेऽ रीऽ ऽ; सैऽ	
३	×	२	०	

अंतरा

				प ग
				दि
प सांध सां ध	सां – सां, प	ध सांरीं गंमं गंरीं	सां नि ध, पनि	
न नाऽ ऽ हिं	चै ऽ न, निं	दि याऽ ऽऽ नऽ	रै ऽ न, सो	
३	×	२	०	

नि ध ध प म म ग | ग री री सा सा म ग | मे, ग री ग री | सा धसा रीग पे; म गप
ह त ना हीं | घ × र अं ग | ना, म ई मैं | ३ बोऽ रीऽ ऽ; सेऽ ०

मुग ग री – सा
याँऽ ३ मैं ऽ तो | --- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग दीपक – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: दीपन की ज्योत तारन को चन्दा
भयो प्रकाश धरनी अकाश
दोऊ भये उजियार चहूँ ओर।
अंतरा: ऐसे समे आली आगम भयो है पिया को
अत हुलसाये परी जिया मोरा॥

स्थायी

सा प़
दी
ध प़ ध़ प़ म़ प़ | सा नि़ सा सा, सा री | री नि़ सा नि़ सा म | ग री सा, नि़ सा
प न की ऽ | ज्यो ऽ त, ता | × र न को ऽ | २ च ऽ न्दा, भ ०
सा नि़ ध़ प़ म़ प़ | सा नि़ सा सा, नि़ सा | म ग मप ध प मप | प ग ग री सा, नि़ सा
यो प ऽ र | का ऽ स, ध | × र नीऽ ऽ अऽ | २ का ऽ स, दो ०
म ग म प ध ध | प नि़ ध प | ध म म, म प | प ग ग री री सा; सा प़
ऽ ऊ ऽ भ | ३ ये ऽ उ जि | × या ऽ र्, च | २ हूँ ओ र्; दी ०

अंतरा

प म
ऐ
प सां नि सां नि सां नि | सां – – – | – – –, सां रीं रीं नि सां –, म प
ऽ से ऽ स | ३ मे ऽ ऽ ऽ | × ऽ ऽ ऽ, आ | २ ऽ ली ऽ, आ ०
सां नि सां – मं सां | गं – रीं – | सां – –, सांनि़ ध प –, प नि़
ग म ऽ भ | ३ यो ऽ ऽ ऽ | × है ऽ ऽ, पिऽ | २ या को ऽ, अ ०

नि ध प म ग | ग रे सा –, नि सा | म ग मप ध मप | प ग रे सा; प
त हु ल सा | ऽ ये ऽ, प | ऽ रीऽ ऽ जिऽ | या मो रा; दी
३ × २ ०
ध प ध म प
प न की ऽ | ---- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग दीपक-एकताल (विलंबित)

स्थायी : चौंक पुरावो री आली अंगना आज
सरस सुगंध अंग लगाऊँ, शुभ घरी शुभ दिन मनाऊँ।

अंतरा : आज घर आये लालमुवा,
गरे लगाऊँ मंगल गाऊँ॥

स्थायी

प नि ध प | ध म प, सा नि ध प | सा नि सा | रे सा नि सा | ग रे | सा गम |
चौं ऽ ऽऽ | ऽऽ ऽ, क पु | रा ऽऽ | ऽ, ऽऽ खो री | आ ऽ | ली अंग |
३ ४ × ० २ ०
प ध म | ग रे सा | सा नि ध प | सा गं म, प ध | ध प नि | ध प |
ना ऽ | ऽ ऽऽ | आ ऽ ऽज | सं र स, सु | गं ऽ ऽ | ऽ ध |
३ ४ × ० २ ०
ग म, गम म गम, गमप, म | गरी सा | सप नि सा | रीसा गमप | धमे पगे | रे सा; ‖
अं, ऽऽ गऽ, ऽऽऽ, ल | गाऽ ऊँ | शुभ घरी | शुभ दिन म | नाऽ ऽऽ | ऽ ऊँ;
३ ४ × ० २ ०

अंतरा

प म प | धम, प निनि | सां निसां | सां सांसांमं | गरीं सांनि | ध प |
आ ज | ऽऽ, ऽ घर | आ ऽऽ | ये बालमु | वाऽ ऽऽ | ऽ ऽ |
३ ४ × ० २ ०
प मप नि धप, नि | धप मग | रे सा | सा ग, मप | धमे पगे | रे सा; ‖
गरे ऽऽ, ल | गाऽ ऽऽ | ऽ ऊँ | मं ऽ, गल | गाऽ ऽऽ | ऽ ऊँ;
३ ४ × ० २ ०

राग मिश्रपहाडी–पालना–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: जसोदा हरि पालने झुलावै।
हिलरावै दुलरावै मल्हावै
जोइ सोइ कछु गावै ॥जसोदा ...

अंतरा-१: मेरे लाल को आऊँ निंदरिया, काहे न आनि सुवावै।
तू काहे न बेगीसी आवै, तोको कान्ह बुलावे ॥जसोदा ...

अंतरा-२: कबहुँ पलक हरिमूँदि लेत है, कबहुँ अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै रहि, करि कर सैन बतावै ॥जसोदा-

अंतरा-३: इहि अंतर अकुलाय उठे हरि, जसुमति मधुरे गावै।
जो सुख 'सूर' अमर मुनि दुर्लभ, सो नंद-भामनि पावै ॥जसोदा-

(टीप: 'सूरदास' जी के इस पद का केवल स्वरकरण लेखक ने किया है।)

स्थायी

						ग	म
							ज
मग रीग सा नि॒ध॒	नि॒ ध॒ प॒ सा ध॒ सा	सा ग रीग सा ग री	ग – ग –,				
सो ऽ ऽऽ दा ऽऽ	ह रि पा ऽ	ल ने ऽ ऽ झु	ला ऽ वै ऽ,				
२	०	३	×				
ध॒प॒ प॒ सा ध॒ सा	सा – – –	– –, नि॒ ध॒ प॒	सा ध॒ सा सा ग री				
हि ल रा ऽ	वै ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ, दु ल	रा ऽ वै म				
२	०	३	×				
ग – ग –,	सा ग – ग री ग	– ध म प पम	म ग म गरी; ग				
ल्हा ऽ वै ऽ,	जो ऽ इ सो	ऽ इ क छुऽ	गा ऽ वैऽ; ज				
२	०	३	×				
(सा) – नि॒ ध॒							
सो ऽ दा ऽ	--- इत्यादि						
२							

अंतरा-१

सा नि॒ ध॒ नि॒ सा	– नि॒ सा –	नि॒ सारी गम ग म	ग रीं ग री सा –				
मे रे ऽ ला	ऽ ल को ऽ	आऽ ऽऽ ऊँ निं	दु रि या ऽ				
०	३	×	२				
सा ग – ग ग	री ग – म प	मग रीग री –	– – – –,				
का ऽ हे न	आ ऽ नि सु	वाऽ ऽऽ वै ऽ	ऽ ऽ ऽऽ,				
०	३	×	२				
नि॒ सा प प –	ध॒ प ध॒ पध॒ प	म ग म ग री	रीग मग रीसा नि॒ सा				
तू ऽ का ऽ	हे न बेऽ ऽ	गी ऽ सी ऽ	आऽ ऽऽ वैऽ ऽ				
०	३	×	२				

सा नि़ ध़ नि़ ध़ प़ | सा ध़ सा ग रीगसा ग री | ग – ग; ग म | मग रीग री सा नि़ध़
तो ऽ को ऽ | का ऽ न्हऽऽ बु | ला ऽ वै; ज | सोऽ ऽऽ दा ऽऽ
० ३ × २

नि़ ध़ प़ सा ध़ सा | सा रीग सा ग री | ग – ग – | – – – –
ह रि पा ऽ | ल नेऽ ऽ झु | ला ऽ वै ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
० ३ × २

अंतरा-२

सा ध ध ध, ध | नि ध नि ध प | ग प – ध ध पध | प म ग री
क ब हुँ, प | ल क ह रि | मूँ ऽ दि लेऽ | ऽ त है ऽ
० ३ × २

ग म ग री, नि सा | सा सा ग रीग सारी | री ग – ग – | – – – –
क ब हुँ, अ | ध र फ़ऽ रऽ | का ऽ वै ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
० ३ × २

सा ध़ – सा सा | री – री, ग री | – प म ग | ग री ग री सा सा
सो ऽ व त | जा ऽ नि, मो | ऽ न हे ऽ | है ऽ र हि
० ३ × २

सा नि़ ध़ नि़ ध़ प़ | सा ध़ सा ग रीगसा ग री | ग – ग; ग म | मग रीग री सा नि़ध़
क रि क र | सै ऽ नऽऽ ब | ता ऽ वै; ज | सोऽ ऽऽ दा ऽऽ
० ३ × २

नि़ ध़ प़ सा ध़ सा | सा रीग सा ग री | ग – ग – | – – – –
ह रि पा ऽ | ल नेऽ ऽ झु | ला ऽ वै ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
० ३ × २

अंतरा-३

प ग ग प – | ध ध नि ध ध | पध निसां निसां | सां ध नि ध प प
इ हि अं ऽ | त र अ कु | लाऽ ऽऽ य उ | ठे ऽ ह रि
० ३ × २

म ग म ग गरी | सा सा रीग सारी | री ग – ग – | – – – –
ज सु म तिऽ | म धु रैऽ ऽऽ | गा ऽ वै ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
० ३ × २

सा म – म म | ग म – म म | ग म म ध प ध | प ध प म ग
जो ऽ सु ख | सू ऽ र अ | म र मुनि | दु र ल भ
० ३ × २

ग म ग री सा | नि सा – रीगसा ग री | ग – ग; ग म | मग रीग री सा नि़ध़
सो ऽ न न्द | भा ऽ मऽऽ नि | पा ऽ वै; ज | सोऽ ऽऽ दा ऽऽ
० ३ × २

नि़ ध़ प़ सा ध़ सा | सा रीग सा ग री | ग – ग – | – – – –
ह रि पा ऽ | ल नेऽ ऽ झु | ला ऽ वै ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
० ३ × २

राग हंसध्वनि – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : हे रिध सिध दायक गणनायक गजानन
लम्बोदर हेरम्ब विनायक नमो नमो नमस्ते।
अंतरा : विघ्न हरन विघ्नेश गणेश विधापति गणपत
शरण चरण तिहारे आयो है आज 'सुजन'
नमो नमो नमस्ते॥

स्थायी

नि सां, निरीं गंरीं सांनि	पग रीसा निप निरी	ग ग पनि सांरीं	सांनि पग रीसा,री
हे, रिऽ धऽ सिऽ	धऽ दाऽ यऽ कऽ	ग ण नाऽ ऽऽ	यऽ कऽ ऽऽ,ग
×	२	०	३
नि सा – नि प,	सा नि – री –	प ग ग, प –	निसां रींसां,नि
जा ऽ न न,	ल ऽ म्बो ऽ	द र, हे ऽ	रऽ ऽ म्ब,वि
×	२	०	३
पग रीसा निरी गप,	निसां रींगं रींसां, निप	गरी निरी गप, निसां	रीं – सांनि पनि
नाऽ ऽऽ यऽ कऽ,	नऽ मोऽ ऽऽ, नऽ	मोऽ ऽऽ ऽऽ, नऽ	म ऽ स्तेऽ ऽऽ
×	२	०	३

अंतरा

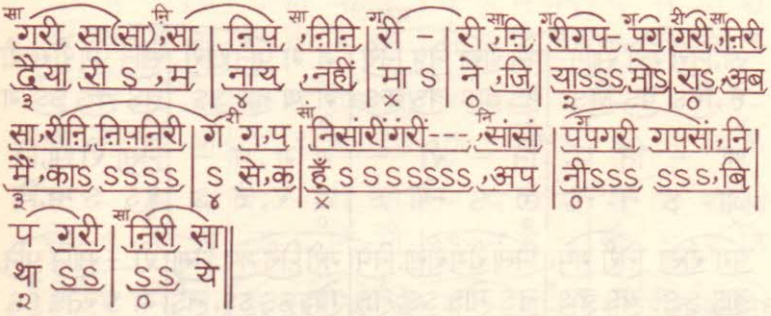
नि रीं सां नि प	ग री सा नि री	नि सा – सा नि,ग री	ग – ग,प
वि घ न ह	र न वि घ	ने ऽ श,ग	णे ऽ श,वि
०	३	×	२
– सां निरीं गंपं गंरीं	सां, नि प नि रीं	गं रीं सां सां,	सा नि री ग,प
ऽ द्याऽ ऽऽ पऽ	ति, ग ण प	त श र ण,	च र ण,ति
०	३	×	२
निसां रींसां निप,गरी	निरी गंप गरी,निरी	सांनि पं निरी गंप,	निसां रींगं रींसां,निप
हाऽ ऽऽ रेऽ,आऽ	योऽ ऽऽ हैऽ,आऽ	जऽ सु जऽ नऽ,	नऽ मोऽ ऽऽ,नऽ
०	३	×	२
गरी निरी गंप, निसां	रीं – सांनि पनि	सां,निरीं गंरींसांनि	पग रीसा निप निरी
मोऽ ऽऽ ऽऽ, नऽ	म ऽ स्तेऽ ऽऽ	हे,रिऽ धऽ सिऽ	धऽ दाऽ यऽ कऽ
०	३	×	२

इत्यादि स्थायी के अनुसार...

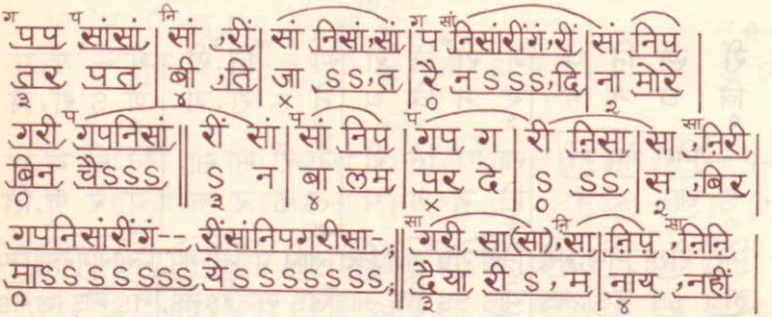
राग हंसध्वनि- एकताल (विलंबित)

स्थायी : दैया री मनाय् नहीं माने जिया मोरा
अब मैं कासे कहूँ अपनी बिथा ये ।
अंतरा : तरपत बीति जात रैन दिना मोरे
बिन चैन, बालम परदेस बिरमाये ॥

स्थायी



अंतरा



इत्यादि स्थायी के अनुसार ---

राग हंसध्वनि- होरी- धमार (विलंबित)

स्थायी : होरी नाचत श्री शंभो महादेव, निरत ताण्डव
कैलास धाम पर, अति धूम मची है, काँपत
जल थल व्योम थर थर थर |

अंतरा : जीव जंत सुरहु नर मुनि, सकल जग भयभीत
निरखत, मानो महा प्रलय आयो है, हाथ जोर
ब्रह्मा अस्तुत गावत – हो प्रसन्न शंभो महादेव,
गंगाधर शिव-पिनाक भूतनाथ, हे जय हर हर ||

स्थायी

सां नि सां गं रीं	गं रीं सां नि	प ग री सा –	– , सा प़
हो री ना	च त सि रि	श ऽ ऽ म्भो ऽ	ऽ , म
०	३	×	२
सा – –	प ग प सां नि रीं	गं रीं सां नि प	सां नि सां
हा ऽ ऽ	दे ऽ ऽ व	नि र त ता ऽ	ष्ड व
०	३	×	२
रीं – –	पं गं पं गं रीं सां	नि सां नि प ग री	प ग प
कै ऽ ऽ	ला ऽ ऽ स	धा ऽ म प र	अ त
०	३	×	२
सा नि़ री ग	री सा – – , सा नि़	नि प़ नि़ री ग –	– – ,
धूं ऽ ऽ	म ऽ ऽ , म	ची ऽ ऽ है ऽ	ऽ ऽ ,
०	३	×	२
नि प़ नि़ सा	ग री री ग ग	प – प सां नि नि	रीं रीं
काँ प त	ज ल थ ल	व्यो ऽ म थ र	थ र
०	३	×	२
नि सां सां ; गं रीं	गं रीं सां नि		
थ र ; ना	च त सि रि	... इत्यादि	
०	३		

अंतरा

ग प ग री	नि सा – – सा	सा प़ प़ प़ सा नि़ नि़	री री
जी ऽ व	जं ऽ ऽ त	सु र हु न र	मु नि
०	३	×	२
ग ग ग	प प सां नि नि	रीं – रीं गं रीं	सां सां
स क ल	ज ग भ य	भी ऽ त नि र	ख त
०	३	×	२

ग सां सां सां ग सां
प - - | नि - -,रीं | सां - पं गं रीं रीं | नि रीं
मा ऽ ऽ | नो ऽ ऽ,म | हा ऽ प्र ल य | आ यो
० ३ × २

नि सा सा प सां
सां - -, | ग री सा सा | ग प पं नि - | रीं -
है ऽ ऽ, | हा ऽ ऽ थ | जो ऽ र ब्र ऽ | ह्मा ऽ
० ३ × २

सा सा
नि सा री | ग - ग ग | प री री नि री | सा सा
अ स्तु त | गा ऽ व त | हो ऽ प्र स ऽ | ऽ न्न
० ३ × २

सा सां
ग - री | ग - -,प | नि - सां रीं - | - रीं
शं ऽ ऽ | भो ऽ ऽ,म | हा ऽ ऽ दे ऽ | ऽ व
० ३ × २

सां सां
गं - रीं | नि - प प | नि सां रीं सां - | - सां
गं ऽ ऽ | गा ऽ ध र | शि व पि ना ऽ | ऽ क
० ३ × २

सा ग सां
नि - री | ग - - ग | प - - नि नि | रीं रीं
भू ऽ त | ना ऽ ऽ थ | हे ऽ ऽ ज य | ह र
० ३ × २

नि गं नि
सां सां; रीं | गं रीं सां नि |
ह र; ना | च त सि रि |
० ३

---इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग हंसध्वनि- वर्णम्- आदिताल

(संस्कृत में)

पल्लवी : वन्दे श्री विश्वेशं योगेशं
देवं शंभो बम्भोला नाथं |

अनुपल्लवीः गोरांगं गौरीनाथं शंकरम्
विश्वाधारं गंगाधरम् तं ॥

चरणम् : नित्यं शान्तं धीरं शिवम् ॥

टीपः मूल कर्णाटक वर्णम् में, तेलगू शब्दों के स्थान पर लेखक ने संस्कृत शब्दों को रखा है।

पल्लवी

ग-री-, सा---, नि़सारीग रीरीसानि़ | सारीसासा,नि़प,नि़सा, | री,प़-नि़,-सा-री ||
वंऽदेऽ, श्रीऽऽऽ, विऽऽऽ, शेऽऽऽ | शंऽऽऽ, ऽऽ,योऽ | ऽ,गेऽऽ, ऽशंऽऽ ||
× २ ३

गरीसा,नि, सारी,प़नि, सारीग,प, गनिप़-, | सांनिसांरीं -,सांनिप़ | प़,ग-री, -सा-री ||
दे ऽऽ,वं, ऽऽ,शंऽ, ऽऽऽ,मी, ऽऽ,बंऽ | भो ऽऽऽ, ऽ,लाऽऽ | ऽ,नाऽऽ, ऽथंऽऽ ||
× २ ३

अनुपल्लवी

प़गरी,सा, नि़सा,री-, ग-,रीरी,सासानि़प़ | नि़सारीग, -सा,गरी | गपसांनि,सां- - - ||
गौऽऽ,रं, ऽऽ,गंऽ, ऽऽ,गौऽ,रीऽऽऽ | नाऽऽथं, ऽऽ,थंऽ | ऽऽऽक, रंऽऽऽ ||
× २ ३

रींसांनि,प़,निसांरींगं, सांरींगंपं, गंरींसांनि, | रींरीं-सां,निप़,पग | -रीसानि़,प़निसारी ||
वि ऽऽ,श्वा, ऽऽऽऽ, धाऽऽऽ,रंऽऽऽ, | गंऽऽगा, ऽऽ,धरं | ऽऽऽऽ,तंऽऽऽ ||
× २ ३

मुक्तायंप्

ग-रीग,रीसारी-, नि़सारीग,रीरीसानि़ | री-,नि़ग, री,नि़सारी, | प़नि़सारी ग- -,प ||
× २ ३

गरीसारी, -,गपनि, रीगप,नि़ सारीगप़, | प़नि़सारी -,गपनि, | रीगपनि सां- -,रीं ||
× २ ३

रींसांनिप़, -,निगंरीं, सांनि-,प़, निसांरींगं, | प़-निसां, -रींगंरीं, | प़निसांरीं गंरीं,निरीं ||
× २ ३

गंपंगंरीं, सांनि,सांरीं, सांनिपग, रीगपनि | गंरीं-सां,निप़,रींसां, | -निपग, -,रीसारी ||
× २ ३

चरणम्

नि- - -, - -,सां-, रीं -,सांनि,प़,पगरी | ग- -,ग,रीसारी-, | रीसानि़,सा,रीग-प़ ||
नि ऽऽऽ, ऽऽ,त्यंऽ, ऽऽ,शांऽ, ऽ,तंऽऽ | धीऽऽऽ, ऽऽरंऽ, | ऽऽऽ,शि, ऽवंऽऽ ||
× २ ३

चिट्टस्वरम्

१. नि-प़-, - -,ग-, - -,री-, सा-नि़- | प़- -,री, - -,नि़- | -,सा-,री, -,ग-,प़ ||
× २ ३

२. नि-पग,रीसा,री-, गरीसानि़, प़-रीनि़, | -,गरीनि़, प़निसारी | -,रीग,नि़ सारीगप़, ||
× २ ३

३. निपगरी, नि़गरीनि़, प़निप़सा, नि़रीसाग, | रीपगनि, पसांनिरीं, | निगंरींनि, रींनिपग, ||
× २ ३

पनिसांरीं,गं,गपनि, सांरीं,रीग,पनिसां,नि़ | गंरींसांनि़, पंरींसांनि | प़,गरी,नि़, सारीगप़ ||
× २ ३

४. सां- - -, - -,निरीं, सांनिपग,रीसारीग, | प़- - -, - -,सांनि | पगरीसा, रीगपनि, ||
× २ ३

सांरीं-,नि़,रींनिपग, परी-,ग,पगरीसा, | रीनि़-,ग, री,गपनि, | रीगपनि, सां- - -, ||
× २ ३

निपगप़, - -,रीग,पनि-,ग, पनिसांरीं, | पनिसांरीं, -,गं,निसां | निगंरींरीं, नि-,पनि ||
× २ ३

गंरीं-,नि,सांरीं,पंगं, -रींसांनि़, पनिसांरीं | सां- -,प़, - -,निप़, | गरीसा,नि़, सारीगप़ ||
× २ ३

राग हेमनाट

राग हेमनाट यह 'हेमकल्याण' एवम् 'नाट' इन दोनों के संमिश्रण से बना हुवा राग है, जिसमें सब स्वर शुद्ध लगते हैं और इसीलिए इसे बिलावल थाट का राग माना जाता है। इस राग में "रेसा, पधप, सा, गमरे, सा" इस स्वर-समुदाय द्वारा 'हेम' तथा "सारी, रीग, गम, परी, सा" से 'नाट', इस प्रकार इन दोनों रागांगों का प्रयोग इसमें बार बार दिखाई देता है। निषाद स्वर का प्रयोग इस राग में अवश्य होता है, किन्तु उस पर न्यास नहीं होता। इस राग में वादी स्वर षड्ज तथा संवादी पंचम माना जाता है। गान समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। गम्भीर प्रकृति का आलाप योग्य, मंद्र-मध्य-तार इन तीनों सप्तकों में फैलता हुवा राग है। इसमें एक विशेषता यह है कि "पधनिसारेग" इस प्रकार का सरल स्वरविन्यास इस राग में बहुत आता है। सा, ग तथा प इन स्वरों पर न्यास किया जा सकता है।

स्वरविस्तार

सा, रेसा, धपप, पधपसा, रेसा, सागम, मरेसा, पमग, मरेसा, धनिरेग, मरेसा, निरेसा।
सागम, गमरे, धनिरेग, मरे, पगमरे, निरेगमपरे, सा, पधनिसारेग, गमपगमरेसा, निरेसा।
गरेसा, पधनिसारेग, मरेप, धपमग, मगमरे, धनिरेग, मपगमरे, निरेसा।
मरेसा, धपप, सारेसा, गगमरे, निरेसा, पधनिसारेगमरेसा, पधपगमरेप, धपमगमरे, पसांधपनिरेगमपरे, निरेसा।
पधपगमरेप, मपधप, निरेगमरे पपरेसा, पधनिसारेगमपसांधपरेंसांधप, धनिरेंगंमंरेंसांपधनिसांरेंग, मंरेंसां, पंरेंसां-(प)मग, गमपसां, (प), निरेगमपरे, धनिरेग, गमगमपरे, सा।
मरेप, सांधसां, सांसांरेंसां, धनिरेंगं, मंरेंसां, पंरेंसां, धनिरेंगं, गंमं, रेंसां, गंरेंसां, (प), मग, गमपरे, सा, पधनिसारेग, गमपगमरे, सा।

तानों का क्रम इस प्रकार होगा:

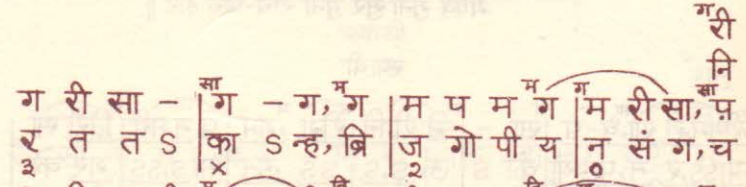
रेसासा धपपप सासारेगमरेसासा, पगमरेसासा, पपधनि सारेगमप गमरेसा।
धनिरेगमरेसासा, पधनिसारेगमप गमरेसासा, निरेगमरे सासाधप, धनिरेग, गमप गमरेसासा।
पगमरेप, धपमगमरेप, सांसांधपमगमरेप, सांसांरेंगंमंरें सांसांधप मगमरेप, पपधनिसांरें गंमंपगंमंरें सांसांधपमगमरेप, धपमग, गमप गमरेसासाधप, धनिसारेगमप, रे, सा।
गरेसानि धनिरेग, गमप गमरे सानिधनिरेग, पपधप मगमरे सानिधनिरेग, पपधपप सांसांधपप धनिसांरेंगंमंरें सांसांधपप मगमरे सानिधनिरेग, पपधनि धनिसारे, गममरे, सा।

सूचना: इन उपरोक्त तानों में स्वल्पविराम चिन्ह केवल तानों के विभिन्न टुकड़े दर्शाते हैं, उन पर रुकने का आशय नहीं।

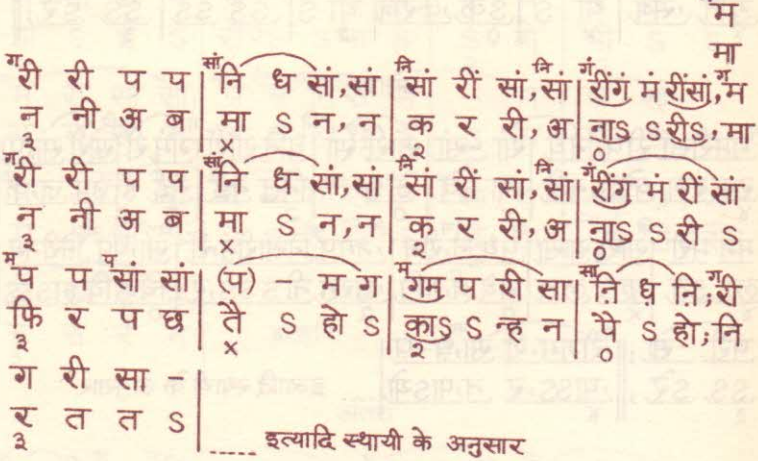
राग हेमनाट - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः निरतत कान्ह ब्रिज गोपीयन संग
चलो री सखि राधे हमहूँ चले।
अंतराः माननी अब मान न कर री अनारी
फिर पछतैहो कान्ह न पैहो॥

स्थायी



अंतरा



राग हेमनाट–एकताल (विलंबित)

स्थायी : पार न पायो कोऊ गुन-सागर को
नाद विधा ये अप्रंपार
गायक-गुनी सब थाके कर बिचारे।

अंतरा: रस रंग को नहीं आवे अंत
नित नई नई उपज फलत फूलत
गंधर्व गुनी सुर मुनी रचि-पचि हारे ॥

स्थायी

ग रीगम री सा ध़-प़	म सा –	सा नि़ री नि़	ग रीग	म गम	प ग मरी	सा नि़री सा	
पाऽऽऽर न पाऽयो	को ऽ	ऊ ऽ ऽ	ऽऽ	गुन	सा ऽ ऽऽ	गर को	
४	×	०	२		०	३	
सा नि़ सारीगम री सा	नि़ म रीप म	प	– धप	मग मरी	सा नि़सा	सा प़ नि़ धनि़	
नाऽ ऽऽऽ दर वि	थाऽ ये	ऽ	अप्रं	पाऽ ऽऽ	र ऽऽ	गा यक	
४	×	०		२	०	३	
ग रीग म गम	प ग मरी म गमप	सां –	नि़री गम	पनी –सा;			
गुनि सब	था ऽ ऽके करबि	चा ऽ	ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽरे;			
४	×	०	२	०	३		

अंतरा

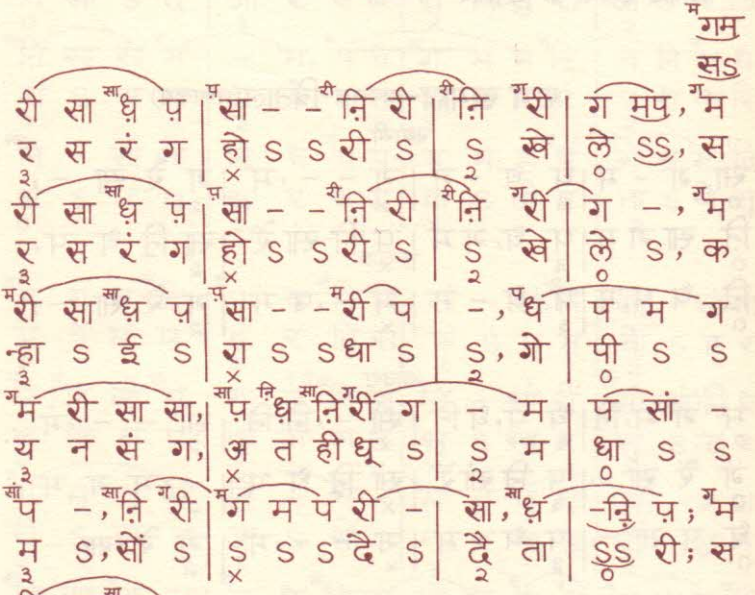
म गमरीसा रीप निध	सां –सां	सांरीं सां	धनि सांरीं	गंमं रीं	सांरीं सां(प)		
रस रंग कोऽ नहीं	आ ऽवे	अंऽ त	नित नई	नई ऽ	उप ज फ		
४	×	०	२	०	३		
मग मरी	सारी सासो	प़ध़ नि़ रीग	गमप निसांरींगं रीं	सां धप	नि़रीगम		
लऽ ऽत	फूऽ लत	गंध र्व गुनि	सुरमु नी ऽ ऽऽ र	चि पचि हाऽऽऽ			
४	×	०	२	०			
परी –सा;	ग रीगम री सा ध़-प़						
ऽऽ ऽरे;	पाऽऽ र न पाऽयो	.... इत्यादि स्थायी के अनुसार					
३	४						

राग हेमनाट-होरी-धमार

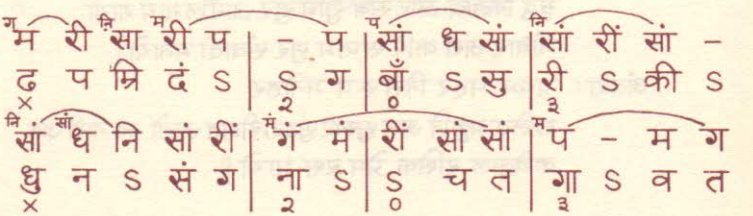
स्थायीः सरस रंग होरी खेले कन्हाई
राधा गोपीयन संग अत ही धूम धाम सों
दै दै तारी।

अंतराः ढप मृदंग बाँसुरी की धुन संग
नाचत गावत, सबहु ब्रिज-मंडल
गरज उठ्यो राग ताल सों, ऐसी न्यारी॥

स्थायी



अंतरा



म ग म प ग म री | नि सा – | सा ध़ प़, | म़ प़ नि़ सा नि़ ग रीं
स ब इ ब्रि ज | मं ऽ | ऽ ऽ ल, | ग़ र ज उ
× | २ | ० | ३
ग – –, म ग – | – म | प सां – | प – , सा नि़ ग रीं
ठ्यो ऽ ऽ, रा ऽ | ऽ ग | ता ऽ ऽ | ल ऽ, सों ऽ
× | २ | ० | ३
म ग म पे प रीं – | सा ध़ | नि़ प़; ग म | रीं सा सा ध़ प़
ऽ ऽ ऽ पे ऽ | सी न्या | ऽऽ रीं; स | र स रं ग
× | २ | ० | ३

----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग खमाज- सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

सा ग – म | प ध – म | ग – – , म | ग रे सा – ,
० | ३ | × | २
नि़ सा ग म | प ध, ग म | प नि सां रें | सां नि़ ध प,
० | ३ | × | २
नि़ ध प, म | प ध – म | ग – , प म | ग रे सा – ;
० | ३ | × | २

अंतरा

म ग म, नि़ | ध प, ध नि | सां – , नि नि | सां – – , मं
० | ३ | × | २
गं रें सां –, | प नि सां रें | सां नि़ ध प | – , म ग म
० | ३ | × | २
ध प सां –, | प ध – म | ग – – , म | ग रे सा – ;
० | ३ | × | २

राग खमाज- लक्षणगीत -त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : 'सुजन' अब राग खमाज सुनो
मृदु निखाद और सब शुचि सुर जामें लगाय गायो
गांधार अंश करि सप्तम सुर संवादी मनायो।

अंतरा : प्रथम पहर निस रूप मनोहर
ललित प्रकृति अत सुस्वर सुंदर रीझत जासों नर-नारी जन
कविकुल रसिक प्रेम रस पायो ॥

स्थायी

प नि
सु

ध ध प म ग | म ग म प ध | नि – सां नि | सां नि, नि सां रीं
ज न अ ब | रा ऽ ग स्व | मा ऽ ज सु | नो ऽ, मृ दु
० ३ × २

सां नि ध प | म ग म प ध | म ग म ग, | म ग री सा
नि स्वा ऽ द | औ र स ब | शु चि सु र, | जा ऽ में ल
० ३ × २

सां नि सा सा ग | – म, ध प ध | म ग म नि | ध नि ध प ध,
गा ऽ य गा | ऽ यो, गा ऽ | न्धा ऽ र अं | ऽ श क रि,
० ३ × २

सां नि – सां सां | नि ध प प | ग म प ध | ग म ग; नि
स ऽ स म | सु र स म | वा ऽ दी म | ना ऽ यो; सु
० ३ × २

अंतरा

म ग म नि | प ध सां नि नि | सां – सां; नि | सां – सां सां
प्र थ म प | ह र नि स | रू ऽ प, म | नो ऽ ह र
० ३ × २

म प सां नि सां मं | गं गं रीं सां नि सां | नि – सां रीं | नि सां (सां) नि ध
ल लि त प्र | कृ ति अ त | सु ऽ स्व र | सु ऽ न्द र
० ३ × २

म ग म प सां | नि – ध – | प म म ध प ध | (म) – ग ग
री ऽ झ त | जा ऽ सों ऽ | न र ना ऽ | री ऽ ज न
० ३ × २

सां नि सा म ग म | ध प ध नि, सां | नि ध, प ध | म ग म ग; नि
क वि कु ल | र सि क, प्रे | ऽ म, र स | पा ऽ यो; सु
० ३ × २

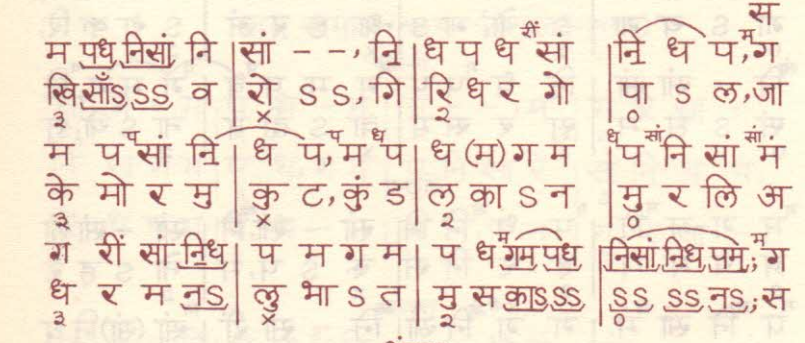
ध ध प म ग |
ज न अ ब |
० ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग खमाज-त्रिताल (मध्यलय)

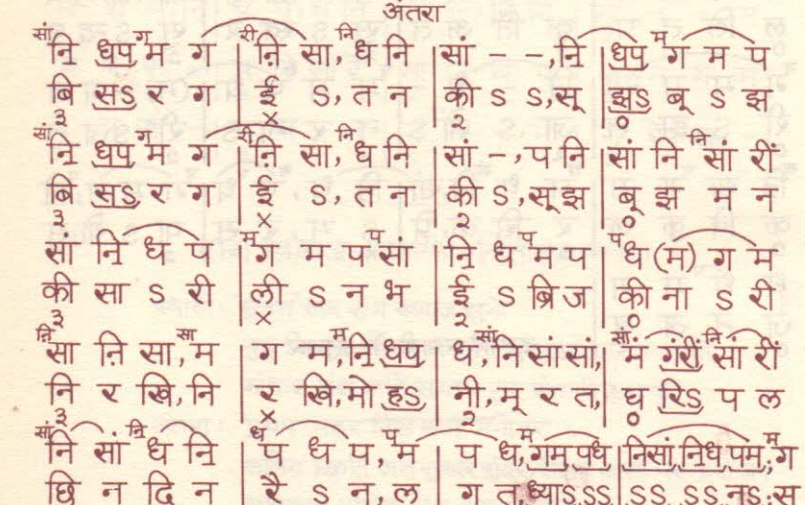
स्थायी: सखि साँवरो गिरिधर गोपाल
जाके मोर मुकुट कुंडल कान
मुरली अधर मन लुभात मुसकान।

अंतरा: बिसर गई तन की, सूझ-बूझ मन की सारी,
लीन भई ब्रिज की नारी, निरखि निरखि मोहनी
मूरत, घरि पल छिन दिन रैन लगत ध्यान॥

स्थायी



अंतरा



राग खमाज– दाक्षिणात्य रूपक (मध्यलय)

स्थायीः जय विष्णु जय हो जय नारायण सुनु चतुर
धन धन धन भरतखण्ड विप्रान्वय भारतीय
तौर्यत्रिक कीर्ति-ध्वज जय हो नित जय तिहारी।

अंतराः अप्रम्पार नादो-दधि ताही को मंथन करि
श्रुति-सुर-लय-राग-ताल सबहु रतन किये सुलभ
दियो ग्यान ध्यान मान गुनियन को,
कहालों कीजे बखान, 'सुजन' कहे करि पुकार
जय जय हो जय तिहारी॥

स्थायी

म ग म	प –	प –	ध प ध	प म –	ग –,	म ग म	ध प	नि ध नि
जै S	वि S	ष्णु S	जै S	हो S	जै S,	ना S	रा S	य ण
×	२	०	×	२	०	×	२	०
सां (सां)	नि ध	प प,	नि ध	रीं सां	रीं रीं	नि सां	नि सां	– सां
सू S	नु च	तु र,	ध न	ध न	ध न	भ र	त ख	S ण्ड
×	२	०	×	२	०	×	२	०
सां रीं	नि ध	प ध	म ग	म ग	सा सा,	ग म	प –	प प
वि S	प्रा S	न्व य	भा S	र ती	S य,	तौ S	र्य S	त्रि क
×	२	०	×	२	०	×	२	०
सां रीं	सां नि	ध प,	नि –	नि –	नि नि	सां –	नि सां	– सां;
की S	र्ति S	ध्व ज,	जै S	हो S	नि त	जै S	ति हा	S री;
×	२	०	×	२	०	×	२	०

अंतरा

नि ध	नि ध	प ध	नि –	सां नि	सां सां	नि –	सां नि	सां –
अ प्रं	S पा	S र	ना S	दो S	द धि	ता S	ही S	को S
×	२	०	×	२	०	×	२	०
गं रीं	सां नि	ध प,	ग ग	म म	प ध	नि सां	नि सां	– सां
मं S	थ न	क रि,	श्रु ति	सु र	ल य	रा S	ग ता	S ल
×	२	०	×	२	०	×	२	०
नि सां	रीं नि	ध प	म प	ध प	म ग	ग, नि सा	– ग	– ग
स ब	हु र	त न	कि ये	S सु	ल भ,	दि यो	S ग्या	S न
×	२	०	×	२	०	×	२	०
म –	ग म	ा – म	प सां	नि ध	प –,	प ध	सांरींगं	सां नि
ध्या S	न मा	S न	गु नि	य न	को S,	क हा	लोंS S	की S
×	२	०	×	२	०	×	२	०

नि सां सां रीं | नि ध | प प, || प नि ध | प म | ग – || ग म ग रीसा | – सा
जे ऽ | ब खा | ऽ न, | सु ज | न क | हे ऽ || क रि | पु का | ऽ र
× | 2 | 0 | × | 2 | 0 | × | 2 | 0
म ग म | प ध | नि – | सां – | सां नि सां | – सां; ||
जै ऽ | जै ऽ | हो ऽ || जै ऽ | ति हा | ऽ री; ||
× | 2 | 0 | × | 2 | 0

टीप: इस गीत की रचना लेखक ने अपने गुरुवर्य पं. वि. ना. भातखण्डेजी के पुण्यस्मरण में की है।

राग मिश्र खमाज–कहरवा (मध्यलय)

स्थायी: जावो ना मथुरा न जावो ब्रिजबिहारी ब्रिज छाँडि के
ब्रिज के ग्वार-ग्वारनियाँ हम सब कर जोर जोर
बिनति करत मानो मानो हे ग्वार-गुसैंया कन्हैया।

अंतरा-१: भाँत भाँत केलि किये इहि गोकुल बिंदराबन
रास रच्यो अत सुन्दर जमुना तट, अत आनन्द दियो
ब्रिज बासिन को, न जावो भूलि न जैयो ब्रिज के बसैया॥

अंतरा-२: मधुर मुरलि धुन सुनि तुम्हरी वह, चहूँ ओर छायो
राग रंग रस, मगन भये गोप गोपीजन, खग मृग धेनु
सबहु वृक्ष वेली, जमुना जलहु भयो थिर इक छिन
सुमिरत लीला घरि पल छिन तुम्हरी, आँसु बहावत
हम ब्रिज जन, छाँडि न जैयो दुःख के हरैया॥

स्थायी

म ग – म ध | नि सां – –, नि || ध प म प | नि ध प | प (प) म ग
जा ऽ वो ना ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ, म || थु रा ऽ न ऽ | जा ऽ वो ऽ
× | ० | × | ०
–, ग म ग री | सा नि सा सा, ग | म प – ध | नि ध प –,
ऽ, ब्रि ज बि | हा ऽ री, ब्रि | ज छाँ ऽ डि | के ऽ ऽ ऽ,
× | ० | × | ०
प ग प ध सां | (सां) नि, ध प | म ग म ध नि सां | रीं सां नि ध
ब्रि ज के ग्वा | ऽ र, ग्वा ऽ || र नि या ऽ ऽ ऽ | ह म स ब
× | ० | × | ०

निध	निध –	नि	धपध	निं	सांसांनि	धप,	मगम
क	र जो ऽ	र०	जो ऽ र	× बि	न ति क	र०	त, मा नो
पध	सांरीं गंमं गंरीं	सां	नि सांसां	नि	धपपम	प (प)	म ग,
मा ऽ	ऽऽ ऽऽ नो ऽ	हे०	भा र् रु	× सैं	ऽ या क	न्हे०	ऽ या ऽ,

अंतरा-१

सांनि	– निसांनि	ध	नि सां –	सांसांनि	सां –	सांनि	निसांनि –
भाँ	ऽ त भाँ	ऽ०	त के ऽ	× लि कि ये ऽ		ड्ड०	हि गो ऽ
नि	नि सां (सां)	नि	धपप,	मध	– धनिध	निधनिरींसां	निध,
कु	ल बिं द	रा०	ऽ ब न,	× रा	ऽ स र	च्यो०	ऽऽ अत,
मग	मपध	सांनि	नि सां –	नि	धपप,	मंगं	गंगंमं
सु	ऽ न्द र	ज़०	मु ना ऽ	× तु	ट अ त,	आ०	न न्द दि
गं	रीं सांसां	धप	धसांरीं	गं	– –, सां	सांनि	सां सां –
यो	ऽ ब्रि ज	बा०	ऽ सि न	× को	ऽ ऽ, न	जा०	ऽ वो ऽ
निध	नि सांरीं	नि	धप –	नि	धपपम	प (प)	म ग;
भू	ऽ लि न	जे०	ऽ यो ऽ	× ब्रि	ज के ब	सै०	ऽ या ऽ;
मग	– मपध	निसां	– –, नि	धम	पनिध	प (प)	म ग
जा	ऽ वो ना ऽ	ऽऽ०	ऽऽ, म	× थु	रा ऽ न ऽ	जा०	ऽ वो ऽ

----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

अंतरा-२

ग प प प प | प प म ग म || प प प प | धं धसां रींगं रीं सां
म धु र मु | र लि धु न || सु नि तु म्ह | रीऽ ऽऽ व ह
× | ० | × | ०

ध प प धसां नि | - नि सां - || निं सां - नि ध | प म ग गै
च हूँ ऽ ओ | ऽ र छा ऽ || यो ऽ रा ऽ | गु रं ऽ ग
× | ० | × | ०

निं सा सा, म ग ग | ग म म - || प - प प | - प ध प,
र स, म ग | नु भ ये ऽ || गो ऽ प गो | ऽ पि ज न,
× | ० | × | ०

म ध ध ध धं ध - ध नि || ध प धसां नि नि | सां - सां -,
ख ग मृ ग | धे ऽ नु स || ब हु वृ ख | वे ऽ ली ऽ,
× | ० | × | ०

मं गं गं गं - | मं गं रीं सां || सांनि - सां सां | नि ध प प,
ज मु ना ऽ | ज़ ल हु भ || यो ऽ थि र | इ क छि न,
× | ० | × | ०

म ग म प ध | म ग (सा) - || सांनि सा ग ग | म म प प
सु मि र त | ली ऽ ला ऽ || घ रि प ल | छि न तु म्ह
× | ० | × | ०

सांधसां रींगं, निं सां - | सांसां नि सां नि || सां रीं गं रीं | सां नि ध प
रीऽ ऽऽ, आँ ऽ | सु ब हा ऽ || व त ह म | ब्रि ज ज न
× | ० | × | ०

निं ध नि सां रीं | नि ध प - || पनि ध प पं मं | प (प) म ग;
छाँ ऽ डि न | जै ऽ यो ऽ || दुः ख के ह | रै ऽ या ऽ;
× | ० | × | ०

म ग - म प ध | नि सां - - नि || ध पं म प नि ध | प (प) म गे
जा ऽ वो ना ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ म || शु रा ऽ ना ऽ | जा ऽ वो ऽ
× | ० | × | ०

..... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग खमाज- साधा- झपताल(मध्यलय)

स्थायी : कदम्ब की छैया ठाढ़े कन्हैया
साँवरी सलोनी सूरत मन भावनी।

अंतरा : मुकुट माथे सोहे मकर कुंडल कान
नेह भरी नैन ज्योति चित लुभावनी॥

संचारी : पीतांबर काछे गर बैजयंती
निरखि मन लज्यो मदन मूरत मन मोहनी॥

आभोग : अधर धरि माधुरी मुरली बजै सजे
रूप मिलि रागनी अत ही रिझावनी॥

स्थायी

ग म	ग म प ध	नि सां	सां – –	नि ध(मु)	प –,प	प ध	म ग –
क दं	ब की स	छै स	या स स	ठा ऽऽ	ड़े स,क	न्है स	या स स
×	२	०	३	×	२	०	३
नि –	सां नि,सां	सां (सां)	नि ध प	म ग म	प,सां नि	ध प	ध म ग
साँ स	व री,स	लो स	नी स स	सू र	त,म न	भा स	व नी स
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा

म ग	म नि ध	नि सां	सां – सां	नि नि	नि,सां नि	सां (सां)	नि ध प
मु कु	ट मा स	ये स	सो स हे	म क	र,कुं स	ड़ ल	का स न
×	२	०	३	×	२	०	३
नि ध(प)	ध नि सां	नि ध(प)	म,ग –	ग ग(म)	प नि,ध	प म प	ध(म) ग
ने ऽऽ	ह भ री	नै ऽऽ	न,ज्यो स	ति ऽऽ	चि त,लु	भा स	व नी स
×	२	०	३	×	२	०	३

संचारी

ग –	म ग म	प प	प – प	ग प	ध सां नि	ध(प) ध	म ग –
पी स	ता स स	ब र	का स छे	ग र	बै स ज	यं ऽ स	ती स स
×	२	०	३	×	२	०	३
प म	ग री सा	नि सा	ग ग म	ग म	प,ध सां	नि ध(प)	नि ध प
नि र	खि म न	ल ज्यो	म द न	मू र	त,म न	मो ऽऽ	ह नी स
×	२	०	३	×	२	०	३

आभोग

ग म	ग म नि ध	नि सां	नि सां –	प नि	सां –,रीं	सां सां	नि ध –
अ ध	र ध रि	मा स	धु री स	मु र	ली स,ब	जै स	स जै स
×	२	०	३	×	२	०	३

म ग म | ध सां नि रीं सां | नि ध प - | म ग म | प सां, नि | ध प, ध | म प ग -
रू ऽ | पु मि लि | रा ऽऽ | ग नी ऽ | अ त | ही ऽ, रि | झा ऽ ऽ | व नी ऽ
× | २ | ० | ३ | × | २ | ० | ३

राग खमाज- भजन-कहरवा (मध्यलय)

स्थायी: नहीं माँगत हूँ धन सम्पद सुख
नहीं जनम मरण तें मुक्ति चहत हूँ।
परब्रह्म मिलन नहीं ग्यान-जोग
नहीं रिध-सिध इक छिनहु, नहीं इक छिनहु ॥

अंतरा: जनम जनम नित पाऊँ चरण-सेवा सुख
हरि-गुण गाऊँ ध्याऊँ निस दिन या नैन मनोहर
सुन्दर साँवरी मूरत रहे न टरे इन अँखियनतें
यही आस, एक यही आस एक; नहीं माँगत हूँ---॥

स्थायी

म
ग म
न हिं
प - प प | प -, म ग म | प - प प | ध प ध, प म ग
माँ ऽ ग त | हूँ ऽ, ध न | स ऽ म्प द | सु ख, न हिं
× | ० | × | ०
म ग म ध प | नि ध नि सां (सां) | नि ध प प ध | म ग म ग -
ज न म म | र ण तें ऽ | मु ऽ क्ति च | ह त हूँ ऽ
× | ० | × | ०
- - - - | - -, सां नि नि | सां नि - नि सां | सां सां ध प ध
ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ, प र | ब्र ऽ ह्म मि | ल न न हिं
× | ० | × | ०
सांरीं गं सां नि | ध प, म ग म | प ध नि रीं | सां नि ध प
श्याऽ ऽ न जो | ऽ ग, न हिं | रि ध सि ध | इ क छि न
× | ० | × | ०
म ग म, ध प ध | सां नि ध प | म ग - - | - -; म ग म
हु ऽ, न हिं | इ क छि न | हु ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ; न हिं
× | ० | × | ०

अंतरा

सां नि नि नि, सां नि नि सां नि ध | प ध नि सां सां नि | सां सां, नि सां -
ज न म म, ज | न म नि त | पाऽ ऽ ऽ ऊँ च | र ण, से ऽ
× | ० | × | ०

ध नि़ प ध	नि़ रीं सां रीं	ध नि़ धप म	ग ग , म ग
वा ऽ सु ख	ह रि गु ण	गा ऽ ऊँ ऽ ध्या	ऽ ऊँ , नि स
नि़ नि़ सा –	नि़ सा ग म	ध – ध ध	ध नि़ ध नि़
दि न या ऽ	नै ऽ न म	नो ऽ ह र	सुं द र साँ
प ध म ग,	गं गं मं गं	(सां) – प ध	सां (सां) ध नि़
ऽ व री ऽ,	मू र त र	हे ऽ न ट	रे ऽ इ न
ध नि़ प ध	नि सां, नि़ ध	प म ग, नि	सां सां नि़ ध
अँ खि य न	तें ऽ, य ही	आ ऽ स, प	ऽ क य ही
प म ग, नि़	प ध; म ग म	प – प प	इत्यादि स्थायी के अनुसार
आ ऽ स, प	ऽ क; न हिं	माँ ऽ ग त	

राग खमाज- होली- दीपचंदी (मध्यलय)

स्थायीः न खेलूंगी मैं तोसे होरी कन्हैया
न मानूंगी अब एकहू तोरी पीतकी बतियाँ।

अंतराः जानो न लच्छन बचन पीत के
नारी नमो हो अनारी अनोखे होरी के खिलैया॥

स्थायी

ग म गम	ग री ग –	नि़ री नि़	ग – री गम पम
न खे ऽऽ	लूं ऽ ऽ ऽ	गी ऽ ऽ	मैं ऽऽ तोऽ ऽसे
प – –	प – –, ध	ग प –	म ग ग –
हो ऽ ऽ	री ऽ ऽ, क	न्है ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
नि नि –	सां – (सां) –	नि़ ध नि़	ध – प प
न मा ऽ	नूं ऽ ऽ ऽ	गी ऽ ऽ	ऽ ऽ अ ब
ग प –	गप धसां सां –	प ध प	म ग – म
ए क ऽ	हुऽ ऽऽ ऽ ऽ	तो ऽ री	पी ऽ ऽ ऽ

पध निसां – | निध पध – प | ग प – | म ग रीग –री;
तड ऽऽ ऽ | कीड ऽऽ ऽ न | ति ऽ ऽ | याँ ऽ ऽ ऽऽ;
× २ ० ३

अंतरा

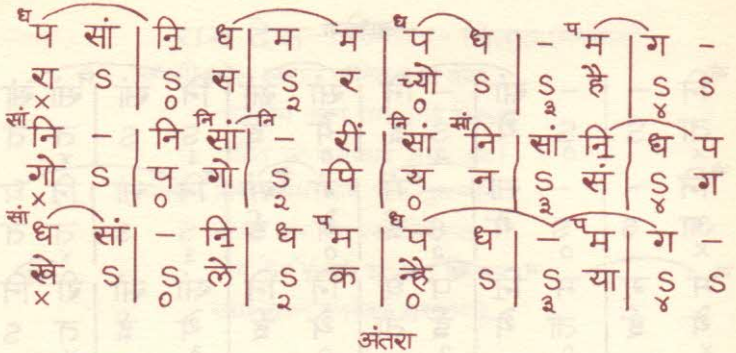
गम ग म | मनिनि धध पनिसां नि | सां – – | निसां – – सां
जा ऽ ऽ | नोऽ ऽऽ ऽऽ न | ल ऽ ऽ | च्छ ऽ ऽ न
× २ ० ३
सांनि नि – | सां – (सां) – | धनि धनि | धपध – प –
ब च ऽ | न ऽ ऽ ऽ | पी ऽ ऽ | तड ऽ के ऽ
× २ ० ३
सांनि – – | सां – –, सांरीं | सांध सां (सां) | निध नि, ध
ना ऽ ऽ | री ऽ ऽ, न | मो ऽ ऽ | हो ऽ ऽ, अ
× २ ० ३
प – – | सांधसां रींग –, सां | निध नि | धप – ध
ना ऽ ऽ | रीऽ ऽऽ ऽ, अ | नो ऽ ऽ | खे ऽ ऽ ऽ
× २ ० ३
पम मग म | पधनिसां – प | धप ध – | पम ग रीग –री;
हो री ऽ | केऽ ऽऽ ऽ खि | लै ऽ ऽ | या ऽ ऽ ऽऽ;
× २ ० ३

राग खमाज-ध्रुवपद- चौताल (विलंबित)

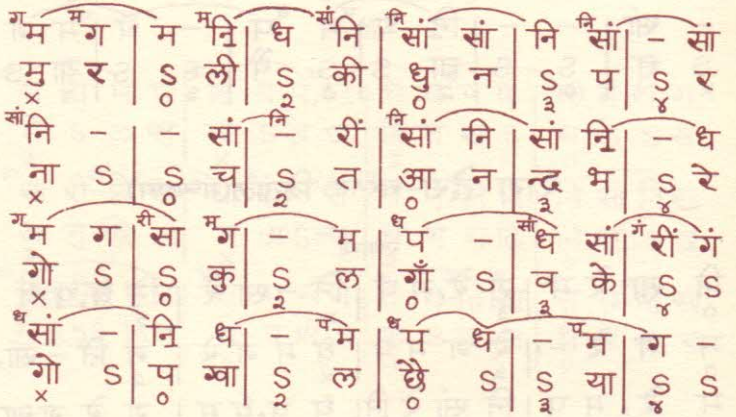
स्थायीः जमुना के नीर तीर रास रच्यो है
गोप गोपीयन संग खेले कन्हैया।
अंतराः मुरली की धुन पर नाचत आनंद भरे
गोकुल गाँव के गोप ग्वाल छैया॥
संचारीः झाँझ मृदंग ढप किन्नरी बजे मधुर
पैंजन की झनकार परम सुख दैया॥
आभोगः ता थेई थेई तत् आ थेई थेई तत्
थेई ता थेई ता थेई थेई तत् तत् ता थैया॥

स्थायी

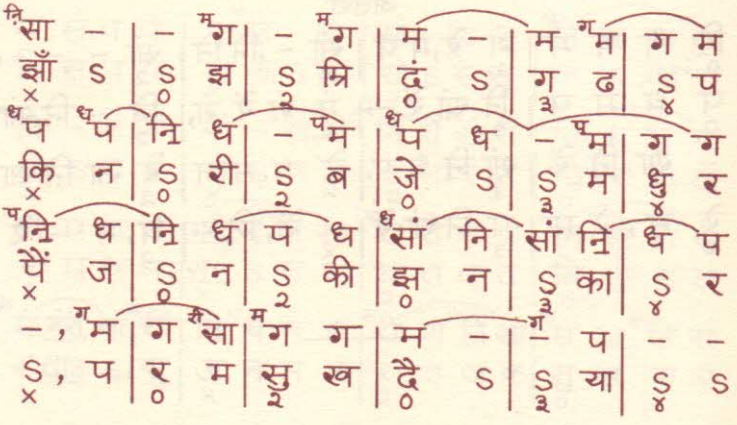
मग ग | सा मग | – म | प – | धपम | ग म
ज मु | ऽ ना | ऽ के | नी ऽ | र ती | ऽ र
× ० २ ० ३ ४


ध प सां | नि ध | म म | ध प | ध | - प म | ग -
रा स | स स | स र | च्यो स | स | है | स स
× ० | २ | ० | ३ | ४
सां नि - | नि नि सां | नि - रीं | नि सां | सां नि | सां नि | ध प
गो स | प गो | स पि | य न | स सं | स ग
× ० | २ | ० | ३ | ४
सां ध सां | - नि | ध प म | ध प | ध | - प म | ग -
खे स | स ले | स क | न्हे स | स | या | स स
× ० | २ | ० | ३ | ४

अंतरा


ग म ग | म नि | ध नि | नि सां सां | नि | नि सां | - सां
मु र | स ली | स की | धु न | स | प | स र
× ० | २ | ० | ३ | ४
सां नि - | - सां | नि - रीं | नि सां नि | सां नि | - ध
ना स | स च | स त | आ न | न्द भ | स रे
× ० | २ | ० | ३ | ४
ग म ग | री सा | म ग - | म | ध प - | सां ध सां | गं रीं गं
गो स | स कु | स ल | गाँ स | व के | स स
× ० | २ | ० | ३ | ४
ध सां - | नि ध | - प मे | ध प | ध | - प म | ग -
गो स | प ग्वा | स ल | छे स | स | या | स स
× ० | २ | ० | ३ | ४

संचारी


नि सा - | - | म ग - | म ग | म - | म | ग म | ग म
झाँ स | स | झ स | म्रि | दं स | ग | ढ | स प
× ० | २ | ० | ३ | ४
ध प ध प | नि ध | - प म | ध प | ध | - प म | ग ग
कि न | स री | स ब | जे स | स | म | धु र
× ० | २ | ० | ३ | ४
प नि ध | नि ध | प ध | सां नि | सां नि | ध प
पैं ज | स न | स की | झ न | स | का | स र
× ० | २ | ० | ३ | ४
- , ग म | ग री सा | म ग ग | म - | ग - | प | - -
स , प | र म | सु ख | दै स | स | या | स स
× ० | २ | ० | ३ | ४

आभोग

सां नि – | – सां | – नि | नि सां सां | सां नि सां | नि सां सां
ता ऽ | ऽ थे | ऽ ई | थे ई | ऽ ऽ | त त
× ० २ ० ३ ४
सां नि – | – सां | – सां मं | गं रें सां | सां नि सां | नि ध
आ ऽ | ऽ थे | ऽ ई | थे ई | ऽ ऽ | त त
× ० २ ० ३ ४
ग म ग | म नि ध प ध | सां नि नि | सां सां | रें सां नि
थे ई | ता थे | ई ता | थे ई | थे ई | त ऽ
× ० २ ० ३ ४
– सां | – – | नि ध | प म | ध प | – ध | प म ग
ऽ त | ऽ ऽ | त्ता ऽ | ऽ थे | ऽ ऽ | या ऽ
× ० २ ० ३ ४

राग देस- सरगम- त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

नि सा रे म | ग रे, म प | नि – सां रें | नि ध, प ध
० ३ × २
म ग रे –, | रे ग म प | ध म ग रे | ग नि – सा,
० ३ × २
म रे, म प | नि सां रें नि | ध प, ध म | ग रे ग सा
० ३ × २

अंतरा

नि ध प म | ग रे, म प | सां –, नि नि | सां – – –,
० ३ × २
प ध म प | नि सां रें –, | मं गं रें गं, | नि – नि, सां
० ३ × २
– सां, नि रें | सां नि ध प, | रे प म ग | रे सा नि सा,
० ३ × २
रे म, रे म | प नि सां, रें | – रें, नि – | ध, म – रे
० ३ × २

राग देस- लक्षणगीत- त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः मेल खमाज जनित राग देस
अनुलोम अल्प धग चढ़ि निखाद
मंडित रि-प संवाद मधुर कर।
अंतराः निस प्रथम जाम सोहे सुलच्छन
सोरठ अंग रंग रस छिरकत
'रेप' 'थम' संगत इत उत बिलसत
सदा 'सुजन' मनरंजक सुखकर ॥

स्थायी

रीं म	री म	प	सां नि़	ध प, प नि़	ध	प ध प ध	(म) ग	री ग
मे	ऽ ल	ख	मा	ऽ ज, ज	नि	त रा ऽ	ग	दे ऽ स
३			×		२		०	
नि़ सा	री नि़	सा	सा	मरी – री	प	म प सां नि नि	सां नि	सां नि सां
अ	नु लो	ऽ	म	अ ऽ ल्प	ध	ग च ढ़ि	नि	खा ऽ द
३			×		२		०	
सां निसां रींनि़		ध प	मरी	प म ग	रीं	ग नि़, सा	सा	म प़ सा नि़ सा
सं	ऽ ऽऽ	डित	री	प सं ऽ	वा	ऽ द, म	धु	र क र
३			×		२		०	

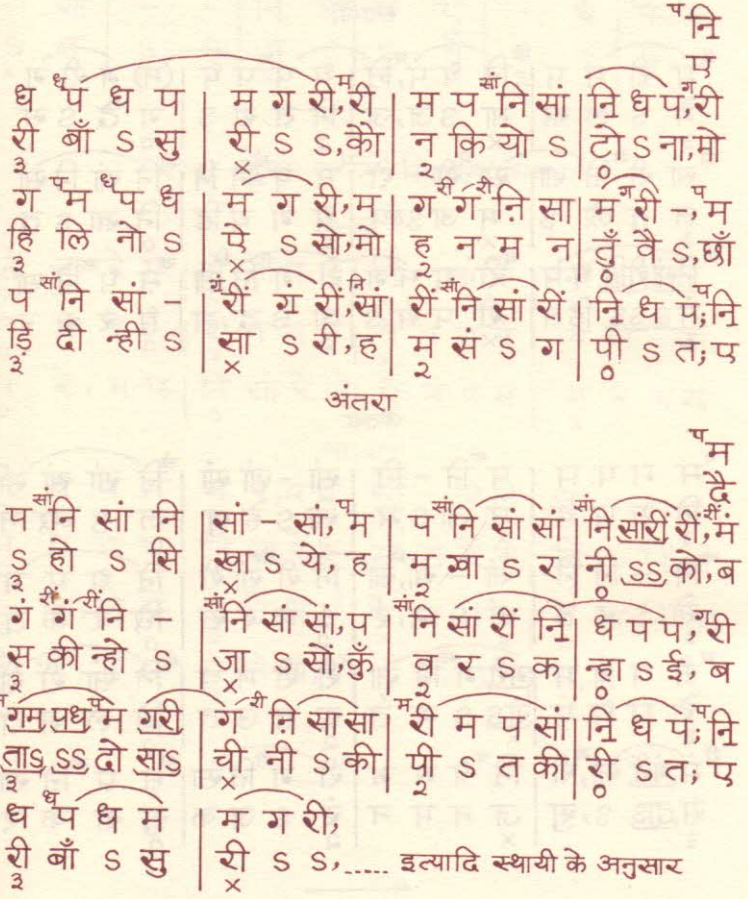
अंतरा

प म	म प प		प सां नि	– नि	सां	– सां सां	सां नि	सां सां सां
नि	स प्र थ		म	जा ऽ म	सो	ऽ हे सु	ल	ऽ च्छ न
३			×		२		०	
सां नि	– नि नि		सां	– सां, सां	नि़ रीं	सां रीं	नि़	ध प प
सो	ऽ र ठ		अं	ऽ ग, रं	ऽ	ग र स	छि	र क त
३			×		२		०	
मरी प	ध म		गरी ग	सा नि़ सा	मरी	री म प	सां नि	सां रीं रीं
रे	प ध म		सं	ऽ ऽ ग त	इ	त उ त	बि	ल स त
३			×		२		०	
रीं मं	गं रीं	सां, रीं	नि़ प	ध म ग	ग रीं	ग नि़ सा	सा	म प़ सा नि़ सा
स	द्वा ऽ	ऽ, सु	ज	न म न	रं	ऽ ज क	सु	ख क र
३			×		२		०	

राग देस – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः परी बाँसुरी कौन कियो टोना
मोहि लिनो पेसो मोहन मन तुँवै
छाँड़ि दीनी सारी हम संग पीत।
अंतराः दैहो सिखाये हम ग्वारनी को
बस कीन्हो जासों कुँवर कन्हाई
बता दो साची नीकी पीत की रीत॥

स्थायी



अंतरा

..... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग देस – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: कहो कहालों करूँ बिनती तोरी अहो नाथ निधान
तोरे चरण को इक आसरो मोहे अब ।

अंतरा: द्वार ठाड़ो तोरे जोर जोर कर
कृपा दृष्टि अब कीजो 'सुजन' पे
मानो मानो अरज़ आज मेरी ॥

स्थायी

,रे ग रे नि॒ सा	मरी प मध प नि॒	ध प –, सां	प पध पम गरी
, क हो ऽ	क हा लों क	रूँ ऽ ऽ, बि	न ति तो री
०	३	×	२
–, प म ग	मरी प मध प ध	(म) ग री, ग	सा री रे नि॒ सा
ऽ, अ हो ऽ	ना ऽ थ नि	धा ऽ न, तो	रे च र ण
०	३	×	२
मरी म, प नि	सां – निसां, निसांरीं	नि॒ ध प, ध	(म) ग म ग
को ऽ, इ क	आ ऽ ऽऽ ऽऽऽ	स रो ऽ, मो	हे ऽ ऽ अ
०	३	×	२
री; रे ग रे नि॒ सा			
ब; क हो ऽ	---- इत्यादि		
०			

अंतरा

पनि॒ ध प ध	पमगरी पम प	सांनि – नि सां	– नि सां सां
द्वा ऽ र ठा	ऽ ड़ो तो रे	जो ऽ र जो	ऽ र क र
०	३	×	२
सांनि नि – सां	– सां सां सां,	मरी म प सां	प ध (म) गरी
क्रि पा ऽ द	ऽ ष्टि अ ब,	की ऽ जो सु	ज न पे ऽऽ
०	३	×	२
रे ग रे नि॒ सा, गरी	ग म, प ध	म, ग री री,	सांरींसांनिधप मग
मा ऽ नो, मा	ऽ नो, अ र	ज़, आ ऽ ज,	मेंऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२
री; रे ग रे नि॒ सा	मरी प मध प नि॒	ध प	
री; क हो ऽ	क हा लों क	रूँ ऽ	--इत्यादि स्थायी के अनुसार
०	३	×	

राग देस - भजन - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः खेलत श्याम सखा लिये संग
इक मारत इक रोवत गेंदहि
इक भागत करि नाना रंग।

अंतरा-१ः मारु परस्पर करत आपुमें
अतिहि आनंद भयो मनमाँ ही।
खेलत ही में श्याम सबनि को
यमुना तट को लीन्हे जाहीं॥

अंतरा-२ः मारि भजत जो जाहि ताहिसों
मारत लेत अपनो दाव।
'सूर' श्याम के गुण को जाने
और कहत कछु और उपाव॥

टीपः सूरदासजी के इस पद को लेखक ने केवल स्वर-ताल-बद्ध किया है।

स्थायी

, ० ,	रीग खे	सा ल	री त	म श्या	- ३	प ऽ	प म
रीं, ग,	सांनिं इ	निं क	निं मा	सा र	सा, त,	निं सा इ	सा क
मरी इ	री क	पम भा	- ऽ	प ग	प त	प क	प रि

पनिसां खाऽ	रीं ऽ	- ऽ	नि लि	धप ये	ध ऽ	(म) सं	ग ऽ
ग रो	री ऽ	पमग व	म त	गरी गेंऽ	ग ऽ	रीसा द	सा हि
पधं नाऽ	निसां ऽ	धप नाऽ	धं ऽ	(म) रं	- ऽ	ग ऽ	री ग

अंतरा-१

सांनि मा	- ऽ	निसांनि रु	सां प	- र	सांसां ऽ स्प	गंरीं क	रींमं र त
मरी अ	री ति	रीम हि	पम आ	प नं	- ऽ	प, द,	प भ

गं रीं आ	रीं ऽ	मं ऽ	गं ऽ	रीं ऽ	गं ऽ	(सां) पु	- मैं
पमप योऽ	धनिं ऽऽ	धनिं म	धनिं न	(प) माँ	- ऽ	प ही	- ऽ

मरी खे	पम ऽ	धप ल	धप त	(म) ही	रीग ऽ	(सा) में	- ऽ
सांनिं श्या	सा ऽ	मरी, म,	म स	गरी बऽ	ग नि	री को	- ऽ

म रीरी म - | प प पनि सांरीं | निध पध मप धप | (म) गरी ग री सा
ज मु ना ऽ | त ट कोऽ ऽऽ | लीऽ ऽऽ हेऽ ऽऽ | जा ऽऽ हीं ऽ
0 ३ × २

अंतरा - २

गं रीं - रीं मं गंरीं गं (सां) - | प मां नि सां | - सां निसां रीं
मा ऽ रि भ जुऽ त जो ऽ | जा ऽ हि ता | ऽ हि सोंऽ ऽ
0 ३ × २
नि धनिरींसांरीं (नि) - ध प | मरी म पध सांनि | प धम ग री
माऽ ऽ रत ले ऽ ऽ त | अ प नोऽ ऽ | दा ऽ ऽ व
0 ३ × २
ग री ग सा री रीनि सा निसा - | म री री म - | प - प -
सू ऽ रय्या ऽ म के ऽ | गु ण को ऽ | जा ऽ ने ऽ
0 ३ × २
म री प ध पं नि सां रीं नि ध | प मप ध प ध | (म) - ग री
ओ ऽ र क ह त क छु | ओऽ ऽ र उ | पा ऽ ऽ व
0 ३ × २

राग देस - होली - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : होरी खेलन को चले कन्हैया
ग्वाल-बाल सब अतहि आनंद भरे
गावत मधुर सुर बाँसुरी की धुन पर
नाचत नटनागर अत रस सों :
ताता थैया, ताता थैया, ताता थैया |

अंतरा : रंग अबीर गुलाल लिये भर भर झोरी
तकतक मारत कुमकुमे
निरखि हरखि सुर-नर-मुनिजन कहे :
धन गोकुल बिंदराबन, धन जमुना तट
ब्रिजभूमि धन, धन मुरली धुन, धन न्यारो :
रास रचैया, रास रचैया, रास रचैया ||

स्थायी

सा नि सा
म रीं म ग री ग | सा री, प म ध दि ध | सां नि ध प ध | ग म री ग, सा नि सा
खे ल न को | ऽ, च ले क | न्है ऽ ऽ ऽ | या ऽ, हो हो री
0 ३ × २

मरी म ग रीग | सारी,प धनि सां | नि - ध प, | निसां रीं सां नि
खे ल न को | ऽ,च ले क | ह्वै ऽ या ऽ, | ख्वाऽ ऽ ल बा
० ३ × २

ध प म ग | रीग रीम | गरीग सानि सा, | नि सा री म
ऽ ल स ब | अ त हि आ | नंऽ द भ रे, | गा व त म
० ३ × २

गरी म प धनि | पम पसांनि सां | गरीं रींगं रीं सां, | सांनि सां नि सांरीं
धु र सु र | बाँ सु री की | धु नऽ प र, | ना च त न
० ३ × २

सां सांरीं नि ध, | मरी पम धप सांनि | सां, निसां रीं सां | नि ध प, मप
ट ना ग र, | अ त र स | सों, ताऽ ऽ ता | थै ऽ या, ताऽ
० ३ × २

ध प म ग | री, गरीम प धनि | सांनि - ध प | मरीग; सानि सा
ऽ ता थै ऽ | या, ताऽ ऽ ता | थै ऽ या ऽ | ऽ ऽ; हो री
० ३ × २

अंतरा

मरी पम धप सांनि | धप पम - प | सांनि - सां नि | सां - - -
रं ग अ बी | ऽऽ र ऽ गु | ला ऽ ल लि | ये ऽ ऽ ऽ
० ३ × २

मरी पम धप सांनि | धप पमे - प | सांनि - सां,निसां | पनि सांरीं निसां रीं
रं ग अ बी | ऽऽ र ऽ गु | ला ऽ ल,लि | येऽ ऽऽ भ र
० ३ × २

सांनि ध पम प, | मरी पम धप ध | म ग री म | गरीं ग सानि सा,
भ र झो री, | त क त क | मा र त कु | मऽ कु मे ऽ,
० ३ × २

सानि सा री म | गरी म प धप | म प सांनि सां | गरीं रींगं रीं सां
नि र खि ह | र खि सु र | न र मु नि | ज नऽ क हे
० ३ × २

गरीं गं सांरीं गंमं | गरीं गं निसां सां | सांनि - सां सां, | सांनि सां गरीं रींगं
ध न गोऽ ऽऽ | कुऽ ल बिं द | रा ऽ ब न, | ध न ज मुऽ
० ३ × २

रीं सां रीं सांनि, | निसां सां पनि सांरीं | सां नि ध प, | पनि ध धप धप
ना ऽ त ट, | ब्रि ज मुऽ ऽऽ | मी ऽ ध न, | ध न मु र
० ३ × २

(म) - ग री, | मरी पम धप सांनि | सां, निसां रीं सां | नि ध प, मप
ली ऽ धु न, | ध न न्या ऽ | रो, राऽ ऽ सऽ | चै ऽ या, ताऽ
० ३ × २

ध प म ग | री, रीम प ध | नि – ध प | म ग ; नि सा
S सर चे S | या, राS, Sसर | चे S या S | S S ; हो री
० ३ × २
मरी म गे रीग | सारी
खे ल न को | S इत्यादि स्थायी के अनुसार
० ३ ...

राग देस - ध्रुवपद - चौताल (विलंबित)

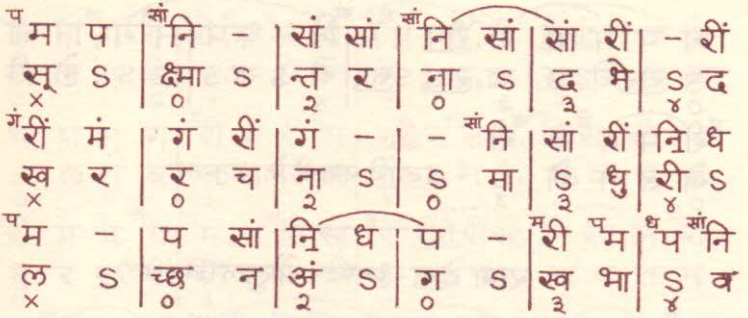
स्थायी: उपजत अंग स्वभाव साचे गुरुन की सीख
नित्य नियत परिश्रम याहि तीन गुन होवे।
अंतरा: सहज ग्यान ध्यान मान सूक्ष्मांतर नाद भेद
स्वर-रचना माधुरी लच्छन अंग स्वभाव ॥
संचारी: स्वर-लय-राग-प्रबन्ध इन सब में गुनी चतुर
साचो गुरु सो ही जानो सीख सफल यातें होवे॥
आभोग: बिन करनी कछु न आवे स्वाध्याय साधना
किये सोही गुन पावे गावे बजावे रिझावे॥

स्थायी

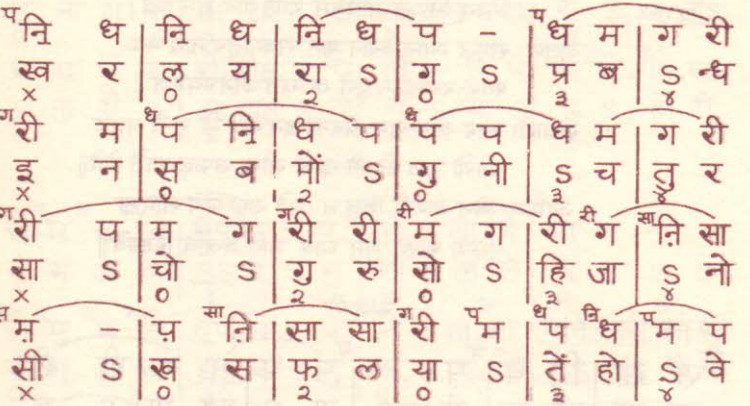
निसां सां | नि ध | मप – | धप धम | ग री री
उ प | ज त | अं S | ग S | स्व भा | S व
× ० २ ० ३ ४
गरी प | म ग | सानि सा | सानि सा | री सानि | ध़ प़
सा S | चे गु | रु न | की S | S सी | S ख
× ० २ ० ३ ४
गम ग | री | पम प प | पनि ध | पमे पध | नि नि
नि S | त्य | नि य त | प रि | S श्र | S म
× ० २ ० ३ ४
निसां रीं | नि ध | प प | मरी पम | धप सांनि | सां सां
या S | हि ती | S न | गु न | S हो | S वे
× ० २ ० ३ ४

अंतरा

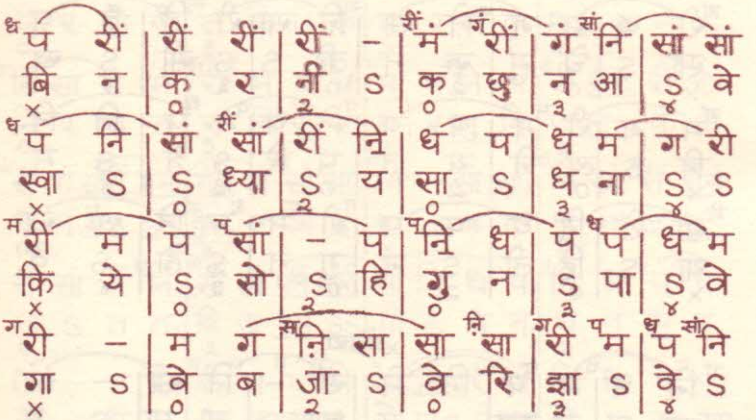
पनि ध | पमे धप | नि नि | सां – | नि सां | – सां
स ह | ज ग्या | S न | ध्या S | न मा | S न
× ० २ ० ३ ४


म प | नि – | सां सां | नि सां | सां रीं | – रीं
सू ऽ | क्षमा ऽ | त्त र | ना ऽ | द मे | ऽ द
× ० २ ० ३ ४
रीं मं | गं रीं | गं – | – नि | सां रीं | नि ध
स्व र | र च | ना ऽ | ऽ मा | ऽ धु | री ऽ
× ० २ ० ३ ४
म – | प सां | नि ध | प – | री म | प नि
ल ऽ | च्छ न | अं ऽ | ग ऽ | ख्व भा | ऽ व
× ० २ ० ३ ४

संचारी


नि ध | नि ध | नि ध | प – | ध म | ग री
ख्व र | ल य | रा ऽ | ग ऽ | प्र ब | ऽ न्ध
× ० २ ० ३ ४
री म | प नि | ध प | प प | ध म | ग री
इ न | स ब | मों ऽ | गु नी | ऽ च | तु र
× ० २ ० ३ ४
री प | म ग | री री | म ग | री ग | नि सा
सा ऽ | चो ऽ | गु रु | सो ऽ | हि जा | ऽ नो
× ० २ ० ३ ४
म – | प नि | सा सा | री म | प ध | ध प | म प
सी ऽ | ख स | फ ल | या ऽ | तें हो | ऽ वे
× ० २ ० ३ ४

आभोग


प रीं | रीं रीं | रीं – | मं रीं | गं नि | सां सां
बि न | क र | नी ऽ | क छु | न आ | ऽ वे
× ० २ ० ३ ४
प नि | सां सां | रीं नि | ध प | ध म | ग री
खा ऽ | ऽ ध्या | ऽ य | सा ऽ | ध ना | ऽ ऽ
× ० २ ० ३ ४
री म | प सां | – प | नि ध | प ध | ध म
कि ये | ऽ सो | ऽ हि | गु न | ऽ पा | ऽ वे
× ० २ ० ३ ४
री – | म ग | नि सा | सा सा | री म | प नि
गा ऽ | वे ब | जा ऽ | वे रि | झा ऽ | वे ऽ
× ० २ ० ३ ४

राग केदारगौळ- वर्णम्- आदिताल

(संस्कृत में)

पल्लवी : वन्दे देवीम् श्री वाग्देवीम् श्री
विधादायिनीम् नादासक्ताम्।
अनुपल्लवी : नित्यं गीतानुरक्ताम् शारदाम्
ब्राह्मीं रागालप्त्यासुप्राप्याम् ताम्॥
चरणम् : वीणा वाद्यालंकृतां ताम्॥

पल्लवी

सां--नि धपमप निधपध प-मग	री--ग रीसा,सा-	-निधप निसारी-
वंऽऽ दे ऽऽदेऽ ऽऽ,वींऽ श्रीऽऽऽ	वाऽऽऽ ऽऽ,ग्देऽ	डवींऽऽ श्रीऽऽऽ
×	2	3
मगरीप मग,रीम पनिधप निसांरीं-	गंरींसांसां -,निधप	प-मग रीमपनि
विऽऽ,द्या ऽऽ,दाऽ ऽऽऽयि नींऽऽऽ	नाऽऽदा ऽ,ऽऽऽ	सऽऽऽ क्तांऽऽऽ
×	2	3

अनुपल्लवी

सांनिधप म-,पनि धप-,नि धपमग	री--म प-निनि	धपनिनि सां---
नि ऽ ऽऽ त्यंऽ,गीऽ,ऽताऽ,ऽ ऽ,न्तुऽऽ	रऽऽक्तां ऽऽशाऽ	ऽऽरऽ द्यांऽऽऽ
×	2	3
सांनिसांरीं -,मंगंरीं रींगंरींसां सांनिसांरीं	निसांनि,गं रींसांनिसां	नि सांनिधप,मपनि
ब्राऽऽहीं ऽ,राऽऽ गाऽऽऽ लऽऽऽ	ल्याऽऽ,स्तु ऽऽ,प्राऽ	ऽ,प्यांऽऽ ऽ,तांऽऽ
×	2	3

मुक्तायंप्

सांनिधप, निधपप प-,मग रे-,पम	प--,नि धप,मप	निसांरें,सां रें-रें-
×	2	3
मंगंरेंगं सांरें,निसां निगंरेंसां निध,परें	रें--,सां निधप-	-,मगरे -,मपनि
×	2	3

चरणम्

नि---,सां--,निधपप,मगरीम	प---,--,निध	धपमग,री-मप,
वीऽऽऽ,णाऽऽऽ,वाऽऽऽ,द्याऽऽऽ	लंऽऽऽ,ऽऽ,कृऽ	तांऽऽऽ,तांऽऽऽ
×	2	3

चिट्टस्वरम्

१.नि---,--,सां-,--,नि-,ध-प-	--म- ग-रे-	--म-,--प-
×	2	3
२.निधपम, प,सांनिध,प-,मग,रेगरे-,	सागरेसा, -निधप,	निसारेसा, रे-रे-
×	2	3
मगरेरे, -,पमग,रेमपनि,धप,निसां,	रेंसां-नि,धपप-,	मगरे,सा, -रेमप,
×	2	3

रें - - - , - - , निरें सांनिधप, मपनिनि | सां - - - , - - रेंसां, | -निधप, मपनिसां ||
× 2 3

निसांनिध, प,म-प, मगरे-, रेपमप, | मनिधप, धपपम, | गरे, मम, प-प- ||
× 2 3

मगरेरे, -रे, निध, पम-प, सांनिधप, | रेंसांनिध, पनिसांरें, | निगंरेंसां रें-रें- ||
× 2 3

रेंमंगंरें, -गं, सांगं, रेंसां-, रें, सांनिधप, | निसांरेंसां, -, मपध, | प- -, म, ग, रेमप, ||
× 2 3

टीप: इस उपरोक्त वर्णम् में तेलगू साहित्य के स्थान पर लेखक ने केवल संस्कृत साहित्य की योजना की है। इस राग का स्वरूप हिन्दुस्तानी संगीत में प्रचलित 'देस' राग से बहुत कुछ मिलता हुवा जान पड़ता है; किन्तु वास्तव में यह दोनों राग स्वतंत्र है।

राग तिलककामोद- सरगम- त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

प़ नि़ सा रे | ग सा, रे म | प ध म प | सां - - पे
2 0 3 ×

ध म ग रे, | प म ग रे | ग (सा) - सा, | सां - सां, प
2 0 3 ×

- प, म - | म, ग - सा, | म़ प़ नि़ सा | रे म ग सा;
2 0 3 ×

अंतरा

म म प सां | - पे म ग, | सा रे म प | नि - - नि
2 0 3 ×

सां -, रें मं | गं - सां -, | प नि सां रें | गं, सां - पे,
2 0 3 ×

सां - पे, ध | - म, ग - | सा - -, म़ | प़ नि़ सा रे;
2 0 3 ×

राग तिलककामोद- लक्षणगीत-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : मेल खमाज सुंदर सुर लिये
तासों रच्यो तिलककामोद
रसिक गुनि प्रिय राग-राज राजत।
अंतरा : वक्र स्वरूप रैन प्रथम पहर
रिप संवाद 'सांप, धम' संगत
धग बिन रोहण सुगम गीत युत।

स्थायी

ग री प म ग म	ग री ग सा, नि सा	सा नि प सा नि सा	ग रीग सा सा नि सा
मे ऽ ल ख	मा ऽ ऽ ज, सु	न्द र सु र	लि ऽ ये ऽ ऽ
३	×	२	०
ग री प म ध प ध	मग रीग सा, नि सा	सा नि प नि सा	ग रीग सा –, सा प
मे ऽ ल ख	मा ऽ ऽ ज, सु	न्द र सु र	लि ऽ ये ऽ, ता
३	×	२	०
सा नि सा री प म	री ग – सा, नि सा	ग री प म ध प ध	म ग री, री प
ऽ सों ऽ र	च्यो ऽ ऽ, ति	ल क का ऽ	मो ऽ द, र
३	×	२	०
म ग री सा सा	ग री म पनि सांरीं	गं नि सां – प	ध प ध म ग;
सि क गु नि	प्रि य रा ऽ ऽ	ग रा ऽ ज	रा ऽ ज त;
३	×	२	०

अंतरा

प म – म प	सां नि – नि, सां	– सां, सां नि	सां नि सां सां सां
व ऽ क्र ख	रू ऽ प, रै	ऽ न, प्र थ	म प ह र
३	×	२	०
नि प नि सां रीं	गं रीं गं सां, नि सां	– प ध मे	ग री ग री सा सा
रि प सं ऽ	वा ऽ द, सा	ऽ प ध म	सं ऽ ग त
३	×	२	०
सा प़ सा नि सा ग री	ग री ग सा	प सां सां प ध प	ध म ग री सा;
ध ग बि न	रो ऽ ह ण	सु ग म गी	ऽ त यु त;
३	×	२	०

राग तिलककामोद-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः शरद रात उजियारी न्यारी
चन्द्र-ज्योत प्रकाशत नभ में
निरखि निरखि मन मोहत हरखत|
अंतराः मंद मंद शीतल बहे समीर
कुसुम सुगंधित अत सुखदायक
भँवर गुंजार करत रस बरसत||

स्थायी

सा नि़ नि़ प़ सा नि़	सा सा ग री म	ग – (सा) –	– ग री ग सा नि़
श र द रा	ऽ त उ जि	या ऽ री ऽ	ऽ न्या ऽ री ऽ
०	३	×	२
सा नि़ नि़ प़ सा नि़	सा सा ग री प म	ग – (सा) –	ग री ग (सा) –
श र द रा	ऽ त उ जि	या ऽ री ऽ	न्या ऽ री ऽ
०	३	×	२
म री – री प म	प प म प प	मप ध प म म	ग री ग (सा) –
च ऽ न्द्र ज्यो	ऽ त प र	काऽ ऽ श त	नऽ भ में ऽ
०	३	×	२
सां नि नि नि सां	सां सां प प	धप ध प म म	म ग री ग री सा नि़;
नि र खि नि	र खि म न	मोऽ ऽ ह त	ह र ख त;
०	३	×	२

अंतरा

प म – म प	– प सां नि –	सां सां नि सां सां	सां नि सां – सां
मं ऽ द मं	ऽ द शी ऽ	त ल ब हे	स मी ऽ र
०	३	×	२
ध प नि सां रीं	रीं गं रीं सां सां	नि सां सां प ध	(म) – ग री
कु सु म सु	गं ऽ धि त	अ त सुख	दा ऽ य क
सा नि़ सा ग री म	ग – री सा ग री	प म ध प सां प	प ध म ग री सा;
भँ व र गुं	जा ऽ र क	र त र स	ब र स त;
०	३	×	२

राग तिलककामोद–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः धन धन भाग जसोदा रानी
तुम्हरे आँगन बाल मूरत
जगजीवन खेलत केष्ण कुँवारो।
अंतराः सुर नर मुनि, स्यानी जोगी जाके नाम जपत नित
रूप धरत चित, गोद तुम्हरे सोही राजे दुलारो ॥

स्थायी

ग री प म म	गरी ग सा नि सा	नि ध प सा नि सा	गरी ग (सा) -	
ध न ध न	भा ऽ ग ज	सो ऽ दा ऽ	रा ऽ नी ऽ	
३	×	२	०	
री ग सा री म -	प - प प	म - प ध	प म मे, ग री	
तु म्ह रे ऽ	आँ ऽ ग न	बा ऽ ल मृ	र त, ज ग	
३	×	२	०	
प म प सां नि सां	गं रीं गं रीं सां सां	प मप सां पे	प ध (म) ग (सा) –;	
जी ऽ व न	खे ऽ ल त	के ऽ ष्ण कुँ	वा ऽ रो ऽ;	
३	×	२	०	

अंतरा

प म म प प	सां नि नि सां –	सां सां – सां	सां प नि सां रीं	
सु र न र	मु नि न्या ऽ	नि जो ऽ गि	जा ऽ के ऽ	
३	×	२	०	
मं गं रीं सां नि सां	गं रीं गं रीं सां सां	ध प ध म ग म	गरी ग सा सा	
ना ऽ म ज	प त नि त	रू ऽ प ध	रऽ त चि त	
३	×	२	०	
नि प़ नि सा ग री	म ग री सा सा	प सां – पे ध	(म) ग (सा) –;	
गो ऽ द तु	म्ह रे सो हि	रा ऽ जे दु	ला ऽ रो ऽ;	
३	×	२	०	

राग तिलककामोद- विक्रमताल(मध्यलय)

स्थायीः जय जय सरस्वती शारदा विद्यादानी
बिनति मानो यही अब देवि
संगीत को आज काज सँवारो।

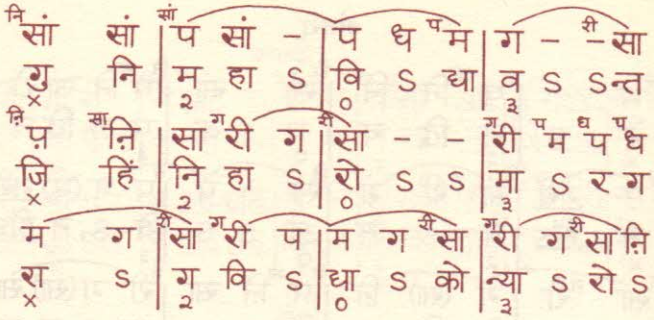
अंतराः ग्यान गुन दोऊ पायो तुँव कृपातें ही
पेसो चतुर मुनि महाग्यानी गुनी महा विद्यावंत
जिहिं निहारो मारग राग विद्या को न्यारो॥

स्थायी

नि़	प़	सा	नि़	सा	री	री म	ग	–	री सा	ग	री	प	ध	प	सां
ज	य	ज	य	स			र	ऽ	ख्व		ती	ऽ	ऽ	ऽ	
×		२					०				३				
सां	प	ध		म	ग	री	री	प	म ग	नि़	सा	ग	री	ग़	सा
शा	ऽ			र	दा	ऽ		वि	धा ऽ		दा	ऽ	ऽ	नि	
×		२					०				३				
म	री	री		म	प	–	ध	प	ध म	म	री	प	ध	सां	नि
बि	न	ति		मा	ऽ		नो	ऽ	य		ही	ऽ	अ	ब	
×		२					०				३				
नि	सां	–		प	ध	प ध	प	म	ग री	री	सा	री	ग	री	सा नि़
दे	ऽ			वि	सं	ऽ		गी	ऽ त		को	ऽ	ऽ	ऽ	
×		२					०				३				
नि़	प़	नि़		सा	ग़री	प		म	ग नि़		सा	ग़री	ग़	री	सा नि़
आ	ऽ			ज	का	ऽ		ज	ऽ सँ		वा	ऽ	रो	ऽ	
×		२					०				३				

अंतरा

प	म	–		प	सां	नि	नि	नि	सां – सां	नि	प	सां	नि	सां	रीं
ग्या	ऽ			न	गु	न		दो	ऽ ऊ		पा	ऽ	यो	ऽ	
×		२					०				३				
मं	गं	रीं	सां	रीं	गं		नि	सां	– प		ध	प	म	ग	
तुँ	व	क्रि	पा	ऽ			तें	ऽ	हि		पे	ऽ	सो	ऽ	
×		२					०				३				
नि़	सा	ग़री		ग	री	सा सा	ग़री	प	म पे	सां	नि	सां	गं	रीं	गं
च	तु			र	मु	नि		म	हा ऽ		ग्या	ऽ	नी	ऽ	
×		२					०				३				

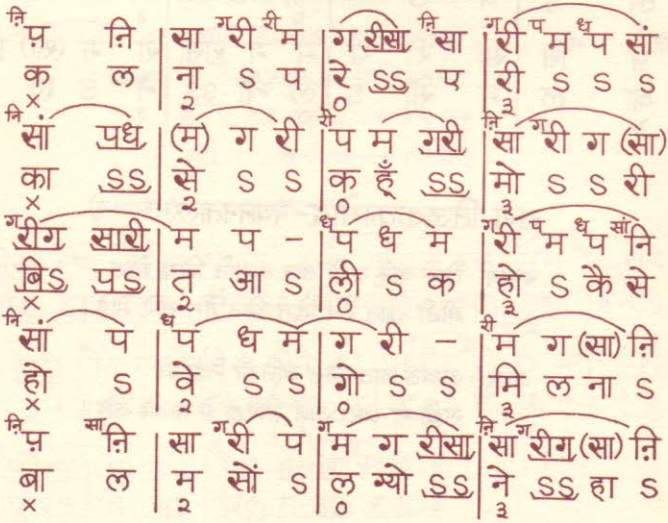


राग तिलककामोद-विक्रमताल(मध्यलय)

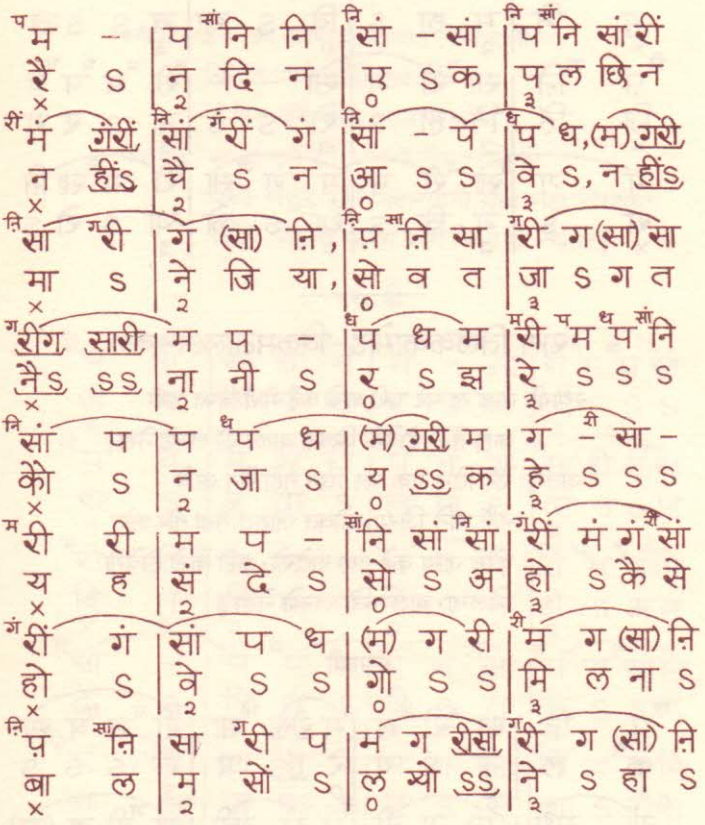
स्थायीः कल ना परे परी कासे कहूँ मोरी बिपत आली
कहो कैसे होवेगो मिलना बालमसों लग्यो नेहा।

अंतराः रैन दिन एक पल छिन नहीं चैन आवे
नहीं माने जिया, सोवत जागत नैना नीर झरे
कौन जाय कहे यह संदेसो, अहो कैसे होवेगो
मिलना, बालमसों लग्यो नेहा॥

स्थायी



अंतरा



राग तिलककामोद–पंचाननताल(मध्यलय)

स्थायी: कैसे करूँ कहो अब न माने जिया मोरा
बीती जात रैन दिन गिनगिन वारे मोहे।

अंतरा: आवत याद नित बतियाँ नेहा की
सह्यो न जात अब बिरहा ये कासों कहे॥

स्थायी

नि प सा नि	सा रे ग -	ग (सा) -	रे म प	म प सां -	ध प	म ग रे	सा नि
कै से	क रूँ ऽ	क हो ऽ	अ ब	न मा ऽ	नेऽ	जिया ऽऽ	मो रा
×	2	०	३	४		५	०
म प रें	सां - (प)	म गरे सानि	नि प सा नि	सा सा रे ध	प म	ग गरे	सा नि
बी ती	जा ऽत	रे ऽऽ नऽ	दि न	गि न गि न	ऽऽ ता ऽ	रेऽ	मो हे
×	2	०	३	४		५	०

अंतरा

सां गं रीं	गं (सां) -	प म ग	रे म	प नि सां रीं	मं गं -	सां -	
आ व	त या ऽ	द नि त	ब ति	याँ ऽ ऽ ऽ	ने हा ऽ	की ऽ	
×	2	०	३	४	५	०	
सां रीं सां	प म ग गरे	नि सा	रे म	प सां प ध	म ग गरे	सा नि	
स ह्यो	ना जा ऽ	तऽ अ ब	बि र	हा ऽ ऽ ये	का ऽ सोंऽ	क हे	
×	2	०	३	४	५	०	

राग तिलककामोद–रूपक (विलंबित)

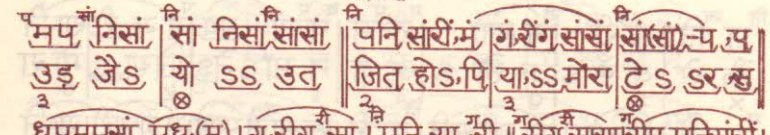
स्थायीः पपीहा पीहु पीहु जिन बोलो अब
मुझ बिरहन को अधिक ना सतावो
बालम मोरा परदेस बिलम रहो |

अंतराः उड़ जैहो उत जित हो पिया मोरा
टेर सुनैयो वाको अपनी, बिथा अब
सह्यो ना जाय मोसों, जाय कहो ||

स्थायी

सा प़,नि़सा	ग रीग	नि सासा	म रीमपनि	(सां) पध,(म) गरी	रे म ग	रे सा,ग रीग	
प,पी ऽ	हा ऽ	पीहु,	पीहुजिन,	बो	लो ऽ,अ ब ऽ	मुझ,	बि,र ऽ,
2		3		⊗		2	
(सा) प़,प़	सा नि़ सा	नि़,प़निसा	ग री,म	ग,रीग	रे सा	म री मप	सां(सां)
ह ऽ	न	को ऽ	अधिक	ना स	ता ऽऽ	वो	बा लम मो ऽ
3		⊗		2	3	⊗	
प ध	प,पध	(म) गरी	रे पम	ग,रीग	रे सासा;		
रा	प,र ऽ,	दे सऽ	बिल म,ऽऽ	र हो;			
2		3	⊗				

अंतरा



इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग तिलककामोद-ध्रुवपद-चौताल (विलंबित)

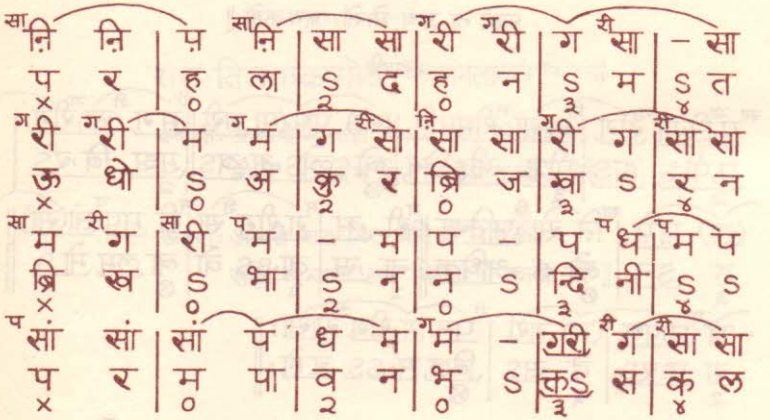
स्थायी : प्रल्हाद हनुमंत ऊधो अक्रूर ब्रिज-ग्वारन
ब्रिखभान-नंदिनी परम पावन भक्त सकल ।

अंतरा : गोरांग महाप्रभु चंडीदास कबीर सूर
पुंडरीक पुरंदरदास तुलसी भये सफल ॥

संचारी : नानक गुरु नरसी मीरा ज्ञानदेव नामदेव
दासराम तुकाराम नाथएक दीनवत्सल ॥

आभोग : पायो इनहीं आत्मग्यान राम-कृष्ण-हरी नाम
उचरत जपत जगायो अंतर्ज्योति विमल ॥

स्थायी



अंतरा

प	म	–	म	ध	प	नि	नि	–	सां	सां	–	नि	सां	सां	
	गौ	ऽ	र	अं	ऽ	ग	ऽ	म	हा	ऽ	प्र		भु		
	×		०		२		०		३		४				
गं	रीं	–	मं	गं	–	शें	सां	गं	रीं	रीं	गं	शें	सां	–	सां
	चं	ऽ	डि	दा	ऽ	स	क	बी	र	सू	ऽ		र		
	×		०		२		०		३		४				
नि	सां	–	रीं	शें	नि	सां	सां	नि	सां	प	ध	प	म	–	गरी
	पुं	ऽ	ड	री	ऽ	क		पु	रं	ऽ	द		ऽ		रऽ
	×		०		२			०		३			४		
ग	री	प	म	ध	प	ध	म	म	ग	री	ग	शे	सा	सा	सा
	दा	ऽ	स		तु	ल	सी		भ	ये	ऽ		स	फ	ल
	×		०			२			०		३			४	

संचारी

शे	म	–	म	म	म	म	प	प	प	प	ध	प	म	प	
	ना	ऽ	न	क	गु	रु	न	र	सी	मी	ऽ		रा		
	×		०		२		०		३		४				
प	म	–	प	प	सां	–	प	ध	प	ध	प	म	ग	री	री
	ज्ञा	ऽ	न	दे	ऽ	व	ना	ऽ	म	दे	ऽ		व		
	×		०		२		०		३		४				
ग	री	प	म	ग	–	शे	सा	ग	री	ग	शे	सा	–	सा	
	दा	ऽ	स	रा	ऽ	म	तु		का	ऽ	रा	ऽ		म	
	×		०		२		०		३		४				
ग	री	–	री	प	म	–	म	म	प	–	प	म	प	प	प
	ना	ऽ	थ	प	ऽ	क	दी		ऽ	न	व		त्स		ल
	×		०		२		०		३		४				

आभोग

सां	नि	–	नि	सां	नि	नि	नि	सां	–	सां	नि	सां	–	सां	
	पा	ऽ	यो	इ	न		हिं	आ	ऽ	त्म		ग्या	ऽ	न	
	×		०		२			०		३			४		
गं	रीं	पं	मं	गं	–	शें	सां	गं	रीं	रीं	गं	सां	नि	सां	सां
	रा	ऽ	म	क्रे	ऽ	ष्ण		ह	री		ऽ	ना	ऽ		म
	×		०		२			०			३			४	
ध	प	सां	नि	सां	गं	रीं	गं	शें	सां	नि	सां	प	ध	म	ग	ग	री
	उ	च	ऽ	र	ऽ	त		ज	प		ऽ	त		ऽ	ज		
	×		०			२			०			३			४		
ग	री	प	म	ग	री	ग	शे	सा	ग	री	म	ग	री	ग	शे	नि	सा
	गा	ऽ	यो	अं		तु		र	ज्यो		ऽ	ति	ऽ	वि		भु	ल
	×		०			२			०			३				४	

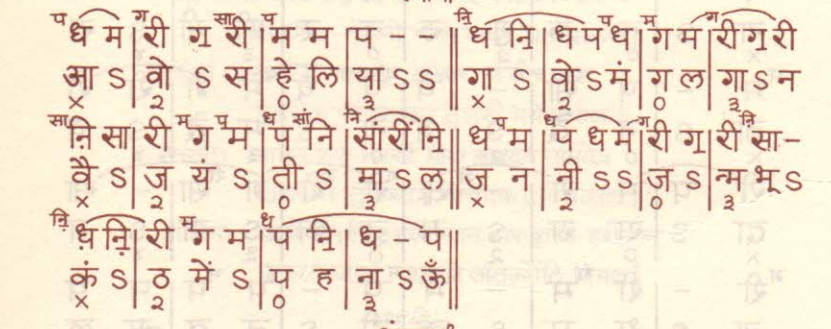
राग जयजयवंती- झपताल (मध्यलय)

स्थायी: आवो सहेलिया गावो मंगल गान
वैजयंती माल जननी जन्म भूकण्ठ में पहनाऊँ।

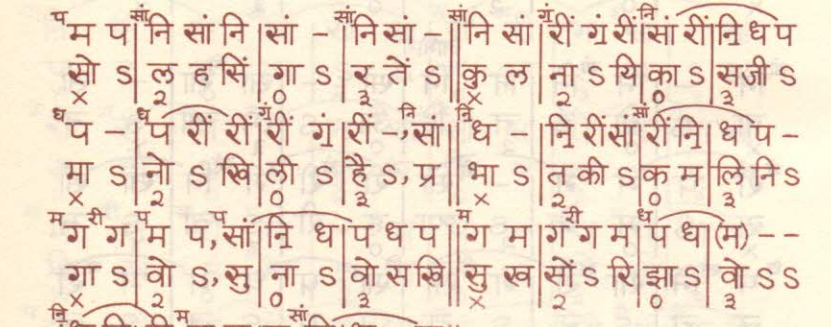
अंतरा-१: सोलह सिंगारतें कुलनायिका सजी
मानो खिली है प्रभात की कमलिनि
गावो सुनावो सखि सुखसों रिझावो
दास्य मुक्ति मनावो॥

अंतरा-२: जय हिन्द जय हिन्द गरज उठ्यो नाद
व्योम जल थल में भर्‌यो शब्द जासों
हरत पाप भय भीति, गावो मंगल गान
वैजयंती माल जननी जन्म भूकण्ठ में पहनाऊँ॥

स्थायी



अंतरा-१



अंतरा-२

सां नि नि | सां नि – नि | सां सां | सां – सां || गं रीं रीं | गं रीं – गं | रीं सां | रीं नि सां
ज य | हिं s द | ज य | हिं s द | ग र | ज s उ | व्यो s | ना s द
× | २ | ० | ३ | × | २ | ० | ३

सां गं – | गं गं रीं गं | मं पं | मंगं रींगं,रीं | सां – | सां रीं नि | ध प | म ग,रीं
व्यो s | म ज ल | थ ल | मों ऽऽ s,भ | च्यो s | रा s द्र | जा s | सों s,ह
× | २ | ० | ३ | × | २ | ० | ३

ग रीं | सा नि सा | ध़ नि़ | रीं – ग | म नि | ध प,ध | म गं | रीं ग रीं
र त | पा s प | भ य | भी s ति | गा s | वो s,मं | ग ल | गा s न
× | २ | ० | ३ | × | २ | ० | ३

नि़ सा – | गं रीं मं गं मं | पं सां | नि सां रीं नि़ ||
वै s | ज यं s | ती s | मा s ल ||
× | २ | ० | ३

---- इत्यादि स्थायी के अनुसार

टीप: लेखक ने इस गीत की रचना भारत के प्रथम स्वातंत्र्य दिवस (१५ अगस्त १९४७) के अवसर पर की थी।

राग जयजयवंती - पालना - दादरा (मध्यलय)

स्थायी: अतही सुन्दर पालना घड़ि लावोरे बंदैया।

अंतरा-१: शीत चन्दन कटाऊ धरि, खरादि रंग लगाऊँ विविध
चोकी बनाऊँ रंग रेशम, लगाऊँ हीरा मोती लाल मंदैया॥

अंतरा-२: आनि धर्यो नंद-द्वार सुभग, ब्रज-वधु देखें बार बार
शोभा नहीं वार पार, धनी धनी धन्य है गढ़ैया॥

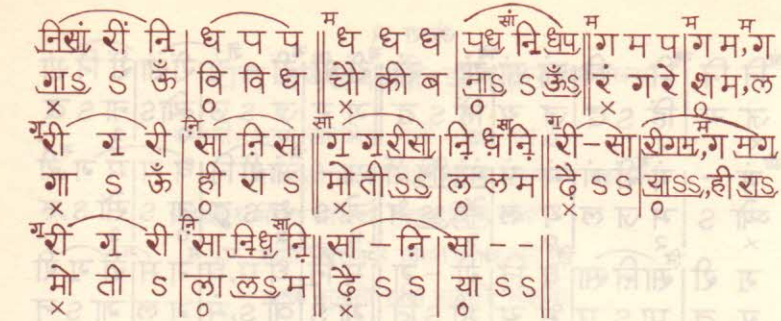
स्थायी

नि़ सा प म | प मं ग म | ग री ग री | सा, नि़ सा | नि़सा रीगं री | सां नि़ ध़,नि़
अ त हि | सुं द र | पा s ल | ना, घ ड़ि | लाऽ ऽऽ वो | रे s,ब
× | ० | × | ० | × | ०

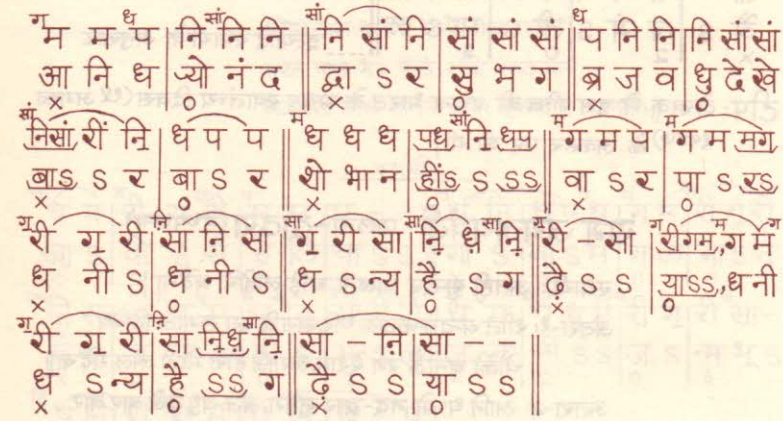
ग़ री – सा | रीगम,ग म | ग री ग री | सा नि़ध़ नि़ | सां – नि़ – सा –
ढ़ै s s | याऽऽ,घड़ि | ला s वो | रे ऽऽ ब | ढ़ै s s | या ऽऽ
× | ० | × | ० | × | ०

अंतरा-१

ग म मं पमप | नि नि,नि | सां – नि | सां सां,प | नि – नि | नि सां,नि़
शी त चंऽ, | दु न,क | टा s ऊ | ध रि,स | रा s दि | रं ग,ल
× | ० | × | ० | × | ०



अंतरा-२



राग जयजयवंती-पालना- रूपक (मध्यलय)

स्थायीः झूलो पालने ब्रिजराज।

अंतरा-१ सृष्टि के सिंगार झूलो, निगम आगम सार झूलो
माधुरी अवतार झूलो, मेरे प्राण अधार झूलो
परम शोभा आज॥ झूलो पालने-----

अंतरा-२ः झूलो सुखसों झूलो प्यारे, ब्रिज सहारे ब्रिज दुलारे
बढ़ै छबि-सम्पति निहारे, नित्य 'राजेश्वर' पुकारे
दौलत-उम्र दराज़॥ झूलो पालने-----

टीपः इस उपरोक्त गीत की शब्द-रचना दरियाबाद के भूतपूर्व राजा स्व. राय राजेश्वर बली जी की है, जिसका स्वरकरण लेखक ने किया है।

स्थायी

प सां – रीं | निध पध | मग रीग रीं || नि सा (सा) | दि ध़ नि़ | ग रीं – रीं मप
झू ऽऽ | लोऽ ऽऽ | पाऽ ऽऽ ल || ने ऽ | ब्रि ज | रा ऽ जऽ
२ | ३ | ⊗ | २ | ३ | ⊗

प सां – रीं | निध पध | मग रीग रीं || नि सा (सा) | दि ध़ नि़ | ग रीं – रीं
झू ऽऽ | लोऽ ऽऽ | पाऽ ऽऽ ल || ने ऽ | ब्रि ज | रा ऽ ज
२ | ३ | ⊗ | २ | ३ | ⊗

रीं ग – रीं | रीं ग म | ध प ध म || म ग म | ग रीं ग | रीं – रीं मप ;
झू ऽऽ | लो ऽ | पा ऽ ल || ने ऽ | ब्रि ज | रा ऽ जऽ ;
२ | ३ | ⊗ | २ | ३ | ⊗

अंतरा–१

ग म – प | सां – – | नि || सां – सां | नि सां | सां –
सृ ऽष्टि | के ऽ ऽ | सिं || गा ऽ र | झू ऽ | लो ऽ
⊗ | २ | ३ | ⊗ | २ | ३

सां नि ध नि | दि रीं – गं | गंरीं || नि सां रीं | नि सां | निध प ध
नि ग म | आ ऽ ग | मऽ || सा ऽ र | झू ऽ | लोऽ ऽ
⊗ | २ | ३ | ⊗ | २ | ३

ग रीं – रीं | ग रीं गंरीं | ग मं पं || ग मं गं मं | रीं गं | रीं सां
मा ऽ धु | री ऽऽ | अ व || ता ऽ र | झू ऽ | लो ऽ
⊗ | २ | ३ | ⊗ | २ | ३

प सां – नि | ध प म | प || प ध || प म ग म | रीं ग | रीं सा
मे ऽ रे | प्रा ऽ | ण || अ धा ऽ र | झू ऽ | लो ऽ
⊗ | २ | ३ | ⊗ | २ | ३

सा ग रीं सा | सां नि़ सा | दि ध़ नि़ || ग रीं – रीं मप | प सां रीं निध पध
प र म | शो ऽ | भा ऽ || आ ऽ जऽ | झू ऽऽ | लोऽ ऽऽ
⊗ | २ | ३ | ⊗ | २ | ३

अंतरा–२

ग म – प | सां सां सां | – || सां नि सां सां | नि सां | सां –
झू ऽ लो | सु ख सों | ऽ || झू ऽ लो | प्या ऽ | रे ऽ
⊗ | २ | ३ | ⊗ | २ | ३

सां नि ध नि | ग रीं गं रीं | सां || सां नि सां रीं | नि ध | प –
ब्रि ज स | हा ऽ रे | ऽ || ब्रि ज दु | ला ऽ | रे ऽ
⊗ | २ | ३ | ⊗ | २ | ३

नि सां रीं नि़ | ध पम | ध प || ध || प म ग म | रीं ग | रीं –
ब ढ़ै ऽ | छ बिऽ | सं ऽ || प ति नि | हा ऽ | रे ऽ
⊗ | २ | ३ | ⊗ | २ | ३

नि॒ सा ध़ नि॒ | ग री ग | म॑ प | म ग म॑ | ग री ग | री सा
नि ऽ त्य | रा ऽ | जे ऽ | ध्व र पु | का ऽ | रे ऽ
⊗ | २ | ३ | ⊗ | २ | ३

सा॑ ग॒ री सा | सा॑ नि॒ सा | नि॒ ध़ नि॒ | ग॑ री | मप | प॑ सां | रीं निध पध
दो ऽ ल | तु ऽ | म्र द | रा ऽ | ज़ऽ | झू ऽऽ | लोऽ ऽऽ
⊗ | २ | ३ | ⊗ | २ | ३

मग रीग॒ री | नि॒ सा (सा)
पाऽ ऽऽ ल | ने ऽ |
⊗ | २ |

---इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग जयजयवंती- तराना-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: दिर दिर तनोम् तदरे दीम् तद्रियानारे,
तदरे दानि,तन तदानि,द्रेन्ना द्रेन्ना द्रेन्ना द्रेन्ना,
धा किटतक,धुम किटतक,धिलांग्।

अंतरा: ना दिर दिर दानि,तुं दिर दिर दानि,तन तुं दिर,
दिर दिर दिर विर,तारे तन तदारे दानि,धा धा किट तक,
धा किटतक,धुम किटतक,धातीना क्रान् ता धा॥

स्थायी

सा॑ मम गम रीसा | – ,नि॒ ध़ प़ | ग॒ री – ग॑,सा॑ नि॒ | री ग म प
दिर दिर त नो | म्,त द रे | दी ऽ म्,त | द्रि या ना रे
० | ३ | × | २

ग॑ म ग म॑ ग॑ री | ग री,म॑ नि॒ ध | नि॒ ध प ध,म॑ | ग म प॑,सां
त द रे दा | ऽ न्नि,त न | त दा ऽ न्नि, | द्रे ऽ न्ना,द्रे
० | ३ | × | २

– सां,नि॒ ध | प,म ग म॑, | नि॒ ध़ नि॒ री ग | म प निध॒ –प
ऽ न्ना,द्रे ऽ | न्ना,द्रे ऽ न्ना, | धा किट तक धुम | किट तक धिलांग्
० | ३ | × | २

अंतरा

प॑ नि॒ ध प म | ग॑ री ग,म॑ म | प प॑ सां – सां, | नि॒ सां रीं गं
ना दिर दिर दा | ऽऽ न्नि,तुं दिर | दिर दा ऽ न्नि, | त न तुं दिर
× | २ | ० | ३

रीं सां नि॒ ध | नि॒ सां रीं,नि॒ | ध प म ग | म॑,ग री ग री,
दिर दिर दिर दिर | ता ऽ रे,त | न त दा ऽ | रे,दा ऽ नि,
× | २ | ० | ३

सा नि़ नि़ सा सा, | ग री ग ग, म | प नि, नि़ सां सां | रीं नि़ ध प म
धा धा किट तक, | धा किट तक धुम, | किट तक, धा ती | ना क्डा न् ताऽ
x | 3 | 0 | 3

ग री – ग, नि़ सा | री ग म प |
धा ऽ ऽ, त | द्रि या ना रे | .... इत्यादि स्थायी के अनुसार
x | 2

राग जयजयवंती – त्रिताल (मध्यलय)

(केवल तीव्र गंधारयुक्त प्रकार)

स्थायी : इन दृगन पै वारी जाऊँ
सोहनी सूरत निसदिन मन ध्याऊँ।

अंतरा : अधर धरी मुरली सोहत अत
रागनि की धुन सुनि सुख पाऊँ ॥

स्थायी

ग म इ

मग ग री ग सा | ग री – –, ग री | ग प म ध प ध | प म ग री, ग नि़
नऽ द ग न | पै ऽ ऽ, वा | ऽ री ऽ ऽ | जा ऽ ऊँ, सो
3 x 2 0

ध प – प ध | म ग म ग री ग | सा सा, नि़ नि़ | ग रींग, मपध, पमग, ग म
हृ नी ऽ सू | र त नि स | दि न, म न | ध्याऽ ऽऽऽ ऊँऽ, इ
3 x 2 0

मग ग री ग सा |
नऽ द ग न | इत्यादि
3

अंतरा

प म अ

प सां नि सां नि | सां – –, नि़ ध | नि़ रींगं मं गं रीं | सां नि़ ध प
ध र ऽ ध | री ऽ ऽ, मु | र लीऽ ऽ सो | हृ त अ त
3 x 2 0

पनि़ सांरीं नि़ नि़ ध | ध प ध म प मे ग | री ग री सा सा | निसारीग, मपध, पमग, ग म
याऽ ऽऽ ग नि | की ऽ धु न | सु नि सु ख | पाऽ ऽऽ ऽऽऽ ऊँऽ, इ
3 x 2 0

मग ग री ग सा | ग री
नऽ द ग न | पै ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
3 x

राग जयजयवंती-तिलवाडा (विलंबित)

(केवल तीव्र गंधारयुक्त प्रकार)

स्थायीः तज दे री अब माननी मान
आज मेरी साची कही मान तू
करो ना इतनो गुमान |
अंतराः लर पछतैहो अपने पियासों
ले आवो मनाये वाको
यह इक बात नीकी जान ||

स्थायी

ग म मग
त न ऽ ड

ग री ग रीग (सा) ऽ धनि | ग रीम गरी री गम ध पध | म गम ग रीग (सा) ऽ धनिरीगम री |
दे ऽऽ री ,अब | मा ऽऽ नऽ नीऽ | मा ऽऽ ऽऽ न आऽऽऽऽ ऽज |
३ | × | २ |

नि सा नि सा रीनि धप प मप | ध मप प सा नि सा निसा | ग री ग रीग (सा) सा नि सा |
मे ऽऽ रीऽ ऽऽ ऽऽ | साऽ ची क ही ऽऽ | मा नऽ तू ,करो |
० | ३ | × |

ग रीगमपसां – निध पध | (म) गम रीग (सा) ग म मग | ग री ग रीग (सा) |
नाऽऽऽऽ ऽ इत नो ग | मा ऽऽ ऽऽ न ऽ त ऽज | दे ऽऽ री... इ.
२ | ० | ३

अंतरा

ग मम पप | प सां निध नि सां सां | नि धनि गं रीं गं रीं सां | सां निसां निसांरींनि धप |
लर पछ | तै ऽऽ ऽऽ हो | अप ने ऽपि या | ऽऽ ऽऽऽऽ सोंऽ |
× | २ | ० |

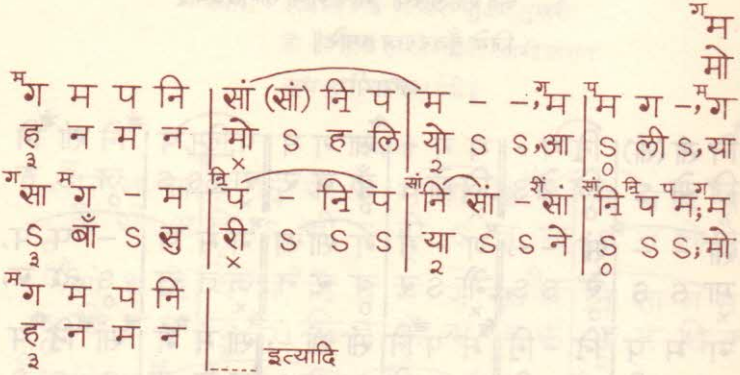
ग रीगमपसां निध पध | (म) गम ग री ग रीग (सा) सा | प मम पप प सा नि सा सा |
लेऽऽऽऽ आऽ वो ,म | ना ऽऽ ये ऽऽ वाको | यह इक बा ऽऽ त |
३ | × | २ |

सा नि सारीगम पनिसांरीं- निधपमगमरीग (सा) ग म मग | ग री ग रीग (सा) | इत्यादि स्थायी के अनुसार
नीऽकीऽऽ ऽऽऽऽऽ जाऽऽऽऽऽऽऽ न ऽ त ऽज | दे ऽऽ री...
० | ३

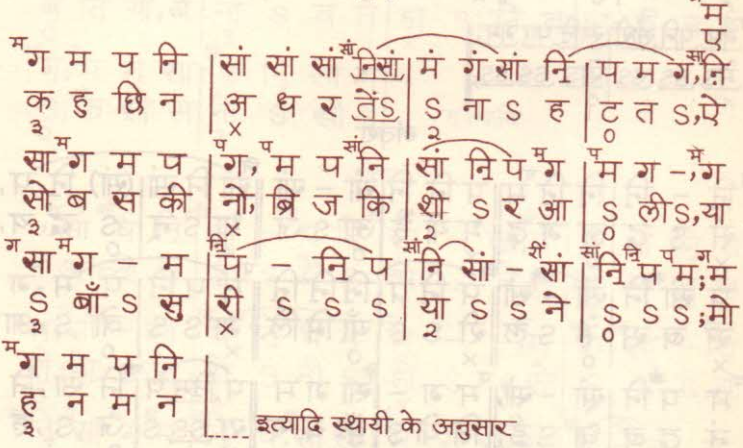
राग तिलंग-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : मोहन मन मोह लियो आली या बाँसुरीया ने।
अंतरा : एकहु छिन अधरतें ना हटत
ऐसो बस कीनो ब्रिजकिशोर आली या बाँसुरीया ने॥

स्थायी



अंतरा



राग तिलंग - दादरा (मध्यलय)

स्थायीः जियो जियो जियो कुँवर राज हमारे
गौर बरन अत सुन्दर तन निहारी
वारि गयो मनवा मेरो |

अंतराः संदलगद भयो है आज भानूदय
सब सहेलरियाँ मिली गावो आनंद बधाई
जियो कुँवर राज हमारे ||

स्थायी

नि सां (सां)	नि प -	म ग -	सा ग म	प निम प	नि सां नि		
जि यो s	जि यो s	जि यो s	कुँ व र	रा ss s	ज s ह		
सां - -	सां - -,	ग - म	ग सा सा	ग म प	- प प,		
मा s s	रे s s,	गो s र	ब र न	अत सु	न्द र,		
ग म प	नि - नि	म पनि	सां सां -,	सां मं गं	सां नि प		
त न नि	हा s रि	वा s रि	ग यो s,	म न वा	s s s		
गम पनि सांरीं	सांनि पम गम,						
मेs ss ss	रोs ss ss,						

अंतरा

नि - नि	नि नि मा	प नि नि	सां - सां	सां नि सां	(सां) नि प,		
सं s द	ल ग ढ़	भ यो है	आ s ज	भा s न्	s द य,		
प सांनि	सां - सां	पनि प	निनिनि	म पनि	प म, ग		
स ब स	हे s ल	री s s	याँ मि लि	गा s s	वो s, आ		
म पनि	सां - सां,	म ग -	सा ग म	प निम प	नि सां, नि		
नं द ब	धा s ई,	जि यो s	कुँ व र	रा ss s	ज s, ह		
सां - -	सां - -	गम पनि सांसं	गंसां निप मप,	नि सां (सां)	नि प -		
मा ss	रे ss	ss ss ss	s s ss ss ss,	जि यो s	जि यो s		

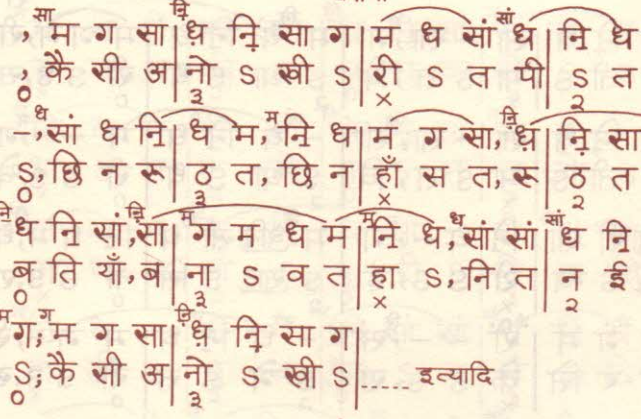
----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग दुर्गा (खमाज थाट)–त्रिताल (मध्यलय)

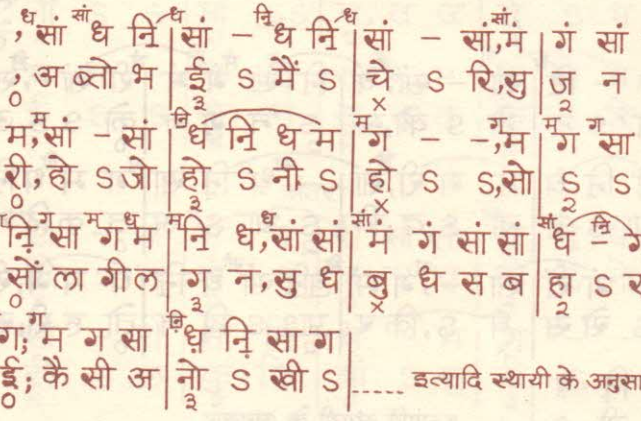
स्थायी : कैसी अनोखी रीत पीत की ये
छिन रूठत छिन हँसत रूठत छिन
बतियाँ बनावत हो नित नई नई।

अंतरा : अब तो भई मैं चेरी 'सुजन' तुम्हरी
हो जो होनी हो सो, तोसों लागी लगन
सुध बुध सब हार दई ॥

स्थायी



अंतरा



राग रागेश्री – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः सरस्वती मात विधाधरी श्वेताम्बरी
हंसासिनी राग-रसिके रागेश्वरी |
अंतराः देहु दान मोको ग्यान गुन को
अप्रम्पार नाद विधा अत कठिन
कैसे सधे किरपा बिन तोहरी ॥

स्थायी

सा रीसा नि़ ध़	सा – सा, ग़	म निध नि ध	म ग मे, रीरी स
र स ती स	मा स त, वि	स द्या स ध	री स स, स
३	×	२	०
सा रीसा नि़ ध़	सा – सा, सांसां	– ांध नि ध	मे – –, ग़म
र स ती स	मा स त, वि	स द्या स ध	री स स, श्वे
३	×	२	०
म िधनि रीं सां	नि ध –, ग़	म िधनि सां िध	नि ध मे, िधध
स ताऽ स म्ब	री स स, हं	स साऽ स सि	नी स स, रा
३	×	२	०
नि सां ंगं मं	गंरीं – –, िसां	– ांध नि ध	म ग –; रीरी
स ग र सि	के स स, रा	स गे स स	री स स; स
३	×	२	०

अंतरा

सां ांध – निध	सां – सां, ांध	नि सां ंगं मं	गंरीं सां –, िसां दे
हु दा स न	मो स को, म्या	स न गु न	को स स, अ
३	×	२	०
सां ांध नि ध	म ग री, िसां	– ासां ध़ नि़ सा	मग म िधनि
प्र म्पा स र	ना स द, वि	स द्या स अ	त क ठि न
३	×	२	०
िनसां – गं रीं	सां –, मग म	िधनि सां ांध नि	ध म गे; रीरी
कै स से स	धे स, कि र	पाऽ स बि न	तो ह री; स
३	×	२	०

सा रीसा नि़ ध़ |
र स ती स |..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग रागेश्री – मणिताल(मध्यलय)

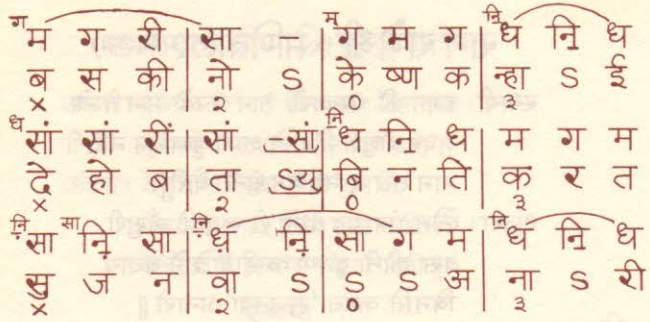
स्थायी : दृगन की चमकसों भान लज्यो मान तज्यो
अधर बाँसुरी निरखि लजी बृखभान नंदिनी
मान तज दे भई धुन सुनत बोरी।
अंतरा : कौन मंत्र पढ़ दीनो री लकुटि बाँसुरी
बस कीनो कृष्ण कन्हाई देहो बताय
बिनति करत 'सुजनवा' अनारी ॥

स्थायी

ग	म	ग	री	सा	(सा)	नि़	ध़	नि़	सा	म	ग	म	ध
	दृ	ग	न	की	ऽ		च	म	क		सों	ऽ	ऽ
×				२			०				३		
ध	नि	ध	म	ग	री	सा	नि़	ध़	नि़	सा	म	ग	म	–
	भा	ऽ	न		लु	ज्यो		मा	ऽ	न		त	ज्यो	ऽ
×				२			०				३			
नि़	सा	ग	म	नि़	ध	नि	ध	सां	–	सां	नि़	सां		
	अ	ध	र		बाँ	ऽ		सु	री	ऽ		नि	र	खि
×				२			०				३			
सां	नि	ध	–	ध	ग	म	नि़	धनि़	सां	सां	सां	ध	नि़	ध
	ल	जी	ऽ		बृ	ख		भा‌ऽ	ऽ	न		नं	ऽ	दि
×				२			०				३			
	म	ग	री	नि़	सा	नि़सा	सा,	सा	सां	सां	सां	ध	नि	ध
	नी	ऽ	ऽ		मा	ऽऽ		न,	त	ज		दे	ऽ	भ
×				२			०				३			
	म	ग	–,	नि़	ध़	नि़		सा	म	म	नि़	ध	नि	ध;
ई		ऽ	ऽ,		धु	न		सु	न	त		बो	ऽ	रि;
×				२			०				३			

अंतरा

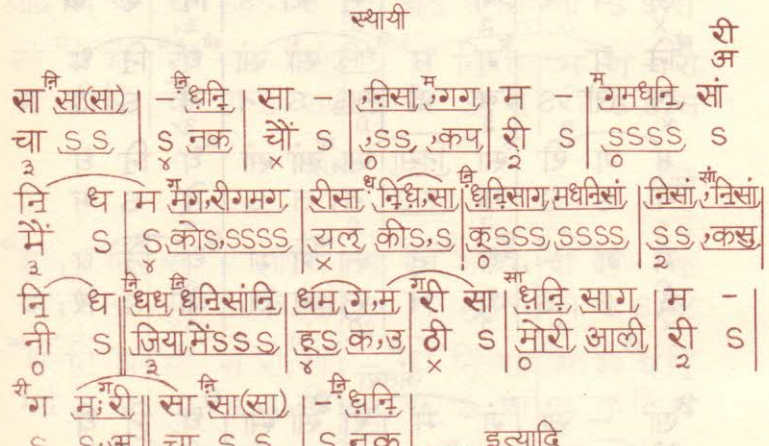
नि़	सां	–	सां	मं	गं	मं	रीं	नि़	सां	सां	नि़	ध	नि	ध
	कौ	ऽ	न		मं	ऽ		त्र	प	ढ़		दी	ऽ	नो
×				२			०				३			
	सां	–,	रीं	सां		नि		ध	–	म		ग	–	–
	री	ऽ,	ल	कु		टि		बाँ	ऽ	सु		री	ऽ	ऽ
×				२			०				३			



राग रागेश्री–एकताल (विलंबित)

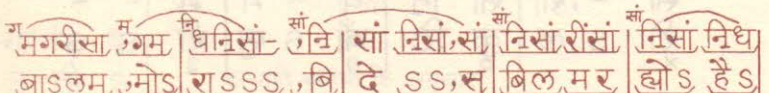
स्थायी : अचानक चौंक परी मैं कोयल की कूक सुनि
जिया में हूक उठी मोरी आली री।
अंतरा : बालम मोरा बिदेस बिलम रह्यो है
तब जानो कूक भली जब आवेंगे
साजन घर मोरी आली री ॥

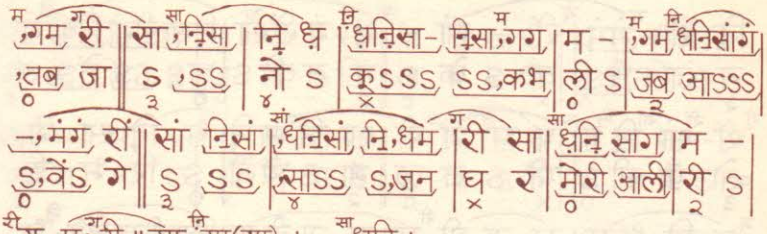
स्थायी



..... इत्यादि

अंतरा





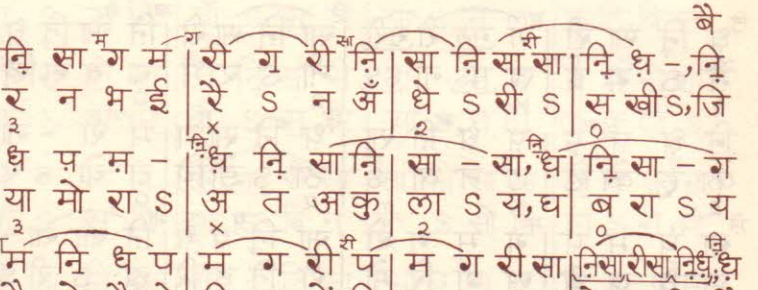
.....इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग गारा – त्रिताल (मध्यलय)

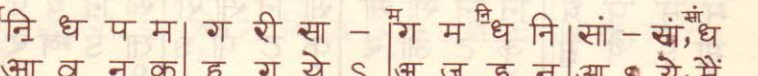
स्थायी : बैरन भई रैन अँधेरी सखी
जिया मोरा अत अकुलाय घबराय
कैसे कैसे पिया सों मिलन अब होवे |

अंतरा : आवन कह गये अजहु न आये
मैं न जानूँ वाके मन की बातें
अब तो फँसी पीत लगाये बौरी भई
कैसे कैसे पिया सों मिलन अब होवे ||

स्थायी



अंतरा



नि सां–गंमं | रीं – सां – | गंरीं गं रीं सां | निसां रींसां निधं, गं
न जा ऽ नँऽ | वा ऽ के ऽ | म न की ऽ | बा ऽ ऽऽ तें ऽ, अ
३ × २ ०

गंरीं रीं सां निं धं | प म ग री | सा नि़ सा नि़ | ध़ नि़ सा ग
ब्तो फ़ँ सी ऽ | पी ऽ त ल | गा ऽ ये बो | ऽ रि भ ई
३ × २ ०

गंम नि़ ध प | म ग री रीं प | म ग रीं सा | नि़सा रीसा नि़ध़ं; धं ध़
कै से कै से | पि या सों मि | ल न अ ब | हो ऽ ऽऽ वे ऽ; बै
३ × २ ०

सांनि़ सा मं गं म
र न भ ई |
३ ---- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग गारा – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: मैं गई जमुना नीर भरन सखि
काहू को ढिटनवा ठाड़ो चितचोर
सुध बुध सगरि मोरी निहरि हारी।
अंतरा: माथे मुकुट और कट पीताम्बर
गरे बैजयंती अधर बाँसुरी सोहे
लगन लगी मैं भई वाकी चेरी॥

स्थायी

निं ध़ नि़ सा री | मं ग मग रीं गरी | नि़ सा नि़ सा री | सां नि़ रीं सा नि़ ध़
मैं ऽ ग ई | ज मु ना ऽऽ | नी ऽ र भ | र न स खि
३ × २ ०

नि़ ध़ प़ गं म़ | प़ ध़ सांनि़ सा | निं ध़ नि़ सा मं ग | मं गं री – सा
का हू को ढि | ट न वा ऽ | ठा ऽ ड़ो चि | त चो ऽ र
३ × २ ०

निं सा प म प | मं ग म ग री | सा नि़ धं प़ ध़ | सांनि़ सा सा –;
सु ध बु ध | स ग रि मो | री नि ह रि | हा ऽ री ऽ;
३ × २ ०

अंतरा

सां मं गं म प ध | सांनि नि सां सां | निं सां निं सां रीं | सां नि़ ध प
मा ऽ थे मु | कु ट औ र | क ट पी ऽ | ता ऽ म्ब र
३ × २ ०

नि॒ ध नि॒ ध प | म ग॑ री – सा | नि॒ ध़ नि॒ सा ग॑ री | म ग म ग॑ री
गु रे बै स | ज य ं स ति | अ ध र बाँ | सु री सो हे
२ × २ ०
नि॒ सा॑ प म प | म ग म ग॑ री सा | – सा॑ नि॒ ध़ प़ ध़ | सा॑ नि॒ सा सा –;
ल ग न ल | गी मैं भ ई | ऽ वा ऽ की | चे ऽ री ऽ;
२ × २ ०

राग गारा – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : बिन रागनि बाँसुरिया नहीं लकुटी
बाँसुरिया बिन कैसो बिहारी
बिहारी बिना बिंदराबन कैसो
कैसो री बिन बिंदराबन ब्रिज |

अंतरा : ब्रिज बिच इक बिंदराबन सोहे
तामें सोहे ब्रिज छैल बिहारी
जाके अधर धरी बाँसुरी सोहे
सोहे रागनी बाँसुरि मों ||

स्थायी

नि॒ सा नि॒
बि न

नि॒ सा (सा) नि॒ ध़ | नि॒ ध़ नि॒ सा री | ग – प॑ म प | म ग॑, म॑ ग
रा ऽ ग नि | बाँ ऽ सु रि | या ऽ न ल | कु टि, बि न
० ३ × २

ग॑ री ग॒ री सा | नि॒ ध़ नि॒ सा री | ग –, प॑ म प | म ग॑ म॑ री सा
रा ऽ ग नि | बाँ ऽ सु रि | या ऽ, न हीं | ल कु टी ऽ
० ३ × २

सा॑ नि॒ – सा नि॒ | सारी गम॑ री सा | सा॑ नि॒ सा॑ री सा॑ | नि॒ ध़ प़, प़ म़
बाँ ऽ सु रि | याऽ, ऽऽ बि न | कै ऽ सो बि | हा ऽ री, बि
० ३ × २

नि॒ ध़ नि॒ सा | री – सा॑ नि॒ सा | गम॑ प म॑ ग म | म॑ नि॒ ध़ प़, म
हा ऽ री बि | ना ऽ बिं द | राऽ, ऽ ब न | कै ऽ सो, कै
० ३ × २

म॑ ग म॑ ग॑ री सा | नि॒ ध़ नि॒ सा म | ग – प॑ म प | म॑ ग म॑; ग॑ री सा
ऽ सो री ऽ | बि न बिं द | रा ऽ ब न | ब्रि ज; बि न
० ३ × २

अंतरा

ग म ग रे सा	म ग म ध नि	सां – सां सां	नि सां सां –
ब्रि ज बि च	इ क बिं द	रा ऽ ब न	सो ऽ हे ऽ
०	३	×	२
सां नि – सां रेंगं	मं गं रें सां सां	सां नि सां सां	निसां रेंसां नि ध
ता ऽ में सोऽ	ऽ हे ब्रि ज	छै ऽ ल बि	हा ऽ ऽऽ री ऽ
०	३	×	२
ध सां नि ध प	म गम गरी सो	ध़ नि़ सा री	गम प मग म
जा ऽ के अ	ध रऽ ध री	बाँ ऽ सु री	सोऽ ऽ हेऽ ऽ
०	३	×	२
नि़ ध़ – नि़ सा	– नि़ सा –	रीग म ग म	गरी – ;सा नि़
सो ऽ हे रा	ऽ ग नी ऽ	बाँऽ ऽ सु रि	मों ऽ ;बि न
०	३	×	२
नि़ सा (सा) नि़ ध़			
रा ऽ ग नि	----- इत्यादि स्थायी के अनुसार		
०			

राग गारा – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : श्याम, कौन गली गयो री बता दे री
ब्रिज की ग्वारनिया बता दे री |
अंतरा : एक बन ढूँढ़ूँ सकल बन ढूँढ़ूँ
सूझत ना बूझत कछु मोहे अब काम-धाम
ब्रिज की ग्वारनिया बता दे री ||

स्थायी

म ग – –ग मग	री ग रीसा	नि़,री सानि़ ध़प़	मं ध़नि़ सा नि़
को ऽ ऽन् गऽ	ली ऽ ग यो	री,ब ताऽ ऽऽ	ऽ देऽ ऽ री
×	२	०	३
सा –सा, सा ध़ नि़	सा म ग मं प	मग रीसा नि़ री	सानि़ ध़,नि़ सा नि़
श्या ऽम् ब्रि ज	की ग्वा र नि	याऽ ऽऽ ऽ ब	ताऽ ऽ,देऽ ऽ री
×	२	०	३
सा ; म ग –ग मग	रीग रीसा		
श्याम् ; को ऽन् गऽ	ली ऽ ग यो	----- इत्यादि	
×	२		

अंतरा

नि सां सां निध नि	सां – सां, म प	मग रीसा सा नि ध	सा नि सा सा, नि सा				
ए क ब ड न	दूँ ऽ इँ, स	कु ऽ ल ऽ ब न	दूँ ऽ इँ, सू				
×	२	०	३				
प प म प म ग	म रीग रीसा	निसा रीग मग रीसा	निध नि धनि सा नि				
झ त ना बू	झ त ड क छु	मो ऽ हे ऽ ऽऽ अ ऽ	ब ऽ का ऽ म				
×	२	०	३				
सा -सा, सा ध नि	सा म ग म प	मग रीसा नि रीं	सा नि ध नि सा नि				
धा ऽम, ब्रि ज	की खा र नि	या ऽ ऽऽ ऽ ब	ता ऽ ऽ दे ऽ री				
×	२	०	३				
सा म ग -ग मग गरी ग री सा							
श्याम, को ऽ न, ग ड	ली ऽ ग यो	..... इत्यादि स्थायी के अनुसार					
×	२						

राग गारा- तराना -आड़ाचौताल(मध्यलय)

स्थायी : दिर दिर तन तनन तदारे दानि तोरेदानि तोम् तन
द्रियानोरे दीम् तनोम् दीम् तनोम् तनन तन
तदियानारे तोरे दानि तेद्रेदानि।

अंतरा : (संस्कृतमें) विलसितम् ललितम् ते चारुमुखि मनसिज
मनोव्याकुलयति जयतिकथैवका पुनस्तपस्विनाम्
मद्विध किं पुरुषाणाम् ॥

स्थायी

नि ध़ नि़	सा री, म ग म	ग, री	सा नि़	सा री, नि सा नि़			
दिर दिर	त न, त न	न, त	दा रे	दा नि, ता रे			
×	२	०	३	४			
सा री, नि सा –	नि़ ध़, ध नि़ ध़	प़ म़	–, नि ध़	– नि़			
दा नि, तो म्	त न, द्रि या	ना रे	ऽ, दी	म् त			
×	२	०	३	४			
सा –	–, नि ध	– सां नि़	सां –	–, सां मं	गं रीं	सां नि़,	
नो म्	ऽ, दी	म् त	नो म्	ऽ, त	न न	त न,	
×	२	०	३	०	४	०	
नि सां रीं	सां नि़	ध, ध सां	– नि़	ध प,	म ग रीसा;		
त दि	या ना	रे, ता	ऽ रे	दा नि,	त द्रे दा नि;		
×	२	०	३	०	४	०	

अंतरा

				नि				सां				सां		ग	म
															वि
ग	री	सा	–	ध	नि	सां	–	ध	नि	रीं	सां	रीं	सां	नि	
ल	सि	त	म	ल	लि	त	म	ते	ऽ	चा	ऽ	रु		मु	
४		०		×		२		०		३		०			
सां	नि	ध	प	म	ग	री	–	नि	सा	नि	सा	री	नि	सा	नि
खि	म	न	सि	ज	म	नो	ऽ	व्या	ऽ	कु	ल	य		ति	
४		०		×		२		०		३		०			
नि	ध	नि	सा	म	ग	म	–	प	म	–	–	–	नि	ध	–
ज	य	ति	क	थै	ऽ	व	का	ऽ	ऽ	ऽ		पु	न		स्
४		०		×		२		०		३			०		
सां	नि	सां	–	रीं	मं	गं	रीं	सां	नि	ध	सां	नि	ध	प	
त	प	स्	वि	ना	म	म	द्	वि	ध	कि	म्	पु	रु		
४		०		×		२		०		३		०			
म	ग	री	सा	नि	सा	री									
षा	ऽ	णा	म	दिर	दिर	त	न								
४		०		×		२									

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग गारा – एकताल (विलंबित)

स्थायी: कह ना गये कछु बातें बालमवा मोरे
याद आवत नित घरि पल छिन दिन
कल ना परत मोहे |

अंतरा: अत बिरम रहे सखि परदेसवा, राह तकत हूँ
अब घर अंगना ना सोहे ||

स्थायी

नि	नि	म	ग		नि	सां									
सासा	सागमप	गम	रीग	री	सा	सा	धनि	सा	ग	म	नि	सागम			
कह	नाSSS	SS	SS	ग	ये	ऽ	कछु	बा	ऽ	तें		बालम			
३					४			×		०					
नि	ध	ध	प	म	म	ग	रीग	रीसा	नि	सा	प	धपमग	रीग	रीसा	निसारीसा	निध
ध	पधनि	धपम			ग											
वा	SSS	SSS			S	SS	मोरे			या	ऽ	दSआSSSवS		तSSS	नित	
२					०					३		४				
नि					म	नि										
धनि	साग	मप	गम		गमधनिसां		नि	धपमग		रीगरीसा		निसारीसानिध				
घरि	पल	छिन	दिन		कSलSSS		ना	Sपरत		SSमोS		SSSS हेS				
×		०			२					०						

अंतरा

नि सांग, मधनिसां | नि सां – | नि सां सां | सां धनि, सांरींगंरींसां, निसांरींसां |
अत बिरमर | हे ऽ | स खि | पर देऽऽऽऽ, ऽऽऽस |
४ | × | ० | २

निध पमं, | प सांनि ध,प | म,गम ग रीसा, | सा धनिसाग मप,मग,मे |
वाऽ, ऽऽ, | राऽ ह,त | क,तऽ हूँऽ, | अब घर अंऽ,ऽऽ,ग |
० | ३ | ४ | ×

म निधपमगरीसा, निसारीसा,निध, | नि धनिसाग म,ग रीग | रीसा निसारीसा,निधं |
नाऽऽऽऽऽऽ, ऽऽऽऽ,ऽऽ, | नाऽऽऽ ऽ,ऽऽ | सोऽ ऽऽऽऽ,हेऽ, |
० | २ | ०

नि धनि,सागमप, म गम,रीग,री | नि सा(सा), सा धनि |
कहं,नाऽऽऽ, ऽऽ,ऽऽ,ग | ये ऽ, कछु, |
३ | ४ | ---इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग खंबावती – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : लाज शरम तोको नाहीं आवे
अत नीलज डार दीन्हीं मोरी जल की गगरिया
निपट निडर ठगेरी करत नित नित |

अंतरा : अब ही जाय जसोदा रानी से कह दूँगी
तोरे ऐसे छैल लाल ग्वाल-बाल
ना देखो ऐसो नटखट नीलज दुर्जन तुम्हरे सम ||

स्थायी

म ग म सा नि सा | म री प म ध प ध | सां – पं ध | मप, म ग म सा |
ला ऽ ज् श | र म तो को | ना ऽ ऽ ऽ | हींऽ आ ऽ वे |
० | ३ | × | २

म ग म सा नि सा | म री प म ध प ध | सां – पं,ध,प | ध सां रीं गं |
ला ऽ ज् श | र म तो को | ना ऽ हीं,अ | त नी ल ज |
० | ३ | × | २

नि सां प ध पं म | प ग म सा | नि सा री म प | नि ध नि ध – |
डा ऽ र दी | ऽ न्हीं मो री | ज ल की ग | ग रि या ऽ |
० | ३ | × | २

ध पं सां ध सां रीं | गं सां सां रीं नि | ध ध प ध पं मे | म प ग म सा; |
नि प ट नि | ठ् र ठ ठो | री क र त | नि त नि त; |
० | ३ | × | २

अंतरा

प म म प सां नि | – नि नि सां सां | सां नि सां प ध | ध सां रीं गं रीं सां
अ ब ही जा | ऽ य ज सो | दा रा नी से | क ह दूँ गी
× २ ० ३

सां रीं – नि, नि सां | – ध, ध नि – | ध प, प ध – प मे, | म प – म गे, ग म
तो ऽ रे, ऐ | ऽ से, छे ऽ | ल, ला ऽ ल, | खा ऽ ल, बा
× २ ० ३

– शी सो –, नि सा | म री म प ध | सां रीं गं रीं सां | रीं सां नि सां, सां ध
ऽ ल ऽ, ना | दे खो ऐ सो | न ट ख ट | नी ल ज, दु
× २ ० ३

नि ध प ध, प म | प म गे ग म सो; | म ग म सा नि सा, | म री प म ध प सां ध
र ज न, तु | म्ह रे स म; | ला ऽ ज, श | र म तो को
× २ ० ३

----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग खंबावती- लक्षणगीत- तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी : नाद नगर बसायो आज
राग जुगल सुन्दर मेल रचायो।
अंतरा : देस के संग झिंझूटी मिलायो
बीच बीच चमके सुर मांड
अत अनुपम रूप खंबावती नाम कहायो॥

स्थायी

म गम सा नि सा सारी म प | नि ध पध सां नि | धप ध म पग | म ग म – सा
नाऽ द न गर ऽ ब | सा ऽऽ ऽ ऽ | ऽऽ यो ऽ ऽऽ | आ ऽ ऽ ज
३ × २ ०

ध पध सां रीं गं सां | सां (सां) नि ध | धनि प, पध धम पग | म ग म – सा;
राऽ ग जु ग ल | सु ऽ न्द र | मेऽ लऽ रऽ चाऽ ऽऽ | ऽ ऽ ऽ यो;
३ × २ ०

अंतरा

प मप सां निसां नि सां सां | नि सां सां सांरींरीं, सांरींगं, सां सां (सां) निध, नि धध नि धनि प |
देस, केऽ सं ग | झिं झ, टीऽऽ, ऽऽऽ, गमि | लाऽ, योऽ, बीच, बीऽ च |
३ × २

ध पप ध सां नि धप | धम म पग ग म सो | म रीम पध सांरीं रीं गं सां रीं |
चम केऽ ऽ सुर | मांऽ ऽऽ ऽ ऽ | अत अनुपम रू प, खं |
० ३ ×

सां नि़	ध़प	प ध़	प म,प	| म ग	म – सा,	|| नि़ सा	गमपमपगे	ग म–सा नि़ सा	मसारी	सा,प,	|
बा	वति	ना	म,क	| हा	ऽ ऽ यो,	||	नाऽऽऽ,ऽऽ	ऽऽऽद,न	गर	ऽ,ब	|
2				| 0		|| 3					|

----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग झिंझोटी – दादरा (मध्यलय)

स्थायीः बन्सीबट जमुना तट निरतत बनवारी
अति सुगंध मंद मंद पवन चलत प्यारी।

अंतरा-१ः चन्द्र बदन श्याम रसिक मुकुट चंद्र सीस लसत
चन्द्रमुखी पिया शरद चन्द्र की उजियारी
निरतत बनवारी॥

अंतरा-२ः बाजे बाजत विशाल अति मति सुर अधिक ताल
राग रंग विविध भाँति नूपुर ध्वनि न्यारी
निरतत बनवारी॥

अंतरा-३ः नारायण शिव सुजान गोपिका को भेख ठान
निरखि निरखि नृत्य गान भये चित्रकारी
निरतत बनवारी॥

टीपः इस उपरोक्त गीत के शब्द 'राग रत्नाकर' ग्रंथ से लिये गये हैं, जिसका स्वरकरण लेखक ने किया है।

स्थायी

सा ध़	सा सा ध़	| सा	नि़ सा	री	|| म ग	म ग री	| –	सा	सा
ब	ऽ न्सी	| ऽ	ब	ट	|| ज	मु	ना	| ऽ	त	ट
×		| 0			|| ×			| 0		
ग री	प	प	| प ध़	प म	मप	|| म ग	– री सा	री ग	–	–
नि	र	त	| त ऽ	ब	नऽ	|| वा	ऽ	ऽ	| री	ऽ	ऽ
×			| 0			|| ×			| 0		
म ग	म गम	री	| सा	सा नि़	री	|| सा	नि़	ध़	| नि़ सा	–	–
नि	रऽ	त	| त	ब	न	|| वा	ऽ	ऽ	| री	ऽ	ऽ
×			| 0			|| ×			| 0		
सा नि़	ध़ सा नि़	| सा	–	नि़ सा	|| सा नि़	ध़ सा नि़	| सा	–	नि़ सा
अ	ति	सु	| गं	ऽ	ध	|| मं	ऽ	द	| मं	ऽ	द
×			| 0			|| ×			| 0		

सां नि़ ध़ नि़ | सा सा री || म ग – मग | ग री – –
प व न | च ल त || × प्या ऽ ऽऽ | री ऽ ऽ
× ० | ० | ० |
ग री प प | पध़ प म मप | म ग – री सा | री ग – –
नि र त | तु ऽ ब नऽ | × वा ऽ ऽ | री ऽ ऽ
× ० | ० |
म ग म गम रीं | सा सां नि़ री | नि़ सा नि़ ध़ | नि़ सा – –
नि रऽ त | त ब न | × वा ऽ ऽ | री ऽ ऽ
× ० | ० |

अंतरा-१

म ध – ध | नि़ ध प || ध प ध प | म ग री
चं ऽ द्र | ब द न || × श्या ऽ म | र सि क
× ० | ० |
म ग म ग | री सा सा || ग री ग ग | म ग ग
मु क्र ट | च ऽ न्द्र || × सी ऽ स | ल स त
× ० | ० |
प सां – पे | ध प म प || म ग म गम ग | री सा सा
च ऽ न्द्र | मु खी ऽ || × पि याऽ ऽ | श र द
× ० | ० |
सा नि़ ध़ नि़ | सा नि़ सा री || म ग – मग | ग री – –
च ऽ न्द्र | की उ जि || × या ऽ ऽऽ | री ऽ ऽ
× ० | ० |
ग री प प | पध़ प म मप | म ग – री सा | री ग – –
नि र त | तु ऽ ब नऽ | × वा ऽ ऽ | री ऽ ऽ
× ० | ० |
म ग म गम रीं | सा सां नि़ री | नि़ सा नि़ ध़ | नि़ सा – –
नि रऽ त | त ब न | × वा ऽ ऽ | री ऽ ऽ
× ० | ० |

अंतरा-२

री म – म | – री म || प ध सां नि़ | ध – ध
बा ऽ जे | ऽ बा ऽ || × ज त वि | शा ऽ ल
× ० | ० |
नि़ ध नि़ ध | नि़ ध प || ध प म प | ध – ध
अ ति म | ति सु र || × अ धि क | ता ऽ ल
× ० | ० |

ध नि ध सां | नि ध प | म ग री | नि सा – सा
रा ऽ ग | रं ऽ ग | वि वि ध | भाँ ऽ ति
× ० | × | ०

सा नि़ ध़ सा नि़ | सा नि़ सा री | म ग – मग | ग री – –
नू ऽ पु | र ध्व नि | न्या ऽ ऽऽ | री ऽ ऽ
× ० | × | ०

ग री प प | पध प म मप | म ग – री सा | री ग – –
नि र त | तड ब नड | वा ऽ ऽ | री ऽ ऽ
× ० | × | ०

म ग म गम री | सा नि़ सा री | नि़ सा नि़ ध़ | नि़ सा – –
नि रऽ त | त ब न | वा ऽ ऽ | री ऽ ऽ
× ० | × | ०

अंतरा-३

सा नि़ – नि़ | – सा सा | ग री म गरी | नि़ सा – सा
ना ऽ रा | ऽ य ण | शि व सुऽ | जा ऽ न
× ० | × | ०

ग री प प | प – धप | म गरी सा | ग री ग ग
गो ऽ पि | का ऽ कोऽ | भे ऽऽ ख | ठा ऽ न
× ० | × | ०

ग म म म | ग म म म | धप निध प | म ग ग
नि र खि | नि र खि | नृऽ ऽऽ त्य | गा ऽ न
× ० | × | ०

सा नि़ ध़ नि़ | सा – री | म ग – मग | ग री – –
भ ये ऽ | चि ऽ त्र | का ऽ ऽऽ | री ऽ ऽ
× ० | × | ०

ग री प प | पध प म मप | म ग – री सा | री ग – –
नि र त | तड ब नड | वा ऽ ऽ | री ऽ ऽ
× ० | × | ०

म ग म गम री | सा नि़ सा री | नि़ सा नि़ ध़ | नि़ सा – –
नि रऽ त | त ब न | वा ऽ ऽ | री ऽ ऽ
× ० | × | ०

राग झिंझोटी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : मेरो मन सखि हर लीनो साँवरिया ने
सुन्दर सूरत अत रंगभरी चितचोरी
सुध बुध बिसर गई मोरी सारी ।

अंतरा : सोवत जागत मन लागि रहत नित
कछु नाहीं मोहे अब सूझ-बूझ आज
लाज काज की, तरपत जिया
देखी देखी री मैं भई वाके चरनन की चेरी ॥

स्थायी

, ग म ग री ग	री सा री सा नि़ सा	नि़ ध नि़ ध प़ , प़	सा ध़ सा ग री म	
, मे रो म	न स खि ह	र ली नो , साँ	व रि या ऽ	
×	२	०	३	
ग , म ग री ग	री सा री सा नि़ सा	नि़ ध नि़ ध प़ ध प़	सा ध़ सा ग री म	
ने , मे रो म	न स खि ह	र ली नो साँ	व रि या ऽ	
×	२	०	३	
ग – – –,	ग प म ग री	री म ग री सा	सा नि़ सा ग री री ग	
ने ऽ ऽ ऽ,	सुं द र स्	र त अ त	रं ग भ री	
×	२	०	३	
री सा नि़ ध़,	ध प ध सां रीं	रीं गं रीं सां नि़ ध	प ग म ग री सा	
चि त चो री,	सु ध बु ध	बि स र ग	ई मो री सा	
×	२	०	३	
री; ग म ग री ग	री सा			
री; मे रो म	न ..... इत्यादि			
×	२			

अंतरा

ध सां नि़ ध प	ध प म प ध	सां – सां सां	नि सां सां सां सां	
सो व त जा	ग त म न	ला ऽ गि र	ह त नि त	
×	२	०	३	
सां ध सां रीं पं	मं गंरीं गं रीं सां,	सां नि सां रीं, नि ध	नि सां, ध प ध	
क छु ना हीं	मो हे ऽ अ ब,	सू ऽ झ, बू	ऽ झ, आ ऽ	
×	२	०	३	
नि़, प म प ध,	म ग म प, ग री	ग म, नि़ सा	री नि़ ध़ नि़ सा,	
ज, ला ऽ ज,	का ऽ ज, की	ऽ ऽ, त र	प त जि या,	
×	२	०	३	

ध़ प़ ध नि़ ध़ प़ | सा ध़ सा ग री ग, | नि़ सा री प म प | ध प म ग री सा
दे खी दे खी | री मैं भ ई, | वा के च र | न न की चे
× | २ | ० | ३

री; ग म ग री ग | री सा
री; मे रो म | न ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
× | २

राग झिंझोटी – धीमा त्रिताल

स्थायी : लकुटी जो हती अब बैन भई
हरिजू जो दियो सुर मार्ग को |
अंतरा : तब बाँस हती अब आँस भई
ब्रिज–बासिन के मनभावन को ||

स्थायी

ग रीप
लकु

ग म – – म ग, गरी | री ग – री सा, नि़ सारी | नि़ सा नि़ – ध़ प़ ध़ | ध़ सा – – नि़, सासा
टी ऽ ऽ जो, हऽ | ती ऽ ऽ, अब | बै ऽ ऽ नभ | ई ऽ ऽ, हरि
३ | × | २ | ०

म री मे – ध प ध | ध सां – नि़, ध़प | प ध प मे – ग री | री ग री सा – ग, रीप
जू ऽ ऽ जो दि | यो ऽ ऽ, सुर | मा ऽ ऽ रग | को ऽ ऽ; लकु
३ | × | २ | ०

अंतरा

प मप
तब

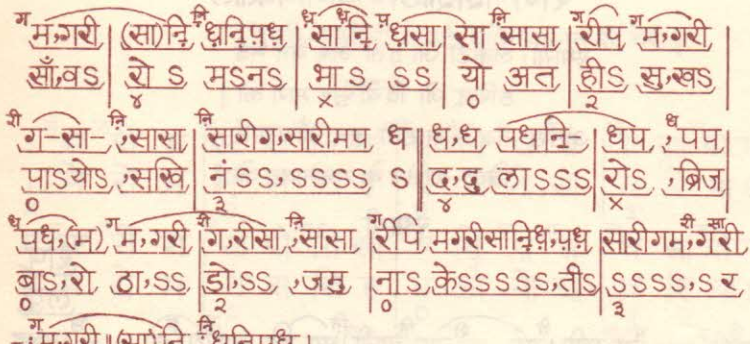
ध सां – – नि़ ध़ प़ ध़ | ध सां – – ग, पप | सां ध सां – गं रींमं | गं रीं सां – नि़, सांरीं
बाँ ऽ ऽ सह | ती ऽ ऽ, अब | आँ ऽ ऽ सभ | ई ऽ ऽ, ब्रिज
३ | × | २ | ०

नि़ सां नि़ – ध़ प़ ध़ | ध़ सां नि़ – , ध़प | प ध प मे – ग री | री ग री सा – ग, रीप
बा ऽ ऽ सिन | के ऽ ऽ, मन | भा ऽ ऽ वन | को ऽ ऽ; लकु
३ | × | २ | ०

राग झिंझोटी–एकताल (विलंबित)

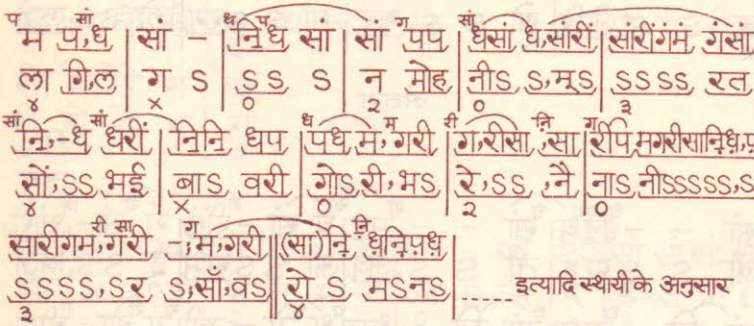
स्थायी: साँवरो मन भायो अतही सुख पायो
सखि नन्द-दुलारो ब्रिज बारो ठाडो जमुना के तीर।
अंतरा: लागी लगन मोहनी मूरत सों
भई बावरी गोरी भरे नैना नीर ॥

स्थायी



..... इत्यादि

अंतरा



----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग नारायणी-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : सहेलरिया गावो री आज
मोरे मंदर मंगल गावो बजावो
सुखसों आनन्द बधाई।
अंतरा : शुभ घरी शुभ महूरत मनावो
नंद घर जायो कुँवर कन्हाई॥

स्थायी

				नि सा
				स
म री प म ध प नि	ध प -, प नि	ध प म -	म री - सा, री म	
हे ल रि स	या स स, गा	स वो री स	आ स ज, मो	
३	×	२	०	
म री सा नि ध प	म - प ध	ध सा सा -, सा	नि म री प म ध प नि ध	
रे मं द र	मं स ग ल	गा वो स, ब	जा स स स	
३	×	२	०	
सां नि ध प, प म प	ध सां रीं सां नि ध	- मप धप प म	म री - सा; नि सा	
वो ऽऽ, सु ख	सों ऽ ऽऽ आ नं	ऽ द ऽ ऽऽ ब	धा ऽ ई; स	
३	×	२	०	

अंतरा

				प म
				शु
प सां ध सां ध	ध सां सां -, सां ध	सां मं रीं मं रीं सां	सां नि - ध प, ध नि	
भ घ री स	शु भ स, म	ह र त मऽ	ना स वोऽ, नं	
३	×	२	०	
ध प म - प	ग म - रीसा, नि सा	री मप धनि धप	ग म - रीसा; नि सा	
द ऽ घ स र	जा स योऽ, कुँ	व रऽ ऽऽ कऽ	न्हा स ईऽ; स	
३	×	२	०	
म री प म ध प नि	ध प			
हे ल रि स	या स	इत्यादि स्थायी के अनुसार		
३	×			

राग नारायणी–एकताल(विलंबित)

स्थायीः बमना रे बिचार सगुन भलो री भलो
बालम मोरा परदेसी अत बेकल होत जिया।
अंतराः देखत ही मुख तन मन वारूँ, जा दिन ऐहैं
ग्वार गुसैंया चरवाल चरैया॥

स्थायी

नि सासा | म रीं प | प मं प | प नि ध | प - प | प मप धसां | - नि ध | प धपमपधप,म |
बम | ना S | ३ ४ SS रे,बि | × चाऽऽ ऽर | ० सगुनऽ ऽभ | २ लोऽ रीऽऽऽऽ,म |

म रीं सा | सां नि॒ध॒-प॒ | मं-पध | सासा नि सासा | रींमपधनि धप | प मप,धसांरींसां निध |
० लो S | ३ बाऽऽऽ ऽऽलम | ४ मोरा पर | × देऽऽऽऽ सीऽ | ० अत,बेऽऽऽ कल |

म रींमपधनि,धपम | म रीं नि,सासा | म रीं प |
२ होऽऽऽ,तऽजि | ० याऽ,बम | ३ ना S | ..... इत्यादि

अंतरा

ग म सां धध | ध सां--ध सांसां | सां धसां रींसां | सां नि-धम नि धप | म रींमं रींसां | निध प |
४ दे खत | × हीऽऽऽ मुख | ० तन मन | २ वाऽऽऽ रूँऽ | ० जाऽ दिन | ३ ऐऽ हैं |

प मप-मं ध पनि | नि धं-प | नि सासा म रींम | ध पनि धप,म | म रीं सां,नि सासा |
४ खाऽऽऽ,र गु | × सैं ऽया | ० चर वाऽ | २ ऽऽ लऽ,च | ० रै या,बम |

म रीं प | प मं प,प नि ध | प - प |
३ ना S | ४ ऽऽ रे,बि | × चाऽ ऽर | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग सोरठ - त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः गूँथ लावो री मालनियाँ बेगि हरवा
साजन आज आइलो मंदर मोरे।
अंतराः सोलहुँ सिंगार कर आभरन सजीहुँ
मोद भरी मिलि मंगल गाऊँ
गरवा डारूँ सरस सुगंधित हार॥

स्थायी

							ग म
							गूँ
रीग सा री म प	प नि सांरीं नि ध	प ध प ध म	म री - ; म नि
धऽ ला वो री	मा ऽऽ ल नि	या बे ऽ गि	हु वी ऽ , सा
३	×	२	०
ध म ध प ध	म री री मरी	प म री रे री	नि सा सा ; ग म
जु न आज	आ ऽ इ लो	ऽ मं द र	मो ऽ रे ; गूँ
३	×	२	०

अंतरा

प म म प नि	सां नि - सां नि सां	सां नि सां सां	सां नि सां रीं रीं
सो ल हुँ सिं	गा ऽ र क	र आ भ र	न स जी हुँ
३	×	२	०
गं रीं रींगं रीं सां	रीं रीं नि सां सां	पनि सांरीं सां रीं	सां नि दि म प , प
मो ऽऽ द भ	री ऽ मि लि	मंऽ ऽऽ ग ल	गा ऽ ऊँ , ग
३	×	२	०
रीं मं रीं मं रीं	नि सां रीं सां नि सां	निधि मप पनि दि ध	म री री ; ग म
वी डा ऽ रूँ	स र स सु	गंऽ ऽऽ धि त	हा ऽ र ; गूँ
३	×	२	०
रीग सा री म प	प नि सांरीं नि ध	प
धऽ ला वो री	मा ऽऽ ल नि	या.... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३	×	२	

राग सोरठ – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: गुन को मौल तौल ना कीजियो
सुन 'सुजान' जानि मानि लैहो
गुन-समुद्र ये अतही अप्रम्पार।

अंतरा: सुर-नर-मुनि-गुनि-गंधर्व महाग्यानी
हरि हर ब्रह्मा नारद तुंबर भारती
महा बाक बानि सरसति करि बिचार
रचि पचै गये हार॥

स्थायी

रे म रे प म प	सां नि सां सां नि	म म ध प ध	(म) – म रे	
गु न को ऽ	मौ ऽ ल तौ	ऽ ल ना ऽ	की ऽ ज्यो ऽ	
३	×	२	०	
रे म सा रे प म प	सां निसां रींनि नि नि	म म प –	ध प ध – म	
गु न को ऽ	मौ ऽ ऽऽ ल तौ	ऽ ल ना ऽ	की ऽ ऽ जि	
३	×	२	०	
म रे म रे म	रे रे नि़ सा सा	म रे रे म	– म प प	
यो ऽ सु न	सु जा ऽ न	जा ऽ नि मा	ऽ नि लै हो	
३	×	२	०	
प नि नि नि सां	नि म प नि सां	मं रें रें नि सां	रें रें नि सां सां	
गु न स मु	ऽ द्र ये ऽ	अ त ही अ	प्र म्पा ऽ र	
३	×	२	०	

अंतरा

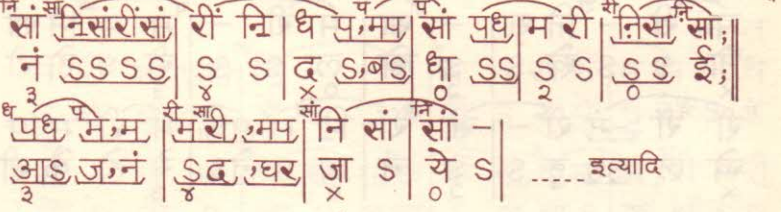
प म म म म	प प सां नि नि	नि सां सां सां सां	सां सां नि सां सां	
सु र न र	मु नि गु नि	गं ध र्व म	हा ग्या ऽ नि	
०	३	×	२	
मं रें रें मं रें सां	रें रें नि सां –	प निसां रें सां रें	सां नि – नि म प	
ह रि ह र	ब्र ऽ ह्मा ऽ	ना ऽ ऽ र द	तुं ऽ ब र	
०	३	×	२	
म रे – म नि प	नि म म रे –	रे नि़ सा – सा	म रे म प	
भा ऽ र ती	ऽ म हा ऽ	बा ऽ ऽ क	बा ऽ नि स	
०	३	×	२	
सां नि नि सां –	नि सां रें नि नि	प म प, म रे म	प सां – प	
र स ती ऽ	क रि बि चा	ऽ र, र चि	पु चै ऽ ग	
०	३	×	२	

ध म रे रे; | म रे म प |
ये हा ऽ र; | गु न को ऽ | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार

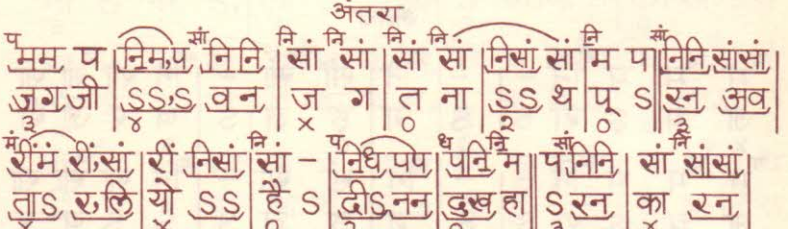
राग सोरठ–एकताल (विलंबित)

स्थायीः आज नंद घर जाये क्रेष्ण कन्हाई
बाजन लागे घर घर आनन्द बधाई |
अंतराः जगजीवन जगतनाथ पूरन अवतार लियो है
दीनन दुःख हारन कारन जय जदुराई ||

स्थायी



अंतरा



राग सोरठ-होरी-धमार

स्थायी: ये हो कैसी रीत खेलन की
अनोखे खिलारी होरी खेलहु न जाने |
अंतरा : अचरा गहत बरजोरी मींडत मुख
देखे सखी सब बरजो न माने ||

स्थायी

नि सा | म री प म प
ये | हो ऽ कै सी
× | २ | ३

सां नि सां – नि ध | प , ध | ध प प ध , मे | रीग सा री प म प
री ऽ ऽ त ऽ | ऽ , खे | ल न ऽ , ये | हो ऽ कै सी
× | २ | ० | ३

सां नि सां – नि सां – | – नि | नि ध ध प ध | म रीप , म प
री ऽ ऽ त ऽ | ऽ खे | ल न ऽ | की ऽ , कै सी
× | २ | ० | ३

सां नि सां – नि सां – | – नि | नि ध ध प ध | म री – , रीप
री ऽ ऽ त ऽ | ऽ खे | ल न ऽ | की ऽ ऽ , अ
× | २ | ० | ३

म री – रीनि सा | – , नि सा | म री – | प म पसां नि सां
नो ऽ ऽ खे ऽ | ऽ , खि | ला ऽ ऽ | री ऽ हो री
× | २ | ० | ३

मं रीं मं रीं – मं रीं – | सां रीं | नि ध मे प ध , | म री प म प
खे ल ऽऽ हु ऽ | ऽ न | जा ऽ नेऽ , | ये हो कै सी
× | २ | ० | ३

अंतरा

प म प म प सांनि – | – सांनि | सां निसां – | सांनि सां निसां सां
अ च ऽ रा ऽ | ऽ ग | ह त ऽ | ब र जो री
× | २ | ० | ३

प म प म प सांनि – | – सांनि | सां सां – | सांनि सां निसां सां
अ च ऽ रा ऽ | ऽ ग | ह त ऽ | ऽ ऽ ब र
× | २ | ० | ३

प निनि म प नि – | – सांनि | सां सां – | सांनि सां रीं रीं
जो ऽ ऽ री ऽ | ऽ मीं | ड त ऽ | ऽ ऽ मु ख
× | २ | ० | ३

मं रीं – -मं रीं – | – नि सां रीं रीं नि – | सां – नि सां –
दे ऽ ऽऽ खे ऽ | ऽ स खी ऽ ऽ | सु ऽ ब ऽ
× २ ० ३
ध प ध प रीं रीं नि – | म प | ध प ध म; | रीग सारी प म प
ब र ऽ जो ऽ | ऽ न | मा ऽ ने; | येऽ होऽ कै सी
× २ ० ३
सां नि सां – नि सां –
री ऽ ऽ त ऽ | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
×

राग गोरखकल्याण–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः नित उठ तुम्हरे ढंग ऐसे अनोखे लाल ग्वाल-बाल साँवरे
लपट झपट दुरकि दीन्ही जल की गगरी मोरी, का कहूँ तोसे अब |
अंतराः ठठोरी करत सब ब्रिज की ग्वारनिया, सास ननंद मोरी
सुनि देंगी गारी, चलो हटो मोहे घर जाने दो, मग ना रोको अब ||

स्थायी

ध नि ध
नि त
म री सा (सा) | सा नि – – ध़ | सा – सा मरी | म मे –, सांध
उ ठ तु म्ह | रे ऽ ऽ ऽ | ढं ऽ ग पे | ऽ से ऽ, अ
३ × २ ०
सां – सां –, | सांध सां ध, सां | रीं सां, सांध म | म, मरी – री
नो ऽ खे ऽ, | ला ऽ ल, ग्वा | ऽ ल, बा ऽ | ल, साँ ऽ व
३ × २ ०
सा –, सा ध़ सा | ध़, ध सा री सा, | मरी म री, ध म | ध म, सांध सां
रे ऽ, ल प | ट, झ प ट, | दु र कि, दी | ऽ न्ही, ज ल
३ × २ ०
रीं रीं मं रीं सां | ध म, मध – | नि ध म री | म ध; ध नि ध
की ग ग री | मो री, का ऽ | क हुँ तो से | अ ब; नि त
३ × २ ०

अंतरा

नि ध नि ध म | ध ध सां सां | सांध सां रीं सां | ध ध (म) –
ठ ठो री क | र त स ब | ब्रि ज की ग्वा | र नि या ऽ
० ३ × २

म रीं म रीं सां | ध सां नि ध | म री म, ध | नि ध म रीं
च लो ह टो | मो हे घ र | जा ने दो, म | ग ना रो को
० ३ × २

म ध; नि ध | म री सा (सा) |
अ ब; नि त | उ ठ तु म्ह | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
० ३

राग गोरखकल्याण–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः नित उठ जप रे राम नाम, कहे मान मान मोरी बावरे
मन तू मूरख खोई दीनो घरि पल छिन दिन, का कहूँ तोसे अब |
अंतराः सुख चैन की नींद बहुत भई, मन जाग जाग प्यारे, जनम बीतत
सब साँस मिटे, पछताये सो का होवे तब ||

स्थायी

ध नि ध
नि त
म री सा (सा) | नि – – ध | सा – सा री | म मे –, ध
उ ठ ज प | रे ऽ ऽ ऽ | रा ऽ म ना | ऽ म ऽ, क
३ × २ ०

सां – – –, | ध सां ध, सां | रीं सां, ध म | म, री – री
हे ऽ ऽ ऽ, | मा ऽ न, मा | ऽ न, मो ऽ | री, बा ऽ व
३ × २ ०

सा –, ध सा | ध, सा री सा, | री म री, म | ध मे, ध सां
रे ऽ, म न | तू, म् र ख, | खो ऽ ई, दी | ऽ नो, घ रि
३ × २ ०

रीं मं रीं सां | ध म, ध – | नि ध म री | म ध; नि ध
प ल छि न | दि न, का ऽ | क हुँ तो से | अ ब; नि त
३ × २ ०

अंतरा

ध नि ध म | ध सां – सां | ध सां रीं सां | ध – म मे
सु ख चै न | की नीं ऽ द | ब हु त भ | ई ऽ म न
० ३ × २

म री म री, सा | नि ध़ सा सा, | सां ध़ सा म री म | नि ध ध नि ध
जा ऽ ग, जा | ऽ ग प्या रे, | ज न म बी | त त स ब
० ३ × २

मं रीं मं रीं सां | ध सां, नि ध | म री म नि ध | नि ध म री
साँ ऽ स मि | टे ऽ, प छ | ता ऽ ये सो | का हो ऽ वे
० ३ × २

म ध; ध नि ध | म री सा(सा) |
त ब; नि त | उ ठ ज प | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
० ३

राग गोरखकल्याण – एकताल (विलंबित)

स्थायीः बनरा बनी आयो ब्याहन बनरी को
अत मन-भावनो |
अंतराः सरस सुगंधित सेरा बँधा है
हाथ कंगना बनरी के अत ही सुहावनो ‖

स्थायी

री ,मरी | सा(सा), सां नि़ | सा नि़ध़,सारी | म री | म म | सा री ममरीसा,रीमपध
,बन | रा ऽ ,ऽ | ऽऽ,बनी | आ ऽ | ऽ यो | ब्याऽऽऽ,ऽऽऽऽ
४ × ० २

पधनि,धप | म री | मं धं,सां | धं धंसांरींसां | नि ध | मध नि़,धप | म री
ऽऽऽ,हऽ | न ऽ | बन री | ऽ ,ऽऽऽऽ | को ऽ | अत म,नऽ | भा ऽ
० ३ ४ × ० २

मं रीम,रीमपम,रीसा नि़--ध़ | सा ,मरी | सा(सा),सां नि़ नि़ध़,सारी |
ऽऽ,ऽऽऽऽ,वऽ नोऽऽऽ | ऽ ,बन | रा ऽ ,ऽ ऽऽ,बनी | ..... इत्यादि
० ३ ४

अंतरा

धं निधम-धं,धं | सां रींसां | धंसां मं रींमं,रींसां | नि ध | सां -धं,सांरीं | सां
सुरसऽ ऽ,सु | गं धित | सेऽ राऽ,बँऽ | धा है | हा ऽथ,कंग | ना
४ × ० २ ३

धनिधम,रीमध- | सांध ,नि,धप | (मं),रीम,रीसा | ध़सा,रीमपधनि़-,धप |
ऽऽऽऽ,ऽऽऽऽ | ऽऽ ,ब,नऽ | री,ऽऽ केऽ | अत हीऽऽऽऽ,सुऽ |
४ × ०

म री | रीम,रीमपम,रीसा नि़--ध़ | सा ,मरी | सा(सा),नि़ नि़ध़,सारी |
हा ऽ | ऽऽ,ऽऽऽऽ,वऽ नोऽऽऽ | ऽ ,बन | रा ऽ ,ऽ ऽऽ,बनी |
२ ० ३ ४

----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग गोड़मल्हार- सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

ग रे म ग | रे,सा नि़ सा, | रे प म प | ध – नि प,
२ ० ३ ×
म प म ग | –,सां – सां | ध प म प | ध सां –, ध
२ ० ३ ×
प म प म | ग –,म नि | ध नि प ध | म प –; म
२ ० ३ ×

अंतरा

प प प सां | ध सां – सां | रें –,सां सां | नि ध सां –,
० ३ × २
गं रें मं गं | रें सां –, ध | नि़ प सां –, | ध नि प म
० ३ × २
ग रे सा –, | गं रें सां नि | ध प –; म | ग रे, म ग
० ३ × २
रे, सा नि़ सा | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
०

राग गोड़मल्हार- लक्षणगीत – त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः नाम गोड़ मल्हार बिराजत
मेल खमाज जनित सम्पूरन
गौड़ अंग मल्हार सुमिश्रित।
अंतराः अंश मध्यम समवादी खरज मत
बरखा के समे गावत सुमधुर
'रेपमपधसां मपम रेमगरेसा
रेगमपमग' सुर-संगत सोहत॥

स्थायी

म ग म रीनि़ सा | – रीसा,नि़ सा | गरी ग मे,प | ग म प म ग
ना ऽ म गो | ऽ ड़,म ल | हा ऽ र,बि | रा ऽ ज त
० ३ × २

म रीप पम | प – प,मप | धसां सांसांधप | ग म प मे ग
मे ऽ ल ख | मा ऽ ज,ज | नि त स ऽ | म्पू ऽ र न
० ३ × २

प सां – सां सां ध | नि प प म प | नि धनि सां ध प | ग म प म ग;
गो ऽ ड़ अं | ऽ ग म ल | हाऽ ऽ र सु | मि ऽ श्रि त;
० ३ × २

अंतरा

ग म – म ग | प प थ सां ध | सां – सां सां | नि सां रीं सां सां
अं ऽ श म | ध्य म स म | वा ऽ दि ख | र ज म त
० ३ × २

नि सां सां सां ध – | थ सां सां सां – | नि सां रीं सां सां | सां ध नि प प
ब र ख्वा ऽ | के स मे ऽ | गा ऽ व त | सु म धु र
० ३ × २

रे प म प | ध सां –,मे | प म –,रे | म ग रेसा
० ३ × २

रे ग म प | म ग,प म प | नि धनि सां ध प | ग म ध प म ग;
० | ३ सु र | संऽ ऽ ग त | सो ऽ ह त;
× २

राग गौड़मल्हार– त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः कारी घटा छाई नभ मण्डल
बरसे मूसलधार चहूँ ओर
बिजरी चमके गरजे मेहा|
अंतराः सियरी पवन बहे जोर जोर
निस अँधियारी जिया डर पावे
तन काँपे छतिया धरके
कैसे जताऊँ श्याम सुंदर संग नेहा||

स्थायी

म प
का

– नि धनि धनि | सां – – सां | नि प प म प | री म ग म री,प
ऽ री ऽ घ | टा ऽ ऽ छा | ऽ ई न भ | मं ऽ ड ल,का
३ × २ ०

-ऩिध ऩि ध | ऩिसां - - ांध | ऩि प पम प | गम - ग ग
ऽ री ऽ घ | टा ऽ ऽ छा | ऽ ई न भ | मं ऽ ड ल
३ × २ ०

मग मग री सा | ऩिसा सा सा मरी | प पे मप ऩि | ध ांऩि सां सां
ब र से ऽ | मू स ल धा | ऽ र च हूँ | ऽ ओ ऽ र
३ × २ ०

ऩिसां रीं सां - | ांध ऩि प - | पम म प ांध | सां गम री; मप
बि ज री ऽ | च म के ऽ | ग र जे मे | ऽ हा ऽ; का
३ × २ ०

अंतरा

मप प प - | पनि ध सां सां | ऩिसां - ऩिसां - | सां ऩिसां - सां
सि य री ऽ | प व न ब | हे ऽ जो ऽ | र जो ऽ र
३ × २ ०

ऩिसां सां ांध ऩिध | ऩिसां - सां - | ऩिसां रीं सां सां | ांध ऩि पे -
नि स अँ धि | या ऽ री ऽ | ज़ि या ड र | पा ऽ वे ऽ
३ × २ ०

गम म (म) री | प - ऩिध ऩि | पे गम प मे, | ऩिसां - सां ऩिसां
त न काँ ऽ | पे ऽ छ ति | या ध र के, | कै ऽ से ज
३ × २ ०

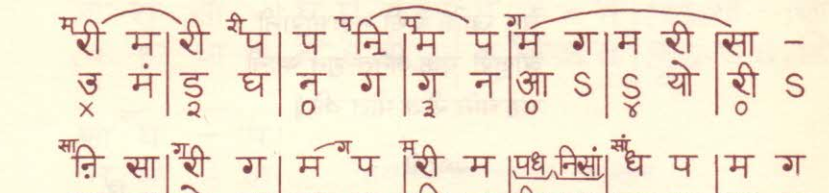
गंरींगं मं रीं ऩिसां | - ांध ऩि प | पम प ांध सां | गम(म) री मप
ताऽ ऽ ऊँ श्या | ऽ म ऽ सुं | द र सं ग | ने हा ऽ ;का
३ × २ ०

-ऩिध ऩि ध | ऩिसां -
ऽ री ऽ घ | टा ऽ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३ ×

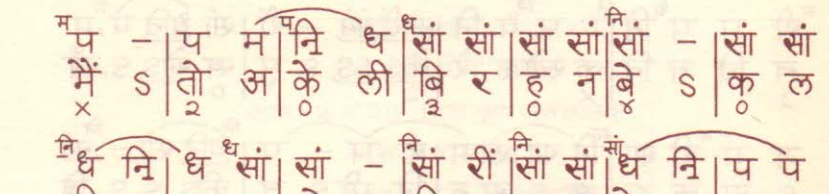
राग गोड़मल्हार- आड़ाचौताल(मध्यलय)

स्थायीः उमंड घन गगन आयो री, गरजे बादर बिजरी चमकत
बरसत अत रुमझुम रुमझुम, जिया डर पावे।
अंतराः मैंतो अकेली बिरहन बेकल, बिरम रहे पिया परदेस
सही न जात अब ये बिथा, घर आंगन न भावे॥

स्थायी



अंतरा



राग गौड़मल्हार- त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः बिन मोल नाहीं पीत हरि की
जोलों नहीं जान्यो पहचान्यो
छिन छिन निकस्यो हरि के मुख सों
साँस कहा आस हरि पीत की।

अंतराः हरि हस्त लीला संजमित
छेहु जाके ऐसी महाभागनी
बाँसुरी एक अनत गुन खानी
पहचाने रीत पीत की॥

स्थायी

						नि सां	
						बि	
सां सां ध नि – प	म – री प	– प नि म प	नि धनि सां – नि सां				
न मो ऽ ल	ना ऽ हिं पी	ऽ त ह रि	क्रीऽ ऽ ऽ,जो				
३	×	२	०				
सां सां ध प म	ग मे,री सा	नि़सा,रीग,मप,धप	म ग मे,ग म				
लों न हीं जा	ऽन्यो,प ह	चाऽ,ऽऽ,ऽऽ,ऽऽ	न्यो ऽ ऽ,छि				
३	×	२	०				
म री प प धनि	नि म प नि ध नि	सांरीं,गंमं – रीं	सां धनि पे,ग म				
न छि न नि	क स्यो ह रि	केऽ,ऽऽ ऽ मु	ख सोंऽ ऽ,साँ				
३	×	२	०				
ग म ग री सा	सा नि़ सा सा म	री प – प	नि धनि सां – नि सां				
ऽ स क हा	आ ऽ स ह	रि पी ऽ त	क्रीऽ ऽ ऽ;बि				
३	×	२	०				

अंतरा

						ग म	
						ह	
म ग प – प	सां ध सां –	– – नि,सां –	नि सां सां सां,नि सां				
रि ह ऽ स्त	ली ऽ ला ऽ	ऽ ऽ,सं ऽ	ज़ मि त,छे				
३	×	२	०				

सां गंरीं गं रीं | निसां – धप | मप – धनि | सां धप म गम
हु जा ऽ के | ऐ ऽ सी ऽ | मृ हा ऽ भाऽ | ऽ गऽ नी ऽऽ
३ × २ ०

ग रीग सा सा | निसा निसा रीरी | ग ग गरी ग | मप धप म गे
बाँ ऽऽ सु री | ए ऽऽ कअ | न त गु न | खाऽ ऽऽ नी ऽ
३ × २ ०

सांगं रीं सां – | धप, गम मप – प | धनि सां –; सां
पृ ह चा ऽ | ने ऽ, रीऽऽ तृ पी ऽ त | कीऽ ऽ ऽ; बि
३ × २ ०

सां धप | .....इत्यादि स्थायी के अनुसार
न मो ऽ ल |
३

राग गौड़मल्हार-भजन-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः हों इक नयी बात सुनि आयी
महरि यशोदा ढोटा जायो
घर घर बजत बधाई।

अंतरा-१ः द्वारे भीर गोप गोपिन की
महिमा बरनी न जायी री
अतहि आनंद होत गोकुल में
रतन भूमि निधि छाई॥

अंतरा-२ः नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक
गोरस कीच मचाई
'सूरदास' स्वामी सुख सागर
सुंदर श्याम कन्हाई॥

टीपः सूरदासजी के इस पद का स्वरकरण लेखक ने किया है।

स्थायी

गरी ग री सा | सा नि सा – गरी | – री ग रीग | म धप मग म
हों ऽ इ क | न यी ऽ बा | ऽ त सु निऽ | आ ऽऽ शीऽ ऽ
२ ० ३ ×

गरी गे री सा	नि सा – गरी	– री ग रीग	पमप धप म गे
होंऽ ऽ इ क	न यी ऽ बा	ऽ त सु निऽ	आऽ ऽऽ यी ऽ
२	०	३	×
म – री –,	रीं री म मं	प – प –	निधनि सांधनि पे
ऽ ऽ ऽ ऽ,	म ह रि य	शो ऽ दा ऽ	ढोऽ ऽ टाऽ ऽ
२	०	३	×
गम प म ग,	पम म प प	ध सांधनिप	मप धप मग मे;
जा ऽ यो ऽ,	घ र घ र	ब ज तऽ ब	धाऽ ऽऽ ईऽ ऽ;
२	०	३	×

अंतरा-१

गम री प –	पनि ध धे निसां	– सांनिसां –	निसां रीं सां –
द्वा ऽ रे ऽ	भी ऽ र गो	ऽ प गो ऽ	पि न की ऽ
०	३	×	२
निसां सांगंरींगं मे	रीं सां निसां –	रीं (सां) – सां	सांध – नि प
म हि माऽ ऽ	ब र नी ऽ	न जा ऽ यी	री ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
गम म ध ध	निधनि सां सांनिसांध	नि प म ग	म (म) गरी –
अ त हि आ	नंऽ ऽ द होऽ	ऽ त गो ऽ	कु ल में ऽ
०	३	×	२
निसा सा सा गरी	गरी री म ग ग	मप धप म गम;	मगरी ग री सा
र त न भ्	ऽऽ मि नि धि	छाऽ ऽऽ ई ऽऽ;	होंऽ ऽ इ क...इ.
०	३	×	२

अंतरा-२

सांनि – नि नि	सां सां सांगंरींगं	मं रींनिसां सां	सांध नि प पे
ना ऽ च त	त रु ण वृऽ	ऽ द्ध अ रु	बा ऽ ल क
०	३	×	२
गम री म म	प – प प	धनिसांरींगंरींसांसां	सांध नि प –
गो ऽ र स	की ऽ च म	धाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ई ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

सां नि सां रीं गं रीं मं | गं रीं नि सां – | सां ध नि प म प | नि ध नि सां रीं सां सां
सु ड ऽऽ र दा | ऽ २ स ख्वा ऽ | मी × ऽ सु ख | सा ड ऽऽ ग र

ग म – प प | सांध सां धनि प | प मप धप म गम; | म गरी ग री सा
सुं ० ऽ द र | श्वा ड २ ऽ मड क | त्वा ड × ऽऽ ई ऽऽ; | हों ड २ ऽ इ क...इ

राग गौड़मल्हार – दादरा (मध्यलय)

(सिंहली भक्ति-गीत)

स्थायीः सकल भुवन अभिनंदन, करन गीत राजिनी।
सवन मधुर बाहन सरय, पियवि कोमल वादिनी॥
अंतरा-१: सरनु सरय रसिनि रसिक, मनस पिनन मोहिनी।
किरुद पॅलंदि नरन यदिन, सॅवोम हितव तानिनी॥
अंतरा-२: दियत पॅतिर सतुट ओबेनि, नॅसेइ कोप रागिणी।
पतन सरन सॅमट देन्न, नितर असिरि प्रेमिनी॥

टीपः इस सिंहली भक्ति-गीत की शब्द-रचना कोलंबो निवासी श्री. एम्. परेराने की है एवम् इसका स्वर-करण लेखकने किया है।

स्थायी

ग रीं ग री | म ग म ‖ ग रीं ग (सा) | – सा सा
स × क ल | भु ० व न ‖ अ × भि नं | ऽ ० द न

सा नि़ सा सा | ग रीं ग री ‖ म गम पध प | म ग म
क × र न | गी ० ऽ त ‖ याड × ऽऽ जि | नी ० ऽ ऽ

म रीं म री | प प प ‖ मप धसां धप | म री गग रीसा
स × व न | म ० धु र ‖ बाड × हड नड | स ० रड यड

सा नि़ सा सा | ग रीं ग री ‖ म गम पध प | म ग म;
पि × य वि | को ० म ल ‖ वाड × ऽऽ दि | नी ० ऽ ऽ;

अंतरा-१

प म म प | सां नि सां सां || नि सां सां सां | रीं सां सां
× स र नु | ० स र य || × र सि नि | ० र सि क

नि सां सां रीं | रीं गं सां सां || सां धनि सांनि प | म – –
× म न स | ० पि न न || × मोऽ ऽऽ हि | ० नी s s

म री म री | प प प || नि ध नि प | री म ग री
× कि रु द | ० पॅ लं दि || × न र न | ० यु दि न

सा नि़ सा सा | ग री ग री || म गम धध प | म ग म;
× सॅ वो म | ० हि त व || × ताऽ ऽऽ नि | ० नी s s;

अंतरा-२

म प रीं रीं | सां नि सां सां || सां ध नि प | म प प
× दि य त | ० पॅ ति र || × स तु ट | ० ओ बे नि

प म प प | नि धनि सांरीं धप || ग म ग प | म – –
× नॅ से इ | ० क्रोऽ ऽऽ पऽ || × रा s गि | ० णी s s

म री म म | प प प || सां ध रीं सां | सां ध नि प
× पु त न | ० स र न || × सॅ म ट | ० दे s न्न

ग म ग री | सा नि़ सा ग री || म गम धध प | म ग म;
× नि त र | ० अ सि रि || × प्रेऽ ऽऽ मि | ० नी s s;

राग गौड़मल्हार–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः विप्र दिगम्बर घर जनम लिये
पलुशग्राम पुण्यधाम नाम कियो उज्वल
दस दिस फहरायो कीर्ति-ध्वज संगीत कला को
नमो नमः शतबार चरण तुम्हरे
जय विष्णो हो जय विष्णो।

अंतराः नाद ब्रह्मोपासना रत, सतत सुर-राग- ताल
मगन हृदय, सरस्वती भारती दत्तवर
रहे नाम अजरामर यावत् चन्द्र दिवाकर
गगन बिराज रहे, जय विष्णो हो जय विष्णो॥

स्थायी

ग सग रीग म (प)	म ग री सा	नि सा री ग	मं प म ग
वि S SS प्र दि	ग S म्ब र	घ र ज न	मु लि ये S
०	३	×	२
ग म नि ध नि	प प मपधनिसां	धप म ग मे	ग म प म ग
प लु श ग्रा	S म पS SSS	ण्यS धा S म	ना S म कि
०	३	×	२
री सा, ग म री	प प म प	नि ध नि सां रीं	सां – – धप
यो S, ज S	ज्व ल द स	दि स फ ह	रा S S योS
०	३	×	२
म – ग री ग	मं प, म ग	री सा सा नि सा	सा ध नि पे –
की S र्ति S	ध्व ज, सं S	गी S त क	ला S कोS
०	३	×	२
म पे सा नि सा नि सा	ग री ग प म प	सां ध सां सां ध	नि प म प
न मो S न	मः S श त	बा S र च	र ण तुम्ह
०	३	×	२
नि धनि सांरीं नि सां –	सां ध प म प	म री प –	नि ध नि प –;
रेS SS जै S	वि S ष्णोS	हो S जै S	वि S ष्णोS;
०	३	×	२

अंतरा

नि॒ध – नि॒ प | प॒म प सां ध॒ | सां – सां नि॒सां | – –सां सां
ना ऽ ऽ द | ब्र ऽ ह्मो ऽ | पा ऽ स ना | ऽ ऽ र त
० ३ × २

नि॒ध – नि॒ प | प॒म प सां ध॒ | सां – सां नि॒सां | – सां सां,नि॒सां
ना ऽ ऽ द | ब्र ऽ ह्मो ऽ | पा ऽ स ना | ऽ र त,स
० ३ × २

गं॒रीं गं मं गं | रीं – सां ध॒नि॒ सां सां॒ध॒ प | मं॒ग प म मे
त त सु र | रा ऽ ग ताऽ | ऽ ल म ग | न ह्द य
० ३ × २

ग॒री सा – सा | ग॒री गे प॒म – | प मे – म॒री | प प रींसां
स र ऽ स्व | ती ऽ भा ऽ | र ती ऽ द | ऽ त्त व र
० ३ × २

सां॒ध नि॒ प प॒म | – प नि॒ध नि | सां – ध॒नि॒ पे | प॒सां – ध प
र हे ऽ ना | ऽ म ज ज | रा ऽ मऽ र | या ऽ व त्
० ३ × २

म ग री सा॒ | सा॒ध॒ नि॒ प़॒ पे़॒ | म़॒प़ नि॒ सा री | ग॒री ग री,ग
च ऽ न्द्र दि | वा ऽ क र | ग ग न बि | रा ऽ ज,र
० ३ × २

प॒म प,म ग | री प॒म॒ पे –, | नि॒सां रीं नि॒सां – | सां॒ध॒ नि॒ प –;
हे ऽ,जै ऽ | वि ऽऽष्णो ऽ, | हो ऽ जै ऽ | वि ऽ ष्णो ऽ;
० ३ × २

टीपः इस बन्दिश की रचना लेखक ने गायनाचार्य पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्करजी के पुण्यस्मरण में की है।

राग गौड़मल्हार-झपताल(मध्यलय)
(गंधार वर्जित प्रकार)

स्थायी : ग्यान गुन दोऊ दिये पेसो महा चतुर
सुघर ग्यानी गुनी सीस नवाऊँ तुम्हरे चरण आज।
अंतरा : राग विद्या को न्यारो उजियारो
मार्ग दिखायो कहालों बखानो जस कीरत आज॥

स्थायी

रे म रे | सा रे सा | म रे प | प म प || सां ध सां | सां ध नि प | रे म प | म रे रे
× ग्या ऽ | २ न गु न | ० दो ऽ | ३ ऊदिये || × ऐ ऽ | २ सो ऽ म | ० हा ऽ | ३ च तु र

नि सा रे | सा सां ध़ नि़ | प़ – | प म़ प़ सां ध़ | सा – | नि सा ध ध | नि प म प | प –
× सु घ | २ र ग्या ऽ | ० नी ऽ | ३ गुनी ऽ || × सी ऽ | २ स ऽ न | ० वा ऽ | ३ ऊँ ऽ ऽ

सां ध सां | सां ध नि प | प म प | रे म रे सा ||
× तु म्ह | २ रे ऽ च | ० र ण | ३ आ ऽ ज ||

अंतरा

म प – | प सां सां – | नि सां – | सां – – || मं रें मं रें – | सां नि सां सां | सां ध नि पे
× रा ऽ | २ ग वि ऽ | ० द्या ऽ | ३ को ऽ ऽ || × न्या ऽ | २ रो ऽ ऽ | ० उ जि | ३ या ऽ रो

प म प | सां ध सां ध | नि प म प म || नि सा सा | नि सा सां ध | नि प म प | प –
× मा ऽ | २ र ग दि | ० खा ऽ | ३ यो ऽ ऽ || × क हा | २ लों ऽ ब | ० खा ऽ | ३ नो ऽ ऽ

सां ध सां | रें धनि प | प म प | नि ध नि प ||
× ज स | २ की ऽ ऽ ऽ | ० र त | ३ आ ऽ ज ||

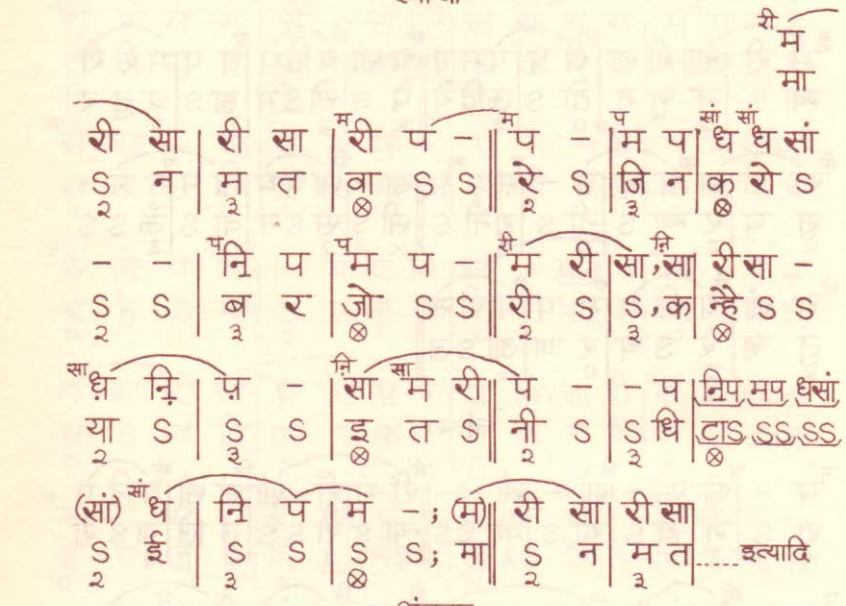
टीप : अपने गुरु पं. विष्णु नारायण भातखण्डे 'चतुर पंडित' के पुण्यस्मरण में लेखक ने इस बंदिश की रचना की है।

राग गौड़मल्हार–रूपक (मध्यलय)

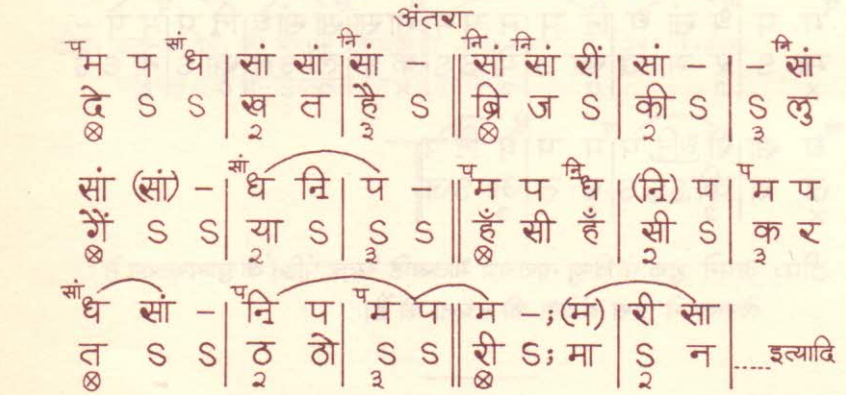
(गंधार वर्जित प्रकार)

स्थायी : मान मतवारे जिन करो बरजोरी
कन्हैया इतनी धिटाई।
अंतरा : देखत है ब्रिज की लुगैंया
हँसी हँसी करत ठठोरी॥

स्थायी



अंतरा



राग गौड़मल्हार–ध्रुवपद–चौताल

स्थायीः सत्य बचन नेक चाल दीनन दुख निवारन
साचो एक मनुज धरम दूजो नाहीं धरम 'सुजन'।
अंतराः मनुस जाति धारन जातें होवे सोही धरम
सकल धरम सार एक आप पर भेद भंजन॥
संचारीः जल वायु भूमि उपज ऋतुमान आधीन
सदाचार विविध भाँति देस देस धरम दीन॥
आभोगः परम पुरुख प्रकट भयो चराचर रूप धरे
अनादि अनंत सोही मनुज देह धरे जान॥

स्थायी

नि			सां	नि			सां			सां			ध		नि		प	ग		म		प		मे
स		ऽ	त्य		ब		च		न	ने		ऽ	क		चा		ऽ			ल				
×			०				२			०			३				४							

म			ग		म		री		सा	सा	नि		सा	ग	री		ग	री		म	ग		म	मे
×			दी		ऽ		न		न		दु		ख		नि		वा		ऽ		र		ऽ	न
							०				२				०				३				४	

ग			म		री		री	शी		प			प	नि		ध		नि		प	प		म		प		प
×			सा		ऽ		चो			प		ऽ	क			म		नु		ज		ध		र		म		
							०					२				०				३				४				

सां			ध		सां			सां		ध		नि		प	प		म		प		ध		सां	सां		म		प
×			दु		जो		ऽ			ना		ऽ		हिं		ध		र		म		सु		ज		न		
							०					२				०				३				४				

अंतरा

म			प		प		प	प		सां			सां	नि		सां			नि		सां		रीं		सां
×			म		नु		स			जा		ऽ	ति			धा		ऽ		ऽ		र		ऽ		न
							०					२				०				३				४		

नि			सां			रीं		मं	गं		मं		रीं		सां	नि			सां		सां	ध		नि		प
×			जा		ऽ	तें		हो		ऽ	वे		सो		०		ऽ		हि		३	ध		र		म
						०				२														४		

ग म म | ध | नि॒ ध | नि॒ पे | नि॒ ध | नि॒ सां | सां ध | नि॒ प
स क | ल | ध | र | म | सा | ऽ | र | प | ऽ | क
× | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

नि॒ सां – | रीं | रीं ध | नि॒ पे | प म | प | सां ध | सां म | प
आ ऽ | प | प | ऽ | र | भे | ऽ | द | भं | ज | न
× | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

संचारी

नि॒ सा सा | – | ग री | गरी | ग म | – | म | ग म | म | म
ज ल | ऽ | वा | ऽऽ | यु | भू | ऽ | मि | उ | प | ज
× | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

ग म म | प | सां ध | सां | सां | नि॒ सां | – | – | सां ध | नि॒ | प
क्रु तु | ऽ | मा | ऽ | न | आ | ऽ | ऽ | धी | ऽ | न
× | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

प म प | ध | म ग | प | म | ग री | ग | नि॒ सा | – | सा
स दा | ऽ | चा | ऽ | र | वि | वि | ध | भाँ | ऽ | ति
× | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

ग म री | प | म प | म | प | सां ध | सां | सां | सां ध | नि॒ | प
दे ऽ | स | दे | ऽ | स | ध | र | म | दी | ऽ | न
× | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

आभोग

ध सां सां | ध | सां | सां | सां | नि॒ सां | सां | नि॒ सां रीं | सां | –
प र | म | पु | रु | ख | प्र | क | ट | भ | यो | ऽ
× | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

नि॒ सां सां | – | मं रीं | मं | रीं | नि॒ सां | – | ध | नि॒ | प | –
च रा | ऽ | च | ऽ | र | रू | ऽ | प | ध | रे | ऽ
× | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

नि॒ सां सां | – | मं रीं | पं | मं | रीं | – | सां | सां ध | नि॒ | प
अ ना | ऽ | दि | ऽ | अ | नं | ऽ | त | सो | ऽ | हि
× | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

प म प | प | सां ध | रीं | सां | ग म | प | ध | नि॒ | नि॒ म | प
म नु | ज | दे | ऽ | ह | ध | रे | ऽ | जा | ऽ | न
× | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

राग गौड़मल्हार-त्रिताल(मध्यलय)

(कोमल गंधारयुक्त एक प्रकार)

स्थायीः गरवा डारूँ हार सरस सुगंध
लैहों बलैया मोरी आली, आगम भयो है प्राणपिया के।
अंतराः बहुत दिनन पाछे बालम आये
जागे मेरे भाग, शुभ घरि शुभ दिन शुभ महूरत मनाय के॥

स्थायी

म प
ग

नि ध़ नि़
प धनि सां धप | म री -री, सा | नि़ नि़ - री | सा - सा, (प़)
वी डाऽ ऽ रूँऽ | हा ऽ ऽर, स | र स ऽ सु | गं ऽ ध, लै
३ × २ ०

प़ नि़ म म
- सा - सा | री प ग म | री सा नि़ सा | री म मे म
ऽ हों ऽ ब | लै ऽ या ऽ | मो री आ ली | आ ग म् भ
३ × २ ०

प नि
प - निम प | पप धनि सांरीं सां | ध प म प | म ग म री; प री
यो ऽ हैऽ ऽ | प्राऽ ऽऽ ऽऽ ऽ | ण पि या ऽ | के ऽ ऽ; ग
३ × २ ०

अंतरा

म प प प सां | सां सां नि सां सां | मं गं मं रीं सां | रीं - सां, नि़ सा
ब हु त दि | न न पा छे | बा ऽ ल म् | आ ऽ ये, जा
३ × २ ०

सा म री म मे | प - प, प | नि ध नि़ प, ध नि | नि सां रीं, नि सां
गे मे ऽ रे | भा ऽ ग, शु | भ घ रि, शु | भ दि न, शु
३ × २ ०

सां प नि
ध म प धनि | सांरीं नि सां - धप | म - री सा नि़ | नि़ सा -; म प
भ म ह् रऽ | ऽऽ त ऽ मऽ | ना ऽ य के | ऽ ऽऽ; ग
३ × २ ०

नि
प धनि सां धप |
वी डाऽ ऽ रूँऽ | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग गौड़मल्हार–त्रिताल(मध्यलय)

(कोमल गंधारयुक्त एक प्रकार)

स्थायीः जा दिनतें सखि दरस भयो
अत लागि लगन जिया तरसे निसदिन|
अंतराः इक घरि पल छिन कल ना परत मोको
याद आवत नित मोहनी मूरत मन॥

स्थायी

म गमप गम रीसा	री – सा सा	सा मरी पम	प – ,म प
जाऽऽ ऽऽ दिन	तें ऽ स खि	द र स भ	यो ऽ ,अ त
३	×	२	०
सां धंसां रींसां निप	म प म ग ग	म म निप मनि	म म ग गम रीसा;
लाऽ ऽऽ गिल	ग न जि या	त र सेऽऽ ऽऽ	नि सऽ दि न;
३	×	२	०

अंतरा

म प प सां सां	नि सां सां रीं सां	नि सां धं सांरीं सांसां	निप मप ग म
इ क घ रि	प ल छि न	क ल नाऽ पऽ	रऽ तऽ मो को
३	×	२	०
म गमप गम रीनि सा	रीं रीं नि सा सा	सां रीं सां सां प	नि प म प;
याऽऽ ऽऽ दआ	व त नि त	मो ह नी म्	र त म न;
३	×	२	०

राग गौड़मल्हार–तिलवाड़ा(विलंबित)

(कोमल गंधारयुक्त एक प्रकार)

स्थायीः सखि बेग बुलाओ प्यारे बालम को
अब नाहीं मानत जियरा मोरा|
अंतराः दिन रतियाँ बीती जात तरप तरप नित
बाट तकत हूँ, ना जानूँ कब आवेगो
पीतम प्राण पियारा॥

स्थायी

म पप
सखि

नि धनि सां निसां नि धप | म री री – | सा नि़ ध़ नि़ री सा | (प़) सा नि़सा म रीप
बे ऽ ऽ ऽऽ गबु | ला ऽ ओ ऽ | प्या ऽ ऽ रे | बा ऽ ऽऽ लम
३ × २ ०

म म गग म री सा नि़सा | नि़ सासा म रीं म मे | प निमप म पप पप |
कोऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ | अब ना ऽ हीं | मा ऽऽऽ नत जिय |
३ × २

नि धनिसांरीं नि सां धप मरीसा–; प मप ‖ नि धनि सां निसां नि धप |
रा ऽऽऽ ऽ मोऽ रा ऽऽऽ; सखि ‖ बे ऽ ऽ ऽऽ गबु | ...इत्यादि
० ३

अंतरा

म पप सांसां | नि सां – ध़ निनि सां | मं गं मं रींसां निसांसां | सां नि सां रींनि सां
दिन रति | याँ ऽ ऽऽ ऽ | बी ऽ ति जा ऽऽ त | तू र प त
× २ ०

सां ध प प म प | प मपमप धनिसांरीं सां नि सां धप | म ग म री सा |
र प नि त | बाऽऽऽ ऽऽऽऽ टत कत | हूँ ऽ ऽ ऽ |
३ × २

नि़ सा नि़सा नि़ म सा रीम पप | प नि मप मे प – | म पपधनिसांरीं नि सां (प) मप |
ना ऽऽ जा नूँऽ कब | आ ऽऽ वे ऽ | गोऽऽऽऽऽ पी तम ऽऽ |
० ३ ×

म गम प ग म रीसा | री सा ध़ नि़ सा म पप | नि धनि सां निसां नि धप |
प्राऽ ऽ ऽ णपि | या रा ऽ ऽ; सखि | बे ऽ ऽ ऽऽ गबु |
२ ० ३

म री री – |
ला ऽ ओ ऽ | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
×

राग गौड़मल्हार–तिलवाडा (विलंबित)

(कोमल गंधारयुक्त एक प्रकार)

स्थायी : या अल्ला साँई हों तोरे दरबार आयो
माँगन माँगत कर जोर जोर आज |
अंतरा : दीन दुनी के दाता दोऊ जग के हो वाली
मुश्किलात मोरी देहो निस्तार आज ||

स्थायी

म प मप– म म ग ग म ,रीसा | रीं – सा ,निसा | सां मरी पप निपमप धसां |
या ऽ ऽ ऽ ल्लाऽ ऽ ,साँई | हों ऽ ऽ ,ऽऽ | ३ तोरे दर बाऽ ऽ ऽ ऽ ऽ |
× २

सां ध निपे प मप म म ग ग ,म, || म म ग ग म –,रीसा | रीं – सा सो |
० ऽ ऽ र आऽ योऽ ऽ, || ३ माँ ऽ ऽ ऽ ,गन | माँ ऽ ग त |
×

सा म री प –प | प निपमपधसां रींसां निमप म गम; ||
२ क र जो ऽ र | ० जोऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ र आऽ ऽ जऽ;

अंतरा

म प सांसां नि सां सां | रीं – सां – | नि प मप धसां | मं मं गं गंमं रीं सां |
३ दी न दु नी के | × दा ऽ ता ऽ | २ दो ऊ जग केऽ | ० हो ऽ ऽ वा ऽ

नि प –, मप | म म ग ग म ,रीसा रीं सा | सा म री पे म –,प |
३ ली ऽ ऽ, ,मुश्कि | × लाऽ ऽ ,तऽ मो री | २ दे ऽ हो ऽ,नि |

प निपमपधसां रींसां निमप म गम; || म प म म ग ग म ,रीसा |
० स्ताऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ र आऽ ऽ जऽ; || ३ याऽ ऽ ऽ ल्लाऽ ऽ ,साँई | इत्यादि

राग शुद्धमल्हार–त्रिताल(मध्यलय)

(ग–नि वर्जित औडुव प्रकार)

स्थायीः धूम धूम धूम आये गरज गरज अत
बरसन लागे बादर बिजरी चमके जियरा डर पावे।
अंतराः राह तकत हूँ उनके आवन की, दिन ना चैन मोहे
निंदिया न रैन, बिरह की माती अकेली तरसत,
घर आंगना कछु ना सुहावे॥

स्थायी

री म
धू

री री, री प – | प, सां ध ध | ध सां रीं सां – | सां ध प म, म प
० ऽ म, धू ऽ | ३ म, धू ऽ म | × आ ऽ चे ऽ | २ ग र ज, ग

म री सा सा, | री म री प प | ध सां ध सां – | ध सां रीं सां सां
० र ज अ त, | ३ ब र स न | × ला ऽ गे ऽ | २ बा ऽ द र

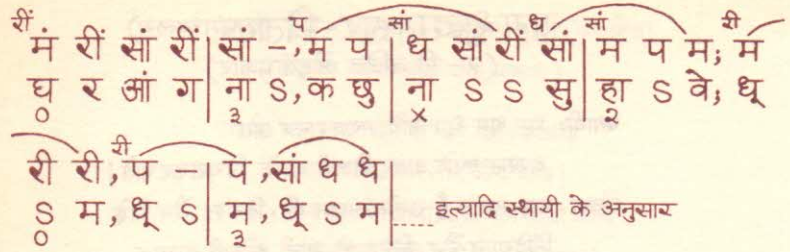
रीं मं रीं सां रीं | सां सां, प म प | सां ध सां ध प | री म प म, श म
० बि ज री च | ३ म के, जि य | × रा ऽ ऽ र | २ पा ऽ वे; धू

अंतरा

म प – प म प | सां ध सां – | ध सां सां सां ध | सां रीं सां –
० रा ऽ ह त | ३ क त हूँ ऽ | × उ न के आ | २ व न की ऽ

ध सां सां सां ध सां | – सां सां सां | ध सां रीं सां सां | सां ध प म म
० दि न ना चै | ३ ऽ न मो हे | × निं दि या न | २ रै ऽ ऽ न

म री री प म म | प – प, प | सां ध रीं सां – | सां ध प म प
० बि र हा की | ३ मा ऽ ती, अ | × के ऽ ली ऽ | २ त र स त



राग जोग

यह एक अप्रसिद्ध राग-रूप है, जो आजकल पर्याप्त लोकप्रिय हो चुका है। कर्णाटक संगीत प्रणाली में "नाट" नाम का एक राग है, जिसमें ठीक वे ही स्वर लगते हैं, जो इस जोग राग में प्रयुक्त होते हैं। अर्थात् दोनों गंधार, दोनों निषाद तथा षड्ज मध्यम एवम् पंचम। इस राग में ऋषभ तथा धैवत मूलतः वर्ज्य हैं; अतः इसे औडुव जाति का राग माना जाता है। लगभग तिलंग राग का ही चलन रखकर बीच बीच में "ग सा, ग़ सा" यह स्वर-समुदाय जोड़ा जाता है। इसका वादी स्वर षड्ज, संवादी पंचम माना जाता है। गान-समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। कोमल गंधार केवल अवरोह में उपरोक्त स्वर-समुदाय द्वारा लगाया जाता है। कोमल निषाद का प्रयोग भी आरोह में क्वचित् ही होता है; यद्यपि कुछ विद्वानों के मतानुसार इस राग में केवल कोमल निषाद का ही प्रयोग योग्य माना गया है।

टिप्पणी :-

कर्णाटक संगीत प्रणाली के "नाट" राग में षड्ज, षट्श्रुति ऋषभ, अंतर गंधार मध्यम, पंचम, षट्श्रुति धैवत तथा काकली निषाद, ये स्वर लगते हैं। हिन्दुस्तानी संगीत प्रणाली के अनुसार (स्वर-संकेतानुसार) क्रमशः "सा, ग, ग, म, प, नि, नि" इस प्रकार होंगे। "नाट" राग में "रीग, गरी" तथा "धनि, निध" ये प्रयोग हो सकते हैं। हिन्दुस्तानी संगीत के स्वरानुसार ये प्रयोग क्रमशः "ग़ग, गग़" तथा "निनि, निनि" इस प्रकार होंगे।

यद्यपि जोग राग में यदि इस प्रकार के प्रयोग क्वचित् कोई करें, तो वह "ग, सा ग़ सा" तथा "नि, प निप" इस प्रकार कोमल गंधार को षड्ज का एवम् कोमल निषाद को पंचम का कण देकर करेंगे।

आरोहावरोह स्वरूप :

सां
सा, गम, प नि, सां | सां, निप, मग, पमगसा, ग़सा ||

स्वर-विस्तार

सा, गमप, मगम, प, मग, म, गसा, ग़सा, निसा, ग, म, गसा, ग़सा, सागमप, निप, म, गम, गमप, म, गम, गसा, ग़सा|

सा, निसा, निप़, नि, सा, गमप, मग़-सा, सागमप, निप, निसां, निप, गमप, म, पमगरी ग, म, गमपमगम, गसा, ग़सा|

सा, निसा, पमगसा, ग़सा, सा प, म, पमगरी गम, गसा, ग़सा, ग़सानिप़, प़नि, सा, गमप, निपमगरी गम, गसा, ग़सा|

सा, प, मप, गमप, ग, सागमप, निप, सां, निप, निसां, ग़सां, निप, गमपनि सांग़सां, ग़सांनिप, सां, निप, पमगरी गम, गमपम गसा, ग़सा|

अंतरा: मपनि, निसां, सां, निसां, ग़सां, ग़सांनिप, निपमग, म, पनिपमगरी ग, म, पमगसा, ग़सा|

मपनिप, नि, निसां, निप, निसां, पनिसांगं, मं, गंसां, ग़सां, सांगंमंपं, मं, पंमंगरीं गं, मं, गंसां, ग़सां, ग़सां, निप, मपमगरी गम, सागमप, म, निप, निम, पग, री गम, गमपमगम, गसा, ग़सा|

कुछ अभ्यास की तानें

सागमप गमगसा ग़सा, सागमप गमनिप मपमग मगसा ग़सा, सागमप गमपनि पनिसांनि पम निपमपमग मगसा ग़सा|

पमगसा ग़सा, निपमग पमगसा ग़सा, सांनिपम निपमग पमगमगसा ग़सा, निसागमपमगम पनिसांग़सांनि सांनिपम पमगरी गम सागमपमग मगसा ग़सा|

मगसा पमग निपमग पमगसा ग़सा, निसागमपनिपमगसाग़, सागमपनिपम गमपनि पनिसांग़सांनिपम गमपसां निपमगसा ग़सा|

सांनिपमगसा ग़सा, गंमंगंसां गंसांनिपम गमगसा ग़सा, सागम गमप मपनि, पनिसांगंसां गंमंगंसां गंसांनिपमगसा ग़सा|

ममग़सा पपमग निनिपम सांसांनिप गंगंसांनि मंमंग़सां गंग़सांनि सांसांनिप निनिपम पपमग ममग़सा, निसागमपनिसांगं सांनिपम गमपमगसा ग़सा|

राग जोग–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : बनरा बनी आयो ब्याहन बनरी को
शुभ घरी शुभ दिन मुहूरत मनाओ।
अंतरा : सज सिंगार सोहे सीस सेरा
सब मंगल गावो बजावो रिझावो
शुभ घरी शुभ दिन मुहूरत मनाओ॥

स्थायी

ग म
ब

ग सा नि़ पे़	नि़ सा सो, ग	म प म ग्रम	सा ग सो, नि़
न रा ब नि	आ ऽ यो,ब्या	ह न ब नऽ	री ऽ को,शु
३	×	२	०
सा ग म,पा	नि़ प म, प	म ग रीग,म	गसा ग सो;ग
भ घ रि,शु	भ दि न, मु	ह र त,म	नाऽ ऽ ओ;ब
३	×	२	०

अंतरा

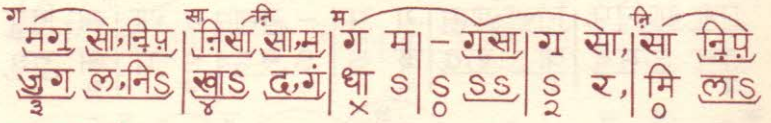
, प म म प	नि सां सां सां	सां गं मं मं	गंसां गं सां,गं
, स ज सिं	गा ऽ र सो	हे सी ऽ स	सेऽ ऽ रा,स
३	×	२	०
सां नि़ प म	ग – सा, प़	नि़ सा सा,प	मग रीग म, नि़
ब मं ग ल	गा ऽ वो, ब	जा ऽ वो,रि	झाऽ ऽ वो, शु
३	×	२	०
सा ग म,प	नि़ प म, प	म ग रीग,म	गसा ग सो;ग
भ घ रि,शु	भ दि न,मु	ह र त,म	नाऽ ऽ ओ; ब
३	×	२	०

ग सा नि़ पे़
न रा ब नि ---- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

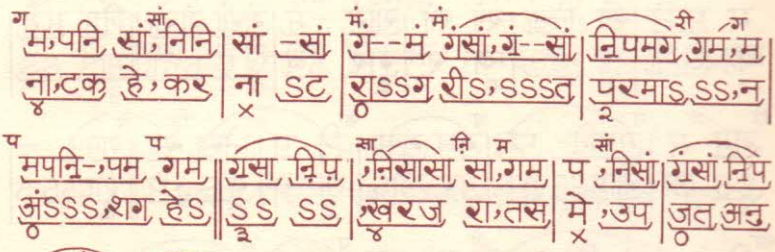
राग जोग – लक्षणगीत – एकताल (विलंबित)

स्थायीः जुगल निखाद गंधार मिलाये
भयो अत सुंदर जोग राग।
अंतराः नाट कहे कर्णाट राग रीत प्रमाण
अंश गहे खरज,रात समे उपजत अनुराग॥

स्थायी



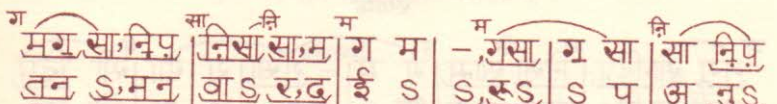
अंतरा



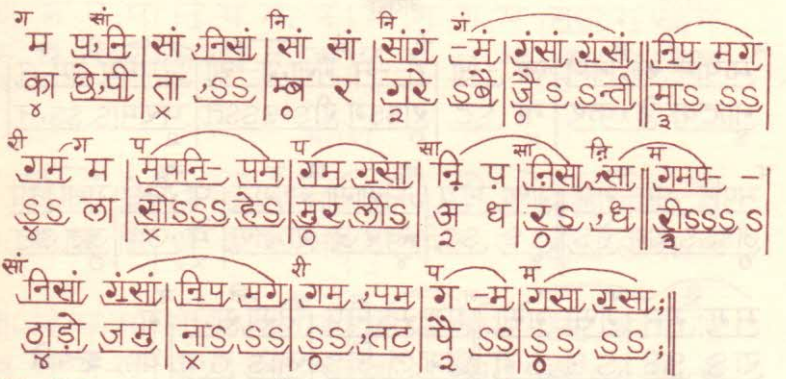
राग जोग - एकताल (विलंबित)

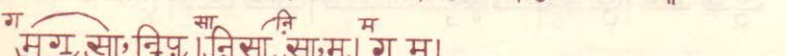
स्थायी: तन मन वार दई, रूप अनुपम सुंदर श्याम पै।
अंतरा: काछे पीताम्बर गरे बैजयंती माला
सोहे मुरली अधर धरी, ठाड़ो जमुना तट पै॥

स्थायी



अंतरा





.....इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग भैरव- सरगम- त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

प म ग रे | सा, ग - म | धि - प -, | म ग रे सा
० ३ × २

सा नि सा ग म | प, ग म प | धि नि सां -, | धि नि सां रें
० ३ × २

सां नि ध प, | नि ध प म | ग रे सा -, | रे ग - म
० ३ × २

अंतरा

ध प म ग | म धि - ध | सां - नि नि | सां - - -
० ३ × २

धि नि सां रें | - रें, सां - | सां, नि - नि, | धि - ध, प
० ३ × २

- प, म ग | म प ध नि | सां नि ध प | म ग रे सा
० ३ × २

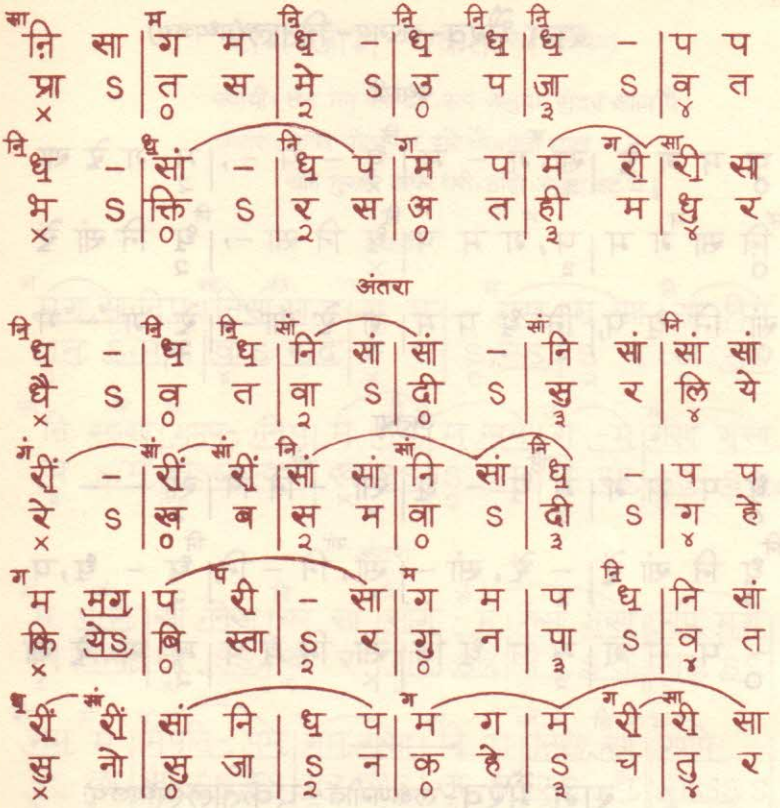
राग भैरव- लक्षणगीत- एकताल (मध्यलय)

स्थायीः रागनमों राग प्रथम भैरव गुनि गावत नित
प्रात समे उपजावत भक्तिरस अतही मधुर।
अंतरा : धैवत वादी सुर लिये रेखब संवादी गहे
क्रिये बिस्तार गुन पावत सुनो 'सुजान' कहे चतुर॥

स्थायी

ग सा सा सा सा धि सा
री री री री सा निसा ध़ - ध़ नि़ सा सा
रा S ग न मों SS रा S ग प्र थ म
× ० २ ० ३ ४

म ग म ग सा म ग म ग रे सा
गै S र व गु नि गा S व त नि त
× ० २ ० ३ ४



राग भैरव – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: कन्हैया तोरी बाँसुरी नीकी लगत
अत मधुर धुन सुनि सुध बुध सब हार गई
लगी लगन आज मोरी।

अंतरा: जल भरन जमुना जो मैं गई री
सुनि बाँसुरी की धुन ग्यान-ध्यान
लाज-काज भूल गई, भई बौरी॥

स्थायी

म प
क

प ग म ग रे सा | नि ध – नि ध प | –, नि ध प्रम प | म ग म ग रे सा
नहे या तो री | बाँ ऽ सु री | ऽ, नी क्रीऽ ल | ग त अ त
३ × २ ०

सां नि़ सा म ग प म | प प रे सा, सां नि़ | सा म ग म प | नि ध नि सां रें सां
म धु र धु | न सु नि, सु | ध बु ध स | ब हा र् ग ई
३ × २ ०

– – ग रे | म ग म नि ध ध | सां नि सां सां नि ध | – प –, प ध
ऽ ऽ ल | गी ल ग न | आ ऽ ज मो | ऽ री ऽ; क
३ × २ ०

प म प म ग म |
नहे या तो री | ---- इत्यादि
३

अंतरा

म ग म नि ध | नि ध सां नि सां सां | गं रें – सां नि | सां – – सां
ज ल भ र | न ज मु ना | जो ऽ मैं ग | ई ऽ ऽ री
० ३ × २

नि ध नि सां रें सां | नि सां नि ध प | म ग म ग, रे | – सा, मा म ग
सु नि बाँ सु | री की धु न | ध्या ऽ न, ध्या | ऽ न, ला ऽ
० ३ × २

म, नि ध सां सां | रें सांनि सां नि ध | प – –, म | ग रे – –, म ग
ज, का ऽ ज | भू ऽऽ ल ग | ई ऽ ऽ, भ | ई ऽ ऽ, बो
० ३ × २

प प रे सा; नि ध | प म प म ग म |
ऽ री ऽ; क | नहे या तो री | ---- इत्यादि स्थायी के अनुसार
० ३

राग भैरव–ध्रुवपद–चौताल

स्थायीः चंद्रमा ललाट सोहे, जटाजूट गंग सोहे
गर सोहे रुण्ड माल, सोहे अंग बाघाम्बर |
अंतराः भाल लोचन अंग ऊज्वल, गौर बरन बदन सोहे
अंग बभूत सोहे, अंग सोहे त्रिशूल कर ॥
संचारीः ब्रह्मा गणेश शेष, नारायण नारद मुनि
जपत नाम अस्तुत गाय जय हर हर शिव शंकर ॥
आभोगः निरतत ताण्डव शिव कैलासपति महेश
डमरु नाद अंग गंभीर शब्द बजत हर हर हर ॥

स्थायी

नि॒ध॒	–	नि॒ध॒	प	–	नि॒ध॒	प	म	प	म	म॒ग	म
च	ऽ	न्द्र	मा	ऽ	ल	ला	ऽ	ट	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	
ग म॒रे॒	–	म॒ग	प	प	म॒ग	म	प	म॒रे॒	–		सा
ज	टा	ऽ	जू	ऽ	ट	गं	ऽ	ग	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	
नि॒ध॒	नि॒ध॒	–	सा नि॒	सा	सा	ग रे॒	–	सा रे॒	नि॒सा	–	सा
ग	र	ऽ	सो	ऽ	हे	रु	ऽ	ण्ड	मा	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	
नि॒ध॒	–	ध॒सां	–	नि॒ध॒	प	म प	ग	प रे॒	–		सा सा
सो	ऽ	हे	ऽ	अ	त	बा	ऽ	घा	ऽ		म्ब र
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

नि॒ध॒	–	नि॒ध॒	सां नि	सां	सां	सां नि	सां	नि सां	–		सां सां
भा	ऽ	ल	लो	च	न	अ	त	उ	ऽ		ज्व ल
×		०		२		०		३		४	
गं रीं	–	सां रीं	गं रीं	सां रीं	सां	नि सां	नि	सां	नि ध॒	–	प
गौ	ऽ	र	ब	र	न	ब	द	न	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	

नि ध् | – | – | ध् सां | – | नि सां | नि | सां | सां नि | ध् | – | प
अं | ऽ | ऽ | ग | ऽ | ब | भू | ऽ | त | सो | ऽ | हे
× | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

ग म | ग रीं | – | म ग | प | प | ग म | ग | म | ग रीं | सा | सा
अ | त | ऽ | सो | ऽ | हे | त्रि | शू | ऽ | ल | क् | र
× | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

संचारी

नि सा | – | – | सा ध् | – | नि ध् | नि ध् | – | नि ध् | प | – | प
ब्र | ऽ | ऽ | ह्मा | ऽ | ग | णे | ऽ | श | शे | ऽ | ष
× | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

नि ध् | – | नि ध् | – | नि | सां | गं रीं | सां | सां नि | सां | नि ध् | प
ना | ऽ | रा | ऽ | य | ण | ना | ऽ | र | द | मु | नि
× | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

ग म | ग | ग रीं | म ग | प | प | ग म | ग | म | ग रीं | सा | सा
ज | प | त | ना | ऽ | म | अ | स्तु | त | गा | ऽ | य
× | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

नि सा | सा | सा म | म ग | प | प | नि ध् | नि ध् | नि ध् | – | प | प
ज | य | ह | र | ह | र | शि | व | शं | ऽ | क् | र
× | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

आभोग

म प | प | – | नि ध् | – | नि | सां | – | सां नि | सां | नि सां | सां
नि | र | ऽ | त | ऽ | त | ता | ऽ | ण्ड | व | शि | व
× | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

गं रीं | – | – | मं गं | – | मं | गं रीं | सां | नि सां | नि ध् | – | प
के | ऽ | ऽ | ला | ऽ | स | प | ति | म | हे | ऽ | थ
× | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

ग म | ग | म | ग रीं | – | सा | ग म | ग | म | नि ध् | – | प
ड | म | रु | ना | ऽ | द | अ | त | ग | म्भी | ऽ | र
× | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

प रीं | – | सां रीं | गं रीं | सां | सां | नि सा | सा | सा म | म ग | प | प
श | ऽ | द्ध | ब | ज | त | ह | र | ह | र | ह | र
× | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ |

राग भैरव- वर्णम्- आदिताल

पल्लवी : देहि मां सुस्वरम् शारीरम्
लयान्वितं हे रागसत्तमे।
अनुपल्लवी : भैरवानुगृण्हीहि प्रसीद
प्रातः पूजयामि सेवकोऽति विनीतो ॥
चरणम् : ते मनोज्ञता स्वरैश्चर्यं वितनोऽति ॥

पल्लवी

सां--नि ध्पम,प ध्पमग मपरी,ग	मप,मग रीसानिसा	निसारीग,मपधनि
दे ऽऽऽ ऽऽहि,मां ऽऽऽऽ ऽऽऽ,सु	ऽऽ,स्वरं ऽऽऽऽ	श्रा ऽऽरी ऽऽरं,ऽ
×	२	३
गंरींसांनि ध,रींसांनि ध्पम,ध पम,रीग	मपमग री,पमग,	ध्पम,नि ध्पधनि
लया ऽऽ ऽ,ऽऽन्वि तं ऽऽ,हे ऽऽ,शा ऽ	ऽऽऽऽ ऽ,गऽऽ,	स ऽऽ,त्त मे ऽऽऽ,ऽ
×	२	३

अनुपल्लवी

रीं--रीं मंगंरींसां नि,ध्पम गमपध	निसां--,पंमंगंरीं	सांनिध्प म,पधनि,
भै ऽऽर वा ऽऽऽ ऽ,नु ऽग्र ऽऽप्री ऽ	ऽऽऽऽ,हि ऽऽप्र	सी ऽऽऽ ऽ,द ऽऽऽ,
×	२	३
मपध,ग मप,रीग मगरीसा निसागम	पधनिसां रींसां--,	रींसांनिध मपधनि
प्रा ऽऽ,तः ऽऽ,पू ऽ ऽऽजया ऽऽऽऽ	मिसे ऽऽ वको ऽऽ,	तिविनी ऽ ऽतो ऽऽ
×	२	३

मुक्तायंपू

गमप,रे प,रेध,रे नि,ध्पम पध,रेंसां	गं,निसांनि पध,मप,	रेरेप,रे मगपरे
×	२	३
सा-,पसा -,धसा-,निरे-,सा ध-,परें	-सां,पंरें -रें,ध-	ध,रे-रे,ध-ध,नि
×	२	३
-निसां-, पधनिसां-,गमप धनिसां-,	रेरेरे,ग गग,मम	म,धधध,निनिनिसां
×	२	३
सां,निसांनि सां,पपम पमप,रे रेसारेसा	रे,प-म गम,ध-	पमपग,नि -धपध,
×	२	३
गं,मपरें, गमनि,रे गध,निसां,रें,गंमंरें	-सां,नि- धप्म-म,	रे-ग,म -पधनि
×	२	३

चरणम्

प---,गमनिध प--,रीं सांनिध्प	मपध्प धनिधनि	सांरींसांनि ध्पधनि
ते ऽऽऽ,मनो ऽज्ञ ता ऽऽ,स्व रै ऽऽश्च	ऽऽर्यं ऽ,ऽऽऽऽ	वितनो ऽ,ऽऽऽति
×	२	३

चित्रस्वरम्

१. सा--प, --म-, -ग--, रे--सा | --, म-, -ग--, | म--प, -धनिध ||
× २ ३

२. सा-रेग, -मध-, निसां-, रें निसां-, ध | निपधम, पगमरे | -, सारेग, मपधनि ||
× २ ३

३. पमम, ध, पप, रेग, मपधनि, धसां-, गं | रें मगं, पं रें-रें, ध | रें सां-, सा, रेगमप ||
× २ ३

धनि-, ध, नि़सारेग, मप-, रे, गम-, नि़ | सारे-, ग, म-, पध | -, निसां-, रेंसांनिध ||
× २ ३

४. गंरेंगंरें, गंरें, मंग, रें, सांसांसां, सांसांसां, रें | सां, पधनि, सां, मपध | निसां, रेप, रेसा, धरें ||
× २ ३

धप, रेंपं, रेंसां, गं-, रेंधरें-, सांपसां-, | निमनि-, धगध-, | पंरेप-, मगरेसा ||
× २ ३

नि-धप, मगरेसा, रें-सांनि, धपमग | रेसा, गं-, रेंसांनिध | पमगरे, सा, म-म, ||
× २ ३

ध-प, धसानिरेसा, पमधपनिधरें, सां | निधपम, पधनिसां | --, रे-, -सा-- ||
× २ ३

५. धधध, ध, धध, निसां, -, मं-मं, रें-, सांनि | धप, मप, धनि, गम | पध, रेग, मप, सारे ||
× २ ३

गम, नि़सा, रेग-, म, पधनि-, सांरेंसां, पं | मंपं, गंमं, रेंगंसांरें | निसांधनि, पधमप ||
× २ ३

ध, गमप, -प, मप, ध-ध, प, धनि-नि, | धनिसां-, सां, सा-रे | गमपध, रें-सां- ||
× २ ३

-, नि--, -, धु--, प--, म, --, ग- | -, म--, -, प--, | धु-निसां-, मगम ||
× २ ३

टीप: कर्णाटक संगीत पद्धति के वर्णम् के आधार पर लेखक ने उपरोक्त वर्णम् की रचना की है।

राग रामकली - त्रिताल (मध्यलय)

(लक्षणगीत)

स्थायी : गावो री बजावो सुनावो रस रंगसों सखि
रागनी को रामकली आजे।

अंतरा : सप समवादी-वादी गहत नित
भैरव मेल सजत प्रात गेय
मध्यम तीवर मृदु निखाद सों
अत मन भायो ॥

स्थायी

म प – प	नि ध – – ध	नि ध – प –	म प गम पम				
गम; प – प	नि ध – – ध	नि ध – प –	म प गम पम				
SS; गा s वो	री s s ब	जा s वो s	s s SS SS				
३	×	२	०				
ग रे – सा –	नि सा सा म गम	ग म गमप म प	म धप निसां – सां				
ना s वो s	र स रं गS	सों SSS स खि	राS SS s ग				
३	×	२	०				
नि ध – प –	नि ध – प –	नि ध म प –	म प धध पम प म				
नी s को s	रा s s s	मृ क ली s	आS SS s जे				
३	×	२	०				

अंतरा

म प प प प	नि ध – नि –	नि सां – सां सां	सां नि सां सां सां				
स प स म	वा s दी s	वा s दि ग	ह त नि त				
×	२	०	३				
नि ध – नि ध ध	सां नि – सां सां	गं रीं रीं सां नि	सां नि ध – प				
भै s र व	मे s ल स	ज त प्रा s	त गे s य				
×	२	०	३				
म ग म प प	नि ध – नि नि	सां सां सां सां	सां नि सां ध प				
म s ध्य म	ती s व र	मृ दु नि खा	s द सों s				
×	२	०	३				
नि ध नि ध सां सां	– नि ध नि ध	प – म प	म; प – प				
अ त म न	s भा s यो	s s s s	SS; गा s वो				
×	२	०	३				

राग रामकली - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : पचरंग चुनरी मोरी भीनी सारी
बरजोरी कीन्ही लंगर ढीट कन्हैया
मैं कासे कहूँ मैंतो लाज लजाऊँ।

अंतरा : भरी गगरी डार दीनी, उचक काँकरिया
मारी, अब कैसे घर जाऊँ ॥

स्थायी

नि॒ ध॒ प ध॒	प। म प	प ग म	नि॒ ध॒ –	नि॒ ध॒ सां नि	सां नि॒ ध॒ प,	म प	
च रं ग चु	न री मोरी	भी ऽ नी सा	ऽ री ऽ,	ब			
०	३	×	२				
प ग म रे॒ सा	सा नि॒, सा ग म	प – प, ध॒	नि सां रें॒ सां नि॒ ध॒				
र जो री की	न्ही, लं ग र	ढी ऽ ट, क	न्हे ऽ ऽ या				
०	३	×	२				
– प –, सा नि॒	सा ग म, प	नि॒ ध॒ नि सां नि	ध॒ – प;	नि॒ ध॒			
ऽ मैं ऽ, का	से क हूँ, मैं	तो लाऽज ल	जा ऽ ऊँ;	प			
०	३	×	२				

अंतरा

						म प	
प नि॒ ध॒ नि॒ नि	सां – सां रें॒	सां, नि सां सां	नि॒ ध॒ – नि सां				
री ग ग री	डा ऽ र दी	नी, उ च क	काँ ऽ क रि				
०	३	×	२				
रें॒ सां नि सां	नि॒ ध॒, ग म नि॒ ध॒	नि सां रें॒ सां	नि ध॒ प;	नि॒ ध॒			
या ऽ मा ऽ	री, अ ब के	से घ र जा	ऽ ऊँ ऽ;	प			
०	३	×	२				
नि॒ ध॒ प ध॒	प। म प						
च रं ग चु	न री ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार						
०	३						

राग रामकली– तराना– त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः ना दिर दिर तन तुं दिर दिर दीम् दीम् तदीम्
द्रियानारे तोम्तन, उदानि उदानि तदानि तदानि
दीम् तनोम् तार्दानि।

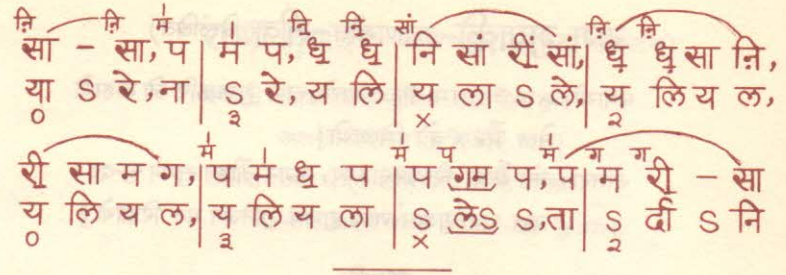
अंतराः धित्लांग् धित्लंग् दिर दिर तोम् तननननन
ना दिर दिर दिर तोम्तन तुम् दिर दिर दिर दीम्तन
दिर तन दिर तन दिर दिर दिर दिर दिर दिर दीम्तन
यारे नारे यलि यलाले यलियल यलियल
यलि यलाले तार्दानि ॥

स्थायी

नि	ध	नि	ध	प	म	प	ग	म	प	–	–	ध	नि	ध	पे	–
ना	दिर	दिर	त	न	तुं	दिर	दिर	दी	ऽ	म्	दी	ऽ	म्त	दी	म्	
०				३				×				२				
म	प	ग	मप	मम	रीं	–	सा	सा	सा	सा	सा	म	ग	म	प	प
द्रि	या	ना	ऽ	रेऽ	तो	ऽ	म्त	न	उ	दा	नि	उ	दा	नि	त	दा
०					३				×				२			
प	ध	ध	ध	ध	सां	नि	सां	रीं	सांनि	ध	–	–	प	म	रीं	–	सा
नि	त	दा	नि		दी	ऽ	ऽ	म्तऽ		नो	ऽ	म्	ता	ऽ	दीं	ऽ	नि
०					३					×				२			

अंतरा

म	प	प	–	प	नि	ध	–	नि	नि	सां	–	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां
धि	त्लां	ग्	धि		त्लां	ग्	दिर	दिर	तो	ऽ	म्त	न		न	न	न	न	
०					३				×					२				
गं	रीं	रीं	रीं	रीं	गं	रीं	–	सां	सां	सां	नि	नि	सां	रीं	नि	ध	–	प	प
ना	दिर	दिर	दिर		तो	ऽ	म्त	न	तुं	दिर	दिर	दिर		दी	ऽ	म्त	न		
०					३				×					२					
म	प	प	म	प	नि	ध	ध	नि	नि	सां	सां	रीं	सां	नि	ध	–	प	प
दिर	त	न	दिर		त	न	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर		दी	ऽ	म्त	न		
०					३				×					२					



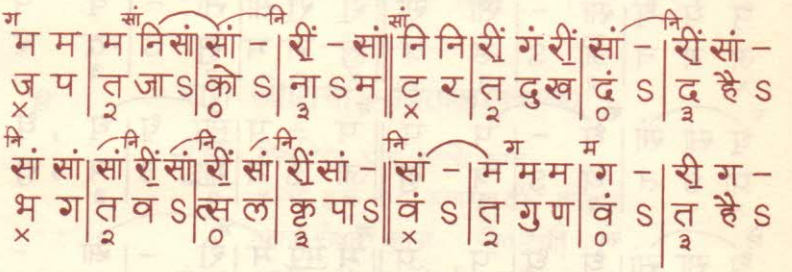
राग मेघरंजनी- साधा- झपताल(मध्यलय)

स्थायी : दानव दलन धीर बीर गंभीर है
नायक सकल श्रेष्ठ दानी दयवंत है|
अंतरा : जपत जाको नाम टरत दुःख दंद है
भगत-वत्सल कृपावंत गुणवंत है ||

स्थायी



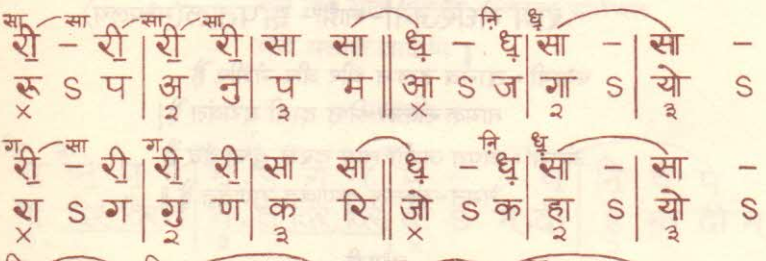
अंतरा



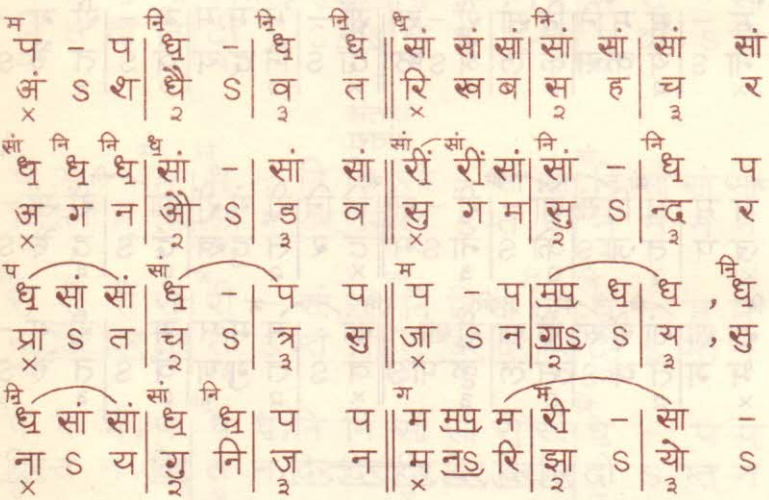
राग गुणक्री- लक्षणगीत-तीव्रा(विलंबित)

स्थायी : रूप अनुपम आज गायो, राग गुणकरि जो कहायो
मेल भैरव को मिलायो।
अंतरा : अंश धैवत रिखब सहचर, अगन ओडव सुगम सुन्दर
प्रात चत्र 'सुजान' गाय सुनाय गुनिजन मन रिझायो॥

स्थायी



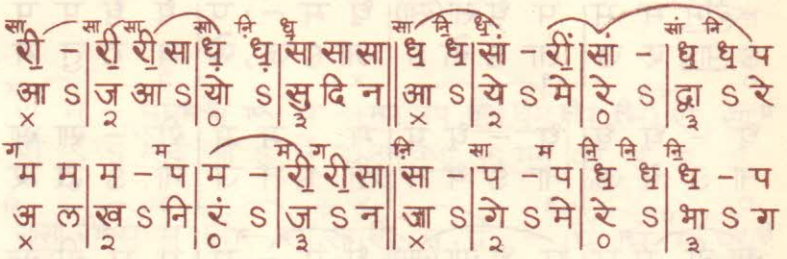
अंतरा



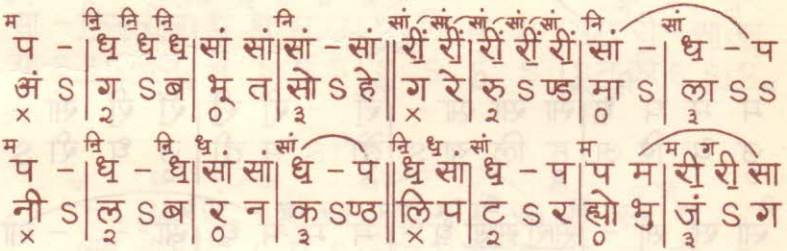
राग गुणक्री – साधा – झपताल (मध्यलय)

स्थायी : आज आयो सुदिन आये मेरे द्वारे
अलख निरंजन जागे मेरे भाग |
अंतरा : अंग बभूत सोहे गरे रुण्ड माला
नील बरन कण्ठ लिपट रह्यो भुजंग ||

स्थायी



अंतरा



राग जोगिया – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : खेवटिया पार उतारो आज
खेवट तुम, नाथ अनाथन दीन जनोद्धर
काज सँवारो आज --- खेवटिया |
अंतरा : उधरि अहिल्या द्रौपदी उधरी
उधर्‍यो ऐरावतहु नाथ, गोपि ग्वार गोकुल के
उधरे, शरणागत के तुम हितकारी
इतहु निहारो आज --- खेवटिया ||

स्थायी

ग
म | म म ग री सा
खे | व टि या ऽ
२

सा री म ग म | ध प ध सां (सां) | नि ध प – , म | म म ग री सा
० पा ऽ र उ | ३ ता ऽ रो ऽ | × आ ऽ ज् , खे | २ व टि या ऽ

सा – रीं म ग म | ध प ध सां (सां) | नि ध म – , प | नि ध नि ध प प
० ऽ पाऽ र उ | ३ ता ऽ रो ऽ | × आ ऽ ज् , खे | २ व ट तु म

प ध – ध नि | नि ध – ध प | ग म – म ग म | ग री – सा सा
० ना ऽ थ अ | ३ ना ऽ थ न | × दी ऽ न ज | २ नो ऽ द्ध र

नि सा री म ग म | प ध सां (सां) | नि ध प –; ग म | म म ग री सा
० का ऽ ज सँ | ३ वा ऽ रो ऽ | × आ ऽ ज्; खे | २ व टि या ऽ

अंतरा

ग म म प ध | सां सां नि सां – | सां रीं – रीं रीं | ग रीं रीं सां –
० उ ध रि अ | ३ हु लि या ऽ | × द्वै ऽ प दी | २ उ ध री ऽ

नि सां सां सां – | नि सांरीं सांसां ध – | प म म प ध | ध सां – – सां
० उ ध च्यो ऽ | ३ ऐऽ ऽऽ रा ऽ | × व त हु ऽ | २ ना ऽ ऽ थ

नि सां – सां नि | ध – ध प म – | प ध प म – | ग री री सा –
० गो ऽ पि ब्बा | ३ ऽ र गो ऽ | × कु ल के ऽ | २ उ ध रे ऽ

नि सा सा ग री प | म म ग री सा | नि सा री प म म | प – प –
० श र णा ऽ | ३ ग त के ऽ | × तु म हि त | २ का ऽ री ऽ

सां रीं रीं रीं सां | नि सां – नि सांरीं सांसां | नि ध प –; ग म | म म ग री सा
० इ त हु नि | ३ हा ऽ रोऽ ऽऽ | × आ ऽ ज्; खे | २ व टि या ऽ

राग जोगिया-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी: परी मैं ना जानूँ उनके मन की
यहाँ तो गँवाये बैठी नींदरिया सुख चैन की।
अंतरा: अब्तो भई मैं चेरी सजनी, उन बिन जियरा
मानत नाहीं, कासे कहूँ अब अपने मन की॥

स्थायी

नि॒ सा
ए

म रीं म – पप | नि॒ ध॒ – प – | प मम, मप धनि॒ धम | प (म) ग रीं सा
री ऽ ऽ मैंना | जा ऽ नूँ ऽ | ३ उन केऽ ऽऽ मन | × की ऽ ऽ ऽ | ० ।

नि॒ सासा रीं पं मं | रीं – सा, सा | नि॒ सा रीं मं पं – | नि॒ ध॒ मं मं पध॒
यहाँ तो ऽ गँ | वा ऽ ये, बै | ३ ठी ऽ ऽ ऽ | × ऽ ऽ नीं | ० दरि

ध॒ सां – निसां रींसां | नि॒ ध॒ ध॒ मं पं | नि॒ नि॒ ध॒ मं | पं, मं ग रीं – सा; नि॒ सा
या ऽ ऽऽ सुख | चै ऽ ऽ ऽ | ३ ऽ ऽ ऽ ऽ | × ऽन की ऽ | ० ऽ; ए

अंतरा

पं मम, पं॒ध॒ | सां – नि॒ रीं सां | नि॒ सांरीं मं गं रीं सां | सां॒ रीं सां नि॒ ध॒ प
अब, तो, भ | ई ऽ मैं ऽ | ३ चेऽ ऽ री ऽ | × स ज नी ऽ | ० ।

पं मप, नि॒ धसां – – | रीं री सा – | नि॒ सा रीं नि॒ सारीं मम | प – प –
उन बिन ऽ ऽ | जि य रा ऽ | ३ मा ऽ ऽऽ नत | × ना ऽ हीं ऽ | ० ।

ध॒ प ध॒ पध॒ रींसां | नि॒ ध॒ (प) मं मम पं | नि॒ धनि॒ धं, पं मं | ग रीं – सा; नि॒ सा
का ऽ ऽऽ सेक | ३ हूँ अब, अप ने | × ऽ ऽ मन की ऽ | ० ऽ ऽ ऽ; ए

राग देवरंजनी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः जिया की बिथा कासे कहूँ सजनी
भेंतो फ़ँसी पीत लगाये उन संग ।
अंतराः वे तो रसिया अपने ही रस के
बतियाँ बनाय के झूठी झूठी
साची नीकी पीत लगाये औरन संग ॥

स्थायी

सा
मं
जि

सो नि॒ ध॒ – सा नि॒ | सा म – , प म | म प पध॒ नि॒ | ध॒ प म , प म
या की ऽ बि | था ऽ ऽ , का | से क हँऽ ऽ | स ज नी , मैं
३ × २ ०

प नि॒ ध॒ सां – | ध॒ नि॒ धप नि॒ | ध॒ प म , प | म सा सा ; सप
तो फ़ँ सी ऽ | पी ऽ तऽ ल | गा ऽ ये , उ | न सं ग ; जिऽ
३ × २ ०

मसा सा नि॒ ध॒ नि॒ | सा म
याऽ की ऽ बि | था ऽ ..... इत्यादि
३ ×

अंतरा

नि॒ ध॒
वे

प म प नि॒ ध॒ | सां – – , सां | मं मं सां सां | नि॒ ध॒ नि॒ ध , प
ऽ तो र सि | या ऽ ऽ , अ | प ने ऽ ही | र स के , वे
३ × २ ०

म म प नि॒ ध॒ | सां – – , सां | मंपं मं सां सां | नि॒ ध॒ नि॒ ध , म प
ऽ तो र सि | या ऽ ऽ , अ | पऽ ने ऽ ही | र स के , ब
३ × २ ०

म सा नि॒ ध॒ नि॒ | सा म – म | प – – , ध॒ नि॒ ध॒ प , सां
ति याँ ऽ ब | ना ऽ ऽ य | के ऽ ऽ , झ | ठी झ ठी , सा
३ × २ ०

सां ध़ि नि़ ध़ि | प – प नि़ ध़ि | प म, म प | म सा सा; प मप़
चि नी ऽ की | पी ऽ त ल | गा ये, औ र | न सं ग, जिऽ
३ × २ ०

मसो सा ध़ि नि़ | सा म
याऽ की ऽ बि | था ऽ ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३ ×

राग देवरंजनी – एकताल (विलंबित)

स्थायी: ऐसी को गुन खानी, रूप रानी, मृग नैनी
जिन कारन तरपत जियरा बालम तुम्हरो।
अंतरा: चूक परी का हमसों जो नेहा छाँड़ दियो
चतुर सुघर ऐसो को जिन बस कीन्हो मन तुम्हरो॥

स्थायी

नि़ सापं – मं | सो, नि़सा ध़ध़ि | नि़सा सा | मप़ ध़ि, नि़नि़ | धनि़सा – नि़ सा
पैऽ ऽसी | को ऽऽ गुन | खाऽ नी | रूऽ पा ऽऽ | ऽऽऽऽ नी
३ ४ × ० २

नि़ सासा, मं पं, मप | पधनिसां निधं | प धमं | मप धनि़ | धप म | म पमं
मृग, नै ऽ, ऽऽ | नीऽऽऽ जिन | का रन | तर पत | जिय रा | बा लम
० ३ ४ × ० २

नि़ सासा ध़ि, नि़सा ||
तुम्ह रो, ऽऽ ||
०

अंतरा

प मं पधं नि़ सां | नि सां सां निसां | नि सांसां पं, मं | सां नि | धप म ||
चू कप री ऽ | का ऽऽ हम्सो ऽ, जो | ने ऽ | ऽऽ हा ||
३ ४ × ० २ ०

प मपधनि धप | म – | ध़ नि़ | सा मं | मं प | मं प ||
छाँऽऽऽ ड़दि | यो ऽ | च तु | र सु | घ र | पे सो ||
३ ४ × ० २ ० ०

प मपधनि सां | निधं पमं | मप धनि़ | धं प | मं पमं | नि़सासा नि़ध़ नि़सा ||
कोऽऽऽ ऽ | जिन बस | कीऽ ऽऽ | न्हो ऽ | ऽ, मन | तुम्ह रो, ऽऽ ||
३ ४ × ० २ ० ०

राग गौळ

यह कर्नाटक संगीत पद्धति का एक मनोरंजक राग-स्वरूप है। इसका मेल मायामालवगौळ है, जो कि हिन्दुस्तानी भैरव ठाठ के सदृश है। इसमें मध्यम वादी एवम् संवादी षड्ज स्वर माने गये हैं। धैवत तथा गंधार इसमें वर्ज्य होने के कारण औडुव जाति का राग माना गया है। गान समय प्रातःकाल है।

आरोहावरोह स्वरूपः

सा रे॒ म प नि सां | सां नि प म रे॒ सा ॥

पकड़ः

साम, मपम, पनि, पम, पम, रे॒, सा ॥

राग गौळ-लक्षणगीत-झपताल(मध्यलय)

स्थायीः मेल भैरव तामें धग बख्श कीन्हे
वादी मध्यम लिये गौळ राग कहायो।
अंतराः गाये बजाये कर्नाट राग-रीत मों
अनुपम सुन्दर रूप आज सुनायो ॥

स्थायी

नि॒															
सा	म	मे	प नि	नि	नि	सां नि प	म म	प नि प	म –	री॒ सा –					
मे	ऽ	ल	मै ऽ	र	व	ता ऽ में	ध ग	ब र ज	की ऽ	न्हे ऽ ऽ					
×		२		०		३	×	२	०	३					
नि॒	नि॒	सा													
सा	सा	सा	म –	म म	प मे –	म प	नि सां –	रीं सां	नि प मे						
वा	ऽ	दी	म ऽ	ध्य म	लि ये ऽ	गो ऽ	ळ रा ऽ	ग क	हा ऽ यो						
×		२		०		३	×	२	०	३					

अंतरा

प			सां			नि		नि							
म	प	नि –	नि	सां –	सां, सां सां	प नि	सां रीं –	सां नि	– प मे						
गा	ऽ	ये ऽ	ब	जा ऽ	ये, क र	ना ऽ	ट रा ऽ	ग री	ऽ त में						
×		२		०		३	×	२	०	३					
सा			म			म		म							
म	म	प म, प	म	म	री॒ – सा	री॒ म	प नि, सां	नि प	म री॒ सा						
अ	नु	प म, सु	न्द र	रू ऽ प	आ ऽ	ज ऽ, सु	ना ऽ	ऽ ऽ यो							
×		२		०		३	×	२	०	३					

राग ललितपंचम–साध्रा–झपताल(मध्यलय)

स्थायी: बिघन हरता एकदंत विनायक
गौरी सुत गणेरा विधाधर नमो|
अंतरा : आयो शरन 'सुजन' द्वारे तिहारे
बिपत हरो मेरो चरण कँवल नमो ||

स्थायी

सा ग रीं | सा नि ध नि | सा म | ग म – म || ग म – | म – म | ग म | ग म ग –							
× बि घ | २ न ह र | ० ता S | ३ प S क || × दं S | २ त S वि | ० ना S | ३ य क S							
म ग – | ध। म ध नि | ध। नि म – म || म नि ध। नि | ध। म ग प | ग प | ग रीं सा							
× गो S | २ री S सु | ० त ग | ३ णे S श || × वि S | २ धा S ध | ० र न | ३ मो S S							

अंतरा

म ग | ध। म धम | ध सां सां | नि सां सां सां | सां नि रीं | गं रीं सां | सां नि रींनि | ध प –													
× आ S | २ यो SS श | ० र न | ३ सु ज न || × द्वा S | २ रे S ति | ० हा SS | ३ रे S S														
ग म म | ग म – म | निध नि | ध। म – मे || ध। म ध | प ग प | ग प | ग रीं सा														
× बि प | २ त S ह | ० रो S | ३ मे S रो || × च र | २ ण S कँ | ० व ल | ३ न मो S														

राग गोरी(भैरव थाट)–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: कीरत तुम्हरी तिहूँ लोक में
सकल गुनी गंधर्व सुर नर मुनी
गाये बजाये सुनाये रिझाये|
अंतरा: आयो दरवजवा तिहारे जोर जोर कर
बिनति करत 'सुजन' दीन
बिपत सुनाये सुनाये सुनाये ||

स्थायी

ग रे॒ सा सा | प – –, ध॒ | नि प ध म | प ग –, रे॒
र त तु म्ह | री ऽ ऽ, ति | हूँ लो ऽ क | मों ऽ ऽ, स
३ × २ ०

ग रे॒ सा सा | रे॒ रे॒ रे॒, प | प ध॒ नि रें | गं रें सां, प
क ल गु नि | गं ध र्व, सु | र न र मु | नी ऽ ऽ, गा
३ × २ ०

नि सां रें, रें | सां – सां, रें | नि ध॒प म, प | ग रे॒ सा; रे॒
ऽ ये ऽ, ब | जा ऽ ये, सु | ना ऽऽ ये, रि | झा ऽ ये; की
३ × २ ०

अंतरा

रे॒ प

आ यो

प नि सां रें | सां – –, सां | रें नि ध॒ म | ग –, रे॒ प
द र व ज | वा ऽ ऽ, ति | हा ऽ रे ऽ | ऽ ऽ, आ यो
३ × २ ०

प नि सां रें | सां – –, सां | रें नि ध॒ प | प म म, प
द र व ज | वा ऽ ऽ, ति | हा ऽ रे ऽ | जो ऽ र, जो
३ × २ ०

ग रे॒ सा सा, | प़ नि़ सा रे॒ | प प, ध॒ नि | प ध॒ मप ग
ऽ र क र, | बि न ति क | र त, सु ज | न दी ऽऽ न
३ × २ ०

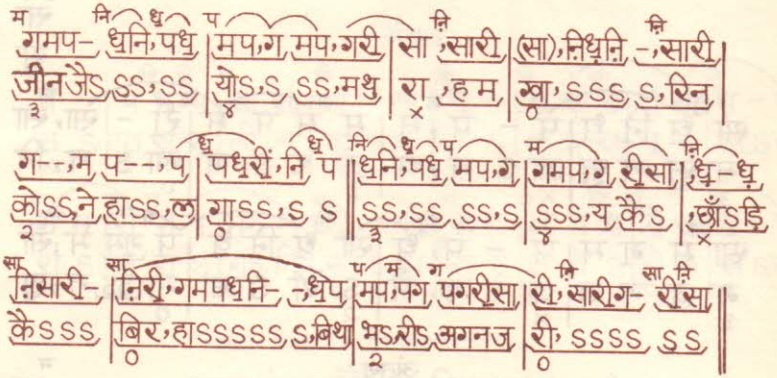
रे॒ प नि सां | रें – सां, रें | नि ध॒प म, प | ग रे॒ सा; रे॒
बि प त सु | ना ऽ ये, सु | ना ऽऽ ये, सु | ना ऽ ये; की
३ × २ ०

ग रे॒ सा सा | प – –
र त तु म्ह | री ऽ ऽ ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३ ×

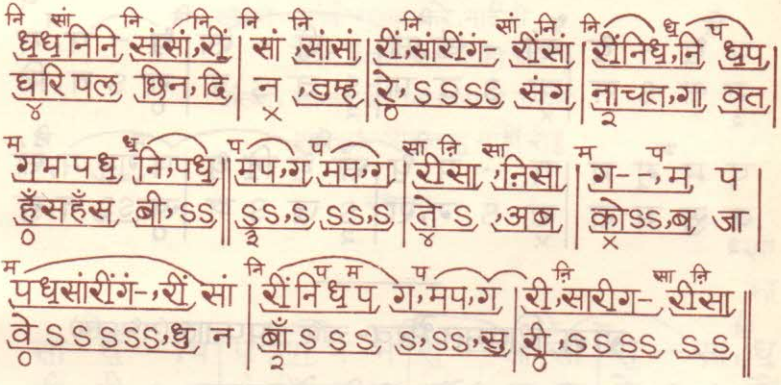
राग गोरी (भैरव थाट) – एकताल (विलंबित)

स्थायी : जी न जेयो मथुरा हम ग्वारिन को नेहा लगाय के
छाँड़िके बिरहा बिथा मेरी अगन जरी |
अंतरा : घरि पल छिन दिन तुम्हरे संग नाचत गावत
हँस हँस बीते, अब को बजावे धुन बाँसुरी ‖

स्थायी



अंतरा



राग शिवमत भैरव- लक्षणगीत- त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: सुन सुन 'सुजान' चतुर बखान
निग जुगल जान भैरव समान।
अंतरा: धग समवाद प्रातर गान
शिव सुमत राग राज बखान॥

स्थायी

नि सां
सु

सां नि ध नि ध | प – प, ग म | म ग म प म | ग रे – सा, नि सा
न सु न सु | जा ऽ न, च | तु र ऽ ब | खा ऽ न, नि
३ × २ ०

सा सा म ग म | प – प, नि ध | सां नि ध नि ध | म प गम म; नि सां
ग जु ग ल | जा ऽ न, भै | ऽ रें ऽ स | मा SS न; सु
३ × २ ०

अंतरा

म प
ध

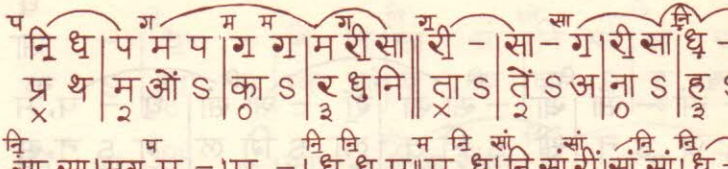
प नि ध – ध | ध सां – सां, नि सां | – रें – सां | नि ध – प, म
ग स ऽ म | वा ऽ द, प्रा | ऽ त ऽ र | गा ऽ न, शि
३ × २ ०

प म म ग म | प – प, नि ध | सां नि ध नि ध | म प गम म; नि सां
व सु म त | रा ऽ ग, रा | ऽ ज ऽ ष | खा SS न; सु
३ × २ ०

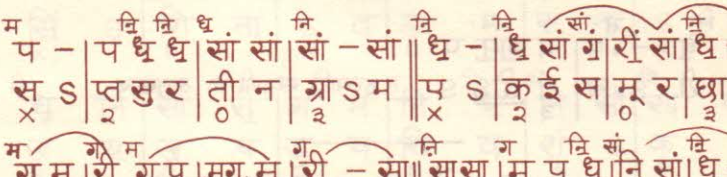
राग शिवमत भैरव- साधा- झपताल (मध्यलय)

स्थायी: प्रथम ओंकार ध्वनि तातें अनाहत
गुप्त नाद, आहत दूजो प्रकट होत।
अंतरा: सप्त सुर तीन ग्राम एकईस मूरछान
राग-रागनि रूप आहततें निकसत॥

स्थायी



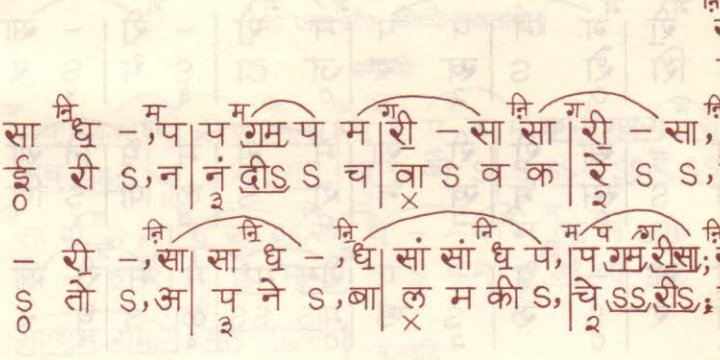
अंतरा



राग बंगाल भैरव – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : ननंदी चवाव करे, माई री
भेंतो अपने बालम की चेरी |
अंतरा : साजन सों नित लागि लगन
सुध बुध और कछु नाहीं री ||

स्थायी



अंतरा

नि़ ध़ सा

ध़ नि़ नि़ ग़ नि़ ग़
– सां – सां | सां – सां सां | रीं – सां सां | ध़ – प, म
ऽ ज ऽ न | सों ऽ नि त | ला ऽ गि ल | ग ऽ न, सु
० ३ × २

म ग़ नि़ ध़ नि़ म ग़ नि़
प ग – म | प – ध़ – | सां ध़ प प | गम़ री सा; सा
ध ब़ ऽ ध | ओ ऽ र ऽ | क छु ऽ ना | हींऽ री ऽ; मा
० ३ × २

नि़ म
सा ध़ –, प | प गम़ प
ई री ऽ, न | नं दीऽ ऽ ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
० ३

राग प्रभात भैरव – एकताल (मध्यलय)

स्थायी: हर हर हर गंगाधर शशिशेखर जटाधर
भस्म भूखन शूलपाणि गरे रुण्ड मालधर।

अंतरा: बाघाम्बर वृख बाहन त्रिपुरारी भूतेश्वर
सिंगि नाद डमरु नाद जय जय जय शिव शंकर॥

स्थायी

नि़ नि़ ग़ म। ग़
ध़ ध़ | प प | म ग | म म | म – | ग ग
ह र | ह र | ह र | गं ऽ | गा ऽ | ध र
× ० २ ० ३ ४

ग़ ग़ म ग़ ग़
म री | ग म | प प | म री | – री | – सा
श शि | शे ऽ | ख र | ज टा | ऽ ध | ऽ र
× ० २ ० ३ ४

सा नि़ ग़ ग़ ग़ नि़
नि़ – | सा री | री सा | म ग | म ध़ | नि सां
भ ऽ | स्म भू | ख न | शू ऽ | ल पा | ऽ णि
× ० २ ० ३ ४

ग़ नि़ ग़ ग़
रीं सां | – ध़ | – प | रीग़ मध़ | म म | री सा
ग रे | ऽ रु | ऽ ण्ड | मा ऽऽ | ला ऽ | ध र
× ० २ ० ३ ४

अंतरा

म		नि				नि		सां		नि	
प	–	ध	–	नि	नि	सां	सां	नि	सां	सां	सां
बा	ऽ	घा	ऽ	म्ब	र	वृ	ख	बा	ऽ	ह	न
×		०		२		०		३		४	
सां		ग		सां			नि				
नि	सां	रीं	–	सां	–	निसां	रींसां	ध	–	प	प
त्रि	पु	रा	ऽ	री	ऽ	भूऽ	ऽऽ	ते	ऽ	श्व	र
×		०		२		०		३		४	
म		ग		ग			ग		म		
ग	–	ग	म	नि	ध	मं	म	रीं	ग	म	म
सिं	ऽ	गि	ना	ऽ	द	ड	म	रु	ना	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	
नि				म		नि		सां		नि	
ध़	नि़	सा	री़	ग	म	नि	ध	नि	सां	सां	सां
ज़	य	ज़	य	ज़	य	शि	व	शं	ऽ	क	र
×		०		२		०		३		४	
नि	ध	प	म	ग	ग						
ह	र	ह	र	ह	र	----- इत्यादि स्थायी के अनुसार					
×		०		२							

राग प्रभात भैरव - तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी: अब्‌तो जागो मनवा बोरे
बिन हरि नाम जनम बितायो।

अंतरा: फिर पाछे नर तन आवे नहीं
बहुत भई सुख चैन की नींव
का फल साँस मिव्यो पछतायो॥

स्थायी

ग	मं	मग	म	ग	री	री	सा	नि़	सासा	सा	धं नि़	धं	पं	ग	म	गम	मं	गम	गं	म	-री
अब	तो	ऽ	ऽ		जा	ऽ	गो		मन		वा	ऽ	बो	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	रे		ऽऽ
					×						२				०						
नि़	सा	सा	म	ग	म	नि़	धं	सां	सां	नि़	सां	धं	–	–	पं	म	ग	ग	म	गम	
बि	न	ह	रि		ना	ऽ	ऽ		म	ज		न	ऽ	ऽ	म		ऽ	ब्बि	ता	ऽऽ	
					×							२					०				
गम	धं	मं	गम	ग	ग	मं	मग	म													
ऽऽऽऽ			ऽऽ	यो	अब	तो	ऽ	ऽ													
३																					

इत्यादि

अंतरा

प नि सां नि सां सां नि सां नि नि
मप ध- | नि सां - सांसां | निसां - रीं सां | सां,निसां ध - प
फिर पाऽ | छे ऽ ऽ नर | तू न ऽ आ ऽ | वे,ऽऽ न ऽ हीं
× २ ०

ग नि सां नि ग ग ग
म म प ,ध | नि सां - धप | मे - म ग,मम | म ग म -ग
ब इ त ,भ | ई ऽ ऽ सुख | चै ऽ न की,ऽऽ | नीं ऽ ऽ ऽद
३ × २ ०

नि म ग सां नि नि
ध नि - सारी | ग म म ,ध | ध सां - धप | म - - गम
का ऽ ऽ फल | साँ ऽ स ,मि | व्यो ऽ ऽ पछ | ता ऽ ऽ ऽऽ
३ × २ ०

म म ग ग
गमधम | गम,ग रीं,मम | मग,मे ‖ ----इत्यादि स्थायी के अनुसार
ऽऽऽऽ | ऽऽ,त्यो ऽऽ,अब तोऽऽ
३

राग आनंदभैरव–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : बिन दरस मन तरसत निस-दिना
कल ना परत सखि एक घरि पल छिना।
अंतरा : मोहि गयो चित सोहनी सुंदर मूरत पे
अब नाहीं सोहे घर आँगना उन बिन ‖

स्थायी

म प
बि

म ग ग म म ग म
मरी री सा | रीरी गम | पम पग | मरी - ,ग
न द र स | मु न त र | सु त नि स | दि ना ऽ,क
३ × २ ०

नि प म म ग प
म प धनि | प,ध प,ध | म,पमग,प | मग रीसा;प
ल ना प र | त,स खि,प | क,घ रिऽ,प | लऽ छि ना;बि
३ × २ ०

म ग ग
मरी री सा |
न द र स | ----इत्यादि
३

अंतरा

म प
मो

सां सां सां रीं | सां,रीं गं मं | गंरीं सां सां,धं | निं प म,गम
हि ग यो चि | त,सो ह नी | सु न्द र,म् | र त पे,अ
३ × २ ०

प ध प म | गरी,म ग मग,प | म गरी –,सां | रीं ग मगं,प
ब ना हिं सो | हे,घ रड,आँ | ग ना ऽ,उ | न बि नड,बि
३ × २ ०

म गरी री सा |
न द र स | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग आनंद भैरव - एकताल (विलंबित)

स्थायीः कोन गुन कीजे लीजे मनाये
नट नागर को |
अंतराः कोन बजावे धुन मुरली, बन रचे
को अब लीला रास, गोकुल छाँड़ि चले
आनंदघन मथुरा नगर को ||

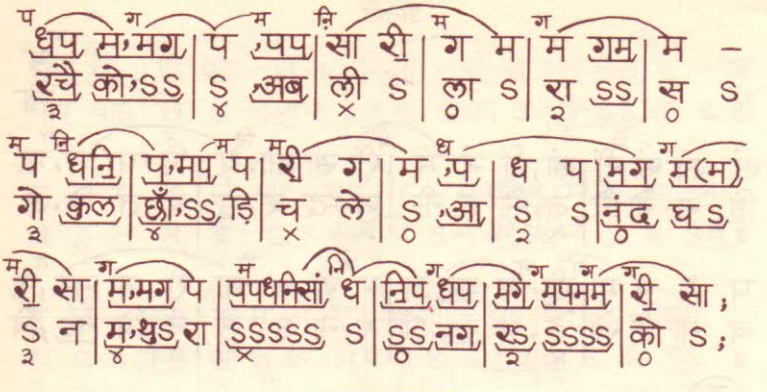
स्थायी

रीं म(म) गरी | सा ,सासा | गरी – | सा निसा | सां रीं | म ग मे
को ऽ ऽ | न ,गुन | की ऽ | जे ऽऽ | ली ऽ | जे ऽ
३ ४ × ० २ ०

,गम गमग | गपे – | मपपधनिसां धं | ,निप,धप | मग सपमम | गरीं सा
,ऽऽ, मऽ | ना ऽ | येऽऽऽऽ न | ,ऽट,नाऽ | ऽऽ,गऽरऽ | को ऽ
३ ४ × ० २ ०

अंतरा

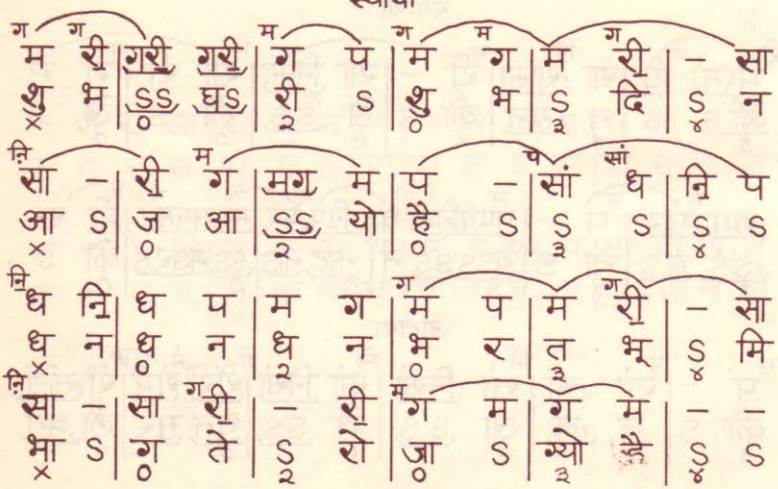
मप – | पसां ,सां | निसां निसां | निसां निसां | गरींरीं मंगंमं | गरीं ,सांसां
को ऽ | न ,ब | जा ऽऽ | वे ऽऽ | धुन मुर | ली,बन
३ ४ × ० २ ०



राग आनंदभैरव – ध्रुवपद – चौताल (विलंबित)

स्थायी : शुभ घरी शुभ दिन आज आयो है
धन धन धन भरत भूमि भाग तेरो जाग्यो है।
अंतरा : दास्य को उदास दिन बीत्यो है
हिया भर्‌यो आनंदतें जिया अत हुलसायो है॥
संचारी : तिहारे विशाल भाल तिलक चढ़ायो है
ध्वजा कीरति की नीकी ज्योत बीरता है॥
आभोग : तुम्हरो नाम जस गुन त्रिभुवनमों गरज रहे
चाँद सूरज तारक गन ज्यौलों प्रकाश रहे॥

स्थायी



अंतरा

ग	प	–	प	प	सां	–	सां	नि	सां	–	सां	सां	नि	सां	सां
	दा	ऽ	स्य	को	ऽ		उ	दा	ऽ		स	दि	ऽ		न
×			०		२			०			३			४	
गं	रीं	–	–	गं	रीं	–	सां	नि	सां	–	सां	ध	–	प	
	बी	ऽ	ऽ		त्यो	ऽ	ऽ	है	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०		२			०			३			४	
ग	म	मग	मग	प	म	ग	प	–	सां	–	सां	ध	नि	प	–
	हि	याऽ	ऽऽ		भ	ग्यो	ऽ		आ	ऽ		न	न्द	तें	ऽ
×			०			२			०			३		४	
ग	ध	ध	प	प	म	म	ग	ग	री	सा	ग	री	–	ग	री	म	ग	म	–
	जि		या	अ		त		हु		ल	सा	ऽ		यो	है	ऽ		ऽ	
×				०				२			०			३		४			

संचारी

	नि						नि								
	सा	सा	प	प	–	प	ध	नि	ध	प	–	प			
	ति	हा	ऽ	रे	ऽ	वि	शा	ऽ	ल	भा	ऽ	ल			
×			०		२		०		३		४				
ग	म	मग	म	ग	प	–	प	सां	–	सां	सां	ध	–	प	
	ति	लऽ	ऽ	क	ऽ	च	ढ़ा	ऽ	यो	है	ऽ		ऽ		
×			०		२		०		३		४				
गं	रीं	रीं	–	गं	रीं	मं	गं	रीं	–	–	नि	सां	–	सां	
	ध्व	जा	ऽ	की	र	ति	की	ऽ	ऽ		नी	ऽ	की		
×			०		२		०		३			४			
नि	सां	–	सां	सां	ध	नि	प	म	ग	म	ग	प	–	–	
	ज्यो	ऽ	त		बी	ऽ	र	ता	ऽ	ऽ		है	ऽ	ऽ	
×			०			२		०		३			४		

आभोग

						नि		सां			नि				
ग	प	प	प	प	सां	–	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां		
	तु	म्ह	रो	ना	ऽ	म	ज	स	ऽ		ऽ	ऽ	गु	न	
×			०		२		०		३			४			

गं गं गं गं नि सां सां सां ध नि प
री री री री सां – सां सां सां ध नि प
त्रि भु व न मों ऽ ग र ज र ऽ हे
× ० २ ० ३ ४

गं गं मं गं पं पं गं गं नि सां सां
री – री मं गं मं पं री – री री सां सां
चौं ऽ द सृ र ज ता ऽ र क ग न
× ० २ ० ३ ४

ग ग म प सां सां सां ध नि प
म ग म प – प सां – सां ध नि प
ज्यों ऽ ऽ लो ऽ प्र का ऽ श र ऽ हे
× ० २ ० ३ ४

राग अहीरभैरव–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: गोकुल की अहीरनियाँ भई बोरी
रस रूप रागिनिसों हरि की।
अंतरा: मोहनी मूरत पर तनमन वार दियो
घर आँगना कछु ना सुहावे
सुनि माधुरी धुन बाँसुरी की॥

स्थायी

म प
गो
मग री सा,री | म ग म म मग गं री – ,प मप,मग ग री – सा,म ग
कुल की ऽ,अ | ही ऽ र निऽ | याँ ऽ,भऽ,ईऽ | बो ऽ रि,र
३ × २ ० ३

नि ध नि ध | प – ध म | ध प ध म | ग री सा –; म प
प स रू ऽ प | रा ऽ गि नि | सों ऽ ह रि | की ऽ ऽ; गो
३ × २ ० ३

अंतरा

ग म
मो
म री – प | प – – प | – – प – | प – – ,म प
ह नी ऽ मृ | र ऽ ऽ त | ऽ ऽ प ऽ | र ऽ ऽ ऽ ,त
३ × २ ० ३

म	प	–	ध	नि	–	–	–	ध	नि	ध	प	ध	प	–	ध
न	म	ऽ	न	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	दि	यो	ऽ	घ
३				×				२				०			

प	ध	–	म	प	ध	–	ध	मे	(म)	–	म	री	–	सा	सा
र	आँ	ऽ	ग	ना	ऽ	ऽ	क	छु	ना	ऽ	सु	हा	ऽ	वे	सु
३				×				२				०			

सा	मग	म	ग	म	–	–	म	म	री	–	मप	मग	री	सा	प
नि	माऽ	ऽ	ध	री	ऽ	ऽ	ध	नि	बाँ	ऽ	सुऽ	रीऽ	की	ऽ	गो
३				×				२				०			

मग	री	सा	री	ग	म	म	म	
कुल	की	ऽ	अ	ही	ऽ	र	नि	---- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३				×				

राग अहीरभैरव–सवारी (मध्यलय)

स्थायी: देखो देखो री न माने कन्हैया रार करत नित उठ पनघट पर
लाज नाहीं याको नेकहु ढीट लंगर ऐसो अत निपट निडर ॥

अंतरा: कहो सखि कौन रीत ये कहालों सहिये ढंग अनोखे, कासे कहूँ
मैं लाज की मारी हँस हँस ठठोरी करत ब्रिज किशोर ॥

स्थायी

नि	सासा	प	म,प	ध	पध	ध	धप	म	(म)	रीसा	रि	रीग	म	पसा	निसा	मग	सम	ग	पप
	देखो	ऽ	देखो	ऽ		री	नमा	ने	क	हैया		रा	रक	त	नित	उठ	पन	घट	पर
३						×						०				२			

नि	धनि	ध	प	–म	ध	पध	ध	(म)	रीसा	सा	रींसां	सा	धप	मप	नि	धनि	धप	म	रीसा
	लाऽ	ज	ना	ऽहीं		याऽ	को	ने	कहु		ढी	टलं	गर	ऐसो		अत	निप	टनि	डर
३						×					०					२			

अंतरा

म	मरी	–	म	ग	म	प	ध	पप	धप	म	पप	सां	धनि	धप	ग	म	प	म	ग	रीसा
	कहो	ऽ	स	खी		को	न	री	ऽत	येऽ		कहा	लों	सहि	येऽ		ढं	ग	अ	नो खे
३						×						०				२				

गं	रींगं	मं	रीं	सां	धप	म	मम	ग	प	धी	–	सा	सासा	मग	पप	सां	रीं
	कासे	ऽ	क	हूँ	मैंऽ		लाज		की	मा	ऽ	री	हूँस	हँस	ठठो	री	क
३					×								०				

सांसां धनि पम गम | सासा सं,प,पध |
रत,नज किरो ऽर | देखो ऽ,दे,खोऽ | ....इत्यादि

राग अहीरभैरव–एकताल (विलंबित)

स्थायी : अरे निर्दयी नज़रे तू काहे नित उठ
कूक सुनावे, मुझ बिरहन को अधिक सतावे|
अंतरा : राह तकत हूँ उनके आवन की, जिया तरपत
दिन रैन, जरी जात हूँ वाके मिलन बिन,
तापर तू कूक सुनावे, मुझ बिरहन को
अधिक सतावे ||

स्थायी

सासा प	–म पध	ध प	मग (म)	री –	सा	सारी	
अरे ऽ	ऽऽ निर	द यी	ऽऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ	नज़	
३	४	×	०	२	०		
ग मं	मे –	मं पं	प पं	धं –नि	ध प		
रे ऽ	तू ऽ	का ऽ	हे नि	त ऽऽ	उ ठ		
३	४	×	०	२	०		
धपधपम पध	पम गे,(मे)	री –	सा निसा	सारी गम	प री		
कूऽऽऽ ऽऽ	कुऽ ऽ,सु	ना ऽ	वे ऽ ऽ	मुझ बिर	ह न		
३	४	×	०	२	०		
सा सारी	गरी मग	पमे धप	निं,धं पम	ग री	सा निसा		
को अधि	कुऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ	ऽ,स ताऽ	ऽ ऽ	वे ऽऽ		
३	४	×	०	२	०		

अंतरा

म –	रे –म	पप प	मम पं,धं	निं निं	ध प		
रा ऽ	ह ऽ,त	कत हूँ	उन के,आ	व न	की ऽ		
३	४	×	०	२	०		
प धं पध	पमं पधं	धप मग	(म) रे	रे सा	सासा रींरीं		
जि याऽ	ऽऽ तर	पत ऽऽ	दि न	रै न	जरी ऽजा		
३	४	×	०	२	०		

-रीं सां | प सप नि धनि | धप (म) | ग रीसा | नि सारी म गम | म गम
ऽत हैं | वाऽ केऽ | मिल न | बि न | ताऽ पर | तू ऽऽ
३ ४ × ० २ ०

म गमपधनिसां निध | पम ग(म) | ग री - | सा निसा | नि सारी म गम | म प रीं
कूऽऽऽऽऽ ऽऽ | कऽ ऽ,सु | ना ऽ | वे ऽऽ | मुझ बिर | ह न
३ ४ × ० २ ०

सा नि सारी | गरी मग | ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
को अधि | कऽ ऽऽ |
३ ४

राग बैरागीभैरव

कर्नाटक संगीत पद्धति के 'अकुलाभरण' मेल से उत्पन्न हुवा यह औडुव जाति का राग पिछले कुछ वर्षों से हिन्दुस्तानी संगीत में भी गाया-बजाया जाने लगा है। इस राग में गंधार तथा धैवत वर्ज्य स्वर हैं। वादी पंचम तथा संवादी षड्ज माने गये हैं। गान-समय प्रातःकाल है। चलन में यह सरल गति का राग माना गया है।

आरोहावरोह स्वरूप :-

सा रे म प नि, सां | सां नि प म रे, सा ||

पकड़ :-

मपनिप, मरे, म, पनि, प |

राग बैरागीभैरव – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : पचरंगी चूनरिया मोरी भीनी
हँस हँस ठठोरी करत सब ब्रिज की
ग्वारनियाँ, चलो हटो निठुर कन्हैया |

अंतरा : लाज लजत नहीं नेक लंगर ऐसो
निपट निडर तुम गारी दूँगी अब
करूँगी लराई तोसों ग्वार गुसैंया ||

स्थायी

म प
प

म म रीं सा | रीं म म म | प म पनिं | प म रीं, सां
च रं गी ऽ | चू ऽ न रि | या ऽ मो री | भी ऽ नी, हँ
३ × २ ०

सा रीं सासा | रीं म प निं | प निं मं प | निं सां सां पं
स हँ स ठ | ठो ऽ री क | र त स ब | ब्रि ज की ग्वा

निं प म -, | रीं सां निं सां | प निं मं, प | म रीं सा; प
र नि याँ ऽ, | च लो ह टो | नि ठु र, क | हे ऽ या; प

म म रीं सा |
च रं गी ऽ |---- इत्यादि

अंतरा

प म - -म प | निं निं मं प | सां निं सां सां | रीं रीं सां सां
ला ऽ ऽज ल | ज त न हीं | ने ऽ क लं | ग र ऐ सो

मं रीं मं पं मं | रीं रीं सां सां | प म - म प | - प निं निं
नि प ट नि | ड र तु म | गा ऽ री दूँ | ऽ गी अ ब

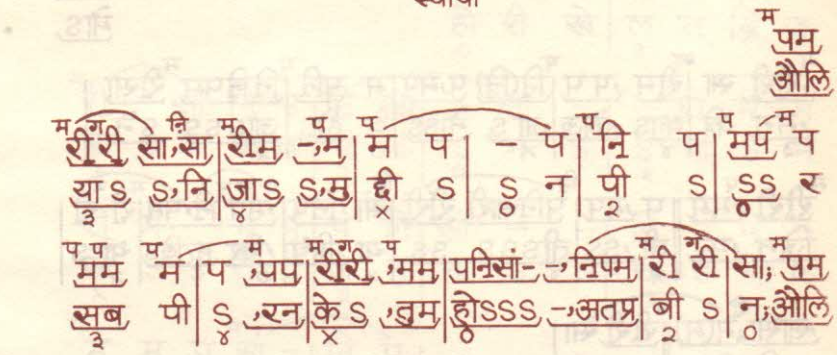
निं सां सां सां रीं | सां सां निं प | म प निंनिंपम | रीं - सा; प
क रूँ गी ल | रा ई तो सो | ग्वा ऽ ऽरंगऽ | सैं ऽ या; प

म म रीं सा |
च रं गी ऽ |---- इत्यादि स्थायी के अनुसार

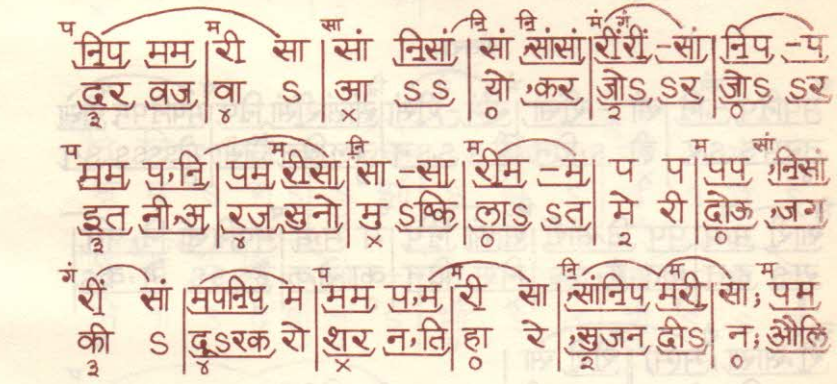
राग बैरागीभैरव – एकताल (विलंबित)

स्थायी : औलिया निजामुद्दीन, पीर सब पीरन के
तुम हो अत प्रबीन |
अंतरा : दरवजवा आयो कर जोर-जोर
इतनी अर्ज़ सुनो, मुश्किलात मेरी दोऊ जग की
दूर करो, शरन तिहारे 'सुजन' दीन ||

स्थायी



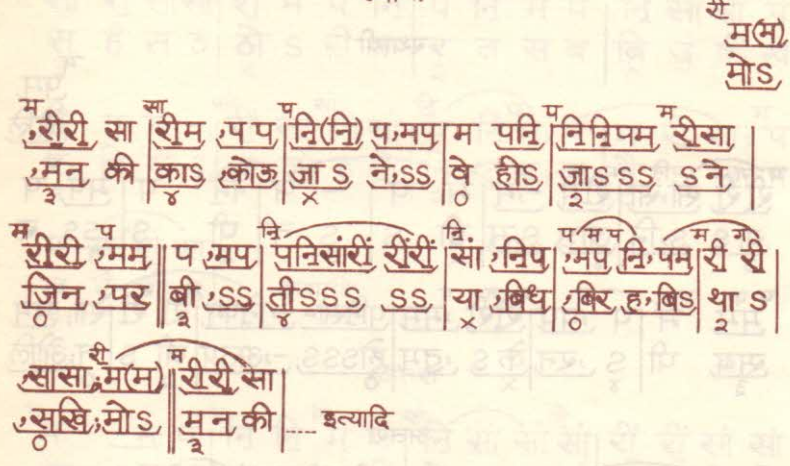
अंतरा



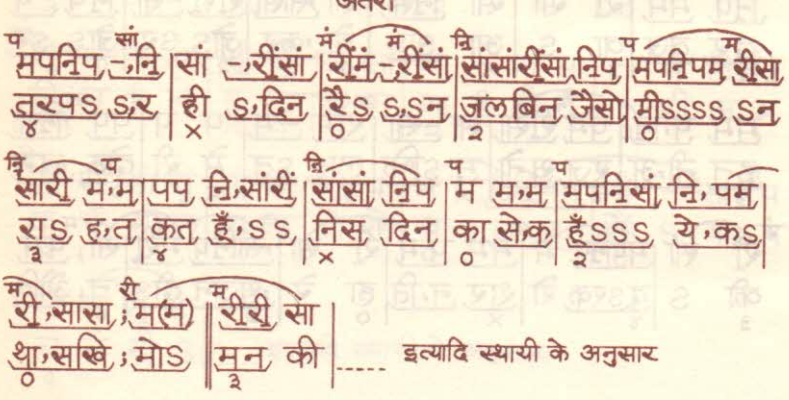
राग बैरागीभैरव–एकताल (विलंबित)

स्थायी: मो मन की का कोऊ जाने, वे ही जाने
जिन पर बीती, या बिध बिरह बिथा सखि।
अंतरा : तरप रही दिन रैन जलबिन जैसो मीन
राह तकत हूँ निसदिन, कासे कहूँ ये कथा सखि॥

स्थायी



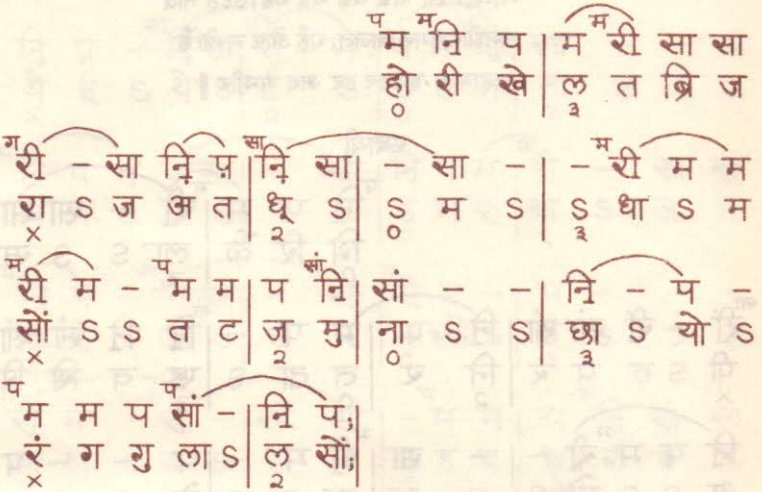
अंतरा



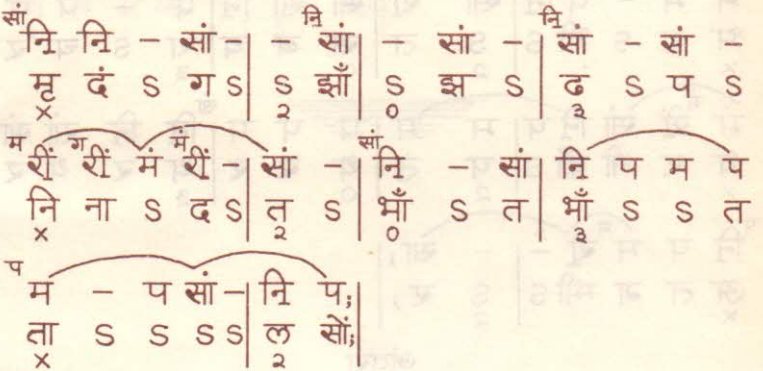
राग बैरागीभैरव-होरी-धमार

स्थायी: होरी खेलत ब्रिजराज अत धूमधामसों
तट जमुना छायो रंग गुलाल सों |
अंतरा: मृदंग झाँझ ढप निनादत भाँत भाँत ताल सों ||

स्थायी



अंतरा



राग बैरागीभैरव–होरी–धमार

स्थायी : गिरि कैलास पीठ पर निरत ताण्डव
सिरि शम्भो महादेव, भयभीत सब चराचर
धरनी काँपत थरर थर थर अत गम्भीर।

अंतरा : ऐसो जोगी बैरागी त्रिलोचन त्रिशूलपानी
नाचत ता थेई थेई थेई थेई, उठत नाद
घनघोर, डमरु बाजत, चहूँ ओर मच्यो है
हाहाकार, हर हर हर अत गम्भीर ॥

स्थायी

						प				म					
						नि	प	म		रीं	–	सा	सा		
						गि	रि	के		ला	ऽ	ऽ	स		
						०				३					
सां															
रीं	–	रीं	सां	सां		नि	प		म	प	–	नि	नि	सां	सां
पी	ऽ	ठ	प	र		नि	र		त	ता	ऽ	ष्ड	व	सि	रि
×						२			०			३			
				म											
नि	प	म	रीं	–		–	सा		रीं	म	–	प	–	–	प
श	ऽ	ऽ	म्भो	ऽ		ऽ	म		हा	ऽ	ऽ	दे	ऽ	ऽ	व
×						२			०			३			
					नि				नि						
प				प											
म	म	–	प	नि		सां	रीं		सां	सां	नि	प	–	प	प
भ	य	ऽ	भी	ऽ		ऽ	त		स	ब	च	रा	ऽ	च	र
×						२			०			३			
मं		रीं	सां	नि	प	म		म	प	प	प				
ध	र	नी	काँ	ऽ		प	त		थ	र	र	सां			
×						२			०			३			
प				म											
नि	प	म	रीं	–		–	सा;								
अ	त	ग	म्भी	ऽ		ऽ	र;								
×						२									

अंतरा

सां						नि				नि		सां		नि	
रीं	–	–	सां	–		सां	सां	–	सां	नि	सां	सां	–		
ऐ	ऽ	ऽ	सो	ऽ		जो	गी	ऽ	बै	रा	ऽ	गी	ऽ		
×						२	०			३					

मं रीं मं – मं रीं सां | – नि सां | सां नि सां सां | नि – प –
त्रि लो ऽ च न | ऽ त्रि | शू ऽ ल | पा ऽ नी ऽ
× | २ | ० | ३

प म प नि प म | – म री | सा – – | सा री – सा नि –
ना च त ता ऽ | ऽ थे | ई ऽ ऽ | थे ऽ ई ऽ
× | २ | ० | ३

नि प़ – सा नि सा | म री | म | प म म री | सा – – सा
थे ई ऽ थे ऽ | ई ऽ | उ ठ त | ना ऽ ऽ द
× | २ | ० | ३

प नि प म प सां | – सां | प नि प म | म री – सा सा
घ न ऽ घो ऽ | ऽ र | ड म रु | बा ऽ ज त
× | २ | ० | ३

प नि प – सां नि सां | – सां | म री म – | प – – –
च हूँ ऽ ओ ऽ | ऽ र | म च्यो ऽ | है ऽ ऽ ऽ
× | २ | ० | ३

मं रीं मं – मं रीं – | सां सां | – प म म | प सां नि सां सां
हा हा ऽ का ऽ | ऽ र | ऽ ह र | ह र ह र
× | २ | ० | ३

प नि प म री – | सा सा |
अ त ग म्भी ऽ | ऽ र |
× | २

Archived by Aaraeva Business Solutions Pvt Ltd